131605

ओ३म्
मूल्य [illegible] रुपये
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
ओ३म्

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक

साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख

वर्ष ४५ अंक १६ | १४ जनवरी से २० जनवरी, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | मा०कृ०१०

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

अर्धकुम्भ में सार्वदेशिक सभा द्वारा एक हजार सत्यार्थप्रकाश वितरित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में आयोजित अर्धकुम्भ मेला शिविर में वितरण हेतु एक हजार सत्यार्थप्रकाश प्रतियां भेजी गई है। सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी की अध्यक्षता में सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा में लिए गए निश्चय के अनुसार सभा मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने एक हजार सत्यार्थप्रकाश प्रतियां प्रयाग उपप्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री आर्य राजेन्द्र कपूर को प्रदान कर दी। यह सत्यार्थप्रकाश आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रदान किए गए थे। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य जी इस अर्धकुम्भ में उपस्थित होंगे।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम कुम्भ मेला हरिद्वार में पाखण्ड खण्डनी पताका फहराकर वैदिक धर्म का प्रचार प्रारम्भ किया था। इसी श्रृंखला में वे तीन बार प्रयाग की पावन भूमि पर भी पधारे। माघ माह की भयंकर जाड़े की रातों में स्वामी जी ने सिर्फ कौपीन धारण कर कई रातें नाग वासुकी मन्दिर दारागंज, प्रयाग में गुजारी तथा यहीं पर लाचार माता द्वारा बच्चे का शव प्रवाह देखकर विचलित हुए। जुलाई १८७४ ई० में लगभग तीन माह रहकर अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का शुभारम्भ इसी पावन भूमि पर किया तथा यहीं से सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम मुद्रण भी हुआ।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग पिछले कई दशकों से गंगा, यमुना के पावन तट पर ज्ञान की सरस्वती बहाने के हेतु वैदिक धर्म प्रचार शिविर लगाती रही है।

इस शिविर में अपनी उपस्थिति एवं सहायता प्रदान करने के इच्छुक महानुभाव तुरन्त सम्पर्क करें।

– आर्य राजेन्द्र कपूर
09335106589

दिल्ली सभा का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न

श्री वैद्य इन्द्रदेव प्रधान, श्री नरेन्द्र आर्य सुमन महामन्त्री एवं श्री दयानन्द मदान कोषाध्यक्ष निर्वाचित

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन १७ दिसम्बर, २००६ (रविवार) को आर्यसमाज दिवान हाल में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में निर्वाचित प्रक्रिया सार्वदेशिक न्याय सभा द्वारा नियुक्त चुनाव अधिकारी श्री राकेश महाजन जी की देखरेख में शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुई। इस अधिवेशन में दिल्ली की आर्य समाजों द्वारा दिल्ली सभा के लिए चुने गए प्रतिनिधियों ने उपस्थित होकर सर्वसम्मति से श्री वैद्य इन्द्रदेव जी को आगामी तीन वर्षों के लिए प्रधान, श्री नरेन्द्र आर्य जी को महामन्त्री तथा श्री दयानन्द मदान जी को कोषाध्यक्ष चुना। शेष कार्यकारिणी एवं अन्तरंग गठित करने का अधिकार भी सर्वसम्मति से न[illegible] निर्वाचित अधिकारियों को प्रदान कि[या] गया।

शेष पृष्ठ ३ [illegible]

हरिद्वार श्रद्धानन्दमय हो गया

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में उत्तरांचल, पंजाब, दिल्ली, हरियाणा आदि प्रान्तीय सभाओं के कर्मठ सहयोग से श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभायात्रा ने हरिद्वार की सड़कों को श्रद्धानन्दमय कर दिया। आर्यसमाज, वैदिक धर्म एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के गुणगान से भरीपूरी बलिदान दिवस यात्रा गुरुकुल के प्रांगण से यज्ञोपरान्त प्रारम्भ हुई और लगभग तीन घण्टे की शोभायात्रा के रूप में प्रचार के बाद पुनः गुरुकुल प्रांगण में ही एक विशाल जन सभा के रूप में परिवर्तित हो गई।

वैदिक यति मण्डल के प्रधान पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी, का[र्य]कारी प्रधान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सुदर्शन शर्मा के नेतृत्व तथा सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल जी के पावन सान्निध्य में इस शोभा यात्रा की भव्यता झलक रही थी।

हरियाणा सभा के प्रधान श्री भगत मंगतू राम, उत्तरांचल सभा के प्रधान श्री हजारीलाल जी, उ०प्र० सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरुण, चौ० लक्ष्मीचन्द, मुम्बई से श्री डॉ० तुलसीराम बांगिया, महामन्त्री श्री अरुण अबरोल, श्री माया प्रकाश त्यागी आदि की उपस्थिति ने इस समारोह को सुशोभित कर दिया। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, उपमन्त्री श्रीमति डॉ० आशारानी राय, श्री देवराज आर्य, श्री देवेन्द्र शर्मा, विश्वविद्यालय के आचार्य श्री वेद प्रकाश शास्त्री, श्री महावीर अग्रवाल आदि ने अपने उदबोधन से आर्य जनता को प्रेरित किया। इस सारे समारोह के सूत्रधार विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वतंत्र कुमार जी ने गुरुकुल की वर्तमान स्थिति तथा आर्यों के संकल्पों से [illegible] विचार प्रस्तुत किए।

ग्रामीण अंचलों के प्रचार कार्यों से समूचे आर्य जगत को प्रेरणा लेनी चाहि[ए]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी एवं सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल जी का दिल्ली से हरिद्वार जाते हुए मुरादनगर एवं मुजफ्फरनगर में भव्य स्वागत किया गया।

मुरादनगर पब्लिक स्कूल में स्वागत समारोह का आयोजन श्री माया प्रकाश त्यागी जी के द्वारा किया गया। समारोह का संयोजन करते हुए श्री त्यागी ने कहा कि समूचे आर्यजगत को [illegible] बात का हर्ष है कि सार्वदेशिक [illegible] के प्रधान श्री मिठाईलाल जी एक कर्मठ एवं सिद्धान्तनिष्ठ और दानवीर आर्य हैं।

सभा प्रधान श्री मिठाईलाल जी ने कहा कि देहाती क्षेत्रों में आर्य समाज का प्रचार कार्य आज भी बहुत सरलता, सादगी और धर्मनिष्ठा के साथ किया जाता है। शहरों में बसे लोगों को ग्रामीण अंचलों के प्रचार कार्यक्रमों से प्रेरणा लेनी चाहिए। शहरी क्षेत्रों में धन और साधनों का बाहुल्य है उसका प्रयोग भी ग्रामीण क्षेत्रों में होना चाहिए।

मुजफ्फरनगर में श्री अरविन्द आर्य के द्वारा स्वागत कार्यक्रम गांधी कालोनी आर्य समाज मन्दिर में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री जगदीश जी ने किया। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री जय नारायण अरुण जी भी सम्मलित हुए।

सार्वदेशिक न्याय सभा अध्यक्ष श्री रामफल बंसल जी कहा कि आज आर्य समाज की र[illegible] का कार्य अत्यन्त कठिन हो गया क्योंकि कलयुग में स्वार्थों का टकर[ाव] सबसे अधिक है परन्तु हमें विश्वा[स] है कि अन्ततः सत्य की ही विज[य] होगी।

सार्वदेशिक सभा की साधारण बैठक सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा बैठक २३ दिसम्ब[र] २००[illegible] [र]विवार) को [हरि]द्वार के वेद मन्दिर में सम्पन्न हुई। इस बैठ[क] में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। बैठक की अध्यक्षता सभाप्रधान श्[री] मिठाई लाल सिंह जी ने की। विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने इस बैठ[क] में भाग लेकर आर्यसमाज की प्रगति एवं वैदिक धर्म प्रचार प्रसार पर चच[ा] में अपने विचार रखे।

सार्वदेशिक सभा के आगामी त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन को सम्पन्न करवाने के लिए तिथि, समय, स्थान आदि निर्धारित करने का अधिका[र] सर्वसम्मति से सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी को दिया गया। समस्[त] प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं अपनी अपनी सभाओं से सार्वदेशिक सभा [के] लिए चुने गए प्रतिनिधियों के फार्म तथा अन्य औपचारिकताएं पूर्ण कर[के] ३१ जनवरी, २००७ तक सभा के वर्तमान कार्यालय **१४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज (आर्य अनाथालय के पास), दिल्ली - २** पर ही भेजें।

सम्पादक

दिल्ली की ऐतिहासिक परम्परा
श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा

२३ दिसम्बर, १९२६ को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी आर्य जगत में सदा–२ के लिए अमर हो गए जब उनकी हत्या एक धर्मान्ध व्यक्ति ने कर डाली। इस शहादत को सुनकर समूची दिल्ली २५ दिसम्बर को उनकी अन्तिम यात्रा में शामिल होने के लिए उमड पड़ी थी। बस उसी बलिदान की स्मृति को दिल्ली और आस–पास की आर्य जनता अपने मनों में बसा कर प्रतिवर्ष २५ दिसम्बर को उसी मार्ग का अनुसरण करते हुए श्रद्धानन्द भवन नया बाजार से चलकर लाल किले तक की इस शोभा यात्रा में शामिल होती चली आ रही है। इस वर्ष भी बलिदान दिवस यात्रा यथा पूर्व कार्यक्रम के अनुसार सम्पन्न हुई।

टाऊन हाल स्थित स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति प्रतिमा के समक्ष आर्य समाज दीवान हाल एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में एक विशाल मंच से आर्य नेताओं ने शोभायात्रा में शामिल आर्य जनों को सम्बोधित किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी तथा सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल जी इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव, अन्य पदाधिकारी तथा श्री वेदव्रत शर्मा, चौ० लक्ष्मीचन्द, श्री कृष्ण गोपाल दीवान, डॉ० रविकान्त, श्री अनिल आर्य, श्री मूल चन्द्र गुप्ता, श्री वाचोनिधि आर्य, श्री महेन्द्र आर्य आदि ने भी इस कार्यक्रम में उद्‌बोधन प्रदान किया।

आर्य जन अपने तप से ही इतिहास बनाते हैं
– महाशय राम विलास खुराना



आर्य समाज मन्दिर गुजरावाला के प्रधान श्री महाशय रामविलास खुराना जी ४ जनवरी को ८४ वर्ष की आयु पार कर चुके हैं। सार्वदेशिक सभा की ओर से मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने श्री खुराना जी को हार्दिक शुभ कामनाएं दीं। श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने भी श्री खुराना जी के निवास पर आध्यात्मिक उत्थान हेतु प्रवचन एवं आशीर्वाद दिया।

८४ वर्ष की अवस्था में भी महाशय राम विलास खुराना जी में धर्म प्रचार का अथक उत्साह देखने को मिलता है। ८ जनवरी से १४ जनवरी तक प्रवचन प्रतिदिन सायं ८ से ९ बजे तक आयोजित करने का दायित्व स्थानीय सनातन धर्म मन्दिर की ओर से भी महाशय जी पर डाला गया। आपने इस कार्यक्रम के लिए आर्य वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी का नाम निर्धारित किया।

इस कार्यक्रम के लिए चन्दा संग्रह करने के लिए भी श्री महाशय जी ने स्वतः ही जिम्मेवारी सम्भाली और निकल पडे घर–घर दान इकट्ठा करने। जो व्यक्ति हजारों लाखों रुपया दान देता हो वह स्वयं दान इकट्ठा करने घर–२ जाए। हर व्यक्ति ऐसा नही कर सकता। कुछ घरों के नवयुवक सदस्य जो खुराना जी को जानते नही थे – आगे चलो, कह कर उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि जैसे खुराना जी एक भिखारी हों। परन्तु अगले घर में लोग चरणों को हाथ लगा कर ५०० या हजार रुपया देने के लिए तैयार दीखते हो तो ऐसा लगता है जैसे ईश्वर का प्रसाद मिल रहा है। परन्तु मान अपमान से बेखबर महाशय जी ने प्रत्येक परिवार से एक रुपया ही प्राप्त किया। इकट्ठी राशि स्वयं सत्संग में आकर देने का आश्वासन प्राप्त किया। इसी तरह से आर्य जन अपना एक अलग इतिहास रचते हैं। यही इतिहास उनका स्वर्ग है। ऐसे विचारों के बल पर ही महाशय राम विलास जी आज भी एक युवक तुल्य उत्साह के मालिक लगते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आयोजित

२३ दिसम्बर, २००६ को स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस ग्राम ढिकौली में बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा महाशय श्रीपाल आर्य थे। [illegible] काफी लोग उपस्थित थे। यह सारा कार्यक्रम वेद प्रचार समिति ढ़िकौली के तत्वावधान में आयोजित किया गया। यज्ञ में उपस्थित विनोद आर्य, राजीव कुमार, मनोज आर्य, जितेन्द्र आर्य, मा० सतपाल सिंह, डॉ० प्रदीप कुमार आदि उपस्थित थे।

श्री राकेश महाजन सार्वदेशिक न्याय सभा के सदस्य नियुक्त

सार्वदेशिक न्याय सभा के एक माननीय सदस्य श्री वेद प्रकाश धवन जी के देहावसान के कारण हुए रिक्त स्थान की पूर्ति करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा बैठक में श्री राकेश महाजन जी को न्याय सभा सदस्य नियुक्त किया गया है। श्री राकेश महाजन दिल्ली उच्च न्यायालय में अधिवक्ता हैं।

दिल्ली सभा का प्रकरण
अदालत के आदेश से भी छल कपट
पूर्व अधिकारियों द्वारा झूठा-भ्रामक प्रचार

दिल्ली सभा के पूर्व अधिकारियों द्वारा अनाधिकृत रूप से प्रकाशित किए जा रहे पत्र में दिल्ली के माननीय न्यायालय द्वारा २ जनवरी, २००७ को पारित एक सामान्य प्रक्रियात्मक आदेश को तोड मरोड कर अपनी अलग झूठी, अनर्गल और भ्रमित भाषा में छापकर स्वयं अदालत की न्यायिक प्रक्रिया में बाधा डालने तथा अवमानना जैसे कृत्य का अपराध किया है। जिसके लिए समुचित कानूनी कार्यवाही समय पर सुनिश्चित की जाएगी।

वास्तविक तथ्यों के अनुसार दिल्ली सभा के नव निर्वाचित प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव जी स्वय विगत सुनवाई की तिथि पर अदालत में उपस्थित थे। उन्होंने स्वयं एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य सुमन का वकालतनामा प्रस्तुत किया तथा एक विशेष प्रार्थना पत्र के द्वारा अदालत के सामने यह तथ्य रखे कि यह मुकदमा दिल्ली सभा के पूर्व महामन्त्री श्री विनय आर्य के द्वारा दाखिल किया गया था। अब नव निर्वाचित महामन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य सुमन को उनके स्थान पर वादी की तरह स्वीकार किया जाए। अदालत ने इस प्रार्थना पत्र पर श्री विनय आर्य से जवाब तलब किया है।

इससे पूर्व श्री विनय आर्य के शपथ पत्र के साथ एक झूठा, मनगढन्त और निराधार प्रार्थना पत्र अदालत में प्रस्तुत किया गया था और श्री वैद्य इन्द्रदेव एवं श्री नरेन्द्र आर्य सुमन को अग्निवेश के सहयोगी बताते हुए उन पर सी.पी.सी. आर्डर ३९ नियम २ ए के तहत कार्यवाही की मांग करते हुए उन्हें जेल भेजने की प्रार्थना की थी।

ज्ञातव्य है कि यह मुकदमा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री विमल वधावन एडवोकेट ने उस समय प्रस्तुत किया था जब श्री विनय आर्य दिल्ली सभा के मन्त्री थे और अग्निवेश ने अनाधिकार दिल्ली सभा के नाम पर एक तदर्थ समीति गठित की थी। श्री विमल वधावन की बहस सुन कर ही माननीय न्यायालय ने प्राथमिक अन्तरिक आदेश जारी किया था। उस मुकदमें में अग्निवेश तथा उसके तीन साथियों को प्रतिवादी बनाया गया था। श्री वैद्य इन्द्रदेव एवं श्री नरेन्द्र आर्य सुमन का उस तदर्थ समीति से कोई सम्बन्ध नही था। इस सारे विस्तृत उत्तर के लिए अदालत ने १६ फरवरी तक का समय दिया है। अदालत के विरुद्ध अवमानना करते हुए श्री विनय आर्य एवं राजसिंह आर्य ने [illegible]

नकली दिल्ली सभा के अधिकारियों के काम को रोकने के लिए थाना प्रभारियों को निर्देश दिए गए हैं।

अदालत किसी मुकदमें में यदि किसी पूर्व आदेश का क्रियान्वयन सुनिश्चित कराने के लिए किसी भी पुलिस स्टेशन को आदेश जारी करती है तो उसका अभिप्राय केवल यही है कि उस मुकदमें के प्रतिवादी यदि आदेश का उल्लंघन कर रहे हो तो उसकी सूचना अदालत को दी जाए।

आर्य जनता इन अनार्यों के दुष्प्रचार से दिग्भ्रमित न हो इसलिए अदालत का आदेश यथावत यहां प्रकाशित किया जा रहा है –

Suit No. 92/2005
02.1.2007

Present : Sh. Ravi Chawla counsel for the plaintiff.

Sh. Vaid Inder Dev one of the respondents/contemnors as mentioned in the application under order 39 Rule 2A Code of Civil Procedure 1908 filed by the plaintiff.

Vakalatnama on behalf of Sh. Narender Arya Suman and Sh. Vaid Inderdev respondents/contemnor in the said application also been filed on record. Sh. Vaid Inder Dev has filed an application under section 151 Code of Civil Procedure 1908. copy supplied to the plaintiff.

Needless to mention that the file of the present suit is pending before appellate Court wherein the parties have challenged the injunction orders passed by this court. The entire record of the case is not before this court at this stage. In these circumstances, SHO P.S. Cannought Place, SHO P.S. Kirti Nagar, SHO P.S. Sadar Bazar are also hereby directed to see that the injunction orders passed by this court on 04.06.2005 are being complied with. To come up for reply and arguments on the application filed by Sh. Veid Inder Dev under section 151 C.P.C. and further proceedings on 19.2.2007. A copy of this order be given to dasti to the parties.

Sd/-
(Raj Kumar)
Civil Judge/Delhi
02.1.2007
(SEAL)

आर्य पर्व सूची
विक्रमी २०६३-६४ (ई० २००७)

१. **लोहड़ी** १३ जनवरी, २००७ शनिवार, माघ कृष्ण ६
२. **मकर संक्रान्ति** १४ जनवरी, २००७ रविवार, माघ कृष्ण १०
३. **बसन्त पंचमी** २३ जनवरी, २००७ मंगलवार, माघ शुक्ल ५
४. **सीताष्टमी** १० फरवरी, २००७ शनिवार, फाल्गुन कृष्ण ८
५. **महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव** १२ फरवरी, २००७ सोमवार, फाल्गुन कृष्ण १०
६. **महाशिवरात्रि** १६ फरवरी, २००७ शुक्रवार, फाल्गुन कृष्ण १४
७. **लेखराम तृतीया** २० फरवरी, २००७ मंगलवार, फाल्गुन शुक्ल ३
८. **मिलन पर्व (होली)** ३ मार्च, २००७ शनिवार, फाल्गुन पूर्णिमा
९. **आर्यसमाज स्थापना दिवस** १६ मार्च, २००७ सोमवार चैत्र शुक्ल १
१० **रामनवमी** २७ मार्च, २००७ मंगलवार चैत्र शुक्ल ९
११. **वैसाखी** १४ अप्रैल, २००७ शनिवार वैशाख कृष्ण ११
१२. **हरि तृतीया तीज** १६ अगस्त, २००७ बृहस्पतिवार श्रावण शुक्ल ३
१३. **रक्षा बंधन** २८ अगस्त, २००७ मंगलवार श्रावण पूर्णिमा
१४. **कृष्ण जन्माष्टमी** ४ सितम्बर, २००७ मंगलवार भाद्र कृष्ण ८
१५. **विजय दशमी दशहरा** २१ अक्टूबर, २००७ रविवार अश्विन शुक्ल१०
१६ **गुरुवार स्वामी बृजानन्द दण्डी दिवस** २३ अक्टूबर, २००७ मंगलवार अश्विन शुक्ल १२
१७ **दीपावली/महर्षि दयानन्द निर्माण दिवस** ९ नवम्बर, २००७ शुक्रवार कार्तिक अमावस्या
१८. **बलिदान दिवस** २३ दिसम्बर, २००७ रविवार मार्ग शुक्ल १४

नोट : १. आर्यसमाजें इन पर्वो को उत्साहपूर्वक मनाएं। २. देशी तिथियों में घटाबढ़ी होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

निवेदक

मिठाई लाल सिंह
सभा प्रधान

विमल वधावन आर्य
सभा मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

"हमारा गांव वेद प्रचार योजना" का ढिकोली (बागपत) में शुभारम्भ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक धर्म प्रचार प्रसार के इतिहास से वर्तमान आर्यों में पुनः प्रेरणा का संचार करने के उद्देश्य से 'हमारा गांव वेद प्रचार योजना' का प्रारूप आर्य जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है। सभी आर्य पदाधिकारी, कार्यकर्त्ता आदि इस योजना को सावधानी से एक रिपोर्ट की तरह पढ़े परन्तु अपने अपने स्थानीय क्षेत्रों में इसे किस प्रकार लागू किया जाए इस पर चिन्तन मनन करें। कर्मठ आर्य जन ही ऐसी योजनाओं का क्रियान्वयन कर सकते हैं।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य लगभग २ माह पूर्व बागपत के ढ़िकोली गांव में एक कार्यक्रम में भाग लेने गए थे। श्री विनोद आर्य को उन्होंने सर्वप्रथम इस योजना का प्रारूप समझाया तथा मार्गदर्शन किया।

श्री विनोद आर्य ने अपने गांव के आस पास गावों में लगभग एक दर्जन स्थलों पर यज्ञ प्रवचन का आयोजन करने के लिए लोगों को प्रेरित किया। यह आयोजन इस प्रकार से रखे गए थे जिससे आर्य समाज से अपरिचित लोगों को इस प्रचार कार्य का लाभ प्राप्त हो। गांव गांव जाकर अपने सम्पर्क के आर्यसमाजी अथवा गैर आर्य समाजी लोगों को इस कार्य के लिए तैयार किया। अन्ततः यह योजना १२ दिसम्बर से १६ दिसम्बर तक के एक विस्तृत कार्यक्रम के रूप में तैयार हो गई।

सार्वदेशिक सभा की ओर से निःशुल्क प्रचारक श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी को इस प्रचार कार्यक्रम में अपना सहयोग देने के लिए निवेदन किया गया।

श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी १२ दिसम्बर को प्रातःकाल बागपत पहुंच गए। श्री विनोद आर्य के साथ उन्होंने निम्न १४ मुख्य प्रचार कार्यक्रमों को सम्बोधित किया।

दिनांक १२ दिसम्बर, २००६ (मंगलवार)

(१.) सम्राट पृथ्वीराज चौहान डिग्री कालेज, बागपत, उ०प्र०, आचार्य श्री कालूराम चौहान एवं डॉ० अनिल चौहान के प्रयास से ३०० छात्र-छात्राओं ने धर्म लाभ उठाया तथा गम्भीर प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए।

(२.) रिसाल आदर्श आर्य जूनियर हाई स्कूल रटौल, प्राचार्य मा० मंवल पाल आर्य, श्री सत्यव्रत आर्य, श्रीमती सुदेश जी के प्रयास से ५०० छात्र-छात्राओं ने लाभ उठाया,

(३.) ग्राम खैला बागपत, मा. कंवरपाल आर्य के आवास पर ग्रामीण जन समुदाय ने धर्म प्रचार का लाभ उठाया।

१३ दिसम्बर, २००६ (बुधवार)

(४.) कस्ब राटौल, ला. राकेश कुमार जी के आवास पर

(५.) ग्राम भूपखेडी, (गाजियाबाद), तेजसिंह आर्य के निवास पर

१४ दिसम्बर, २००६ (बृहस्पतिवार)

(६.) खैला ग्राम में सामूहिक कार्यक्रम

(७.) मेवला भट्टी (गाजियाबाद) मा० राजेन्द्र सिंह आर्य के आवास पर

१५ दिसम्बर, २००६ (शुक्रवार)

(८.) मेवला भट्टी, श्री दिनेश बंसल के आवस पर

१६ दिसम्बर, २००६ (शनिवार)

(९.) पटौली, श्री राजबीर सिंह आर्य के आवास पर

१७ दिसम्बर, २००६ (रविवार)

(१०.) ढ़िकौली, श्री विनोद आर्य के आवास पर

(११.) ढिकोली, श्री जोगिन्द्र सेठ के आवास पर

१८ दिसम्बर, २००६ (सोमवार)

(१२.) पूठड कस्बा, श्री जगवीर सिंह यादव जी के सौजन्य से

(१३.) हिसावदा, श्री हरदारी आर्य जी के सौजन्य से रात्रिकालीन सुन्दर कार्यक्रम में भारी संख्या में गांववासियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में सभामन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने भी भाग लिया।

१९ दिसम्बर, २००६ (मंगलवार)

(१४.) ढिकोली, मा. इन्द्रपाल सिंह जी के आवास पर बिस्मिल, लाहिड़ी, राजेन, अश्फाक का शहीदी दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर सर्वश्री संजीव, जितेन्द्र, हरिसिंह, कै० अलवेल सिंह, वेदपाल, जगवीर सिंह आर्य, हरदारी आर्य ने इस समापन समारोह को सम्बोधित किया।

श्री विमल वधावन जी इस समापन समारोह में भी उपस्थित हुए। उन्होंने इस प्रचार योजना के विभिन्न आयोजकों तथा उनके गांव के शिक्षित प्रमुख व्यक्तियों के लिए एक सौ सत्यार्थप्रकाश की प्रतियां वितरण हेतु प्रदान की।

इस विस्तृत कार्यक्रम का विशेष पहलू यह है कि प्रचार की प्रशंसा सर्वत्र हुई। परन्तु इस सारे कार्यक्रम पर लागत मात्र कुछ भी खर्च नहीं आया। समस्त आयोजन अलग अलग गांवों के आयोजकों द्वारा ही किए गए।

लागत आई केवल कर्मठता और कार्यक्रम चिन्तन की। इस लागत का प्रतिफल ईश्वर की नजरों में निर्धारित है।

आप भी इस नश्वर शरीर की लागत से ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करें। विचार विमर्श एवं सहायता हेतु सार्वदेशिक सभा की सेवाएं सदैव आपके लिए नियत हैं।

गुरुकुलों में बिजली और डीजल से मुक्ति के लिए सौर-उर्जा

मैं अक्सर दिल्ली से बाहर गुरुकुलों में जाता रहता हूं तथा वहां पर कुछ दिनों के लिए रुकता भी हूं। गुरुकुलों में रहकर मैं वहां बच्चों को खिलाता-पिलाता रहता हूं। यू०पी० में बिजली की बडी तंगी रहती है। गर्मियों में दिन को पंखें नहीं चलते और रात को चारों ओर घना अंधेरा छाया रहता है इस वजह से वहां बडी तकलीफ होती है।

एक दिन मुझे मूसापुर की प्रधानाचार्या श्रीमति कमलेश आर्या जी ने कहा कि सरकार की तरफ से इन दिनों एक योजना आई हुई है जिसके अन्तर्गत सरकार दस लाख के मूल्य की सौर ऊर्जा केवल २ लाख ५० हजार रुपये में दे रही है जिससे कि बिजली का मसला हल हो जायेगा। यहा पर तो हम लोग डीजल का प्रयोग करते-करते तंग आ गये हैं। कृपया आप लोग हमारी कुछ मदद कीजिए। मैंने कई गुरुकुलों और संस्थाओं को सौर ऊर्जा दिलाने के लिए मदद की। जिनपर लगभग तेरह लाख से कुछ अधिक खर्च हुआ है। ये गुरुकुल एवं संस्थाएं है –

१. अपंग असहाय जन विकास संस्थान, गुल्सेपुर जिला बिजनौर
२. गुरुकुल आर्य कन्या विद्यापीठ, कोतवाली मार्ग, नजीबाबाद
३. श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा
४. आर्य कन्या गुरुकुल, दाधिया,
५. महर्षि दयानन्द गऊशाला केन्द्र, गाजीपुर,
६. महर्षि दयानन्द गऊशाला केन्द्र, गाजीपुर
(पशुओं के लिए चारा)

– मुंशीराम सेठी, मैनेजिंग डायरेक्टर,
फरन्टीयर बिस्कुट फैक्टरी प्रा० लि०, नई दिल्ली।

श्री पं० हरिदेव जी आर्य, विद्यावाचस्पति, एम.ए. नही रहे

श्री हरिदेव जी आर्य का जन्म जामपुर (जिला डेरागाजीखान) पंजाब में हुआ था व आपकी प्रारम्भिक शिक्षा लाहौर में हुई तथा बाद में उन्होंने एम.काम. की शिक्षा सहारनपुर में रेलवे की नौकरी के साथ साथ प्राप्त की।

विभाजन के बाद फरवरी १९४८ में उनका विवाह श्रीमती सुशीला देवी से हुआ जिन्होंने आपके धर्म प्रेम से प्रेरित होकर आपके कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्यसमाज का कार्य किया व आज भी पूरी तरह समर्पित है।

आप यज्ञप्रेमी तथा स्वाध्यायशील रहे। तभी आपने अनेक पुस्तकों का सम्पादन, संकलन तथा भाष्य करके आर्य जगत में हलचल मचा दी। उनके द्वारा रचित प्रमुख साहित्य इस प्रकार है –

१. जगमगाते हीरे (३ भाग) २. वैदिक नित्य कर्म विधि (१६ संस्करण), ३. वैदिक सत्संग पद्धति ४. सदाचार की ओर, ५. ईश वन्दना ६. ईश्वर की ओर, ७. वैदिक मनुस्मृति, ८. श्रद्धानन्द उवाच, ९. पुष्पांजलि (दो भागों में), १०. मधुर भजन पुष्पांजलि, ११. प्रभात गीत, १२. वेदांजलि, १३. योगेश्वर श्रीकृष्ण, १४. राष्ट्रपितामह महर्षि दयानन्द

एक छोटी सी बिमारी के बाद आर्य समाज का यह चमकता सितारा व कर्मठ कार्यकर्त्ता पंचतत्व में विलीन हो गया।

– राजपाल शास्त्री

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव १२ फरवरी, २००७ (सोमवार) एवं ऋषिबोधोत्सव १६ फरवरी, २००७ (शुक्रवार) को

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं ऋषिबोधोत्सव का आयोजन समस्त आर्य जगत की संस्थाओं द्वारा अपने अपने कार्य क्षेत्रों में किया जाएगा।

महर्षि दयानन्द जयन्ति एवं ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर अधिकाधिक वैदिक धर्म प्रचार से सम्बन्धित सामग्री छोटे-बड़े साहित्य आदि खरीद कर शिक्षित स्थानीय नागरिकों में वितरित करें जिससे आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा से आधिकाधिक लोग अवगत हो सकें। यही है महापुरुषों की जयन्तियां मनाने और उनकी स्मृति में समारोह आयोजित करने के उद्देश्य।

पृष्ठ १ का शेष

दिल्ली सभा का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न

नव निर्वाचित पदाधिकारियों का नागरिक अभिनन्दन आर्यसमाज प्यारे लाल रोड, देव नगर की ओर से स्थानीय सार्वजनिक पार्क में किया गया। इस समारोह में सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल, दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदन लाल खुराना, पूर्व सांसद सुश्री अनीता आर्या एवं दिल्ली की पूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या मुख्य अतिथि थे। इस यज्ञ में श्रीमती एवं श्री कीर्ति शर्मा ने मुख्य यज्ञमान का स्थान ग्रहण कर कार्यक्रम को सुशोभित किया। यज्ञोपरान्त नव निर्वाचित पदाधिकारियों ने सदभावनापूर्वक आर्यसमाज के कार्यों को गति प्रदान करने का संकल्प लिया। इस आयोजन की अध्यक्षता पि० चन्द्रदेव जी द्वारा की गई।



१. दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नव निर्वाचित पदाधिकारियों के अभिनन्दन समारोह एवं सदभावना यज्ञ में उपस्थित आर्यजन। २. दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित प्रधान, महामन्त्री तथा कोषाध्यक्ष निर्वाचित होने के उपरान्त क्रमशः श्री वैद्य इन्द्रदेव, श्री दयानन्द मदान तथा श्री नरेन्द्र आर्य सुमन

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116/2006-
Licence No. U(C) 93/2006-
Licensed to Post Without Pre-payme

प्रणव का अर्थ

प्रणव का शाब्दिक अर्थ है गुञ्जन (humming) 'ओ३म्' मंत्र के रूप में परमात्मा का मूल–ध्वनि–सूचक नाम है।

यह ध्वनि हमारे अन्दर नस–नाडियों में संचार की ध्वनि के रूप में सुनी जा सकती है। साधक तथा योगी इस ध्वनि व नित्यप्रति सुनते हैं। बिजली के ट्रांसफारमर में होने वाली ध्वनि या मधुमक्खियों के दल की गुंज्जार या फिर हजारों वीणाओं की दूर से, एक साथ आने वाली ध्वनि से इस ध्वनि की कल्पना की जा सकती है। यह ध्वनि एक सशक्त आन्तरिक अनुभव है जो योगियों का परम लक्ष्य है।

साधक इस ध्वनि को आन्तरिक सत्र पर प्रकाश में परिनित करने का अभ्यास करते है जिससे उनके हृदय आलोकित होकर उन्हें आनन्दमय प्रकाश का अनुभव होने लगता है।

नादन्दी शक्ति की ध्वनि को भी प्रणव के नाम से जाना जाता है। इस ध्वनि को सुनने से जीव परमात्मा के आनन्द स्वरूप का अनुभव करने लगता है।

जब जीव निचले चक्रों में वास करता है या फिर वह सांसारिक वासनाओं से घिरा रहता है तो यह ध्वनि सुनाई नहीं देती। पर जब उसका मन पूर्णतया शान्त और निश्चय हो जाता है, यह ध्वनि स्वतः सुनाई देने लगती है।

यदि आप अपने शान्त क्षणों में इस ध्वनि को सुनने का अभ्यास करें तो आप उस सर्वव्यापक सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान के दिव्य आनन्द का प्रतिदिन साक्षात्कार कर आनन्द विभोर हो जाएंगे। 'ओ३म्' मंत्र के रूप में परमात्मा का मूल ध्वनि सूत्र नाम है। उसी को प्रणव कहते हैं।

– चितरञ्जन वत्स
ई. ८५, अंसारी नगर, नई दिल्ली

महात्मा चैतन्यमुनि जी को 'आर्य शिक्षक रतन' सम्मान



वैदिक वशिष्ट आश्रम (महर्षि दयानन्द धाम) तथा वैदिक वशिष्ट पत्रिका के संस्थापक, वरिष्ठ साहित्यकार एवं सुप्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता पूज्यपाद महात्मा चैतन्यमुनि जी को उनके द्वारा शिक्षा, समाज एवं साहित्य के क्षेत्र में की गई सेवाओं के लिए आर्य युवक समाज हरियाणा की ओर से आर्य शिक्षक रतन के सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान बालदिवस के शुभावसर पर आश्रम हरिमन्दिर संस्कृत महाविद्यालय, पटौदी के अधिष्ठाता पूज्य स्वामी धर्मदेव जी महाराज के करकमलों द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर जगदगुरु शंकराचार्य श्री स्वामी माधवानन्द जी महाराज, स्वामी सुधानन्द जी, साध्वी निर्मला योगभारती जी, स्वामी सुखानन्द जी, चौधरी ओमप्रकाश चौटाला (पूर्व मुख्यमन्त्री, हरियाणा), श्री मदनलाल खुराना (पूर्व राज्यपाल), चौधरी सुल्तानसिंह (पूर्व राज्यपाल), प्रो० रामविलास शर्मा (पूर्व मन्त्री) आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

– अखिलेश भारतीय प्रधान संपादक
वैदिक वशिष्ट पत्रिका एवं आश्रम संचालक

प्रतिष्ठा में

10150 पुस्कालयाध्यक्ष (12/99)
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर में ५ पद रिक्त

आर्य कन्या गुरुकुल, आर ब्लाक, रिंग रोड, न्यू राजेन्द्र नगर दिल्ली–६० के लिए निम्न पद रिक्त हैं –

१. **संस्कृत अध्यापिका** – मध्यमा की छात्राओं को संस्कृत व्याकरण, साहित्य आदि पढाने के लिए गुरुकुल से स्नातकोत्तर
२. **हिन्दी, अंग्रेजी अध्यापिका** (अनुभवी एवं सुशिक्षित)
३. **आवासीय वार्डन** (स्वस्थ, परिश्रमी, न्यूनतम, १०वीं पास)
४. **आवासीय पाचिका** (परिश्रमी एवं भोजन आदि पकाने की कला में निपुण)

वेतन – योग्यतानुसार साक्षात्कार के बाद निर्धारित होगा। कृपया पूर्ण योग्यता सहित आवेदन उपरोक्त पते पर भेजे। उसके उपरान्त साक्षात्कार हेतु बुलाया जाएगा।

– माता प्रेमलता, फोन नं० : २८७४२६६७, २८७४१५९...

ऊषापान के चमत्कार

प्रतिदिन प्रातः उठते ही बिना कुल्ला किए ४–५ ग्लास पानी (अनुमानतः १.५ लीटर) पीने से आपके शरीर में एक सप्ताह के अन्दर–अन्दर इस ऊषापान का चमत्कारी प्रभाव आपके स्वयं ही दिखाई देने लगेगा। सर्दियों में हल्के गुनगुने पानी का जबकि गर्मियों में सामान्य पानी का प्रयोग करना चाहिए। जल हमारे शरीर से समस्त संकलित विजातीय पदार्थों को मलरूप में शरीर से निष्कासित करने में सबसे अधिक सहायता करता है। बस यही सूत्र ऊषापान के चमत्कार का आधार है।

नियमित ऊषापान से पाचन क्रिया, ब्लड प्रेशर, तनाव, आखों की कमजोरी पर नियन्त्रण, जोड़ों में दर्द, मोटापा, खांसी, श्वांस रोग, टी०बी० शरीर से एसिड (पित), किड़नी की पथरी, मूत्राशय कॆंसर, कब्ज, शुगर अनियमित मासिक धर्म, सिरदर्द, आदि की निवृत्ति आवश्यक रूप से देखी जा सकती है। इस प्रक्रिया को अपनाने वाले महानुभाव इस लक्षण से चिंतित न हो कि ऊषापान करने के बात लगभग ३–४ घण्टे तक प्रत्येक आधे–आधे घण्टे बाद पेशाब आता है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुदित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in वेबसाईट : http://www.sarvadeshik.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४५ अंक १७ | ११ फरवरी से १७ फरवरी, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १६६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | फा०कृ०६

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा

"सार्वदेशिक साप्ताहिक" के विरुद्ध कार्यवाही लागू करने पर रोक

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान श्री देवरत्न आर्य एवं श्री प्रकाश आर्य ने अनाधिकृत रूप से प्रेस तथा रजिस्ट्रेशन कानून १८६० के अन्तर्गत सार्वदेशिक साप्ताहिक की घोषणा में परिवर्तन करवाने की प्रार्थना पुलिस उपायुक्त (लाईसेन्सिंग विभाग) के समक्ष प्रस्तुत की थी। इस विभाग द्वारा सार्वदेशिक साप्ताहिक के सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक श्री विमल वधावन आर्य को नोटिस जारी करते हुए स्पष्टीकरण मागा था। इस नोटिस का विधिवत उत्तर श्री विमल वधावन आर्य द्वारा विभाग को दे दिया गया।

इस सम्बन्ध में श्री विमल वधावन आर्य ने दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष एक याचिका प्रस्तुत करते हुए इस विभाग की कार्यवाही को चुनौती दी।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने रिट याचिका सं० ३७१/२००७ में जारी अपने आदेश दिनांक १७-१-२००७ द्वारा डी.सी.पी. (लाईसेन्सिंग) पर श्री विमल वधावन आर्य के विरुद्ध किसी भी कार्यवाही को लागू करने से रोक लगा दी है। परिणामतः सार्वदेशिक साप्ताहिक के सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक के रूप में श्री विमल वधावन आर्य का नाम ही वैध एव विधि सम्मत है।

श्री देवरत्न आर्य, श्री प्रकाश आर्य एवं श्री राजसिंह आदि स्वार्थी लोग उच्च न्यायालय के आदेश के विरुद्ध झूठा दुष्प्रचार कर रहे हैं।

श्री देवरत्न आर्य एवं श्री प्रकाश आर्य ने दिल्ली उच्च न्यायालय में अग्निवेश के विरुद्ध चल रहे मुकदमें में भी इसी प्रकार श्री विमल वधावन आर्य के नाम पर श्री प्रकाश आर्य का नाम लिखवाने के लिए प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करके मुकदमें के निर्णय में देरी करवाने का प्रयास किया था परन्तु वह निर्णय पूर्ववत सुरक्षित रखा गया है। झूठे षडयन्त्रों से आर्य जनता भ्रमित न हो।

राजस्थान में दयानन्द जयन्ती पर एच्छिक अवकाश घोषणा का स्वागत

उदयपुर/०१ दिसम्बर, ०६, राजस्थान सरकार द्वारा नये कलेण्डर सन् २००७ में स्वतंत्रता संग्राम के पुरोधा, समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिन १२ फरवरी को एच्छिक अवकाश की घोषणा का आर्य जगत ने स्वागत करते हुए राजस्थान प्रान्त की मुख्य मंत्री श्रीमती माननीय वसुन्धरा राजे एवं सरकार को धन्यवाद ज्ञापित किया है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह एवं मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने राजस्थान की मुख्यमन्त्री श्रीमती वसुन्धरा राजे को लिखे पत्र में कहा है कि उनका यह प्रयास राष्ट्र प्रपितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती को श्रद्धांजलि माना जाएगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिलाओं और दलितो को बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए समाज मे विशेष एतिहासिक प्रयास किए। आज २१वीं सदी का भारत अन्यथा एक आदिवासी समूह की तरह कुरीतियों, रुढ़ियों में फंसा ही खड़ा रह जाता।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने मुख्यमन्त्री को मुम्बई में बुलाकर सम्मानित करने का भी प्रस्ताव रखा है।

राजस्थान से पूर्व केन्द्र सरकार तथा हरियाणा राज्य में महर्षि दयानन्द जयन्ति एच्छिक अवकाश घोषित ही है।

आर्यसमाज हिरण मगरी के मंत्री श्री गिरीश जोशी ने भी मुख्यमन्त्री के नाम लिखे पत्र में उन्हें धन्यवाद दिया है।

कलयुग का एक दृश्य

दान देने वालों पर आरोप लागएंगे दान चाटने वाले



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति भी हैं। श्री सुदर्शन शर्मा जी को सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग दिनांक २६-३-२००६ में सर्वसम्मति से सभा का कार्यकारी प्रधान नियुक्त किया गया था।

विदित हो कि अग्निवेश द्वारा सार्वदेशिक सभा कार्यालय पर कब्जा किए जाने के उपरान्त गुरुकुल कांगडी को सुरक्षित रखने के लिए कई गम्भीर प्रयास किए गए। बैंक खाते के सुरक्षित संचालन के लिए आर्य विद्या सभा द्वारा पारित प्रस्ताव के अनुरुप लगभग १८ लाख रुपए की राशि उसी बैंक में एक नया खाता खुलवाकर उसमें रखी गई थी। उसका प्रयोग केवल गुरुकुल के कार्यों में ही किया गया जिनका उल्लेख पूर्ण रुप से विद्या सभा के खातों में दर्शाया गया।

अग्निवेश के एक भ्रष्ट चहेते ने हरिद्वार अदालत में श्री सुदर्शन शर्मा कुलाधिपति एवं प्रधान विद्या सभा, श्री स्वतन्त्र कुमार कुलपति तथा एक अन्य कर्मचारी के विरुद्ध १८ लाख रुपए के गबन का अरोप लगाकर वाद प्रस्तुत कर दिया।

इधर श्री देवरत्न आर्य द्वारा अपनी वित्तीय अनियमितताओं और अन्य संगठन विरोधी कार्यों का जब कोई जवाब न बन पाया तो श्री सुदर्शन शर्मा के विरुद्ध गबन के आरोप लिख-लिखकर सारे देश के आर्यों में उन्हें बदनाम करते रहे —

शेष पृष्ठ २ पर

जीवन मृत्यु नहीं ईश्वरीय संदेश है

— विमल वधावन आर्य

हरिद्वार। माता लीलावती आर्य शिशु परोपकारिणी न्यास ने आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में स्वामी आत्मबोध सरस्वती की ८४वीं जयंती के अवसर पर अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया जिसमें वैदिक विचारधारा के प्रचार एवं प्रसार में असाधारण योगदान के लिए चार व्यक्तियों को सम्मानित किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री विमल वधावन, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० स्वतंत्र कुमार, प्रतिनिधि सभा उत्तरांचल के प्रधान हजारीलाल अग्रवाल, पूर्व प्रधान यशपाल आर्य, डॉ० कृष्णदेव, रूकमणी आर्या, देवराज आर्य ने वैदिक प्रवक्ता आर्य तपस्वी आचार्य सुखदेव को स्वामी धर्मानन्द विद्या मार्तण्ड आर्य भिक्षु पुरस्कार, नैष्ठिक ब्र० यज्ञदेव याज्ञिक को ब्र० अखिलानन्द आर्य भिक्षु पुरस्कार और विमल प्रकाश तथा धनंजय गुप्त को संयुक्त रूप से स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार से सम्मानित किया। इन्होंने सबको शॉल ओढ़ाकर तथा अभिनन्दन पत्र और श्रीफल भेंटकर, आर्य तपस्वी सुखदेव को ग्यारह हजार रुपये और तीनों को इक्यावन इक्यावन सौ रुपये प्रदान किए।



श्री आर्य तपस्वी ने ग्यारह हजार की राशि एक गाय खरीदने के लिए गुरूकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों को दान में दे दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता रूक्मणी आर्या ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने कहा कि महापुरुषों का जीवन प्रेरणा देने वाला होता है। महात्मा नारायण स्वामी और स्वामी आत्मबोध सरस्वती ने आर्य समाज के सैद्धांतिक पक्ष को प्रचारित करना अपना ध्येय बनाया था।

शेष पृष्ठ २ पर

पांच लाख के कोष से

महात्मा नारायण स्वामी की स्मृति में आध्यात्मिकता का प्रचार हो

अभिनन्दन समारोह के उद्‌बोधन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने कहा कि इस आर्य वानप्रस्थ आश्रम के संस्थापक श्री महात्मा नारायण स्वामी जी एक दिव्य एवं प्रेरणादायक आत्मा थे। उनके चेहरे से, उनके विचारों, व्यवहारों से उनकी उच्च आध्यात्मिकता के दर्शन होते थे। आज भी धर्म प्रेमी लोगो के लिए ऐसी आत्माए निरन्तर उत्साह सृजन करती है।

श्री नारायण स्वामी जी के द्वारा इस वानप्रस्थ आश्रम की स्थापना तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान होने के नाते हैदराबाद सत्याग्रह का सफल संचालन उन्हें इतिहास पुरुषों की पंक्ति में भी अभिनन्दनीय स्थान प्रदान करते हैं।

श्री विमल वधावन ने कहा कि श्री नारायण स्वामी जी की स्मृति एवं वानप्रस्थ आश्रम को वर्तमान धर्मप्रेमी जनों में आकर्षण का केन्द्र बनाए रखने के लिए एक विशाल धनराशि का कोष बनाकर उसके ब्याज से प्रतिवर्ष किसी सुअवसर पर ईश्वर भक्त, आध्यात्मिक और सुहृदय जनसेवको को सम्मानित किया जाना चाहिए। उन्होंने इस पवित्र कार्य के लिए पहल करते हुए अपनी ओर से पचास हजार रुपए प्रदान करने की घोषणा की। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि इस कोष की राशि पांच लाख रुपए से अधिक ही होनी चाहिए।

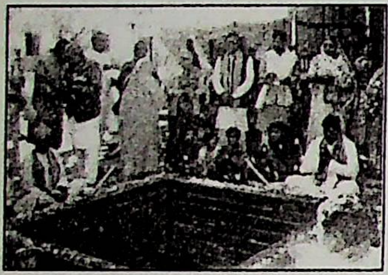
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की विचारधाराओं से अनुप्राणित वीतराग तार्किक शिरोमणि एवं महान विद्वान श्री स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती के द्वारा सन् १६०७ ई० में जिन पांच गुरुकुलों की स्थापना की गयी थी इन्हीं में से एक आपका (प्रिय) गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर जोकि अपनी स्थापना से ही भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत को पूरे विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित करता आ रहा है व स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती के संकल्प के अनुरूप आज भी भारतीय संस्कृति की निःशुल्क शिक्षा प्रदान करता हु‍ए स्थापना शताब्दी समामरोह **दिनांक ६ अप्रैल, २००७ से ६ अप्रैल २००७ तक** बड़े ही हर्षोल्लास व धूमधाम से मनाने जा रहा है।

इस भव्य समारोह पर कुछ अत्यन्त विशिष्ट व्यक्तियों को आमन्त्रित किया जा रहा है व देश विदेश के सभी आर्यजनों को भी सादर आमंत्रित किया जाता है। कृपया वे अधिक से अधिक संख्या में पधार कर समारोह की शोभा बढ़ायें।

माता प्रेमलता जी का मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में तूफानी दौरा

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामन्त्राणि माता प्रेमलता जी के नेतृत्व में एक आर्य दल ने थांदला, झाबुआ आदि क्षेत्रों में लगभग १० दिन का तूफानी दौरा किया। इस दौरे में माता जी के



साथ दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री वेदव्रत मेहता, मन्त्राणि श्रीमती ईश्वर रानी मेहता, श्री रितनेश जी (अलीगढ़) तथा थांदला आश्रम के पदाधिकारी एवं अन्य सहयोगी भी शामिल थे।

इन आदिवासी क्षेत्रों में चल रहे अपने आश्रमों तथा अन्य संस्थाओं के अतिरिक्त इस दौरे मे माता जी ने कई गांवों, शहरों, कस्बों में ईसाईयों की समाजद्रोही गतिविधियों का टर कर विरोध एवं खण्डन करते हुए सामान्य अनपढ़ ग्रामीण आदिवासियों को अपने प्राचीन वैदिक धर्म पर अढ़िग रहने की प्रेरणाएं प्रदान की।

माता जी ने समस्त भारतीय जनमानस को प्राचीन वैदिक धर्म का सैद्धान्तिक चिन्ह यज्ञोपवीत धारण करने का सन्देश देने के साथ–साथ उन्हें यज्ञोपरान्त यह चिन्ह प्रदान भी किए।

उड़ीसा में ३० दिवसीय वैदिक ज्योति यात्रा

उड़ीसा में प्राचीन पुण्य पीठ वेदव्यास से वैदिक ज्योति यात्रा का शुभारम्भ नव विक्रमाब्द २०६४ के ब्रह्ममुहुर्त से होगा। यह वैदिक यात्रा ३० दिन तक उड़ीसा के विभिन्न हिस्सों में प्रत्येक स्थान–स्थान पर वैदिक प्रवचन आदि करते कराते हुए भ्रातत्व, पवित्रता आदि सन्देश बांटती जएगी। वैदिक संस्कृति परिषद के मन्त्री श्री धनेश्वर बहेरा ने इस महान कार्य में धन सहयोग की अपील करते हुए कहा है कि इसके लिए ३० दिन तक ३ बावहनों का व्यय, माईक आदि की व्यवस्था, यज्ञ सामग्री, घी आदि तथा सम्मिलित होने वाले यात्रियों का भोजन व्यय आदि में सहयोग करने वाले धर्म लाभ के भागीदार बनेंगे। इसमें शामिल होने के लिए उन्होंने धर्म प्रेमी जनों को भी आमन्त्रित किया है।

सम्पर्क - धनेश्वर बहेरा,
गुरुकुल वैदिक आश्रम,
वेदव्यास, राउरकेला-४१,
जिला - सुन्दरगढ़ उड़ीसा,
फोन - ०६६१-२६६०६४५

आर्य वीर सम्मेलन

आर्यवीर दल खुर्जा के द्वारा हिन्दू (आर्य) धर्म जागरण एवं शुद्धि सम्मेलन का आयोजन दिसम्बर माह की ८, ६ व १० को आर्य समाज बलदेवाश्रम खुर्जा में सहर्षोल्लास मनाया गया, सभी नगर वासियों ने अधिक से अधिक संख्या में आकर कार्यक्रम का लाभ उठाया। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी शिवानन्द जी, आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री, भजनोपदेशिका संतोषवाला जी, श्री राकेश आर्य, भानूप्रताप आर्य, देवेन्द्र कुमार आर्य, भगवानदास, ओ३म् प्रकाश (फ्रन्टियर), प्रेमपाल शास्त्री, बाबूलाल आर्य, महेश कुमार शास्त्री, शिवध्यान सिंह चौहान, मंगलदेव शर्मा आदि अनेक विद्वानों ने धर्म, संस्कृति, राष्ट्र, इतिहास, शुद्धि महत्व इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला।

रक्तदान शिविर

पूर्व विधायक स्व० अर्जुनदास मदान की स्मृति में रक्तदान शिविर का आयोजन गुमानपुरा स्थित मल्टीपरपज स्कूल प्रागण में किया गया। आर्यसमाज के जिला प्रधान व समिति के उपाध्यक्ष एवं शिविर प्रभारी अर्जुनदेव चढ़डा ने बताया कि रक्तदान शिविर में कोटा कलेक्टर श्री आलोक द्वारा स्वयं रक्तदान कर शिविर का शुभारम्भ किया। श्री आलोक ने इस अवसर पर कहा कि कोटा में स्वैच्छिक रक्तदान की बहुत जागरूकता है तथा कोटा जिला पूरे उत्तर भारत में सर्वाधिक जिला बन गया है। रक्तदान जागृति गांवों में भी इसी प्रकार फैले ऐसा हम सबको प्रयास करना चाहिए। स्वर्गीय मदान की स्मृति में आयोजित यह रक्तदान शिविर अन्य लोगों को प्रेरणा देगा। रक्तदान का लक्ष्य ७१ यूनिट रखा गया तथा चूंकि स्व० मदान ७१ वर्ष के थे शिविर में ८६ यूनिट रक्तदान हुआ।

पृष्ठ १ का शेष

जीवन मृत्यु नहीं ...

उन्होंने कहा कि आर्य समाज के सिद्धान्त सम्पूर्ण समाज की शक्ति है। यह शक्ति ही समाज और राष्ट्र को जोड़ती है। श्री विमल ने कहा कि जीवन मृत्यु के लिए नहीं है। यह जीवन हमें निःस्वार्थ और निष्पक्ष भाव से उच्च कोटि का कार्य कर परोपकार करने के लिए मिला है। यह ईश्वरीय संदेश है।

गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य सुखदेव ने कहा कि आम समाज में ऐसे भ्रष्ट और चरित्रहीन व्यक्ति पैदा हो गए है जो समाज को तोड़ने की बात करते हैं। ऐसे में आर्य समाज अपने वैदिक विचारों से चारित्रिक उत्थान के लिए रचनात्मक भूमिका निभा सकता है। इनके अतिरिक्त सर्वश्री आचार्य कृष्णदेव वेद प्रकाश, हजारीलाल अग्रवाल, प्रो० महावीर, यज्ञदेव याज्ञिक, विमल प्रकाश, धनंजय गुप्त, मनीषी, प्रो० जयदेव वेदालंकार, विनोद विद्यालंकार, माता पुष्पशोभा, यशपाल आर्य, नन्दिनी नागिया ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मनीषा और देवराज आर्य ने किया।

महर्षि पाणिनि स्मारक मन्दिर

पाणिनि कन्या महाविद्यालय, तुलसीपुर वाराणसी (उ०प्र०) में महर्षि पाणिनि मन्दिर का निर्माण कर के एक दर्शनीय केन्द्र स्थापित करने की योजना तैयार की गई है। इस में पंचांग व्याकरण को



पाणिनि कन्या महाविद्यालय तुलसीपुर, वाराणसी, उ०प्र०-221 010

संगमरमर पर अंकित करके दक्षिण भारत शैली में सुन्दर कलात्मक रूप दिया जाएगा। इसके लिए विशाल धनराशि की आवश्यकता है। दानी महानुभावों के नाम शिलापट्ट पर अंकित किए जाएंगे।

आचार्या प्रज्ञा देवी जी की ७०वीं जयन्ति पर ५ मार्च ११ मार्च की तिथियों में सामवेद परायण यज्ञ का आयोजन हो रहा है। अन्तिम दिन दीक्षान्त समारोह का आयोजन होगा।

धर्मप्रेमी महानुभाव इस समारोह में आमन्त्रित हैं।

फोन नं० ०५४२–६५४४३४०

पुस्तक समीक्षा

स्वाध्याय के माध्यम से पूज्य स्वामी सत्यपति जी के योग शिविर का पुण्य लाभ आप तक पहुंचाने के लिए

ब्रह्ममेधा

पृष्ठ संख्या : ४१८, मूल्य : १५० रुपये
प्रकाशक : वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड, सागरपुर, साबरकांठा, गुजरात - ३८३३०७
दूरभाष : ०२७७४ - २७७२१७

प्रतिवर्ष पूज्य स्वामी सत्यपति जी के पावन सान्निध्य, मार्गदर्शन एवं सुभाशीष की छाया में हजारों लाखों धर्मप्रेमी आत्माओं ने साधना योग शिविर आदि में प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने जीवन का कायाकल्प किया है। परन्तु जो आत्माएं सासारिक कार्यों को करते करते – इस शुभ कार्य में किसी कारण स्वय को सम्मलित न कर सकी हो उनके लिए एक विशेष ग्रन्थ ब्रह्ममेधा तैयार करके पं० सुमेरुप्रसाद दर्शनाचार्य ने एक महान उपकार का कार्य किया है। चार खण्डों (अध्यायों) में विभाजित इस ग्रन्थ के समस्त विषय विचारोत्तेजक एवं आत्मोत्थान के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध कराने में समर्थ है। जो महानुभाव शिविरों में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं या नही कर सकते या भविष्य में करने की योजना बना रहे हो सबके लिए यह ग्रन्थ विशेष उपयोगी है। परमपिता परमात्मा की पावन गोद में किलकारियां करते–२ जीवन यापन करने के इच्छुक आत्माओं के लिए यह ग्रन्थ एक सुमार्ग दर्शन साबित होगा।

– विमल वधावन आर्य

पड़ाव को मंजिल कहे !

पृष्ठ संख्या : ६६ मूल्य : लागत व्यय १३ रुपये
लेखक : श्री सुमन कुमार आर्य, *५६४, चेतन निवास, जवाहर कालोनी, हरि ओ३म् सोसाईटी के सामने सरदार नगर, अहमदाबाद – ३८२४७५*

आर्य लेखक ने वैदिक सिद्धान्तों के अनुरुप जीवन के लिए ऐसे प्रेरक भजनों, गीतों और गजलों की रचना की है जो जीवन को एक पाड़व मात्र मानकर आत्मा की इस अनन्त यात्रा पर पाठकों के मन को इस दिशा में लाने का प्रयास करते हैं कि इस पडाव को ही अन्तिम मंजिल न मान बैठना। ईश्वर भक्ति के साथ–साथ सामाजिक समस्याओं से जूझते रहना ही सच्चा आर्यत्व है। जीवन की पवित्रता अपने अन्दर सुधारवाद की निरन्तर भावना तथा वासनाओं, इच्छाओं से मुक्ति ही हमें मंजिल तक पहुंचा सकती है। मोक्ष उस मंजिल का नाम है। हमारे अन्दर यदि यह लक्षण नहीं आते तो जन्म मरण के चक्र व्यूह में फंसे रहना ही हमारी नियति बनी रहेगी।

लेखक तथा उनके सहयोगी प्रकाशकों की मनोदशा का सहज अनुमान इस बात से लगता है कि पुस्तक का प्रकाशन उन्होंने व्यापार मान कर नही बल्कि प्रेरणा मार्ग तैयार करने के उद्देश्य से किया है – मूल्य के साथ वैकल्पिक मूल्य है पूरी पुस्तक पढ़ने का वचन।

– विमल वधावन आर्य

पृष्ठ १ का शेष

दान देने वालों पर ...

ये कथित स्वार्थी आर्य। यहां तक कि आर्य संदेश में भी खूब विषवमन दिया गया। हरिद्वार की अदालत ने अपने आदेश दिनांक २३ जनवरी, २००७ के द्वारा श्री सुदर्शन शर्मा, श्री स्वतन्त्र कुमार आदि पर लगाए गए गबन के आरोपों को रद्द कर दिया है। इस आदेश में यह स्पष्ट कहा गया है कि विपक्षीगण द्वारा खोले गए खाते से धनराशि संस्था के कार्य हेतु ही निकलवाई गई है और धनराशि का कोई गबन विपक्षीगण द्वारा नहीं किया गया।

समूचा आर्य जगत जानता है कि सार्वदेशिक सभा के वर्तमान प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जी तथा कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा सदैव आर्य जगत की विभिन्न गतिविधियों के लिए स्वयं बढ़ चढ़कर दान देते रहे हैं। ऐसे महान दानवीरों पर वो लोग आरोप लगाने का साहस कैसे जुटा लेते हैं जो स्वयं दान इकट्ठा करना तथा उसे व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए चाट जाना ही जानते हैं। यहां तक कि दान प्राप्ति का कोई विस्तृत विवरण न देने की परम्पराएं भी ऐसे स्वार्थी लोग आर्य समाज में चला रहे हैं। मॉरिशस का दान और दिल्ली सम्मेलन इनके ताजा उदाहरण हैं। उनका कोई उत्तर इनके पास नहीं। इसके विपरीत गबन के आरोप उन पर जो लाखों रुपया दान देने में कभी संकोच भी नहीं करते। दान देने वालों पर आरोप लगाएंगे स्वार्थी और बेहिसाबी स्वच्छन्दी तत्व यह केवल कलयुग का एक दृश्य मात्र है। परन्तु सच्चे और धार्मिक पुरुषों का कलयुग भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। सदैव स्मरण रखना चाहिए यह प्रेक वाक्य – **जिनकी वाणी में सत्यता, कर्म में परोपकार और हृदय में धर्म बैठा हो उसका कलयुग भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता।**

– विमल वधावन आर्य

२०वां निःशुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा शिविर

आर्यसमाज कलकत्ता शिविर (माइक्रोसर्जरी द्वारा) ७ जनवरी, २००७ रविवार को सुप्रसिद्ध नेत्र सर्जन डॉ० रजनी सर्राफ द्वारा सम्पन्न किया गया। [illegible] रोगियों का सफल आपरेशन किया गया।

वैदिक धर्म प्रचार शिविर अर्द्ध कुम्भ मेला २००७ सम्पन्न

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में इलाहाबाद जनपद की समस्त आर्यसमाजों का संयुक्त प्रचार शिविर अर्द्ध कुम्भ मेला २००७ सकुशल एवं निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इस शिविर में पूरे भारतवर्ष से शिविरार्थी बड़ी मात्रा में पहुंचे। शिविर का उद्घाटन ३ जनवरी, २००७ (पौष पूर्णिमा) को हुआ। पूरे माह चलने वाले शिविर में प्रतिदिन योग कक्षा आचार्य विश्वदेव मुनि, (फैजाबाद) एवं योग चर्चा स्वास्थ्य चर्चा तथा राष्ट्रीय चिन्तन पर गम्भीर चर्चाएं हुई।

इस शिविर में मुख्य रूप से श्री जगदीश कुमार आर्य भजनोपदेशक, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, रायला भीलवाड़ा राजस्थान, स्वामी विश्वचक्षुमुमुक्ष बरेली, श्री ऋषि देव मुनि बीकापुर, फैजाबाद, श्री श्याम किशोर आर्य सिद्धान्त शास्त्री, कीडगंज, श्री मदन मोहन दिव्य, स्वामी छगनसानन्दगिरि – मध्यप्रदेश, श्री हरिश्चन्द्र आर्य, दयानन्द मठ, घण्डरा कांगडा हिमाचल प्रदेश, श्री ज्ञानदेव सत्यार्थी, बद्री आश्रम, श्री यशवन्त मुनि रोहतक, स्वामी धर्मनन्दजी, गुरूकुल भुज्जाबली फरीदाबाद, ब्रह्मचारी नरेन्द्र आजमगढ़ राजकुमार आर्य, भजनोपदेशक, गुरुकुल औरैया, श्री ज्ञानेन्द्र आर्य योगाचार्य – समस्तीपुर, बिहार प्रचारार्थ उपस्थित रहे।

प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त से प्रारम्भ होकर यह शिविर पूरे दिन अनवरत चलता रहा। भोजनावकाश के पश्चात् सायंकाल भी उपदेश वेद कथा भजनोपदेश का कार्यक्रम सुचारूरूप से चला। शिविर के समापन पर एक सुन्दर स्मारिका का विमोचन हुआ।

इस शिविर में पधारे विशिष्ट अतिथियों को निःशुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरित की गयी एवं टोकन मूल्य पर बिक्री हेतु उपलब्ध रही। कई दानदाताओं द्वारा साहित्य प्रकाशित करवाकर वातावरण रहा। दिनांक २१ जनवरी, २००७ को आर्य वीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश की बैठक हुई। जिसका संचालन मंत्री श्री प्रमोद कुमार आर्य ने किया।

केकड़ी राजस्थान में नव गुरुकुल

श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल महाविद्यालय, अजमेर रोड, केकड़ी, राजस्थान का नवारम्भ (मूलचन्द राजौरिया वैदिक अनुसन्धान एवं विकास संस्थान (रजि०) द्वारा सञ्चालित) का दिनांक १–४–२००७ से किया जा रहा है। इसकी सम्पूर्ण जानकारी इस प्रकार है – कक्षा ६ से ६ तक सभी विषयों का अध्यापन कराया जायेगा। रहने, खाने, पढ़ने आदि की उत्तम व्यवस्था है, प्राकृतिक सौन्दर्य गुरुकुल परम्परा के अनुरूप श्रेष्ठ है। इस गुरुकुल की शोभा राजस्थान की देशी गौवों एवं विभिन्न फलदार वृक्षों के बाग से शोभायमान है। विद्यालय का उददेश्य सारे संसार के विद्यार्थियों को वैदिक मान्यताओं से ओत प्रोत करके कर्तव्यनिष्ठ, उत्तम ज्ञानवान, पितृभक्त व देशभक्त बनाना है, जिससे पढ़ने के पश्चात् यहां के विद्यार्थी जहां भी जायें देशभक्ति के भाव से समाज की सेवा करें।

कृपया इच्छुक माता पिता एवं विद्यार्थी निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें –

श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल महाविद्यालय
अजमेरी रोड, केकड़ी, राजस्थान,
फोन : ९८६८९२५३७५ (प्रधानाचार्य),
९४१४००४९८७, ०१४६७–२२२२११ (व्यवस्थापक)

लाला लाजपतराय बलिदान दिवस

कोटा १७ नवम्बर पंजाब केसरी लाला लाजपतराय का बलिदान दिवस जिला आर्यसभा कोटा द्वारा आर्यसमाज तलवंडी में वेद मंत्रों द्वारा यज्ञ में आहुति देकर मनाया गया है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व महापौर सुमन श्रृंगी ने लाला जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि लाला जी के बलिदान को सदा याद किया जायेगा। लाला जी का बलिदान हमें देश सेवा की प्रेरणा देती है। आपने देश के युवकों को प्रेरित कर देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपने संस्कृति की रक्षा के लिए डी.ए.बी. स्कूलों की स्थापना में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्डा ने 'पगड़ी संभाल जट्टा पगड़ी संभाल' से अपने उद्बोदन में कहा कि लाला जी ने समाज के सभी शोषित वर्गों के लिए आंदोलन किया। किसानों (जट्टों) को पगड़ी की महत्ता बताते हुए कहा कि अपने देश एवं अपना स्वाभिमान सबसे ऊपर है, हमें इसकी रक्षा करनी चाहिए। लाला जी आर्यसमाज को अपनी माता, वैदिक धर्म को अपना पिता एवं देव दयानन्द को अपना गुरु मानते थे। आर्यसमाज गायत्री विहार के प्रधान श्री अरविंद पांडे, हाड़ौती क्षेत्रीय वेद प्रचार समिति के प्रधान श्री रामप्रसाद याजिक, आर्यसमाज तलवंडी के प्रधान श्री योगराज कुमरा तथा जिला सभा के मंत्री श्री कैलाश बाहेती ने विचार व्यक्त किए।

विश्वशान्ति एवं पर्यावरण शुद्धि यज्ञ पर प्रार्थना कराई सांसद धर्मेन्द्र ने

आर्यसमाज अंधेरी (पश्चिम) का २०वां वार्षिक समारोह २८ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर, २००६ तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर २१ कुण्डीय चतुर्वेदीय महायज्ञ का आयोजन विश्वशान्ति एवं पर्यावरण शुद्धि के लिए किया गया। १८–१२–२००६ को इस महायज्ञ का उद्घाटन सांसद एवं सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री धमेन्द्र जी ने दीप ज्योति प्रज्वलित करके किया। यज्ञ के उपरान्त विश्वशान्ति के लिए अपने शब्दों में जो प्रार्थना धर्मेन्द जी ने कराई वह इतनी भावपूर्ण थी कि समस्त उपस्थित जन समूह ने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ० वागीश शर्मा जी ने यज्ञ के महत्व पर प्रवचन में विश्वशान्ति के सम्बन्ध में अपने विचार रखे। ऋग्वेद के मन्त्रों का आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की छात्राओं ने बड़ी सुन्दर विधि से सस्वर पाठ कर जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर दिल्ली से पधारे सुमधुर गायक श्री नरेन्द्र वशिष्ठ के प्रभावशाली भजन हुए। प्रातः यज्ञ के उपरान्त आर्यसमाज ट्रस्ट के प्रधान श्री ज्ञानचन्द कुमार जी ने ध्वजारोहण किया। आपने कहा यज्ञ की ज्योति को घर घर पहुंचाया जाए ताकि अधिक से अधिक देशवासी इससे लाभ प्राप्त कर सकें।

आर्य महिला सम्मेलन में मुम्बई की लगभग समस्त आर्य समाजों की बहनों ने बड़े उत्साह पूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर महिला वक्ताओं ने – आधुनिक परिवेश में प्राचीन और नवीन मूल्यों का समन्वय नारियां कैसे करें विषय पर – श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री, श्रीमती क्रान्ति आर्या, श्रीमती यशवाला गुप्ता, श्रीमती शिवराजवती आर्या, श्रीमती सरोजनी गोयल एवं श्रीमती वांगिया ने अपने विचार प्रकट किये। सम्मेलन का संचालन आर्यसमाज अंधेरी की मन्त्री श्रीमती उर्मिला बहल ने किया।

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी की अध्यक्षता में मुम्बई की समस्त आर्यसमाजों की ओर से मनाया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री इन्द्रवल मल्होत्रा (प्रधान आर्य विद्या मन्दिर) उपस्थित थे।

वक्ता : श्री डॉ० वागीश शर्मा डॉ० सोमदेव शास्त्री, स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती, श्री ईश्वर मित्र शास्त्री, श्री विजयपाल शास्त्री, श्री प्रभारंजन पाठक जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में कुछ ऐतिहासिक प्रसंग प्रस्तुत किए। ऋषिलंगर में सभी ने प्रतिपूर्वक भाग लिया।

महाविद्यालय सभा ज्वालापुर का पंचवर्षीय निर्वाचन

हरिद्वार : दिनांक २४ दिसम्बर को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के मिश्री देवी सभागार में 'महाविद्यालय सभा ज्वालापुर' के निर्वाचन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। महाविद्यालय के चहुमुखी विकास हेतु आगामी पांच वर्षों के लिए प्रबन्ध समिति (अन्तरंग सभा) का गठन किया गया। सर्वप्रथम सर्वसम्मति से समालका दिल्ली के परम दानवीर पं० हरवंश सिंह वत्स संस्था के प्रधान सभा पद पर निर्वाचित हुए। संस्था के पदाधिकारियों में दिल्ली के श्री आर०एस० कौशिक वरिष्ठ उपप्रधान, हरिद्वार के श्री विजेन्द्र सिंह चौहान उपप्रधान, शिवलिकनगर हरिद्वार के श्री प्रदीप कुमार चौहान उपप्रधान, हरिद्वार के श्री योगेन्द्र सिंह चौहान एडवोकेट मंत्री सभा, हरिद्वार के श्री राकेश कुमार चौहान एडवोकेट उपमंत्री, पल्लवपुरम मेरठ के श्री कर्णपाल सिंह कोषाध्यक्ष जयपुर के जस्टिस शशिकान्त शर्मा कुलपति, हरिद्वार के श्री सुखपाल सिंह एडवोकेट आय–व्यय निरीक्षक निर्वाचत हुए।

धर्म की रक्षा शौर्य से

परम पिता परमात्मा मानव को वेद का ज्ञान देता है। जो न नया है, न पुराना, जो सदा से है। वह सत्य सनातन वैदिक धर्म है। हमें राम, कृष्ण, हनुमान के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। ईश्वर हृदय में मिलता है बाहर नही। वह सदा साथ रहता है। वह सब जगह है।

आर्यसमाज रावतभाटा का ४०वां वार्षिकोत्सव रविवार को सम्पन्न हुआ। समापन समारोह के अवसर पर आचार्य विश्वामित्र शास्त्री ने कहा कि सृष्टि बनाने के कारण परमात्मा का नाम ब्रह्मा, सारे जगत का पालन–पोषण करने के कारण विष्णु और सबका कल्याणकारी होने के कारण शिव है। पूर्व की दिशा ज्ञान रूपी प्रकाश की परिचायिका है। उन्होंने बताया कि जिसके द्वारा मानवता सुरक्षित रहती है उसे धर्म कहते हैं। वेद का संदेश है कि मनुष्य को मनुष्य बनना चाहिए। जो व्यवहार तुम्हें स्वयं अच्छा न लगता हो वह दूसरों के साथ मत करो। धर्म की रक्षा वीरता से होती है। जिस धर्म की आप रक्षा करते हैं वही धर्म आपकी रक्षा करता है।

अर्जुन देव चड्ढा ने जिला प्रतिनिधि सभा की ओर से कहा कि हमें मिलजुल कर कार्य करना चाहिए। समाज का कार्य समर्पण भावना से होता है। बच्चों और महिलाओं को भी कार्यक्रम में जोड़ना चाहिए।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज लखीसराय

प्रधान	:	श्री चाणक्य आर्य
मन्त्री	:	सुश्री आर०आर० ऋतम्भरा आर्या

आर्यसमाज फूलिया कलां, भीलवाडा

प्रधान	:	श्री राधेश्याम अग्रवाल
मंत्री	:	श्री छोटूलाल माली
कोषाध्यक्ष	:	श्री सुखदेव (गोदारा)

आर्यसमाज मुण्डेरा बाजार, प्रयाग

प्रधान	:	श्री बंशीलाल आर्य
मन्त्री	:	आर्य राजेन्द्र कपूर
कोषाध्यक्ष	:	श्री जयचन्द आर्य

आर्यसमाज खेडा अफगान

प्रधान	:	श्री आदित्य प्रकाश गुप्त
मन्त्री	:	श्री ओमप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष	:	श्री श्रवण कुमार

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, शाहजहांपुर

प्रधान	:	श्री रामसागर यादव
मन्त्री	:	श्री रामवीर देव
कोषाध्यक्ष	:	श्री दासीराम आर्य

आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर

प्रधान	:	श्री रामजी आर्य
मन्त्री	:	श्री गंगा राम आर्य
कोषाध्यक्ष	:	श्री चन्द्रिका प्रसाद आर्य

श्री धर्मपाल शर्मा जी नहीं रहे

आर्यसमाज चम्बा के वर्तमान संरक्षक एवं पूर्व प्रधान श्री धर्मपाल शर्मा जी का २१–११–२००६ को अचानक देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक करीति से किया गया। बहुत से गणमान्य व्यक्ति इसमें सम्मिलित हुए।

शर्मा जी धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे और वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत थे। वैदिक विचारधारा उन्हें पैतृक सम्पदा के रूप में मिली थी।

प्रवेश सूचना

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी में शरदकालीन प्रवेश प्रारम्भ है। ५ से १२ वर्ष तक प्रवेशायु। कक्षाएं शिशु से आचार्य तक। आर्ष पाठ विधि/अंग्रेजी, गणित, विज्ञान व सब विषयों का उत्कृष्ट अध्यापन। निर्धन पुत्रियों को छात्र वृत्तियां। प्रवेश चयन से। संपर्क सूत्र।

अध्यक्ष, ... नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी, उ०प्र०

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (II)01/7110/2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 11-02-2007 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० ... on 8/9-02-2007

प्रेरणा, आशीर्वाद और धन्यवाद

ईश्वर की कृपा से अनेक ज्जनों की सहायता से अपने ास्थ्य को ठीक करने में प्रयासशील । आप दीर्घायु हों, स्वास्थ्य बना हे और आनन्दित हों।

आप नित्यप्रति ईश्वर की ्पासना, योगाभ्यास, वेद और दानुकूल ग्रन्थों का श्रद्धापूर्ण वाध्याय, सत्पुरुषों का संग, आत्मनिरीक्षण, निदिध्यासन आदि करते रहें। शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए नित्यप्रति उचित व्यायाम करते रहें। आप आर्य समाज के दस नियमों, इक्यावन मन्तव्यों, पांच परीक्षाओं के आधार पर सत्य और असत्य को जानने और निर्णय करने का प्रयास करते रहें। सिद्धान्तों के परिज्ञान के लिए आर्योद्देश्यमाला, व्यवहार के ज्ञान और शुद्धि के लिए व्यवहारभानु, ईश्वर में भक्ति, प्रेम बढ़ाने के लिए आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों का श्रद्धापूर्ण स्वाध्याय करते रहें। इस प्रकार करते हुए अपने जीवन में आदर्श वैदिक दिनचर्या को क्रियान्वित करें।

अपने से सम्बन्धित सभी कर्तव्य कर्मों का, यम नियम आदि अष्टांग योग का मन वचन कर्म से आदर्शरूप में पालन करते हुए समाधि तक पहुंचे और स्वयं ईश्वर साक्षात्कार करें तथा अन्यों को भी ईश्वर साक्षात्कार करवाने का प्रयास करते रहें।

अपने बालक बालिकाओं को वैदिक धर्मी बनाएं। वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए देश विदेश में तन–मन–धन से सहयोग करते रहें और अन्यों को भी प्रेरणा देते रहें। आपकी वैदिक धर्म में रूचि है इसके लिए आपका बहुत धन्यवाद है। ईश्वर की कृपा से आपका जीवन सफल हो और आप अन्यों का भी जीवन सफल बनाएं। मनुष्य जीवन के चार प्रयोजन धर्म अर्थ काम मोक्ष अपको शीघ्र सिद्ध हों, यह मेरी शुभकामना है।

– **स्वामी सत्यपति सरस्वती**, रोजड़

रोगियों व निर्धनों को सामग्री वितरित

कोटा १२ सिम्बर। कुष्ठ ागियों के बीच जाकर उनका ुःख दर्द जानना व उन्हें अन्न स्त्रादि वितरित करने से कुष्ठ ागियों में आत्म विश्वास बढ़ेगा था वे अपने आपको समाज का क अंग मानेंगे। आर्य समाज मय–समय पर कुष्ठ रोगियों के ीच जाकर नर सेवा नारायण ेवा को साक्षात कर रहा है। क्त विचार आर्यसमाज के जिला धान अर्जुन देव चढ्डा ने आज ार्यसमाज व आरोमा ्कमडिमोंस स्कूल द्वारा संग्रहित ामग्री कुष्ठ रोगियों के बीच ेतरित करते हुए कहे।

रामप्रसाद याज्ञिक, श्री चन्द्र ुप्ता, जे.एस. दुबे, श्रीमती लीला ालिक ने कुष्ठ रोगियों की बस्ती ीर सावरकर नगर में कुष्ठ [illegible] को आटा चावल, साड़ियां, [illegible]

त्री-दिवसीय क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

गुरु द्रोणाचार्य के प्रसिद्ध नगर गुड़गांव में दिनांक १, २, ३ दिसम्बर, २००६ को १३२ हवन कुण्डों पर सपत्निक यजमानों को पूज्य सन्त आचार्य श्री ज्ञानेश्वरार्यः जी दर्शनाचार्य के निर्देशन में यज्ञ प्रशिक्षण प्रदान किया गया। श्री ज्ञानेश्वरार्यः जी ने इन दिनों के दौरान यज्ञ के वास्तविक स्वरूप, लाभ, महत्व तथा रहस्यों की वैज्ञानिक विवेचना की। साथ में सपत्नीक यजमानों (शिविरार्थियों) को यज्ञ मंत्रों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी कराया। यज्ञ को लेकर विशेष शंकाओं का समाधान भी कराया गया। उन्होंने कहा यज्ञ से लोगों में कल्याण की भावना उत्पन्न होती है तथा उत्तम कर्म करने की प्रेरणा भी मिलती है। उन्होंने मानव, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति लोगों के कर्त्तव्यों के पालन पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वैदिक सभ्यता और संस्कृति ही भारत की संस्कृति है। इस शिविर के संयोजक श्री अमीर चन्द श्रीधर जी प्रधान आर्यसमाज, [illegible] गई।

मध्य विदर्भ सभा द्वारा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ, सदर, नागपुर द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर्व 'सम्मान व मार्ग दर्शन समारोह' मनाया गया। इस अवसर पर विदर्भ, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में स्थित आर्यसमाजों के प्रतिनिधि बडी संख्या में उपस्थित थे। समारोह में आर्य जगत के वृद्धों, विद्वानों, कार्यकर्ताओं का समान प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित विधायक व नागपुर सुधार प्रन्यास ट्रस्टी दीनानाथ जी पडोळे के हस्ते सम्पन्न हुआ। सभा प्रधान पं० सत्यवीर शास्त्री द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए, आपने आर्य जनों को राष्ट्रहित में कार्य और ज्यादा ताकत, ईमानदारी व निष्ठा से करने का आह्वान किया वही सभा मंत्री प्रा० अनिल शर्मा ने भाउ दिनानाथ पडोळे जी का स्वागत करते हुए कहा कि आज सरकार को सामाजिक संस्थाओं को सहयोग कर मानवता के हित में कार्य करने की आवश्यकता है जिस हेतु संस्थाओं को सरकार द्वारा सहयोग करना चाहिए। इस अवसर पर आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार प्रकट किए। 'आर्य श्रेष्ठ' से सर्वश्री ब्रजलाल राठी, तपेश्वर मिश्रा, जयसिंग गायकवाड़, यशपाल जानेवाजी, पं० रमेशपंत घोडसकर, सौ. शकूनतला सूर्यवंशी, लखनलाल सोनी, देवीप्रसाद आर्य, विजय आर्य आदि आर्यजनों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम की सफलता हेतु सर्वश्री संतोष गुप्ता, रंगलाल प्रजापति, रमेश वर्मा, भूषण, महेश, कृष्णकुमार शास्त्री, दिवेश शर्मा, सौ. रंजनी चौरसिया, भारती दूबे, घनश्याम आदि ने अथक प्रयास किया वही मंच का सफल संचालन कार्यालय मंत्री श्री अशोक यादव व संतोष गुप्ता ने बखूबी निभाया।



प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*
वेबसाईट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
मूल्य : २ रुपये
सार्वदेशिक
साप्ताहिक
ओ३म्
वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४५ अंक १८ | ४ मार्च से १० मार्च, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८४ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०७ | सम्वत् २०६३ | चै०कृ०१
भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

संस्कृत को बैलगाडी युग की भाषा कहने तथा अन्य अपमानजनक टिप्पणियों के कारण
उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के विरूद्ध राष्ट्रपति को पत्र भेजे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री टी.वी. राजेश्वर राव के विरुद्ध कडा पत्र लिखते हुए उन्हें तत्काल पद से हटाने की मांग की है।

६ फरवरी को धार्मिक नगरी वाराणसी में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में राज्यपाल श्री राजेश्वर राव ने संस्कृत भाषा के विरुद्ध असहनीय एवं अशोभनीय तथा मनगढन्त टिप्पणियां करके एक नए विवाद को जन्म दे दिया।

श्री राजेश्वर ने आधुनिक व्यावसायिक युग में संस्कृत की प्रासंगिकता पर सवाल उठाते हुए कहा था कि अब समय बदल गया है और संस्कृत शिक्षा उन्हीं के लिए फायदे की रह गई है जो पुजारी या संस्कृत शिक्षक बनना चाहते हैं। श्री राजेश्वर ने कहा था कि अगर आप जीवन में सफल होना चाहते हैं, हर माह दो–तीन लाख रुपए कमाना चाहते हैं या विदेश जाना चाहते हैं तो आपको अंग्रेजी में दक्ष होना पड़ेगा, सिर्फ संस्कृत में नहीं।

श्री राजेश्वर ने संस्कृत विश्वविद्यालय के पाठयक्रम में अंग्रेजी को अनिवार्य रूप से शामिल करने के प्रयास किये जाने की बात भी कही थी।

राज्यपाल के बयान से उत्तेजित छात्रों ने दीक्षांत समारोह में ही राज्यपाल विरोधी नारेबाजी करते हुए मंच पर कुर्सियां फेंकने का प्रयास किया और कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच राज्यपाल को बाहर ले जाया गया था। उत्तेजित छात्रों द्वारा सड़क से गुजर रहे राज्यपाल का काफिले पर पथराव करने पर भीड़ को तितर–बितर करने के लिए पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा था।

संस्कृत को बैलगाडी युग की भाषा कहने से नाराज छात्रों ने कुलाधिपति राव का पुतला भी फूंका। बाद में, छात्रों ने अपनी डिग्रियां फाड़ दी और मेडल फेंक दिए।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी तथा मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने समूचे आर्य जगत के कार्यकर्ताओं, सभाओं और समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों, विशेष रूप से गुरुकुलों के विद्वानों से आह्वान किया है कि इस घटना को लेकर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री टी.वी. राजेश्वर राव के विरुद्ध एक रोष पत्र भारत के राष्ट्रपति श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को भेजें। **अपने पत्र की एक प्रति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान कार्यालय १४८८, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली - २ के पते पर अवश्य भेजें।**

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी के द्वारा
शुद्धि कार्यों के लिए
एक लाख रुपये की राशि दान

आर्ष गुरुकुल आमसेना उड़ीसा के वार्षिकोत्सव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर स्वामी धर्मानन्द सरस्वती तथा उनके अन्य विद्वान सहयोगियों की कर्मठता का अभिनन्दन किया।

सभा प्रधान जी के आशीर्वाद से एक पादरी सहित एक सौ से अधिक ईसाई आदिवासियों की शुद्धि की गई। श्री मिठाईलाल सिंह जी ने ३८ नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को भी आर्यसमाज की सेवा करने हेतु नैष्ठिक दीक्षा के अवसर पर आशीर्वाद दिया।

श्री मिठाईलाल सिंह जी ने गुरुकुल एवं शुद्धि कार्यों में अग्रसर उन्नति के लिए एक लाख रुपए की राशि प्रदान की।

वरिष्ठ आर्य नेता
श्री छोटू सिंह आर्य नहीं रहे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्षो तक रहे उप–प्रधान तथा राजस्थान सभा के प्रधान रहे श्री छोटू सिंह आर्य, एडवोकेट का अस्वस्थता के चलते २३ फरवरी, २००७ को अपने पैतृक निवास अलवर में देहावसान हो गया। वे लगभग ८६ वर्ष के थे। श्री छोटू सिंह आर्य जी ने अपनी बाल्य अवस्था से लेकर जीवन पर्यन्त आर्यसमाज की निस्वार्थ सेवा की। वे श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (लाला रामगोपाल शालवाले जी), श्री वीरेन्द्र (पंजाब), श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव, श्री सोमनाथ मरवाहा, श्री औमप्रकाश त्यागी आदि के समकालीन थे। २५ फरवरी को उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन आर्य कन्या विद्यालय अलवर के विशाल सभागार में किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सभा मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने श्री छोटू सिंह आर्य जी को श्रद्धांजलि दी।



शेष पृष्ठ ३ पर

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव महाशिवरात्रि पर्व

आर्यसमाज, दयानन्द भवन, महर्षि दयानन्द सरस्वती वार्ड, जबलपुर में स्वामी दयानन्द बोधोत्सव पर्व दिनांक ११–२–०७ से १६–०२–०७ तक सोल्लासपूर्वक मनाया गया। समारोह में आर्यसमाज की नव निर्मित यज्ञशाला में सामवेद परायण यज्ञ प्रातः ७ से ६.३० बजे तक आयोजित था।

इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान व उपदेशक श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। परम आदरणीय तपस्वी जी की गरिमामय उपस्थिति से यज्ञ एवं अन्य कार्यक्रमों को शोभा और भी अधिक गरिमामयी हो गई।

यज्ञ का समापन शिवरात्रि दिनांक १६–२–०७ को पूर्णाहुति से हुआ जिसमें बड़ी संख्या में नगर के आर्य परिवार एवं विशिष्ट जन उपस्थित रहे। समापन समारोह में आचार्य तपस्वी जी ने अपने उद्‌बोधन में जीवन को कैसा बनाना है, सच्चे प्रभु के दर्शन कराए। आपने समस्त जनों के मन में आचार्या जी के प्रवचनों ने अमिट छाप छोड़ी।

सोमवार दिनांक १२ फरवरी को दयानन्द भवन में ऋषि दयानन्द सरस्वती का १८३वां जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया।

शेष पृष्ठ ३ पर

दिल्ली सभा के प्रधान वैद्य इन्द्रदेव जी के भ्राता डॉ० वामदेव जी का देहावसान



आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान नेता वैद्य प्रहलाद दत्त जी के ज्येष्ठ सुपुत्र डॉ० वामदेव जी का ८४ वर्ष की आयु में १२ फरवरी २००७ को देहावसान हो गया। वैद्य प्रहलाद दत्त जी के समूचे परिवार ने समय–समय पर आर्य जगत की भरपूर सेवा में जीवन लगाया है। वैद्य जी के छः सुपुत्र थे। जिनमें से एक श्री सूर्यदेव जी स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (लाला रामगोपाल शालवाले) जी के दामाद थे। श्री सूर्यदेव जी ने दिल्ली सभा, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार तथा सार्वदेशिक सभा के विभिन्न पदों को सुशोभित किया।

शेष पृष्ठ २ पर

उ०प्र० सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरुण को पितृ–शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री जयनारायण अरुण के पूज्य पिताजी श्री हकीम लक्ष्मी नारायण आर्य का गत रविवार १ फरवरी को निधन हो गया। उनकी आयु १०१ वर्ष थी और पिछले कुछ समय से बीमार थे। वे अपने पीछे भरा–पूरा और खुशहाल परिवार छोड गये हैं। १०० वर्ष से अधिक का पुरुषार्थमय भरपूर जीवन जीने वाले हमीम लक्ष्मी नारायण आर्य सिद्धान्तों के धनी और मनसा–वाचा–कर्मणा आर्य समाज को समर्पित थे। अपने सक्रिय जीवन में स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ उन्होंने हिन्दी सत्याग्रह और हैदराबाद सत्याग्रह में बढ़–चढ़कर भाग लिया और यातनायें सही थी। अपने क्षेत्र में अनेक सहभोज आयोजित किए और अनेकों आर्यसमाजों की स्थापना की।

शेष पृष्ठ २ पर

पृष्ठ १ का शेष

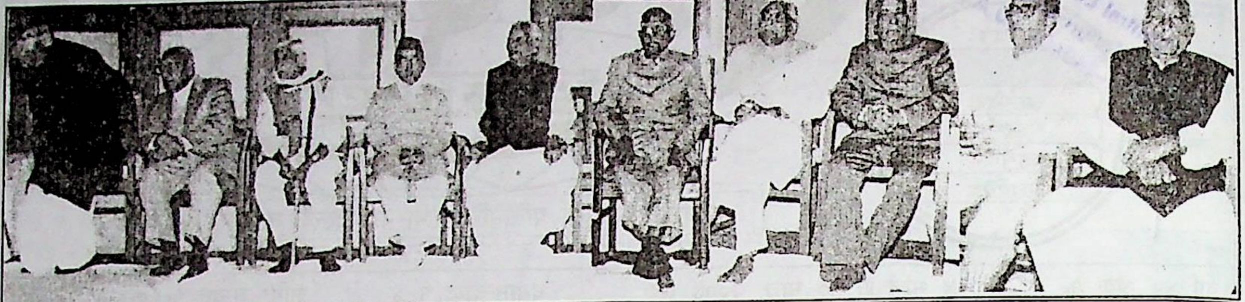
डॉ० वामदेव जी का देहावसान

इसी प्रकार श्री वैद्य इन्द्रदेव जी वर्तमान में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष भी है।

डॉ० वामदेव जी का जन्म झज्जर हरियाणा में हुआ था। गुरुकुल ज्वालापुर तथा दयानन्द वेद विद्यालय दिल्ली में अध्ययन करने के उपरान्त इन्होंने समाज सेवा की दृष्टि से चिकित्सा क्षेत्र में पारंगतता प्राप्त की। आर्य कुमार सभा तथा राष्ट्रीय स्व्यं सेवक संघ के माध्यम से इन्होंने राष्ट्रसेवा की। गांधी हत्या केस में भी डॉ० वामदेव जी बन्दी बने

डॉ० वामदेव जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन २३ फरवरी को सतभ्रावां विद्यालय, करोल बाग दिल्ली में आयोजित किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह ने उन्हें एक कर्मयोगी विद्वान बताते हुए श्रद्धांजली दी। सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल ने डॉ० वामदेव जी को अपने बड़े भाई के तुल्य बताते हुए आर्यजनों का आह्वान किया कि शुभ कर्मों के सहारे ही इस जीवन को सार्थक किया जा सकता है।

श्रीमती शकुन्तला आर्या (पूर्व महापौर), श्री अनिल आर्य, लाला दुलिचन्द गुप्त आदि ने भी अपने श्रद्धासुमन डॉ० वामदेव जी के प्रति व्यक्त किए। सभा का संचालन श्री मूलचन्द गुप्ता एवं डॉ० रविकान्त ने किया। दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदललाल खुराना तथा पूर्व राज्यपाल श्री केदार नाथ साहनी ने डॉ० वामदेव जी के प्रति अपने विचार शोक संदेश के रूप में व्यक्त किए।



बाएं से प्रि० चन्द्रदेव, श्री रामफल बंसल, श्री ....., श्री ओंकार नाथ, श्री मिठाई लाल सिंह, श्री सत्यनारायण बंसल, डॉ० महेश विद्यालंकार, श्री महाशय राम विलास खुराना, श्री देवेन्द्र शर्मा, भगत मंगतूराम।

श्रद्धांजलि सभा में सर्वश्री सत्यनारायण बंसल (दिल्ली प्रान्त संघचालक), भगत मंगतूराम (प्रधान हरियाणा सभा), देवेन्द्र शर्मा (रजिस्ट्रार पंजाब सभा), डॉ० महेश विद्यालंकार, श्री जगदीश आर्य (कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा), श्री वेदव्रत शर्मा (उपप्रधान सार्वदेशिक सभा), श्री राजसिंह भल्ला, श्री ओंकारनाथ शालवाले, डॉ० अनीता आर्या (पूर्व सांसद), श्री के०सी० रवि, श्री ओ३म् प्रकाश शर्मा,

उपरोक्त के अतिरिक्त दिल्ली की विभिन्न समाजों एवं अन्य संस्थाओं के अधिकारियों तथा दिल्ली सभा के पूर्व पदाधिकारी एवं सन्यासीगण सभा में उपस्थित थे।

पूर्ण योग्यता और एकाग्रता के साथ कार्य करने वाला ही शिखर पुरुष बनने योग्य : दिल्ली के मुख्यन्यायाधीश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य एवं माता प्रेमलता शास्त्री के साथ आर्य समाज रानीबाग गुरुकुल में पढ़ रहे आसाम, मध्य प्रदेश आदि क्षेत्रों के आदिवासी ब्रह्मचारियों ने दिल्ली उच्च न्यायालय के नवनियुक्त मुख्य न्यायाधीश डॉ० मुकन्दकम शर्मा जी से उनके आवास पर भेंट करके उन्हें समूचे आर्य जगत की और से शुभकामनाएं प्रदान की। मुख्य न्यायाधीश महोदय ने अपनी धर्मपत्नी डॉ० भारती शर्मा तथा अन्य समस्त परिजनों के साथ बड़े उत्साहपूर्वक यज्ञ सम्पन्न किया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री आनन्द प्रकाश आर्य थे।



मुख्यन्यायाधीश महोदय ने ब्रह्मचारियों को एकाग्र मन से शिक्षा प्राप्त करने के साथ साथ अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों को सुरक्षित रखने के लिए प्रेरणाएं प्रदान की। अपने सामने आए कार्य को पूर्ण योग्यता और एकाग्रता के साथ करने वाला व्यक्ति ही निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहकर एक दिन समाज का शिखर पुरुष बन सकता है।

ब्रह्मचारियों ने मुख्य न्यायाधीश महोदय से सामाजिक अव्यवस्थाओं, देश में विद्यमान कुरीतियों तथा देश सचालन के ढांचे के बारे में वार्तालाप किया।

इस कार्यक्रम में दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री वेदव्रत मेहता, रानीबाग आर्य समाज के मन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर, कोषाध्यक्ष श्री रामलाल आहूजा तथा प्रबन्धक श्रीमती सुषमा आदि उपस्थित थे।

पृष्ठ १ का शेष

श्री जयनारायण अरुण को पितृ-शोक

उन्होंने सन्ध्या यज्ञ और पंच महायज्ञों के अनुष्ठान को अन्तिम समय तक निभाया उनके त्यागमय और सादगी भरे जीवन से पूरा क्षेत्र प्रभावित था। वे महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का निःशुल्क वितरण करते रहते थे। उनका पूरा परिवार भी पूर्णतयः उनका अनुयायी है और पुत्र–पौत्र और प्रपौत्र–प्रपौतियां वैदिक सिद्धान्तों पर अमल करते हुए नित्य प्रति यज्ञानुष्ठानों का निर्वाह करते हैं। हकीम जी का अन्तिम संस्कार निकटवर्ती गंगातट पर पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार आर्योप्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० आनन्द प्रकाश आर्य आदि विद्वानों द्वारा सम्पन्न कराया गया। १५ फरवरी को कन्या गुरुकुल श्रवणपुर–नजीबाबाद की प्राचार्या वैदिक विदूषी आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती तथा उनकी वेदपाठी कन्याओं की टीम द्वारा शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा बड़े भव्यता से सम्पन्न करायी गयी और सभी उपस्थितजनों को निःशुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरित किए गए। श्रद्धांजलि सभा में सार्वदेशिक सभा दिल्ली की ओर से सभा मंत्री श्री विमल वधावन आर्य, चौधरी लक्ष्मीचन्द, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के कार्यवाहक प्रधान महेन्द्र सिंह आर्य कोषाध्यक्ष अरविन्द कुमार प्रचार अधिष्ठाता, हरिश्चन्द्र आर्य और मण्डलीय मंत्री डॉ० अशोक कुमार आर्य (सम्पादक दैनिक आर्यवर्त्त केसरी) उ०प्र० के पूर्व मंत्री कुंवर भारतेन्द्र सिंह विधायक, श्री क्रान्ति कुमार, जिला परिषद बिजनौर की अध्यक्ष श्रीमती रूचि वीरा एवं वरिष्ठ लोद नेता उदयन वीरा आदि राजनेताओं के अतिरिक्त जिलेभर के आर्य प्रतिनिधियों, शिक्षक नेताओं, बुद्धिजीवियों और अनेक संस्थाओं से जुड़े समाजसेवियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और दिवंगत आत्मा के प्रति शान्ति एवं सदगति की प्रार्थना की। श्री विमल वधावन आर्य ने कहा कि १६०५ में जन्मे स्व० श्री हकीम लक्ष्मी नारायण जी आर्य ने आर्यसमाज के इतिहास का साक्षात दर्शन ही नही अपितु उसमें भाग लेकर इतिहास रचना में योगदान भी दिया। उन्होंने हैदराबाद सत्याग्रह में भी महात्मा नारायण स्वामी जी के नेतृत्व में जेल यातनाएं सही। उन्होंने कहा कि १०० वर्ष से अधिक की आयु स्वयं एक प्रमाण है वैदिक जीवन का। सभा के अन्त में हकीम जी के सुपौत्र कपिल अरूण और प्रपौत्र मनुमंत्र आर्य ने सभी आगन्तुकों का श्रद्धापूर्वक सत्कार किाय।



– आनन्द प्रकाश आर्य
प्रधान जिला सभा, बिजनौर

पुण्य भूमि में मनाया गया गुरूकुल स्थापना दिवस

आज अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द जी द्वारा १६०२ ई० में संस्थापित गुरूकुल कांगड़ी का स्थापना दिवस हिमालय पर्वत की उपत्यका में बसन्तोत्सव के पावन पर्व पर कांगड़ी ग्राम में भागीरथी गंगा के पावन तट पर स्थित प्राच्य गुरूकुल पुण्य भूमि मे गुरूकुल का स्थापना दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में पुण्य भूमि गुरूकुल में स्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी ने कुल पताका को फहराकर गगन में गुरूकुलीयता की रश्मियों को उद्वेलित किया। ध्वजारोहण के उपरान्त आर्यजनों, विद्वानों एवं ब्रह्मचारियों ने वैदिक घोष के स्वरों को गुजांरित किया, तदोपरान्त सभास्थल पर एक सभा का आयोजन किया गया।

स्वतन्त्र कुमार जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि माता भूमि पुत्रोऽहम पृथिव्याः। यह गुरुकुल हमारी माता है अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वसर्वहूत यज्ञ करके इस पावन गुरूकुलीय परम्परा को प्रारम्भ किया था। उन्होंने इस अवसर पर यह भी कहा कि इस भूमि के संरक्षण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक उपदेशक विद्यालय शीघ्र ही गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय प्रारम्भ करने जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि गुरूकुल की इस पवित्र माटी को यहां के स्नातक अपने मस्तक पर लगाते हैं।

इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने गीत, सम्भाषण एवं कविताएं भी प्रस्तुत कीं। जिनमें ब्र० चेतन, ब्र० अक्षय, ब्र० अमित, ब्र० आनन्द, ब्र० किशंन, ब्र० गौरव, ब्र० मोहन, ब्र० संदीप, ब्र० संतोष एवं एन०सी०सी० कैडेट राधेश्याम, योग विभाग से ब्र० गोरव और अलंकार के छात्र गुरूमूर्ति आदि प्रमुख थे।

इस अवसर पर प्रो० महावीर, आर्य तपस्वी आचार्य सुखदेव जी, वित्ताधिकारी एन०के० ग्रोवर, कुलसचिव आर०डी० शर्मा, प्राचार्या संगीता विद्यालंकार, डॉ० रूपकिशोर शास्त्री, डॉ० त्रिलोक चन्द्र, डॉ० पुरूषोत्तम कौशिक, डॉ० नवनीत, डॉ० अरूण कुमार, डॉ० राकेश गिरि, चन्द्रप्रकाश आदि ने भी गुरूकुल स्थापना दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए।

स्वामी रामदेव जी द्वारा भुवनेश्वर आर्यसमाज में विद्वत् संवर्धन

भुवनेश्वर। योगगुरु स्वामी रामदेवजी के करकमलों द्वारा भुवनेश्वर आर्यसमाज में विद्वत् संवर्धन समारोह विगत ६–१–२००७ को सम्पन्न हुआ। विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने १६वीं सदी के सुप्त भारत को जगाने का प्रयास किया। महर्षि दयानन्द द्वारा संस्थापित आर्यसमाज ने वेद, योग, यज्ञ आदि मूलभूत मानव सिद्धान्तों को संचारित करने का बीडा उठाया। महर्षि जी ने धर्म को विज्ञान का चक्षु प्रदान किया। आज भारत में आर्यसमाज के शिक्षा संस्थान जैसे शिक्षाक्षेत्र में यशस्वी कार्य कर रहे हैं, वैसे मेरे जैसे दयानन्द शिष्य ने योगविद्या द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र में एक जन आन्दोलन आरम्भ किया है।

स्वामी जी का स्वागत करते हुए भुवनेश्वर आर्यसमाज के संस्थापक डॉ० प्रियव्रत दास ने कहा कि अध्यात्म क्षेत्र में शाश्वत तत्वों का लोककल्याण कार्य में प्रयोग करना ऋषित्व है। समारोह में स्वामीजी ने प्रो० धर्मवीर (अजमेर) को 'महर्षि दयानन्द पुरस्कार' तथा डॉ० अन्नपूर्णा (देहरादून) को 'शन्नोदेवी राष्ट्रीय वेद विदुषी पुरस्कार' से प्रत्येक को शाल, अभिनन्दन पत्र तथा ११०००/– रुपए देकर सम्मानित किया। उत्सव में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (आमसेना) ने पौरोहित्य किया। आर्यसमाज के त्रिदिवसीय वार्षिक उत्सव में प्रो० धर्मवीर, डॉ० अन्नपूर्णा, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती आदि महानुभावों का प्रवचन हुआ। आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचन्द्र हंस ने धन्यवाद अर्पण किया। □

सीताष्टमी आयोजित

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला विभाग के तत्वावधान में पं० हरिशरण पार्क (अशोक वाटिका) में बसंत मेला एवं सीताष्टमी पर्व श्रीमती शकुन्तला आर्या पूर्व महापौर एवं दक्षिण दिल्ली की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इसी अवसर पर निठारी कांड में मारे गए मासूम बच्चों की आत्मा की शांति के लिए शांति यज्ञ किया गया। श्रीमती आर्या ने कहा कि इस शहीद दिवस पर हम माता सीता एवं अन्य बलिदानी जिन्होंने हंसते हंसते स्वजीवन को राष्ट्र की बलिवेदी पर आहूत कर दिया, उन्हें श्रद्धा सुमन समर्पित कर रहे हैं।

मुख्य अतिथि श्रीमती ललिता निझावन ने कहा कि वीर हकीकत राय तथा माता सीता दोनों ही हमें अपने धर्म पर आरूढ़ रहने तथा अपने कर्तव्यों का बोध कराते हैं। आज के शहीद दिवस पर हम सरकार से पुरजोर शब्दों में अपील करते हैं कि निठारी कांड के नराधम व्यक्तियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए। अति विशिष्ट अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, दिल्ली सभा के प्रधान वैद्य इन्द्रदेव, श्रीमती सरला महता, श्रीमती रेखा श्रीवास्तव एवं श्री अजय भल्ला ने दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार विभाग की बहिनों को साधुवाद देते हुए कहा कि जहां आर्यसमाज की बहिनों ने स्वतंत्रता संग्राम में पुरुष वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है वहीं श्रीमती शकुंतला आर्या के नेतृत्व में ज्वलंत समस्याओं को उजागर करने में भी आर्य महिलाएं पीछे नहीं हटतीं।

सत्यवीर शास्त्री पण्डित उपाधि से सम्मानित

अमरावती। कालीदास विश्वविद्यालय रामटेक (महाराष्ट्र) की ओर से प्रतिवर्ष वेद–शास्त्र–पारंगत संस्कृत विद्वान् को 'पण्डित' की उपाधि प्रदान की जाती है।



इस वर्ष इस उपाधि से 'सत्यवीर शास्त्री' प्रधान मध्यप्रदेश व विदर्भ सभा को शासकीय सम्मान के साथ प्रतिष्ठित विद्वद्जनों के समक्ष प्रदान की गई।

उच्चशिक्षणाधिकारी अमरावती ने श्री सत्यवीर शास्त्री का पुष्पमाला शाल–श्रीफल प्रदान कर सत्कार किया एवं पच्चीस हजार रुपये की राशि का धनादेश भी दिया।

इस अवसर पर नगर के गणमान्य पंडित, विद्वान् एवं शासकीय अधिकारी उपस्थित थे।

काषाय वस्त्रों का दुरुपयोग

'सार्वदेशिक' दिनांक १६–११–२००६ में 'वेश समुदाय का उदगन और विस्तार' शीर्षकान्तर्गत लेख पढ़ा जिसके अनुसार उपन्यास सम्राट वैद्य गुरुदत्त जी ने कहा कहा था कि भारत में काषाय वस्त्रों के प्रति बड़ी आस्था है – लोग सन्यासियों की बात सुनते हैं।

इसी सन्दर्भ में आर्यजन की जानकारी में यह ताना भी अभष्ट प्रतीत होता है कि बाद में श्री गुरुदत्त जी ने यह समझ लिया था कि सन्यासी वेश की आड लेकर अनीश्वरवादी–अनात्मवादी कम्यूनिस्ट धार्मिक क्षेत्र में घुसपेंठ करके अनाचार बढ़ा रहे हैं। अतः वेश–भूषा के बजाय मन–वचन–कर्म के आधार पर तो व्यक्तियों का मूल्यांकन होना चाहिए। गुरुदत्त जी ने अपनी वेदना व बहुमूल्य परामर्श 'भूत और भविष्य' नामक उपन्यास में सम्मिलित किए हैं। आदरणीय गुरुदत्त जी ने अपने उपन्यास 'मृगतृष्णा' में यह भी बतलाया है कि यह साम्यवादी तत्व दुराचार, यहां तक कि समलैंगिकता के समर्थक किस तरह से शिक्षण संस्थाओं को प्रदूषित करने में जुटे हैं।

गुरुदत्त जी के उपन्यास हिन्दी भाषी जन को सरल व सरस भाषा शैली में सिद्धान्तों की व व्यवहार की भी उच्च कोटि की जानकारी देते है व आर्यजन के लिए पठनीय हैं।

– राजकुमार ग्रोवर

पृष्ठ १ का शेष

श्री छोटू सिंह आर्य नहीं रहे

उन्होंने कहा कि परमपिता परमात्मा किसी को मारते नहीं है अपितु कुछ व्यक्ति अपने कर्मों से ही मरते हैं और कुछ व्यक्ति अपने शुभ परोपकारी कार्यों के माध्यम से इस नश्वर शरीर के न रहने पर भी युगो–२ तक अमर रहते हैं। श्री छोटू सिंह आर्य जी जिस क्षेत्र में रहे वहां उन्होंने आर्यसमाज के सिद्धान्तों को सर्वोपरि रखा। वे वकालत में रहे, राजनीति में रहे, सब जगह उन्होंने आर्यसमाज की पहचान बनाई उनके विपरीत आज कुछ व्यक्ति आर्यसमाजों में घुसपैंठ करके इस पवित्र आन्दोलन में भी राजनीति करना चाहते हैं।

श्री विमल वधावन आर्य ने उनके परिजनों विशेष रूप से उनके सुपुत्र श्री अशोक आर्य, प्रदीप आर्य तथा उनके भतीजे श्री अमर सिंह आर्य से निवेदन किया कि श्री छोटू सिंह जी की स्मृति को चिरस्थाई बनाए रखने तथा उनके जीवन की प्रेरणाएं भावी कार्यकर्त्ताओं में स्थापित करने के लिए प्रतिवर्ष विशेष कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए कर्मयोगी छोटू सिंह आर्य स्मृति पुरस्कार प्रारम्भ करें। यह समारोह अलवर में ही आयोजित होना चाहिए।

श्री विद्या सागर शास्त्री, पूर्व प्रधान राजस्थान सभा ने प्रस्ताव किया कि हजारों कन्याओं को शिक्षा प्रदान करने में लगी अलवर की समस्त शिक्षण संस्थाओं को मिलाकर एक महिला विश्वविद्यालय स्थापित किया जाना चाहिए।

श्रद्धांजलि सभा का संचालन श्री जगदीश प्रसाद गुप्त तथा श्री अमरसिंह आर्य, मन्त्री राजस्थान सभा ने किया। श्री छोटू सिंह आर्य को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए दूर–दूर से हजारों की संख्या में नरनारी पहुंचे।

सांसद श्री रासासिंह रावत, डॉ० कर्णसिंह, श्री सामवेदी, श्री कैलाश नाथ भार्गव, श्रीमती कमला शर्मा आदि के अतिरिक्त कई राजनेताओं, आर्य विद्वानों, न्यायाधीशों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पृष्ठ १ का शेष

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव महाशिवरात्रि पर्व

कार्यक्रम में नगर के समस्त आर्य समाज के सदस्य परिवार ने उपस्थित होकर आचार्य जी के प्रवचन व उपदेशों का लाभ लिया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राजकुमार [illegible] पूर्व नगर निगम अध्यक्ष, जबलपुर ने ऋषि की जीवन की घटनाएं बतलाते हुए उनके बताएं रास्ते में चलने का आह्वान किया।



सभी कार्यक्रमों के संचालन में आर्यसमाज प्रधान रोशनलाल जी संघी, मंत्री डॉ० हरि ओम प्रकाश श्रीवास्तव सभी कार्यकारिणी के सहयोगियों का भरपूर सहोग रहा। आचार्य सुखदेव तपस्वी जी की गरिमामयी उपस्थिति से पूरे कार्यक्रम की शोभा बढ़ी। □

आसाम प्रान्त के लिए अंग्रेजी भाषा में पारंगत वैदिक विद्वान की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी की अध्यक्षता में अन्तरंग बैठक के निर्णयानुसार आसाम तथा ६ अन्य पूर्वी राज्यों के लिए एक ऐसे अनुभवी कर्मठ विद्वान की आवश्यकता है जो अंग्रेजी भाषा में भी पारंगत हो। इस कार्य के लिए अनुभवी आर्य कार्यकर्त्ताओं के नाम पर भी विचार किया जा सकता है। चयनित विद्वान को आसाम आर्य प्रतिनिधि सभा के नियन्त्रण में रहकर कार्य करना होगा। वेतन आदि की व्यवस्था सार्वदेशिक सभा द्वारा की जाएगी।

श्री कृष्णचन्द्र बस्सी का आकस्मिक निधन

आर्यसमाज दसूहा के स्तम्भ श्री कृष्ण चन्द्र बस्सी जी की शुक्रवार ५ जनवरी, २००७ को कार दुर्घटना में अकाल मृत्यु हो गयी। इनका दाह संस्कार वैदिक रीति से ६ जनवरी, २००७ शनिवार को किया गाय।

उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य आर्यसमाज को जागरूक रखना, उसकी संस्थाओं को आगे लेकर जाना था। वह दृढ निश्चयी, दानी, कट्टर सिद्धान्तों के व्यक्तित्त्व थे। अपने पीछे वह अपनी धर्मपत्नी, ३ सुपुत्रियां व एक सुपुत्र छोड़ गए हैं। हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं और परमात्मा से उनकी आत्मिक सुख शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

– यशवीर शास्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

आंखों की रक्षा के उपाय

हम संध्या के मन्त्रों में प्रतिदिन बोलते हैं ओं चक्षु, चक्षु, ओं भुवः पुनातु नेत्रायो, ओं पश्येम शरदः शतं अर्थात प्यारे प्रभु से प्रार्थना करते हैं, हे प्रभुं हमारी आंखें निरोग पवित्र हों और हम इनसे कम से कम १०० वर्ष तक देखते रहें, परन्तु केवल मन्त्र बोलते रहने से कुछ नहीं होगा। मंत्र तो एक विचार है कि आंखों की रक्षा करो। अब प्रश्न है कैसे करें ? यजुर्वेद के एक मन्त्र में बताया है चक्षुर्यज्ञेनकल्पताम् अर्थात् यज्ञ के द्वारा आंखों की रक्षा करो। ऐसे काम करो, जिससे नेत्रों की ज्योति बनी रहे और ऐसे काम मत करो जिनसे आंखों को हानि हो। ऐसे कार्यों का वर्णन अग्रलिखित है –

१. प्रातः उठते ही सबसे पहले आंखों को छोंटे मार–मार कर अच्छी तरह धोना चाहिए। जो लोग ऐसा नही करते उनकी आंखो प्रायः बीमार रहती हैं।

२. प्रतिदिन भ्रमण करने के लिए जाओ और उगते सूर्य को एक दो मिनट तक देखते रहो।

३. यदि नजला नहीं है तो हरी घास पर नंगे पांव चलो।

४. शीर्षासन करो, परन्तु एक दो मिनट से अधिक नहीं।

५. प्रतिदिन दांतों को साफ रखना आवयक है, क्योंकि दांतों की गंदगी का प्रभाव आंखों पर पड़ता है। दांतों के साथ साथ गले को भी साफ करो।

६. पांव के तलवों और नाखूनों को स्वच्छ रखो। इनमें कभी कभी तेल की मालिश करते रहो।

७. शराब, धूम्रपान आदि सभी प्रकार की नशीली वस्तुएं नेत्र ज्योति को जबरदस्त नुकसान पहुंचाती हैं। इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

८. मांस खाने वालों के तो बच्चे भी आंखों के रोग लेकर पैदा होते हैं। मांस खाने से आंखों की चर्बी बढ़ जाती है और शीघ्र अंधापर आने लगता है।

९. लाल मिर्च के स्थान पर काली मिर्च का सेवन करें।

१०. अनुभव बताता है कि वनस्पति घी, तेल का लगातार सेवन आंखों की रोशनी को कम करता है इसलिए गाय का देशी घी प्रयोग करें। देघी घी के पकवान व मिठाइयों का अधिक सेवन न करें जैसे प्रतिदिन पूड़ी पराठे खाते रहना।

११. पेट को साफ रखें कब्ज न होने दे, सुपाच्य भोजन ही ग्रहण करें और नित्य प्रति थोड़ा दूध अवश्य लेते रहें। चाय काफी सेवन न करें।

१२. फलों में संतरा, अनार, गाजर का रस सेवन करना लाभदायक है। क्योंकि इनमें विटामिन ए की मात्रा अधिक होती है जो नेत्रों के लिए उपयोगी है।

१३. आंखों में खारिश, खुजली होती है या लाली सी रहती है तो त्रिफला या भुनी हुई शुद्ध फिटकरी के लोशन से धोना चाहिए।

१४. अति मैथुन से आंखे अन्दर को धंस जाती हैं और दृष्टिहीन होने लगती हैं।

१५. निरन्तर रात्रि जागरण से भी आंखों खराब होने लगती हैं।

१६. कभी लेटकर मत पढ़ो।

१७. चलती बस, गाड़ी में नहीं पढ़ना चाहिए।

१८. बहुत कम या अधिक तेज रोशनी में नहीं पढ़ना चाहिए।

१९. धूल–धूंआ और तेज धूप से आंखों को बचाकर रखो। धूल उड़ रही हो तो तेज धूप में जाना ही पड़े तो चश्मा लगाकर सिर पर कपड़ा डालकर जाओ।

२०. आंखों में कभी गंदे हाथ व उंगली मत लगाओ।

२१. अधिक शोक, चिन्ता से भी आंखों पर कुप्रभाव पड़ता है। इसका शीघ्र निवारण करो।

२२. पूर्वजों के उस फार्मूले को लेकर अमल में लाओ जिसे इस प्रकार बोलते हैं :

आंखों में अंजन, दांतो में मंजन,
नितकर, नितकर, नितकर।
नाक में उंगली, कान में तिनका
मतकर, मतकर, मतकर।

– देवराज आर्यमित्र
'वैद्य विशारद'
हरि नगर, नई दिल्ली

प्रतिष्ठा में

आदरणीय विमल आर्य जी,

नमस्ते,

मैं 'सार्वदेशिक' का नियमित पाठक हूं। मैं 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' का पाठक होने के साथ–साथ मैं आपका प्रशंसक भी हूं।

एक बार श्री महेन्द्र पाल आर्य हमारे यहां प्रवचन देने के लिए आए तो मेरी उनसे काफी लम्बी बातचीत हुई थी। हम लोग आपसी अनुभव बांटने के क्रम में मैंने उनसे निजी तौर पर एक प्रश्न पूछा – 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' का प्रकाशन नियमित अन्तराल पर क्यों नही होता है ? तो उन्होंने बताया कि इसके पीछे अनेक कारण हैं और उन्होंने कहा कि वो विमल वधावन आर्य ही ऐसे शख्स हैं जिनके चलते आज मेरा और तुम्हारा लेख व समाचार आदि 'सार्वदेशिक' के माध्यम से आर्यजगत् में पहुच पा रहा है।

सार्वदेशिक साप्ताहिक को अनियमित अन्तराल पर प्रकाशित करने के लिए ही सही, आर्य होने के नाते, मैं आपका आभारी हूं।

– विकाश रोशन आर्य,
बसन्तपुर, सिवान (बिहार)

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुदित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in* वेबसाईट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
मूल्य : २



सार्वदेशिक

साप्ताहिक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र


वर्ष ४५ अंक १६ | १ अप्रैल से ७ अप्रैल, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | चै०शु०१४
भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुदी डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में विद्वानों और पुरोहितों का प्रमुख योगदान - सभा प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से वैदिक मिशन मुम्बई द्वारा दिनांक १० व ११ मार्च, २००७ को आर्यसमाज के दिग्गज पुरोहित और विद्वानों का अद्भुत सम्मेलन आर्यसमाज सान्ताक्रुज के सभागार में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी मेघानन्द जी ने की। उद्घाटन भाषण देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने देश के कोने–कोने से आये हुए विभिन्न विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवम् उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

उन्होंने यह भी कहा कि वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में पुरोहितों का बहुत बड़ा योगदान होता है, किन्तु युवा वर्ग धर्म से विमुख होकर भौतिकता के पीछे भाग रहा है जिन्हें आर्य समाज से जोड़ना है। श्री मिठाईलाल सिंह जी ने यह भी कहा कि देश के सभी समाजों में यज्ञ करने कराने का क्रम एक जैसा होना चाहिए जो सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा ने बना रखा है।

आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि पुरोहितों का परिवार के साथ–साथ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई एवं मुम्बई की सभी आर्यसमाजों के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी धर्मानन्दजी का अभिनन्दन श्री मिठाईलाल सिंह जी की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें श्री दयानन्द बालिका विद्यालय, माटुंगा की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इस समारोह में आर्य जगत के लोगों ने श्री मिठाई लाल सिंह जी, स्वामी अग्निवेश एवं श्री कैप्टन देवरत्न आर्य जी का एक ही मंच पर पाकर विशेष हर्ष का अनुभव किया। स्वामी अग्निदेव ने स्वामी धर्मानन्द जी के द्वारा चलाए जा रहे कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए एक लाख ग्यारह हजार रुपये की सहयोग राशि देने की घोषणा की।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई ने दो लाख इक्यावन हजार रुपये एवम् प्रशस्तिपत्र, शाल, श्रीफल एवं पुष्पमाला से सम्मान किया। श्री मिठाई लाल सिंह ने स्वामी धर्मानन्द जी को पूर्ण आश्वासन दिया कि आप स्वामी दयानन्द जी के मिशन को लेकर आगे बढ़ें मुम्बई की सारी आर्यसमाजें तथा मुम्बई के दानी महानुभाव आपको आर्थिक सहयोग अवश्य देंगे। इसमें जो भी और धन संग्रह होगा हम आपके पास अवश्य भिजवायेंगे।

उक्त कार्यक्रम का संचालन सभा के महामंत्री अरुण अबरोल ने किया तथा अतिथियों का आभार श्री राजकुमार गुप्त कोषाध्यक्ष ने व्यक्त किया।



१. विद्वत एवं पुरोहित सम्मेलन में सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी के आमन्त्रण पर एकत्रित श्री देवरत्न आर्य एवं अग्निवेश, २. स्वामी धर्मानन्द जी, उड़ीसा को दो लाख इक्यावन हजार रुपए की राशि भेंट करते हुए सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जी, ३. कार्यक्रम संचालन करते हुए मुम्बई सभा के महामन्त्री श्री अरुण अबरोल

यज्ञ की एकरूपता पर बल

सार्वदेशिक सभा की सुदृढ़ता सर्वोपरि है – अमेरिका सम्मेलन या दिल्ली, हरियाणा विवाद नहीं

मुम्बई में आयोजित इस समारोह से सभा प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जी ने अपनी अभिलाषा भी स्पष्ट करने का प्रयास कर दिखाया है कि वे सच्चे मन से आर्य जगत में एकजुट संगठन का निर्माण करना चाहते हैं तथा इसमें प्रत्येक प्रकार का सहयोग देने व लेने के लिए तैयार है। इस समारोह में श्री मिठाई लाल सिंह जी की पहल पर श्री देवरत्न आर्य एवं अग्निवेश जी को आमन्त्रित करने का कदम भी उसी प्रयास की एक कडी था। प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी वैधानिक स्थिति को अन्तर्मन में तो समझता है परन्तु अपने अपने वर्ग से बन्धे होने के कारण तथा निहित स्वार्थों के कारण खुली चर्चा में खुले विचार नही रख पाता।

सभा प्रधान जी की स्वीकृति से विगत सितम्बर माह में मुम्बई सभा के मन्त्री श्री अरूण अबरोल ने इसी खुली चर्चा की शुरुआत की थी जिसमें अगिनवेश तथा उनके कुछ साथी भी इस चर्चा में शामिल हो गए परन्तु श्री देवरत्न आर्य ने यह कह कर समय टालने का प्रयत्न किया कि दिल्ली सम्मेलन के बाद एकता प्रयास करेंगे।

अक्टूबर सम्मेलन के बाद भी बातचीत को पुनः प्रारम्भ करने में तीन माह का समय बिता दिया गया। इस बीच सभा प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह एवं सभा मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने २३ दिसम्बर को आयोजित हरिद्वार साधारण अधिवेशन बैठक में विशेष रूप से सभा के उपमन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य को अगले दिन श्री देवरत्न आर्य वर्ग के साथ बातचीत के लिए अधिकृत किया। जिसका परिणाम निकला कि ८ फरवरी को सभा प्रधान जी के निमन्त्रण पर श्री देवरत्न के कुछ साथी मुम्बई पधारे परन्तु सभा के निर्वाचन समय से शीघ्र करवाने तथा एकजुट होकर शामिल होने के लिए सभी लोग तैयार नही हो

शेष पृष्ठ ३ पर

श्री सुदर्शन शर्मा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान निर्वाचित

जालन्धर, ४ मार्च। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि०) गुरूदत भवन चौक किशनपुरा जालन्धर का त्रैवार्षिक चुनाव श्री विमल वधावन आर्य महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें सारे पंजाब की आर्यसमाजों के लगभग ४०० से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। साधारण अधिवेशन में महामंत्री प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने पंजाब में आर्य समाज की गतिविधियों पर त्रैवार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। सभा के कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज ने आय–व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से आये हुए प्रतिनिधियों ने पारित कर दिया। आगामी तीन वर्ष के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद पर श्री सुदर्शन कुमार शर्मा जी का नाम वयोवृद्ध आर्य नेता श्री आशानन्द आर्य लुधियाना ने प्रस्तुत किया जिसका अनुमोदन श्री सरदारी लाल एवं श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा ने किया। इस तरह कोई और नाम प्रस्तुत न होने के कारण सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री विमल वधावन आर्य ने सर्वसम्मति से आगामी तीन वर्षों के लिए श्री सुदर्शन शर्मा को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान निर्वाचित घोषित किया। जिस पर सभी प्रतिनिधियों ने करतल ध्वनि से इस घोषणा का स्वागत किया।



सन्यासी एवं विद्वत महान आत्माओं के साथ श्री सुदर्शन शर्मा २. आर्य प्रतिनिधि सभ पंजाब के प्रधान चुने जाने पर श्री सुदर्शन शर्मा का माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन।

शेष पृष्ठ ३ पर

R.N.

[स्]वतन्त्रता संग्राम के उन्नायक थे स्वामी दयानन्द सरस्वती

...कुल कांगड़ी स्थित अमृत ...ज्ञशाला में महर्षि स्वामी ...हम के विचारों एवं कार्यों के ...लते हैं ...तु तथा दयानन्द जयन्ती ...ातु ...क्ष्य में प्रातः ६.३० बजे ...ं अथ ...आयोजन किया गया। ...रते हैं, ... गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने ...ण, गीत एवं कवितायें आदि प्रस्तुत की। जिनमें ब्र० चेतन, ब्र० किशन, ब्र० सन्तोष एवं ब्र० गौरव आदि प्रमुख थे।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या संकाय के डीन एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० महावीर अग्रवाल ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वतन्त्रता क्रान्ति के उन्नायक थे।

उन्होंने ही अपने सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य शब्द को सर्वप्रथम उल्लेखित किया था।

इस अवसर उन्होंन माघ कृत शिशुपालवधम् का उदाहरण देते हुए यह भी कहा कि मानव को कभी भी दुरित एवं दुर्गुणी व्यक्तियों की चर्चा भी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उनकी चर्चा से भी अकल्याण होता है।

इस अवसर पर डॉ० अमरनाथ राणा ने भी अपने विचार रखे।

इस अवसर पर कार्यक्रम में समस्त प्राध्यापकगण, अधिष्ठातागण एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ० योगेश शास्त्री ने किया।

'वैदिक स्वर्ग' पुस्तक का लोकार्पण

(विवाह संस्कार हेतु आर्यसमाजों में उपयोगी)

उदयपुर। ऋषि दयानन्द जयन्ती के शुभ अवसर पर स्थानीय नगर परिषद के विशाल सभागार में आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा प्रकाशित एवं मंत्री गिरीश जोशी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'वैदिक स्वर्ग' का समारोह के मध्य अतिथि व एम०डी०एच० के निदेशक महाशय धर्मपाल व समारोह के अध्यक्ष प्रसिद्ध कैंसर विशेषज्ञ डॉ० सुखदेव चन्द सोनी ने विमोचन किया।

उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत पुस्तक में वैदिक विवाह हेतु आवश्यक प्रार्थना पत्र, शपथ पत्र, विवाह हेतु आवेदक को निर्देश विवाह कानून के नीति निर्धारक बिन्दू, आर्य विवाह अधिनियम, सोलह संस्कारों का संक्षिप्त ज्ञान, शुद्धि संस्कार हेतु आवश्यक पत्र सहित गृहस्थाश्रम के द्वारा मनुष्य स्वर्ग का सुख कैसे प्राप्त करें यह सम्पूर्ण सार तत्व सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर उल्लेखित किया गया है। वैदिक विवाह के प्रार्थी को आर्यसमाज द्वारा देने हेतु इस सम्पूर्ण पुस्तक पर अंकित मूल्य १००/– रु० है जो आर्यसमाजों को मात्र २५ रुपये प्रति के आधार पर उपलब्ध करायी जाएगी।

पुस्तक की भूमिका में श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के यशस्वी कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने इस पुस्तक को आर्य जगत में प्रथम प्रयास के रूप में प्रशंशित किया है।

ऋषि की कर्मस्थली के विकास में महाशय धर्मपाल का योगदान

उदयपुर की वीरप्रसू धरा पर, सुरम्य गुलाब बाग में अवस्थित, सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ रत्न के प्रणयन स्थल, महर्षिवर देव दयानन्द की कर्मस्थली के जीर्ण शीर्ण स्वरूप को नवीन भव्य रूप प्रदान कर यहां से एक दो नहीं दसियों ऐसे प्रकल्पों के संचालन, जिनसे वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार हो के प्रयासों के फलस्वरूप न्यास के तत्वाधान में संचालित यह ऐतिहासिक स्मारक अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना चुका है।

धर्म और धन के धनी, परम ऋषि भक्त, कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी, प्रबन्ध निदेशक, एमडीएच लि. नई दिल्ली ने अपना वरदहस्त हमें प्रदान कर न्यास के तत्वावधान में भव्य रूप में मनाई गई महर्षि देव दयानन्द की पुण्य जयन्ती के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अपने साथियों सहित पधार कर खचाखच भरे स्थानीय नगर परिषद् सभागार में, सहस्रों श्रोताओं के समक्ष अपनी धर्मपत्नी स्वर्गीय माता लीलावती जी की स्मृति में इस कार्य को सुन्दरतापूर्वक पूर्ण करने हेतु इसका समस्त व्यय भार वहन करने की जब घोषणा की तो पूरा हॉल महर्षि की जय जयकार व उनके उनके दर्शाये मार्ग पर चल परोपकार में सदेव संलग्न रहने वाले महाशय धर्मपाल जी की जयकार से गुंजित हो गया।

इस अवसर पर बोलते हुए महाशय जी ने अपने जीवन में इस प्रकार के मानवोचित उदात्त संस्कारों के प्रवेश का श्रेय ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज व अपने यशस्वती पिता महाशय चुन्नीलाल जी व माता स्वर्गीय चन्नन देवी जी को दिया। महाशय जी ने बताया कि सियालकोट में प्रतिदिन पिता की अंगुली पकड़ आर्य समाज जाकर हवन करने के संस्कार इतने दृढ़ पड़े कि आज भी वे घर पर हवन कर अपने कार्यस्थल एम.डी.एच. हाउस को जाते है। यह भी आश्चर्य और गर्व का विषय है कि दुनिया भर में अपने उत्पादों की धूम मचा देने वाले प्रतिष्ठान में आज भी कार्यारम्भ व कार्य समाप्ति यज्ञ के साथ होता है। यज्ञ के महत्व ने श्रद्धेय महाशय जी के जीवन को इस गहनता से आप्लावित किया है कि यज्ञ का साररूप तत्त्व इदन्नमम् (यह मेरा नहीं है) इनके जीवन में गहराई से पैठ गया है। महाशय जी के सात्विक दान के फलस्वरूप आज दिल्ली में ३००० बैड के माता चन्नन देवी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल सहित अनेक चिकित्सा प्रकल्प तथा एम.डी.एच. इण्टरनेशनल स्कूल, महाशय चुन्नीलाल सरस्वती शिशु मंदिर, माता लीलावती कन्या विद्यालय, महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर सहित अनेक शिक्षणालय भी चल रहे हैं।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य द्वारा यह निवेदन करने पर कि आज औपचारिक शिक्षा के साथ साथ चरित्र निर्माण हेतु ऐसे पूरक विद्यालय भी चाहिए जहां मानव को सच्चे अर्थों में मानव बनाने हेतु शिक्षा दी जा सके 'पूज्या माता लीलावती वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण केन्द्र' की योजना को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव धूम-धाम से सम्पन्न

दयानन्द सा ऋषिवर पाकर धन्य हो गई वसुन्धरा – आर्यसमाज, भीमगंजमंडी, कोटा जं. में १२ फरवरी को सार्वदेशिक के निर्देशानुसार युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। प्रातः महर्षि दयानन्द विद्यालय में सभी बच्चों के साथ सामूहिक यज्ञ का आयोजन हुआ व यज्ञोपरान्त श्रीराम प्रसाद वैदिक, प्रेम नाथ कौशल, जे.एस. दुबे, अरविन्द पाणेय आदि ने बच्चों को स्वामी दयानन्द के जीवन के सम्बन्ध में जानकारी दी।

कार्यक्रम का समापन करते हुए मन्त्री श्री प्रेमनाथ कौशल तथा प्रधान श्री रामकुमार नांगल ने धन्यवाद ज्ञापित किया व मुख्य अतिथि श्री शिवलाल सैनी ने ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर श्रद्धा व निष्ठा से चलने के लिए सबका आह्वान किया। राजेन्द्र आर्य द्वारा लगवाये ऋषि दयानन्द की जय जय के नारों के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

आत्मा की नित्यता एवं अमरता वैज्ञानिक अन्वेषणों द्वारा सिद्ध

कोटा, २६ फरवरी। आर्यसमाज भीमगंज मंडी, कोटा जं के हाल में सम्पन्न परिचर्चा में 'पुनर्जन्म की अवधारणा' पर चर्चा करते हुए सर्वप्रथम वेदों के विद्वान पं० आनन्द सप्रे ने बडी ही सरल भाषा में बताया कि मानव के जन्म को विभिन्न स्थितियों को देखकर ही पुनर्जन्म का पुष्टिकरण होता है – कोई कितने गरीब परिवार में जन्मता है कि खाने पीने की भी तंगी हो और कोई खूब ठाट बाट वाले परिवार में जन्म पाता है।

इसीक्रम को आगे बढ़ाते हुए हाड़ौती के प्रसिद्ध कवि श्री वीरेन्द्र विद्यार्थी ने बताया कि मानव जीवन पूर्व जीवन के सदकर्मों के परिणाम स्वरूप प्राप्त होता है। शास्त्र सम्मत सात्विक प्रवृत्तियों से वर्तमान को आनन्ददायक बनाने के साथ भविष्य का निर्माण भी शुभ कर्मों के द्वारा मानव कर सकता है। सात्विक प्रवृति से व्यक्ति ऊर्ध्वगामी होता है।

डॉ० नगेन्द्र सक्सेना ने हिन्दू मान्यताओं की पुष्टि करते हुए बताया कि चार पहलू विचारणीय हैं – क्यों, किसका, कैसे और कहां। क्यों – अर्थात् कर्मानुसार – किसका यानि सूक्ष्म शरीर का – कैसे – अर्थात् आत्मतत्व के साथ और कहां – भूः भुवः, स्वः, महः, जनः तपः और सत्यम् सात आनन्दायक स्थानों में।

वैदिक विद्वान आचार्य विरधी चन्द ने जब पुनर्जन्म की अवधारणा की पुष्टि वेदों के मन्त्रों द्वारा की तो श्रोता वाह–वाह कर उठे – **मूल प्रकृतिः विकृतिः महदाद्या प्रकृतिर्विकृति सप्तः। षोडश कस्य विकारो न प्रकृति न विकृति पुरुषः।।**

जब उन्होंने गीता के श्लोक बोलते हुए बताया कि आत्मा अमर है – यह शरीर मरता है और पुनः पुनः अपने कर्मानुसार जीव ८४ लाख योनियों में भटकता है। मनुष्य जन्म में सदकर्मो से तथा जन्म जन्मान्तर के सदकर्मो से मुक्ति अवस्था को प्राप्त होता है। अन्त में डॉ० शान्ति भारद्वाज ने कहा कि आज इतने उदाहरण मिल गये हैं कि पुनर्जन्म स्वतः ही सिद्ध हो गया है। प्रधान श्री रामकुमार नागल ने सभी विद्वानों का स्वागत किया व परिचर्चा का सफल संचालन श्री राजेन्द्र आर्य ने किया। अन्त में आर्य नेता श्री छोटू सिंह आर्य को दो मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि दी गई।

ब्रह्मचर्य का अनुपालन ही एड्स उन्मूलन है

विश्व एड्स दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्मचर्य का अनुपालन ही एड्स से बचने का मूल उपाय है इसके लिए योगाचार्य श्रद्धानन्द ने ब्रह्मचर्य को स्पष्ट करते हुए बताया कि जैसे अपने माता पिता भाई बहिन के साथ पवित्र व्यवहार करते हैं वैसा ही दूसरों के साथ करना चाहिए। जैसा कि योगिराज श्री कृष्ण और श्रीराम ने अपने गृहस्थ जीवन में किया सो उनका जीवन अनुकरणीय है। अंग्रेजी में भी सिस्टर अर्थात् जो व्यवहार शिष्टाचार के साथ किया जाता है उसी को सिस्टर कहते हैं। करेक्टर अर्थात् चरित्र जो सही होता है उसी को अपने जीवन में उतारें। शासन द्वारा जो कण्डोम आदि का प्रचार हो रहा है उससे व्यभिचार बढ़ रहा है। इसलिए प्रधानमन्त्री को फैक्स भेजकर ब्रह्मचर्य को एड्स नियन्त्रण में शामिल करने की मांग हुई।

– श्रद्धानन्द योगाचार्य,
आर्यसमाज कायमगंज,
फरूखाबाद

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज टाउनहाल रोड, शाहजहांपुर

प्रधान - श्री प्रेम बिहारी गुप्त
मन्त्री - श्री जितेन्द्र नाथ आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री नरेन्द्र कुमार आर्य

God won't ask what your job title was. He'll ask if you performed your job to the best of your ability.

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म दिवस

बड़े हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि 'वेद प्रचार समिति' के तत्वावधान में गांव ढ़िकौली जनपद बागपत उ०प्र० में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म दिवस बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया। यज्ञ में काफी संख्या में लोग उपस्थित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता मा० इन्द्रपाल सिंह ढ़ाका के नेतृत्व में हुई। विनोद आर्य ने यज्ञ में उपस्थित सभी आर्यजनों से नेताजी के आदर्शो पर चलने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन विनोद आर्य ने किया। विनोद आर्य ने कहा अगर देश धर्म व जाति को बचाना है तो हमें अपने जीवन को तयागमय बनाना होगा। यज्ञ में उपस्थित सर्वश्री पं० मनोज़ आर्य, चौ० विजयपाल सिंह, रामसिंह जी, सतपाल सिंह, देवेन्द्र प्रविन्द्र, श्रीमती सुदेश, श्रीमती रामवती, नगेन्द्र कुमार ढ़ाका, वरूणआर्य अभिषेक आर्य, राहुल आर्य, प्रमोद आर्य, वेदप्रकाश आर्य, महाशय सुबे सिंह, मा० सतपाल सिंह, संजय सिंह, अंकित, सोनू आदि उपस्थित हुए। शान्ति पाठ के बाद जयघोष हुआ। यज्ञ प्रसाद की सुन्दर व्यवस्था की गयी।

महाविद्यालय, ज्वालापुर का शताब्दी वर्ष ६ अप्रैल से

जनमानस को यह जानकर अपार प्रसन्नता होगी कि दिनांक ०६ अप्रैल से ०६ अप्रैल २००७ तक गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर अपना भव्यतम १००वां वर्ष सोत्साह मना रहा है।

इस अवसर पर देश के कोने कोने से साधु, महात्मा, राजनेता, आर्य विद्वान, मनीषी गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर पधार रहें हैं।

इस संस्था ने अपने १०० वर्षो में देश को महान दार्शनिक के रूप में आचार्य उदयवीर शास्त्री, वेदों के उदभट विद्वान डॉ० सूर्यकान्त जी, डॉ० कपिल देव द्विवेदी, संस्कृत साहित्य में दिग्गज डॉ० चन्द्रभान अकिंचन, डॉ० गणेश दत्त शास्त्री, प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री, हिन्दी साहित्यकार के रूप में पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन, प्रख्यात सांसद पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री, रामानन्द जी शास्त्री, विधायक के रूप में पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ एवं ठाकुर यशपाल सिंह दिये हैं, जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

भेदभाव रहित निर्धन बालकों को निःशुल्क शिक्षा देने में गुरुकुल महाविद्यलय ज्वालापुर का एक अमिट इतिहास है।

गुरुकुल परम्परा के जनक, महान तार्किक शिरोमणी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित यह संस्था सदैव फलती-फूलती रहे यही मंगलकामना है।

पृष्ठ १ का शेष

सार्वदेशिक सभा की सुदृढ़ता...

सके। उसके मुख्य कारण थे दिल्ली और हरियाणा के विनय आर्य, धर्मपाल आर्य एवं सुरेन्द्र सिंह शास्त्री का व्यवहार तथा उससे भी प्रबल कारण अब यह कहा गया कि एकजुट निर्वाचन पर विचार अमरीका में जुलाई सम्मेलन के बाद ही सम्भव होगा।

सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य एवं गुंजरात सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल के प्रयास से सभा प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह जी की उपस्थिति में १८ मार्च को पुनः अहमदाबाद में भी निर्णयात्मक विचार विमर्श का प्रयास किया गया परन्तु फिर वही दिल्ली-हरियाणा के तीनों आर्यो का अडियल व्यवहार तथा अमेरिका सम्मेलन के नाम पर एकता प्रयास को टाल दिया गया।

अमेरिका में भी सम्मेलन के नाम पर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका की स्वीकृति के बिना शिकागो आर्यसमाज के कुछ अधिकारियां को गुमराह करके वहां भी फूट के बीज बोने जा रहे हैं श्री देवरत्न आर्य, राजसिह आर्य तथा उनके साथ कई गुमराह हुए आर्यबन्धु। यह सब कार्य अनायास ही हो रहा है या दूरदर्शिता के अभाव के कारण, यह समय बताएगा। परन्तु इतना स्पष्ट है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सुदृढ़ करने से अधिक कई अन्य लक्ष्य इन लोगों के हृदय में पनप रहे हैं।

सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने कहा कि किसी भी सूरत में शीघ्र निर्वाचन करवाना ही है जिसकी प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है। जिन सभाओं के प्रतिनिधियों का विवरण तथा अन्य औपचारिकताए प्राप्त नही हुई हैं उनके प्राप्त होते ही उन्हें भी इस प्रक्रिया में शामिल करने का मार्ग खुला है। सार्वदेशिक न्याय सभा को स्वतन्त्र रूप से यह निर्वाचन प्रक्रिया प्रारम्भ करने की प्रार्थना की गई थी।

आगामी ८ अप्रैल को पुनः श्री देवरत्न आर्य एवं अग्निवेश की श्री मिठाई लाल सिंह जी के नियन्त्रण पर मुम्बई में विचार-विमर्श हेतु एकत्रित होने की सम्भावना है। समस्त आर्य बन्धुओं को यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि सार्वदेशिक सभा की सुदृढ़ता सर्वोपरी विषय है अमेरिका सम्मेलन या दिल्ली, हरियाणा का विवाद नही।

हकीकत राय बलिदान दिवस

अखिल भारतीय हकीकत राय समिति के तत्वावधान में हकीकत राय बलिदान दिवस रविवार आर्य समाज सरोजनी नगर में ४ फरवरी, २००७ को बडी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रातः ८.३० बजे से ६.३० बजे तक यज्ञ, ६.३० बजे से १०.३० बजे तक श्री गुलाब सिंह राघव के मनोहर भजन, १०.३० बजे से १२.३० बजे तक स्कूलों के बच्चों की कविता एवं भाषण प्रतियोगिता और रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर के बच्चों का बहुत आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम व धर्मवीर हकीकत राय के जीवन एवं बलिदान की नाटिका प्रस्तुत किये गये। सभी बच्चों को स्वर्गीय रतन लाल सहदेव के परिवार की ओर से पारितोषिक दिये गये, १२.३० बजे से १.३० बजे तक बलिदान जयंती मनायी गयी जिसमें अनेक आर्य विद्वान व आर्य नेताओं ने धर्मवीर हकीकत राय के जीवन पर प्रकाश डाला। अंत में बहुत सुंदर लंगर का प्रबंध किया गया।

समारोह में दक्षिण दिल्ली व अन्य समाजों से हजारों की संख्या में सम्मिलित हुए।

इस समारोह को सफल बनाने में स्व. श्री उतम चंद चोपड़ा परिवार व अन्य आर्य समाजों ने तन-मन-धन से सहयोग दिया और उत्सव को सफल बनाया।

अनोखी होली की टोली

होली (धुलेण्डी) के दिन आर्यसमाज, कोटा जं. द्वारा आर्य सन्यासी स्वामी आदित्यानन्द जी के नेतृत्व में अनोखी टोली निकाली गई। मन्त्री राजेन्द्र आर्य व प्रेम नाथ ने बताया कि इस टोली में सम्मिलित आर्य जन - 'गन्दी होली - बन्दर करो - नशा पीना - बन्द करो। भक्त प्रहलाद की जय हो, हिरण्यकश्यम का नाश हो।' आदि नारे लगाते हुए पूरे जंक्शन क्षेत्र में घूमे। जिसे सभ्य नागरिकों ने बहुत सराहा व स्थान स्थान पर टोली पर फूलों की वर्षा करके तथा मिठाई गुजिया आदि खिलाकर स्वागत किया। पुलिस प्रशासन ने भी इस टोली को बहुत पसन्द किया। इसमें सर्वश्री कर्णसिंह, रामदेव व राजेन्द्र आर्य होली के गीत गाते हुए चल रहे थे। टोली का समापन स्वामी आदित्यानन्द जी के उद्‌बोधन से शान्ति पाठ के साथ हुआ। प्रधान श्री रामकुमार नागल ने बच्चों व युवाओं से होली पर हरे पेड न काटने की अपील की।

पृष्ठ १ का शेष

श्री सुदर्शन शर्मा...

श्री सरदारी लाल ने एक अन्य प्रस्ताव करते हुए कहा कि सभी पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्य, आर्य विद्या सभा, सार्वदेशिक सभा, आर्य विद्या परिषद् तथा अन्य समितियों के सदस्य मनोनीत करने का अधिकार नवनिर्वाचित प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा को दे दिया जाये जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री विमल वधावन ने आर्य समाज की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए देश में बढ़ रहा भ्रष्टाचार, भ्रूण हत्या, पाखण्डवाद, आतंकवाद, नौजवानों में बढ़ रही नशे की आदत और महिलाओं के उत्पीड़न जैसी समस्याओं पर गहरी चिंता प्रकट की। सभा के नवनिर्वाचित प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा ने सर्वसम्मति से प्रधान चुने जाने पर सभी आये हुए प्रतिनिधियों का आभार प्रकट किया और आर्यसमाज के कार्य तथा देव दयानन्द के मिशन को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर श्री सरदारी लाल, श्री देवेन्द्र नाथ, चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, श्री प्रेम भारद्वाज, प्रो० स्वतंत्र कुमार आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

श्री सुदर्शन शर्मा ने पुनः प्रधान चुने जाने पर पूर्ववत श्री स्वतन्त्र कुमार को सभा का महामन्त्री, श्री प्रेम भारद्वाज को कोषाध्यक्ष तथा श्री देवेन्द्र शर्मा को रजिस्ट्रार निर्वाचित किया।

आत्मशुद्धि आश्रम गुरुकुल प्रवेश सूचना

आर्ष गुरुकुल आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में कक्षा ६ से प्रारम्भ करके उच्च श्रेणी तक प्रवेश लिए जाएगें। ५वीं श्रेणी उत्तरीण जो विद्यार्थी प्रवेश लेना चाहते हैं उनको अप्रैल मास के अन्तिम रविवार अथवा जुलाई मास के प्रथम रविवार को आयोजित लिखित एवं मौखिक परीक्षा में सम्मलित होना अनिवार्य है। परीक्षा के आधार पर ही प्रवेश दिया जाएगा।

विशेष जानकारी हेतु आप प्राचार्य अथवा मुख्याधिष्ठाता आर्ष गुरुकुल आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ से सम्पर्क करें -

मुख्याधिष्ठाता - स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी

दूरभाष : ०१२७६-२३०१६५, चलभाष : ६४१६०५४१६५

प्राचार्य - आचार्य प्रमोद वेदालंकार, चलभाष : ६८६८३५६४६३

आर्ष गुरुकुल आत्मशुद्धि आश्रम दिल्ली रोड

बहादुरगढ़ पिन- १२४५०७, जिला झज्जर हरियाणा

आर्यसमाज रायचूर मन्त्री को पत्नी शोक

श्री विद्याधर जी अवस्थी मन्त्री आर्यसमाज रायचूर की धर्मपत्नी श्रीमती शीला अवस्थी का आकस्मिक निधन हृदय गति रूक जाने के कारण दिनांक २७-२-२००७ दिन मंगलवार को हो गया।

वे आर्यसमाज के समस्त कार्यो में उत्साहपूर्वक भाग लेती थी ईश्वर मृतक आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

उनका अत्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति एवं वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा आचार्य श्री यदुवीर द्वारा सम्पादित हुआ।

डॉ० जिज्ञासु को मांतृशोक

आर्यसमाज कोतराहां के मन्त्री डॉ० (प्रो०) राजेश्वर जिज्ञासु जी की माताजी श्रीमती धनेश्वरी आर्या (धर्मपत्नी श्री जगन्नार्थ आर्य) का हृदयगति रूकने से निधन हो गया। वह ८५ वर्ष की थी।

उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

आर्ष गुरुकुल दाधिया में प्रवेश

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या ८ पर साबी नदी के किनारे स्थित एक रमणीक संस्था है। यह गुरुकुल दिल्ली से लगभग १०० कि०मी० की दूरी पर स्थित है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त पाठकों से निवेदन है कि गुरुकुल में अधिक से अधिक प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क करें - प्राचार्या प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, जिला अलवर, राजस्थान ३०१४०१ मोबाईल नं० ०६४१६७४७३०८

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116/2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 1-4-2007 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 29/30-03-2007

पुस्तक समीक्षा

'मोतियों का प्रकाश'

मूल्य : २५ /- पृष्ठ सं० ७५

प्राप्ति स्थान : प्रकाश प्रकाशन, प्रकाशन भवन, पंजाबी कालोनी, नासिक रोड, महाराष्ट्र-४२२१०१, फोन : ०२५३-२४६८७७७

भारत की ऋषि परम्परा से मुझे तो एक ही विचार सुन्दर लगा है – ईश्वर में पूर्ण आस्था तथा ईश्वरीय निर्णयों के प्रति समर्पण तथा त्याग–तप का जीवन ही सच्चे आनन्द का जीवन है। सामान्यतः लोग छोटे से सुख, पद–मान–सम्मान, धन सामग्री आदि के प्राप्त होने पर ही उसे आनन्द और मोक्ष समझ बैठते हैं परन्तु यह भूल जाते हैं कि ईश्वर की अपार सृष्टि में हमारा और इस धन सम्पदाओं और सम्मान का एक कणमात्र भी अनुपात नहीं है। अपने अस्तित्व और उसका ईश्वर के साथ सम्बन्ध जानने को इच्छुक आत्मा ही वास्तविक और स्थाई आनन्द को प्राप्त कर सकता है।

श्री भगवन्त सिंह कपूर आनन्द प्राप्ति की खोज में सहायक बनने की योग्यता रखने वाले ऐसे ही एक महान आत्मा है। इनके द्वारा रचित पुस्तक 'मोतियों का प्रकाश' भी उन मोतियों की खोज को लक्ष्य बनाकर तैयार की गई है जिनकी खोज प्राचीन काल से हमारे ऋषि मुनी पितर करते आए हैं।

मेरी दृष्टि में यह पुस्तक अमूल्य है परन्तु भौतिक युग में विचारों का आदान–प्रदान भौतिक साधनों से हो रहा है। अतः इसका भौतिक मूल्य बेशक रखा गया हो परन्तु साधक बुद्धि के लोग इस महत्वपूर्ण कृति से वंचित न रहे तो अच्छा होगा।

– विमल वधावन आर्य
सभा मन्त्री

आवश्यकता

विद्यालय के लिए

१. मध्यमा की छात्राओं को संस्कृत व्याकरण, साहित्य आदि पढ़ाने के लिए योग्य शिक्षिका गुरुकुल प्रणाली में शिक्षित व अनुभवी अध्यापिका को प्राथमिकता दी जायेगी।

२. संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी आदि पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित, अनुभवी शिक्षिका।

३. लाइब्रेरियन – हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी जानने वाली अनुभवी महिला।

छात्रावास के लिए - आवासीय

१. आचार्या – संस्कृत निष्ठ, वैदिक आर्य विचारों वाली कर्मठ, संस्था को सुचारू रूप से संचालन में योग्य व अनुभवी।

२. वार्डन – छात्राओं की हर प्रकार से देख रेख करने वाली स्वस्थ, कम से कम दसवीं पास।

३. पाचिका – खाना बनाने में अनुभवी व मेहनती।

केवल महिलाए ही प्रमाण पत्र व प्रार्थना पत्र सहित साक्षात्कार के लिए ३–५–२००७ को प्रातः साढ़े ६ बजे से साढ़े १२ बजे तक 'आर्य कन्या गुरुकुल, रिंग रोड, आर० ब्लॉक, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली – ६० में उपस्थित हो। – **प्रेमलता आचार्या**
आर्य कन्या गुरुकुल,
न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

प्रतिष्ठा में

12437 श्री उपकुलपति महोदय (नि०)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तरांचल)

सार्वदे[illegible] विवरण

फार्म ४ नियम ८

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशन का स्थान	: दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–२
प्रकाशन की अवधि	: साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	: प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम	: विमल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
मुद्रक का पता	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–२
सम्पादक	: विमल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
प्रकाशक का पता	: पूर्ववत

उन व्यक्तियों के नाम, पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के १ प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, ३/५, आसफअली रोड, नई दिल्ली–२

मैं विमल आर्य इस लेख–पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है सही है।

– विमल आर्य, प्रकाशक व मुद्रक

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in* वेबसाईट : *http://www.sarvadeshik.com*

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये



सार्वदेशिक

साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४६ अंक २   २६ अप्रैल से ५ मई, २००७ तक   दयानन्दाब्द १८५   सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८   सम्वत् २०६४   वै०शु०१२

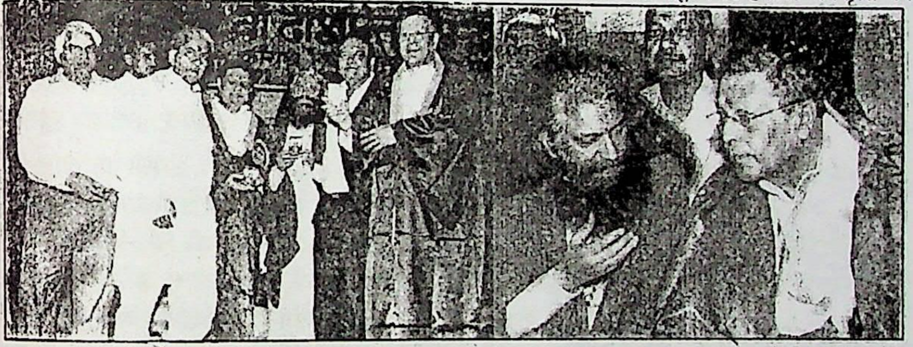
भारत में वार्षिक १०० रुपये   (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

त्याग, तपस्या, परसेवा एवं आत्मविश्लेषण की प्रेरणा देने वाली गुरुकुलीय शिक्षा भारत में पुनः स्थापित हो

– मुख्य न्यायाधीश, दिल्ली

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का १०७वां दीक्षान्त समारोह ११ अप्रैल को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। दीक्षान्त समारोह में दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डॉ० मुकुन्दकम शर्मा मुख्य अतिथि थे।

अपने दीक्षान्त भाषण में न्यायमूर्ति डॉ० शर्मा ने कहा कि हमारे पास जो कुछ भी है, उसे समाज और देश हित में व्यय कर देना चाहिए। यही श्रेष्ठ शिक्षा है। उन्होंने कहा गुरुकुलीय शिक्षा को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है।



दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० मुकुन्दकम शर्मा, मुख्य न्यायाधीश दिल्ली उच्च न्यायालय को धार्मिक साहित्य एवं कैसेट भेंट करते हुए दिल्ली सभा के प्रधान वैद्य इन्द्रदेव, पंजाब सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य, श्री पतराम त्यागी तथा स्वामी चितानन्द जी वेदमुनि।

अपने दीक्षांत भाषण में मुख्य न्यायाधीश ने कहा कालचक्र के प्रभाव से अनेक बार हमारी सभ्यता और संस्कृति पर आक्रमण कर समाप्त करने की कोशिश की गई, मगर हमारी संस्कृति को कोई हानि नहीं पहुंचा सका। उन्होंने कहा शिक्षण संस्थानों का उद्देश्य पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही छात्रों को त्याग, तपस्या, परसेवा तथा आत्म विश्लेषण की दीक्षा देना होना चाहिए। नव स्नातकों का आह्वान करते हुए मुख्य न्यायाधीश ने कहा नवस्नातक आधुनिक शिक्षा के साथ ही अतिशय महत्वपूर्ण भारतीय संस्कृति के अनुरूप गुरुकुलीय शिक्षा के महत्व को पुनः स्थापित करें।

दीक्षान्त समारोह में पी.एच.डी. की १३०, अलंकार की ७८, बीएससी की २२३, एमएससी की ४२७, एमए की २२८, बीपीएड की ६७ तथा बीटेक की २१० उपाधियां छात्र–छात्राओं को प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त १३ छात्रों को अलग अलग विभागों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। माइक्रोबायोलॉजी में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए प्रतिभा कर्णवाल को पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई।

कुलपति प्रो० स्वतंत्र कुमार ने विश्वविद्यालय का प्रगति विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह संस्थान भारतीय संस्कृति की उन्नति, राष्ट्रीय सद्भावना एवं शिक्षा क्षेत्र के लिए निरन्तर प्रयासरत है। आचार्य एवं उप कुलपति प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री ने नवस्नातकों को दीक्षा प्रदान की। संन्यासियों की ओर से स्वामी चितानन्द वेदमुनि ने दीक्षान्त समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा उपाधिधारक केवल प्रमाण पत्रों के आधार पर अपने को प्रमाणित न समझें अपितु जीवन में ऐसे कार्य करें कि स्वयं आपके कार्य आपको प्रभावित करें।

समारोह में स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पादकीय आलेख तथा महात्मा गांधी और गुरुकुल नामक दो पुस्तकें का विमोचन भी किया गया। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति डॉ० शर्मा को विद्या मार्तण्ड की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलाधिपति श्री सुदर्शन शर्मा ने की तथा संचालन कुलसचिव प्रो० आर.डी. शर्मा तथा प्रो० महावीर अग्रवाल ने संयुक्त रूप से किया।

इस समारोह में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य, कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान वैद्य इन्द्रदेव जी, महामन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य सुमन तथा हरियाणा सभा के प्रधान श्री भगत मंगतूराम, पंजाब सभा के रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज तथा कई अन्य आर्य नेता उपस्थित थे।

वैचारिक क्रान्ति शिविर (१३ मई से २७ मई)

लगभग पिछले ३० वर्षों से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, भारत वर्ष के अनेक ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों – जैसे आसाम, नागालैण्ड, मिजोरम, बोकाजान, हालाकाण्दी, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा इत्यादि प्रान्तों में अशिक्षित लोगों में शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति का ज्ञान कराने हेतु कार्यरत है। सेवाश्रम संघ द्वारा लगाए जाने वाले इस वार्षिक शिविर का मुख्य प्रयोजन यही है कि इन प्रान्तों के ग्रामीण क्षेत्रों से कुछ पढ़े लिखे युवक–युवतियों को बुलाकर यहां दिल्ली में १५ दिन के शिविर में अपने पास रख, उन्हें भारतीय संस्कृति का बोध संस्कृति और गौरव की स्वयं कैसे रक्षा करें, इस योग्य बनाया जाता है। शिविर के इसी कार्यक्रम में एक दिन इन्हीं युवक–युवतियों को यज्ञ की वेदी पर यज्ञोपवीत भी धारण कराया जाता है और बताया जाता है कि यज्ञोपवीत किस प्रकार हमारी संस्कृति का प्रतीक है। इस कार्यक्रम को हम परिचय सत्र का [illegible]

शेष पृष्ठ ३ पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन पूर्व निर्धारित तिथि २६ अप्रैल, २००७ (रविवार) को आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल चांदनी चौक दिल्ली में प्रातः ११ बजे से होगा।

प्रान्तीय सभाओं के समस्त प्रतिनिधियों को अधिवेशन के आमन्त्रण डाक द्वारा भेजे जा चुके हैं। यदि किसी प्रतिनिधि महानुभाव को आमन्त्रण पत्र प्राप्त न हुआ हो तो तुरन्त सभा कार्यालय अथवा सभा मन्त्री से सम्पर्क करें। समस्त प्रतिनिधि निर्धारित समय से पूर्व पधार कर बैठक में भाग लें।

– **विमल वधावन आर्य**, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

फोन : ६३१२६१२१३६, कार्या[illegible]

हिन्दी में काम करने की सीख दी

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डॉ० मुकुन्दकम शर्मा अपने दीक्षांत भाषण में हिन्दी में काम करने की सीख देकर गए। अपने दीक्षांत भाषण को अंग्रेजी में प्रारंभ करने के बाद उन्होंने कहा वह मूलतः असम राज्य से हें तथा उनकी बोलचाल की भाषा असमी है। उन्होंने कहा उन्हें हिन्दी बोलने में परेशानी आती है। फिर भी उन्होंने अपना दीक्षांत भाषण हिन्दी में ही पढ़ा। उन्होंने यहां तक कहा अगर वह अपना संबोधन देवभाषा संस्कृत में कर सकते तो उन्हें ज्यादा खुशी होती।

सम्पादकीय

नमन



आर्यसमाज को मैंने जब से देखा और इसके करीब आते–आते मैं ऐसा अनुभव करने लगा कि महर्षि दयानन्द जी ने जिस आर्यसमाज की कल्पना, रूपरेखा का डिजाईन बनाया वही मैं हूं।

इस आध्यात्मिक आकाश के आनन्द का अनुभव करते--करते मैं लगातार अग्रसर था अपने गन्तव्य की ओर। अचानक एक आंधी आई और उस आध्यात्मिक उडान को कुचलते हुए नीचे गिराया तो आंखे खुली कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के कल्पित आर्यसमाज में निःस्वार्थ के स्थान पर स्वार्थ, अहंकार, झूठे मान–सम्मान, पदों की होड़ का कुचक्र असीम रूप में फैल चुका है।

मैं स्वयं उस आध्यात्मिक आनन्द का अनुभव करते–करते किसी छोटे से छोटे या बड़े से बड़े पद को भी स्वीकार करना नहीं चाहता था परन्तु दुर्भाग्यवश बुद्धि की निर्मलता के कारण हठ नही कर पाया। दोनों बार तत्कालीन वातावरण में उपस्थित साथियों के आग्रह के कारण जीवन में केवल दो पदों को स्वीकार किया। वर्ष २००१ से २००४ तक वरिष्ठ उपप्रधान तथा २००४ से २००७ तक मन्त्री। इन पदों से जुड़े कर्त्तव्यों का पालन करते हुए या अधिकारों का प्रयोग करते हुए मैंने अपने लोक–परलोक को कलंकित करने वाला कोई कार्य नहीं किया। **मेरी एक ही भूल थी पदाधिकारी बनना।** इसका प्रायश्चित अब यही संकल्प है कि मैं इस पदाधिकार व्यवस्था को अन्तिम नमन कर दूं। फिर भी कुछ महानुभावों के स्वार्थो को मेरे कुछ निर्णयों या प्रयासों से यदि कोई ठेस पहुंची हो तो उन्हें मेरा सुझाव है कि **प्रत्येक कार्य की कसौटी ईमानदारी और निःस्वार्थता होती है।** यदि वे लोग अपनी अभिलाषाओं को इस कसौटी पर तोलकर देखें तो स्वतः ही अपनी भूल स्वीकार करेंगे।

चलो, भूल किसी की भी हो, अन्तिम नमन से तो उन सबको भी हर्षित होना चाहिए ही।

मुझे वह उच्च कोटि का आध्यात्मिक यौगिक सिद्धान्त सबसे प्रिय है कि यदि हम हृदय से पवित्र और शुद्ध हैं, निःस्वार्थी, निर्लेप हैं तो दुनियां के चुभते बाण या नेगेटिव तरंगे हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकतीं, अपितु प्रत्येक तरंग हमारे मन रूपी क्रिस्टल से टकराते ही शुद्ध हो जाती है और इस शुद्धिकरण के प्रभाव सहित सामने वाले को भी शुद्धिकरण का लाभ देती हैं।

समस्त विद्वत मण्डल एवं आर्यजनों के मूक आशीष की प्रार्थना

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के पावन विचार सदैव नित्य प्रेरक बने रहें।

जिस प्राचीन ऋषि संस्कृति से साक्षात हो चुका हूं – वह संस्कृति मेरा अलंकरण बनी रहे।

जिस यज्ञ (अर्थात पूर्ण समर्पण) की ज्योति मेरे हृदय में स्थापित हो चुकी है वह पावन ज्योति सदैव प्रज्वलित रहे।

इसके अतिरिक्त परम पिता परमात्मा से भी और कुछ प्रार्थना नही करनी। केवल प्रभु के निर्देश मंत्रें तरंगों से प्राप्त होते रहे और उनके सहारे जीवन की यात्रा पर धरती माता के विद्वत मण्डल तथा धर्म प्रेमी आर्य महान आत्माओं के आशीष के साथ इस जीवन का सदुपयोग किसी भी शुभ कार्य के लिए कर पाऊं, यही मेरी मनोकामना है।

ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति

– विमल वधावन आर्य

पुस्तक समीक्षा

दुःख - कारण और निवारण

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान : वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोड, रोजड, पो० सागपुर, जिला साबरकांठा, गुजरात

मूल्य : ५/- **पृष्ठ संख्या : ५६**

लेखक : स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

मानव जीवन को दुःखों का घर बताया गया है। इसके कारण सामने हैं – हमारे प्रारब्ध या वर्तमान कर्म। परन्तु ऋषियों मुनियों ने दुःखों के निवारण भी बताए हैं।

दुःखों के निवारण का अभिप्राय यह नही है कि जीवन में संकट, विपत्तियां या विपरीत परिस्थितियां उत्पन्न ही नही हों। निवारण का रहस्य यह है कि हमारी आध्यात्मिक शक्ति इतनी पवित्र और उच्च हो कि दुःखजनक परिस्थितियां हमारे मानसिक संतुलन को बिगाड न पाए, हम विचलित न हो।

इस विषय पर यह लघु ट्रेक्ट पठन योग्य ही नही अपितु धर्म प्रचार की दृष्टि से भी एक सुलभ ग्रन्थ है। ५ रुपये अर्थात् पांच सौ रुपए की सौ प्रतियां।

– विमल वधावन आर्य
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

(२)

वेदों में सामाजिक संगठन एवं याज्ञिक प्रक्रिया

प्रकाशन एवं प्राप्ति स्थान : वैदिक मिशन, ३०६ मिल्टन अपार्टमेन्ट्स, जुहू कोलिवाडा, मुम्बई–४९

मूल्य : १०० रुपये **पृष्ठ संख्या : ३४०**

सम्पादक : डॉ० सोमदेव शास्त्री

४९ वैदिक विद्वानों द्वारा उपरोक्त विषय को केन्द्रित करते हुए सार गर्भित लेखों का संग्रह एक अमूल्य स्मारिका के रूप में प्रस्तुत करके उस स्मारिका को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने का गुरुत्तर दायित्व निभाया है डॉ० सोमदेव शास्त्री जी ने। इस ग्रन्थाकार स्मारिका में यज्ञ से सम्बन्धित ऐसे सैकड़ों प्रश्नों का समुचित उत्तर आर्य जगत के मनीषियों की लेखनी से प्रस्तुत किया गया है जो याज्ञिक आर्य महानुभावों के मस्तिष्क पटल पर अकसर उत्पन्न होते रहते हैं। समिधा आहूत करना, ओ३म् का उच्चारण मन्त्र से पहले, वैदिक विद्वानों का भी यज्ञों से मनोवांछित प्राप्तियां कराने का दावा, यज्ञों का अधिकार, यज्ञ की विकृतियां, एक यज्ञकुण्ड या अनेक, यज्ञ का वास्तविक अर्थ अग्निहोत्र तक सीमित नही, पृथ्वी से परमात्मा तक समस्त ज्ञान–विज्ञान का नाम यज्ञ है, यज्ञ से समाज संरचना तथा आध्यात्मिकता की स्थापना आदि गम्भीर विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए यह स्मारिका ग्रन्थ अपने आप में यज्ञ पुस्तकालय का एक लघु रूप है।

– विमल वधावन आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

स्वतन्त्रता के उन्नायक थे स्वामी दयानन्द सरस्वती

गुरुकुल कांगड़ी, २१ मार्च २००७। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की तपस्थली गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव संवत्सर के उपलक्ष्य में गुरुकुल स्थित अमृतवाटिका यज्ञशाला में प्रातः ६ बजे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या संकायाध्यक्ष प्रो० महावीर जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में नवसंवत्सर एवं आर्यसमाज के उन्नयन हेतु वेद मन्त्रों से आहुतियां प्रदान की गई। कार्यक्रम में विद्यालय के ब्रह्मचारी निखिलेश, आनन्द एवं ब्र० सत्यपति अधिष्ठाता ने ऋषि दयानन्द के जीवन से प्रेरित मधुर गीतों को सुनाया।

इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्म एवं विश्वविद्यालय के डीन प्रो० महावीर ने अपने संबोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द स्वतन्त्रता संग्राम के उन्नायक थे। उन्होंने ही प्रथम स्वराज्य की नींव अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में डाली थी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज एक बगीचा है और स्वामी दयानन्द उसके माली थे। आर्य समाज ने देश की स्वतन्त्रता से लेकर प्रत्येक क्षेत्र में राष्ट्र के गौरव एवं स्वाभिमान की रक्षा की है तथा आज गुरुकुल के ब्रह्मचारी विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में कुलमाता के यश को फैला रहे हैं।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के आचार्य आर्य तपस्वी सुखदेव ने कहा कि परमात्मा को समर्पित होकर जो कार्य किया जाता है, वह अवश्य ही पूर्णता को प्राप्त होता है। ऋषि दयानन्द ने स्वयं को परमात्मा को समर्पित किया था। इसीलिए वे दया और आनन्द के भण्डार बने और दयानन्द कहलाये। उन्होंने इस अवसर पर ब्रह्मचारियों से स्वामी जी के जीवन चरित्र से अनेक शिक्षाएं एवं प्रेरणा ग्रहण करने का आह्वान भी किया। कार्यक्रम का संचालन [illegible] ने किया।

शिवमुनि वानप्रस्थी बने स्वामी शिवानन्द सरस्वती

बिहार के श्री शिवधर आर्य ने १९६४ में वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा लेकर अपना नाम शिवमुनि वानप्रस्थी रखा था। विगत ४ फरवरी, २००७ को मुम्बई से पधारे डॉ० सोमदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न यज्ञ के अन्तर्गत पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी से दीक्षा लेकर सन्यास आश्रम में प्रवेश किया। सन्यास आश्रम में उन्हें स्वामी शिवानन्द सरस्वती नाम प्रदान किया गया।

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री प्रकाश चन्द्र शास्त्री नहीं रहे

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान एवं पुरोहित श्री प्रकाश चन्द शास्त्री जी का आकस्मिक देहावसान २० अप्रैल को हो गया। शास्त्री जी कई दशकों से आर्य समाज सीताराम बाज़ार में पुरोहित पद पर कार्य कर रहे थे। श्री प्रकाश चन्द्र जी प्रतिवर्ष निर्धन बस्तियों के बच्चों को एकत्र करके गर्मी की छुट्टियों में २ से ४ सप्ताह का शिविर आयोजित किया करते थे।

शास्त्री जी का अन्तिम संस्कार आर्यसमाज जोरबाग द्वारा संचालित निगम बोध घाट पर सम्पन्न किया गया। उनका अन्तिम संस्कार उनके सुपुत्र ने सम्पन्न किया। अन्तिम संस्कार में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य, कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव, श्री शिव कुमार शास्त्री, आर्यसमाज सीताराम बाजार के अधिकारीगण तथा कई आर्य बन्धु उपस्थित थे।

श्री प्रकाश चन्द्र शास्त्री जी की स्मृति सभा २२ अप्रैल को आर्य समाज सीताराम बाजार में सम्पन्न की गई।

चिकित्सा शिविर

आर्यसमाज विज्ञान नगर कोटा में ३० मार्च से १ अप्रैल तक तीन दिवसीय न्यूरो थैरेपी चिकित्सा शिविर के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चढ्ढा ने कहा कि न्यूरो थेरेपी एक नई चिकित्सा पद्धति है जो बिना दाओं के रोग दूर करती है। इस शिविर में महिला रोगियों की संख्या अधिक थी। आर्य समाज सेवा के कार्यों में अपनी अहम भूमिका का निर्वहन कर रहा है। समय समय पर समाज उपयोगी शिविरों का आयोजन किया जाता है जिससे आम व्यक्ति को लाभ मिल सके।

न्यूरो थैरेपी विशेषज्ञ हरिमोहन सुमन ने बताया कि न्यूरो थैरेपी के द्वारा अंतस्रावी ग्रंथियों को और बहिस्रावी ग्रंथियों को जरूरत अनुसार उकसाकर सक्रिय किया जाता है जिससे शीरीर में हार्मोन तथा केल्शियम पैदा करते हैं। इस पद्धति में कोई दवा नहीं दी जाती है इस चिकित्सा में शरीर के विभिन्न अंगों पर दबाव डालकर रोगी को अधिकाधिक फायदा दिया जाता है। इस चिकित्सा का कोई विपरीत असर नही होता। न्यूरो थैरेपी दवा रहते इलाज करती है और शरीर की आंतरिक प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाकर स्वस्थ रहने में मदद करते है।



न्यूरो थैरेपी सिर्फ बीमारी के लक्षणों पर ध्यान नही देती बल्कि उसके मूल कारणों को दूर करती है इससे सर्दी, जुकाम, खांसी, बुखार से लेकर कमरदर्द, मनके का खिलना, जोड़ों का दर्द, गर्दन का अकड़ना, अस्थमा, मधुमेह, लकवा, ब्लडप्रेशन, किडनी, पार्किंगसन, मस्कूलर, डासस्ट्राफी, बवासीर, कैंसर तक का इलाज हो सकता है।

आर्यसमाज विज्ञान नगर के प्रधान महेन्द्र रस्तोगी ने इस चिकित्सा शिविर में १५० रोगियों की जांच सहित चिकित्सा की गई। सभी रोगियों ने चिकित्सा के दौरान आराम महसूस किया। आर्य समाज के श्री जे०एस० दुबे ने सभी का आगंतुकों का व चिकित्सकों व उनकी पूरी टीम का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में डा० के०एल० दिवाकर, दिनेश शर्मा, सुमेश कुमार गांधी, अशोक अग्निहोत्री, भगवान पांडे, मनोहर लाल शर्मा ने सहयोग दिया।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर

दिनांक : ४–१७ जून, २००७
स्थान : गुरुकुल यमुनातट मंझावली (फरीदाबाद)

इस शिविर में प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत जी के मार्गदर्शन में आर्यवीर दल की शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक एवं आचार्य श्रेणी में निर्धारित शारीरिक, बौद्धिक तथा प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण योग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। शिविर के अनुशासन का पूर्णतः पालन करना आवश्यक होगा। अनुशासन भंग करने पर शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकता है। जिन्होंने आर्यवीर श्रेणी अथवा दो शिविर कर लिये हैं या जो शाखा में सम्मिलित होते हैं उन्हें ही प्रवेश मिलेगा। शिविरार्थी पहले श्रेणी के प्रमाण पत्र की फोटोकापी और आर्यवीर दल अथवा आर्यसमाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र साथ लेकर आयें।

आवश्यक सामान – आर्यवीरदल का गणवेश, खाकी हाफ पैण्ट, सैण्डो बनियान, सफेद मोजे, सफेद जूते, लंगोट, लाठी, नोट बुक, हल्का बिस्तर, थाली, लोटा एवं अन्य दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएं।

प्रवेश शुल्क : शाखानायक २०० रुपये, उपव्यायाम शिक्षक २५० रुपये, व्यायाम शिक्षक २५० रुपये तथा आचार्य ३०० रुपये।

उपदेशों का सार

(इस उपदेश को नित्य पढ़िये एवं अमल में लाइए)

यदि

- ☐ रोकना चाहते हो ? तो, मन को गलत रास्ते से रोको।
- ☐ बढ़ाना चाहते हो ? तो, ज्ञान के अभ्यास को बढ़ाओ।
- ☐ मिलना चाहते हो ? तो, सन्त महात्माओं से मिलो।
- ☐ चुनना चाहते हो ? तो, सबके गुणों को चुनो।
- ☐ ढूढ़ना चाहते हो ? तो, सज्जन पुरुषों को ढूढ़ो।

'महर्षि जीवन दर्पण' का विमोचन

आर्यसमाज खेडा अफगान जनपद सहारनपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तक का विमोचन करते हुए आचार्य सुखदेव तपस्वी ने कहा कि वेद ही सत्य विद्याओं की ऐसी पुस्तक है जो विज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती है।

रविवार को आर्य समाज मन्दिर में श्री आदित्य प्रकाश प्रधान आर्य समाज खेड़ा अफगान द्वारा रचित महर्षि दयानन्द जीवन दर्पण नामक पुस्तक का विमोचन आचार्य सुखदेव तपस्वी और महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती द्वारा संयुक्त रूप से किया है। पुस्तक में सरलतम भाषा द्वारा स्वामी जी के जीवन चरित्र और महापुरुषों के विचारों को संग्रहित किया गया है।

इस अवसर पर श्री तपस्वी ने कहा कि वेद सम्पूर्ण ज्ञान की पुस्तक है। उन्होंने वेदों की सर्वकालिकता और सार्वभौमिकता पर प्रकाश डाला। महात्मा गोपाल स्वामी ने वेदों की व्याख्या करते हुए कहा कि क्षेत्र की प्रत्येक आर्य समाज को जनता की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का प्रयास करना चाहिए तभी यह समाज ऋषि दयानन्द जी के सपनों का आर्यसमाज बन सकता है।

इस अवसर पर आर्योद्देश्य रत्नमाला लेखक महर्षि दयानन्द सरस्वती, ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप प्रवचन पं० रामचन्द्र जी देहलवी जी, देश रक्षा के लिए गौरक्षा लेखक प० यशपाल आर्य का प्रकाशन किया गया और साहित्य निःशुल्क वितरित किया गया। सर्वश्री प्रियव्रत शास्त्री, अमित कुमार, सतपाल सरल ने सुन्दर भजनों एवं प्रवचनों के माध्यम से स्वामी जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन राजेश आर्य तथा अध्यक्षता अजवसिंह आर्य ने की।

कार्यक्रम में सर्वश्री नेमचन्द गर्ग, ब्रह्मसिंह, अंगदसिंह, हजारासिंह, सत्यपाल सिंह, राजपाल सिंह, शशीप्रभा गुप्ता, विनोद कुमार, वेदभूषण गुप्त आदि उपस्थित रहे है।



निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज तेलीबाग उतरठिया, लखनऊ

प्रधान :	श्री कैलाशनाथ केसरवानी
मन्त्री :	श्री भरत सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष :	श्री विल्लेश्वर शास्त्री

आर्यसमाज हनुमानगढ़ टाउन

प्रधान :	श्री चानणराम चौधरी
मन्त्री :	श्री जगदीश राय सिद्धप
कोषाध्यक्ष :	श्री हर्षदेव भाटी

छतीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रधान :	श्री आचार्य दयासागर
मन्त्री :	श्री दीनानाथ शर्मा
कोषाध्यक्ष :	श्री प्रहलाद प्रसाद आर्य



पृष्ठ १ का शेष

वैचारिक क्रान्ति शिविर

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी १३ मई से २७ तक आर्य समाज रानी बाग में माता प्रेमलता शास्त्री जी की अध्यक्षता में शिविर लगाया जाएगा। सेवाश्रम संघ द्वारा आयोजित शिविर का गत वर्ष रजत जयन्ती वर्ष मनाया गया। इसमें देश भर के २०० से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लिया। जिन्हें भारत के गणमान्य महामहिम राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम जी ने राष्ट्रपति भवन आमन्त्रण कर आशीर्वाद प्रदान किया। साथ ही भारत की प्रथम महिला आई.पी.एस. अधिकारी किरण वेदी जी तथा पूर्व मुख्यमंत्री डॉ० साहिब सिंह वर्मा ने भी अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

शिविर के माध्यम से हमें कुछ उपलब्धियां भी प्राप्त हुई। जैसे पिछले वर्षों से बाहर के प्रान्तों के कार्यक्रम के अलावा २०० से अधिक बच्चों ने दिल्ली एवं हाथरस के गुरुकुलों में प्रवेश प्राप्त कर विद्या के साथ–साथ भारतीय संस्कृति का भी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। आर्यसमाज, रानीबाग के अधिकारियों ने भी आर्यसमाज में गुरुकुल खोल कर ५५ बच्चों को प्रवेश दिया है। आप सभी धर्म प्रेमियों एवं राष्ट्र प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि तन, मन तथा धन से पवित्र कार्य को पूर्ण करने में सहयोग दीजिए। आप सभी निम्न निर्धारित कार्यक्रम में पधार कर शिविरार्थियों को आशीर्वाद प्रदान करें।

कार्यक्रम

१३ मई २००७	रात्रि ८ बजे से	उद्घाटन समारोह
२० मई २००७	प्रातः ८ बजे से	यज्ञोपवीत संस्कार एवं संकल्प सम्मेलन
२७ मई २००७	प्रातः १० बजे से	समापन समारोह

निवेदक

प्रेमलता शास्त्री	वेदव्रत मेहता	शकुन्तला दीक्षित
महामंत्री	प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान
ईश्वर देवी		धर्मपाल गुप्ता
मन्त्री		कोषाध्यक्ष एवं कार्यालय मन्त्री

आर्यसमाज रानीबाग के सभी अधिकारीगण

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116/2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 29-04-2007 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 26/27-04-2007

वेदाध्ययन कार्यशाला

स्थल : वेद–संस्थान, सी २२, 'वेदभवन', राजौरी गार्डन, नई दिल्ली – ११००२७, दूरभाष : २५१०२३१६

ई-मेल : vedic_science@yahoo.co.in

दिनांक : सोमवार २८ मई से रविवार ३ जून, २००७

समय : पूर्वाह्न १०.०० बजे से अपराह्न ५.०० बजे तक (बीच में तीन मध्यांतर)

इस कार्यशाला में यजुर्वेद अध्याय २३ के प्रश्नोत्तर–रूप १८ मंत्रों (संख्या ४५ से ६२ तक) का अध्यापन किया जाएगा जिनका संबंध अश्वमेध याग से है। वेदों की संहिताओं और वैदिक साहित्य का परिचय भी यथाप्रसंग कराया जाएगा।

अध्ययन–सामग्री अध्येताओं को प्रदान की जाएगी। वेद/संस्कृत के महाविद्यालय/गुरुकुल/शोध–संस्थानं आदि संस्थाए अपने प्रतिनिधि कार्यशाला के पर्यवेक्षण हेतु भेज सकती हैं।

जिन महानुभावों की रुचि इस कार्यशाला में अध्ययन और अनुशीलन हेतु आने की हो वे वेद–संस्थान से संपर्क कर सकते हैं।

\+ + + +

वेद संस्थान गत ४६ वर्षों से वेद–संहिताओं के अध्ययन और अध्यापन में लगा हुआ है। इसके परिणामस्वरूप वेदों के अध्ययन (या अनुशीलन या शोध) की, और अध्यापन (या व्याख्यान–प्रवचन) की पद्धति–विशेष का विकास संस्थान कर चुका है।

संस्थान द्वारा सतत वेदानुशीलन के जारी क्रम के द्वारा, इस पद्धति में गहराई और विस्तार, दोनों दृष्टियों से नवीन–नवीन बातें जुड़ती रहती हैं। मल्लिनाथ के शब्दों में, निराधार (नामूलं) और अनावश्यक (नानपेक्षितम्) से बचते हुए, वेद–संहिताओं पर फोकस रखना और शेष समस्त वैदिक वाङ्मय आदि सबसे प्राप्त सामग्री का वेद को बेहतर समझने के लिए उपयोग करना–इस प्रविधि का अनुसरण संस्थान के वेदानुशीलन कार्य में किया जाता है।

(१) अब वेद–संस्थान इस स्थिति में है कि वह वेद के अध्यापक तैयार कर सकता है, और घर बैठे स्वयं वेदाध्ययन करने की पद्धति भी दे सकता है। जिन्हें संस्कृत का, काम–चलाऊ भी, ज्ञान है वे इस विषय में वेद–संस्थान की सेवा ग्रहण कर सकते हैं।

(२) साथ ही, संस्कृत नहीं जानने वाले नर–नारी भी, स्वयं वेदाध्ययन की पगडंडी पर वेद–संस्थान की अध्ययन–पद्धति से कदम बढ़ा सकते हैं। संस्कृत की जो जानकारी वेदाध्ययन में अपेक्षित होती है वह, वेद पढ़ते पढ़ते ही, साथ के साथ, प्राप्त की जा सकती है।

प्रतिष्ठा में

सत्यार्थ प्रकाश महो... उदयपुर में ५ से ७ अक्टूबर को

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १० अगस्त १८८२ से २७ फरवरी १८८३ के अपने नवलखा महल, उदयपुर के प्रवास काल में ही इस बेजोड़ ग्रन्थ का प्रणयन सम्पूर्ण किया। इस वर्ष इस महान घटना को एक सौ पच्चीस वर्ष हो रहे हैं। आर्यजनों के सुझाव पर नवलखा महल, उदयपुर में ५ से ७ अक्टूबर २००७ में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्मित हो रहे भव्य 'माता लीलावती वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण केन्द्र' का भी लोकार्पण होगा। डॉ० सुखदेव चन्द सोनी, डॉ० दिलीप वेदालंकार (शिकागोलैण्ड) व श्री कृष्ण चौपड़ा, लंदन की स्वीकृति प्राप्त हो गई है। राजस्थान की मुख्यमंत्री माननीया वसुन्धरा राजे के आने की पूर्ण संभावना है। ऋषि की पावन कर्मस्थली पर विश्वभर से पधारे सारस्वत अतिथियों का संगम अभूतपूर्व व प्रेरणादायक होगा। प्रख्यात् विद्वान् डॉ० भवानीलाल भारतीय के निजी पुस्तकालय से सत्यार्थ प्रकाश विषयक ग्रन्थों की प्रदर्शनी भी अनूठी ही होगी।

आर्य समाज पश्चिम बिहार का वार्षिकोत्सव समापन २६ अप्रैल

आर्यसमाज पश्चिम विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव २६ अप्रैल (रविवार) को प्रातः ७.३० से १.०० बजे तक आयोजित होगा। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ० महावीर मीमांसक, डॉ० धर्मवीर, डॉ० महेश विद्यालंकार, पूज्य माता आशा जी के प्रवचन लाभ होंगे। समारोह की अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी करेंगे। □

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9811221083) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in* वेबसाईट : *http://www.sarvadeshik.com*

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक
साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४६ अंक ३ | २० मई से २६ मई, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १६६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | ज्ये०शु०४

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

मिठाईलाल सिंह सभा प्रधान, श्री सुदर्शन शर्मा कार्यकारी प्रधान, श्री स्वतन्त्र कुमार मन्त्री, श्री अरविन्द आर्य कोषाध्यक्ष

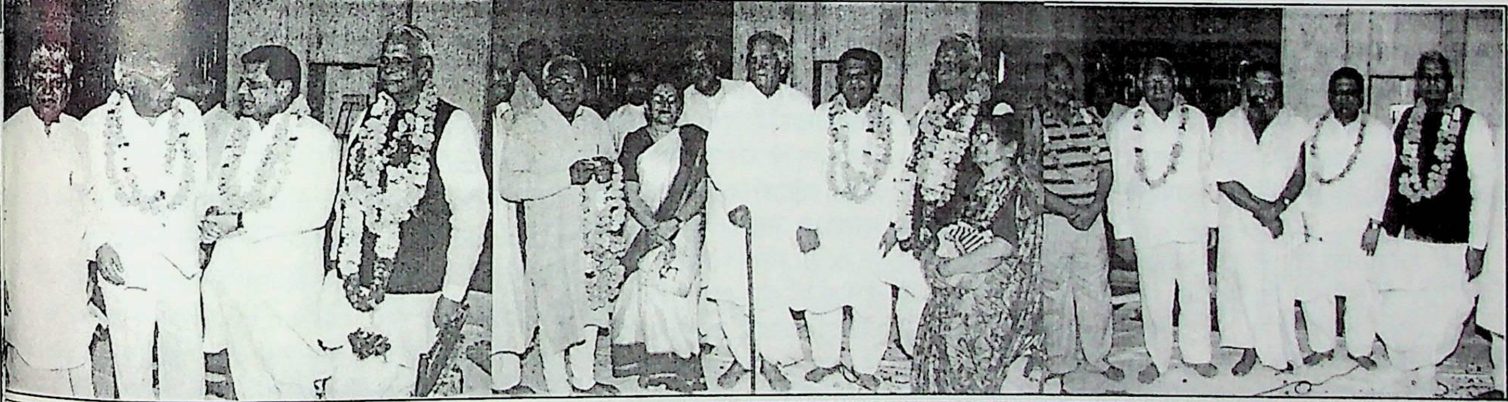
आर्यसमाज की संगठनात्मक एवं सैद्धान्तिक सुरक्षा सर्वोपरि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि भा का त्रैवार्षिक निर्वाधन धिवेशन २६ अप्रेल, २००७ को र्यसमाज दीवानहाल चांदनी क दिल्ली में सम्पन्न हुआ, समें श्री मिठाईलाल सिंह जी शर्मा सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान होंगे।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वतंत्र कुमार को आगामी तीन वर्षों के लिए सार्वदेशिक सभा का मन्त्री की देखरेख में सम्पन्न हुआ। न्याय सभा के इन दोनों अधिकारियों ने चुनाव अधिकारी के रूप में इस निर्वाचन को सम्पन्न किया।

निर्वाचन प्रक्रिया सम्पन्न होने के उपरान्त नवनिर्वाचित सभा का पुष्प मालाओं द्वारा अभिनन्दन किया गया।

न्याय सभा के प्रधान श्री रामफल बंसल जी ने दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्णय की अपेक्षाओं तथा विभिन्न गुटबाजियों को आशा तो अवश्य दिखायी दी परन्तु जब तक सभी पक्ष साफ मन से एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए अपने विचार रखें तभी सुन्दर निर्णय पर पहुंचा जा सकता है। **शेष पृष्ठ २ पर**



सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन अधिवेशन के बाद स्वागत समारोह के चित्र।

आगामी तीन वर्षों के लिए न पद पर निर्वाचित घोषित या गया तथा उनके निर्वाचन उपरान्त सम्पूर्ण अन्तरंग सभा सदस्यों तथा पदाधिकारियों भी निर्वाचन सम्पन्न हुआ। सदस्यों वाली अन्तरंग सभा में याव सभा के प्रधान श्री सुदर्शन निर्वाचित किया गया। उत्तर प्रदेश के आर्य नेता श्री अरविन्द कुमार आर्य कोषाध्यक्ष होंगे।

सार्वदेशिक सभा के अन्य प्रमुख अधिकारियों में वैद्य इन्द्रदेव वरिष्ठ उपप्रधान, श्री जयनारायण अरूण, श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री सुबोध चन्द्र आर्य, डॉ० तुलसीराम बांगिया उपप्रधान के रूप में तथा श्री देवराज आर्य, डॉ० आशारानी राय, श्री अनिल शर्मा, श्री देवेन्द्र शर्मा, श्री जगदीश आर्य, श्री लक्ष्मीचन्द आदि उपमन्त्री के रूप में शामिल हैं।

सार्वदेशिक सभा का यह त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन सार्वदेशिक न्यायसभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल तथा न्यायसभा के सदस्य श्री सुकेश महाजन जी

प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह, कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, न्याय सभा के प्रधान श्री रामफल बंसल तथा श्री स्वतन्त्र कुमार जी समाप्त करने के प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि कुछ आर्य महानुभावों ने मुझसे इस सम्बन्ध में सम्पर्क किया था। बातचीत में

सार्वदेशिक सभा के नव निर्वाचित प्रतिष्ठित सदस्य

स्वामी जीवनानन्द सरस्वती
स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती
श्री आर्य तपस्वी सुखदेव
श्री सतीश चन्द्र गुप्ता
श्री गिरीश खोसला, अमेरिका

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक २७ मई, २००७ (रविवार) को

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक २७ मई, २००७ (रविवार) को दोपहर बाद २ बजे से आर्यसमाज दीवान हाल चांदनी चौक, दिल्ली में आयोजित की गई है। अन्तरंग सभा के समस्त सदस्यों को बैठक के आमन्त्रण पत्र डाक द्वारा भेज दिए गए हैं। कृपया निर्धारित समय से पूर्व बैठक स्थल पर पहुंच कर बैठक में भाग लें। आगन्तुक महानुभावों के भोजन–आवास की सुविधा आर्य समाज दीवान हाल में ही होगी।

– प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री
मो० ०६७१६००४४५१

सार्वदेशिक सभा के मुख्य अधिकारियों के दूरभाष

१. श्री मिठाई लाल सिंह
(सभा प्रधान)
मो० ०६८६२११७६७७
नि० ०२२ – २४६४१००४

२. श्री सुदर्शन शर्मा
(कार्यकारी प्रधान)
मो० – ०६८१४०६०६४४
नि० – ०१८१ – २२७७५२२

३. श्री स्वतन्त्र कुमार
(सभा मन्त्री)
मो० ०६७१६००४४५१
नि० ०१३३४ – २४४७४४, २४६२३५

४. श्री अरविन्द आर्य
(कोषाध्यक्ष)
मो० ०६४१२२१२३४४
नि० ०१३६२ – २३३७८७

प्रबन्ध सम्पादक | सह सम्पादक | सम्पादक

पृष्ठ १ का शेष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

नवनिर्वाचत सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने कहा कि यदि समस्त गुटबाजियां समाप्त करने के लिए किसी एक महानुभाव के नाम पर सहमति बनती है तो वे इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे।

निवर्तमान मन्त्री श्री विमल वधावन ने कहा कि बिना पद के भी वे आर्यसमाज की सेवा पूर्ववत करते रहेंगे बल्कि भविष्य में वे और अधिक तन्मयता के साथ आर्यसमाज में आध्यात्मिकता की स्थापना के लिए प्रयासरत रहेंगे। उन्होंने कहा कि मनुष्य के जीवन में सत्य आचरण और ईमानदारी का सर्वोच्च महत्व है। इस प्रकार के व्यक्ति समाज में विश्वसनीय माने जाते हैं।

नवनिर्वाचित सभा मन्त्री प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने आर्यजनों के नाम अपने सार्वजनिक संदेश में कहा है कि वर्तमान युग के आर्य नेताओं को पिछली शताब्दी के आर्य नेताओं के जीवन का स्वाध्याय इस दृष्टि से करना चाहिए कि स्वाध्याय से प्राप्त जानकारी के आधार पर वे अपने जीवन में भी उन्हीं विचारों, आदतों और कार्यकलापों को स्थापित कर पाएं। स्वामी श्रद्धानन्द, आचार्य रामदेव, पं० लेखराम, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, वैद्य गुरुदत्त, स्वामी वेदानन्द तीर्थ आदि आदि असंख्य आर्य नेताओं ने जितनी आर्यसमाज और राष्ट्र की सेवा की है, उन सब कार्यों के पीछे उनके मन में स्वार्थवाद की कहीं गंध भी नहीं मिलती। इन भावनाओं के साथ समूचा आर्यजगत, आर्यसमाज की संगठनात्मक एकता को सम्बल प्रदान करने के लिए चिन्तन, मनन और कर्म करे तभी आर्यसमाज की रक्षा सम्भव है। समूचे आर्यजगत को षड्यन्त्रकारी तत्वों से सावधान रहना चाहिए। क्योंकि उनका मकसद आर्यसमाज में घुसपैठ करके संगठन को छिन्न भिन्न करना तथा सिद्धान्तों में मिलावट करना है।

जीवन में माता-पिता का स्थान अद्वितीय है। वे जितना देते हैं उसका दस प्रतिशत तो वापस जरूर करें।

आर्य के लक्षण

– राजपाल सिंह शास्त्री

चिरकाल से अनुभव कर रहा हूं कि आज स्वयं को आर्य कहने या कहलाने वाले व्यक्ति अंगुली पर गिने जाने वाले ही शेष हैं। आर्य परिवारों में प्रायः अनार्यत्व के लक्षण प्रकट हो गये हैं। परिणामस्वरूप आर्यों की गिनती घट रही है। हम तो आर्य हैं, परन्तु जब पुत्रवधु घर में प्रवेश करती है, तभी से नव वधु के इच्छानुसार सब कार्यक्रम प्रारम्भ हो जाते हैं। शिव–पार्वती की स्तुति, दुर्गापूजा, हनुमान चालीसा आदि–आदि प्रारम्भ हो जाते हैं। मिथ्याज्ञान बढ़ता जाता है। अतः लिखना पड़ता है कि – कहीं मूल में भूल है।

प्रायः क्रियात्मक रूप से हम ही भूल कर रहे हैं। यदि वधु पक्ष से कहा जाता है कि आप तो आर्य हैं, आपने इन तिथियों में विवाह क्यों रचाया? उत्तर मिलता है कि वर पक्ष ने ये ही तिथियां बताई थीं। उनके अनुसार कार्यक्रम बनाया गया है। मैं विवश हो गया। यदि आप वर पक्ष वाले हैं तो उनसे पूछिये कि आपने इन तिथियों में विवाह संस्कार क्यों स्वीकार किया है? उत्तर तो वही मिलता है कि – क्या करें विवश हो गया। वधु पक्ष वालों ने यहीं तिथियां सुझाई हैं।

अब आप विचार करें। आप स्वयं को आर्य कहते हैं। दोनों पक्षों में आपको झुकना पड़ता है। अतः नववधु व्रत भी करेगी धूप बत्ती भी जलायेगी। आर्य स्वयं क्षीण हो रहा है। आपकी सन्तान आपके विचारों से सहमत नहीं है। अनेक परिवारों में यदा–कदा जाना होता है। चर्चा चलती है कि आप तो आर्यों की सन्तान हैं। आप आर्यसमाज में आया करो। हां, आपने सुझाव तो उत्तम दिया है। देखिये – हमारे घर में वेद हैं, सत्यार्थ प्रकाश भी है, अन्य अनेक पुस्तकें हैं। पर क्या करूं? विवश हूं। अतः

आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।
हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी।।

स्व० मैथिलीशरण गुप्त जी के विचार आज भी क्रियान्वित हो जायें तो कुछ चिन्ह अभी शेष हैं। उन्हीं को अपना लें तो आर्य बन सकते हैं।

यद्यपि आर्यों के लक्षण तो अनेक हैं, पर यहां केवल ४–५ विषयों पर ही चर्चा करता हूं।

सर्वप्रथम –

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित आर्यसमाज के दस नियमों में से जो द्वितीय नियम को स्वीकारता है, वही आर्य है। जो केवल एक ईश्वर को मान्यता देता है वही आर्य है। यों तो ईश्वर के अनेक नाम है। जो सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम नाम ओ३म् का स्मरण करता है। वही आर्य है। अतः एक ईश्वर को मानने वाले ही आर्य हैं। ये लक्षण अपने परिवार के सदस्यों को प्यार से गहराई से समझाकर उनमें आर्यत्व जगाया जा सकता है।

द्वितीय लक्षण – जो त्रैतवाद को मानता है। अर्थात् ईश्वर, जीव, प्रकृति को स्वीकारता है, वही आर्य है।

तृतीय लक्षण – जो अभिवादन में नमस्ते को मान्यता देता है। वही आर्य है। नमस्ते शब्द अनेक वेद मन्त्रों में उच्चारित होता है।

चतुर्थ लक्षण – जो आर्य भाषा (देवनागरी लिपि) (हिन्दी) को अपनाता है। प्रायः सभी आर्य अपने हस्ताक्षर अन्य भाषाओं में ही करते हैं। नारा लगाते हैं जोर से बोलो! हिन्दी हमारी मातृभाषा है, आर्यों का चिन्तन पठन तथा चिन्तन सभी कुछ अन्य भाषाओं में। तभी तो कवि को परतन्त्र के लक्षण लिखने पड़े –

पर भाषा परभाव अरु परभूषण, पर परिधान।
पराधीन जन की आहे, यही पूर्ण पहिचान।।

पंचम लक्षण – जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद में आर्य लोग फंसे हुए हैं। वर्ण व्यवस्था को भूल गये हैं।

सन् १६४४ ई० में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस में एक नियम था कि जो जन्म से ब्राह्मण होगा वही संस्कृत शास्त्री की परीक्षा दे सकता था। मैनें सन् १६४४ में संस्कृत शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की थी। अतः गुरुकुल के आचार्य महोदय सब ब्रह्मचारियों के नाम के साथ ब्राह्मण–ब्राह्मण लिख देते थे। हमने शास्त्री परीक्षा उत्तीण कर ली।

अब १६४७ ई० में भारत विभाजन हो गया। बिजनौर निवासी मेरे मित्र श्री पं० जवाहरलाल जी से मिले और अपनी स्थिति की चर्चा की। श्री नेहरू जी ने तुरन्त कहा कि – बिजनौर में सुरक्षित स्थान से आपको टिकट दे देंगे। किन्तु अपना दलित वर्ग का प्रमाण पत्र लाओ।

वे मेरे मित्र स्वामी रामानन्द जी शास्त्री तुरन्त मेरे से मिलने आये। भ्राता जी! मुझे दलित वर्ग होने का प्रमाण पत्र चाहिए।

आर्यसमाज ने स्वामी रामानन्द शास्त्री को ब्राह्मण बनाया कांग्रेस सरकार कह रही है कि दलित वर्ग का प्रमाण पत्र लाओ कहानी लम्बी है। यहीं समाप्त करता हूं। आर्यसमाज में जातिवाद बढ़ रहा है। उपनाम जातिवाद द्वारा रखे जा रहे हैं। इन पांच लक्षणों को स्वीकार...

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य विदर्भ द्वारा विद्वान लेखकों के सम्मान की योजना

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य विदर्भ नागपुर के मन्त्री श्री अ... शर्मा के अनुसार सभा के तत्वावधान में शीघ्र ही एक राष्ट्रीय स... का बृहद सम्मेलन करके पांच ऐसे विद्वान लेखकों को सम्मा... किया जाएगा जिन्होंने आर्यसमाज की वर्तमान संकटकाल... परिस्थितियों में विघटनकारी षडयन्त्र करने वाले तत्वों एवं विच... के विरुद्ध जनमानस तैयार करने में सहयोग किया है। यह सम्मे... शीघ्र ही नागपुर में आयोजित किया जाएगा।

डॉ० राम प्रकाश राज्य सभा सदस्य निर्वाचि...

प्रमुख वैदिक विद्वान, विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तथा राजनी... में राष्ट्रवाद के प्रबल प्रहरी डॉ० राम प्रकाश को कांग्रेस पार्टी... ओर से राज्य सभा सदस्य के रूप में निर्वाचित घोषित किया ग... है।

डॉ० राम प्रकाश जी ने कई गम्भीर वैदिक ग्रन्थों की रचना... तथा कई दुलर्भ ग्रन्थों का पुनः प्रकाशन करवाकर आर्य जगत में ... विशेष पहचान बनाई है।

सार्वदेशिक सभा की ओर से डॉ० राम प्रकाश जी को कोटि–को... शुभकामनाएं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि डॉ० राम प्रका... जी संसद के प्रांगण से वैदिक विचारों के प्रचार प्रसार के लिए वि... रूप से प्रयासरत रहेंगे। डॉ० राम प्रकाश जी ने विदेशों में भी... प्रचार के लिए सदैव उत्साहपूर्वक भाग लिया है। विशेष रूप... मारिशियस में डॉ० राम प्रकाश जी की विद्वता की अमिट छाप...

श्री सुभाष आर्य दिल्ली नगर निगम के चेयरमेन निर्वाचित

विगत ५ अप्रैल को दिल्ली नगर निगम के चुनाव सम्पन्न... जिसमें भारतीय जनता पार्टी को २७२ में से १६० से अधिक सीटे प्र... हुई। नवनिर्वाचित निगम पार्षदों के द्वारा श्री सुभाष आर्य को सर्वसम... से अपना नेता चुना गया जिसके परिणामस्वरूप श्री सुभाष आ... दिल्ली नगर निगम के चैयरमेन पद पर नियुक्त हुए।

सार्वदेशिक सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष एवं वर्तमान उपमन्त्री... जगदीश आर्य जी के छोटे भाई श्री सुभाष आर्य भी अपने पारिवा... संस्कारों के कारण आर्यसमाज की सेवा के लिए सदैव तत्पर र... हैं। श्री सुभाष आर्य ने आर्य समाज के प्रत्येक कार्य में सदैव अप... भरसक सहयोग दिया है।

१३ मई रविवार को उन्हें दिल्ली की आर्यसमाजों की ओर... आर्य समाज राजौरी गार्डन में सम्मानित किया गया।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज महावीर नगर, दिल्ली

प्रधान : माननीय श्री सत्यदेव आर्य
मन्त्री : श्री मुलखराज मखीजा
कोषाध्यक्ष : श्री महेन्द्र सिंह लीखा

आर्यसमाज सन्देश विहार दिल्ली

प्रधान : श्री शशि भूषण मल्हो...
मन्त्री : श्री दुर्गेश आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री जसवन्त सिंह व...

आर्यसमाज विरजानन्द भवन खेल बाजार पानीपत का ४५वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

दिनांक ११ अप्रैल, २००७ से १५ अप्रैल, २००७ (रविवार) तक चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ हुआ इस यज्ञ के ब्रह्म दिल्ली से पधारे आर्य जगत से सुप्रसिद्ध युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी थे। वेदपाठ राजकुमार शास्त्री व बृज किशोर शास्त्री जी ने किया। भजन युवा संगीतकार भानुप्रकाश शास्त्री (बरेली–उ०प्र०) का हुआ। इस अवसर पर आचार्य गवेन्द्र जी ने अपने प्रवचन में कहा कि आप अपनी सन्तान को धन दें लेकिन धर्म साथ दें। उन्हें सम्पत्ति दें पर अच्छे संस्कार दें अन्यथा धन आपके बच्चों को बिगाड़ देगा। श्रद्धा ज्ञान देती है, विनम्रता, मान देती है। आप जितने श्रद्धावन होंगे उतने ही विनम्रता, मान देती है। आप जितने श्रद्धावान होंगें उतने ही विनम्र होंगें। इंसान जैसे कर्म करता है वह वैसा ही फल भोगता है। इंसान जैसा अन्न खाता है वैसा मन बन जाता है। स्वामी दयान्द ने वेद के द्वारा पूरे विश्व को सत्य का बोध कराया। इस अवसर पर मानव सेवा सम्मेलन – राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, आर्य महिला व वेद सम्मेलन हुआ। राजसिंह जी ने पितृयज्ञ क्या है समझाया। डॉ० नरेन्द्र आर्य, श्री भानुप्रकाश शास्त्री, श्री राजेन्द्र कुमार पाल, श्री सुरेश जी, आर्य ओमप्रकाश डावर, श्री राजेश आर्य, श्रीमती शारदा बरेजा, श्री निर्मल दत्त, श्रीमती अनीता शर्मा, श्रीमती रेणु आर्या, श्रीमती गार्गी देवी, श्री प्रेम सचदेवा, श्री दीवान चन्द आहूजा, श्री राजकुमार शास्त्री, श्री बृजकिशोर जी ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम के संयोजक थे श्री आत्म प्रकाश आर्य जी।

बड़गांव गोण्डा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज, रानी बाजार, बड़गांव, गोण्डा द्वारा अपना स्वर्ण जयन्ती वर्ष २६, २७, २८ फरवरी को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। २५ फरवरी को दयानन्द बाल विद्या मन्दिर के छात्रों द्वारा शोभा यात्रा निकाली गयी, तदोपरान्त २६ फरवरी से यज्ञ के यजमान प्रसिद्ध समाजसेवी श्री फूल चन्द्र जी अग्रवाल यजमान तथा दूसरे दिन श्री हरिद्वारी लाल मित्तल व तीसरे दिन विजय जायसवाल मंत्री आर्यसमाज रानी बाजार प्रमुख रहे। यज्ञाचार्य हाथरस गुरूकुल कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या कमला देवी स्नातक तथा ब्रह्मचारिणयों के द्वारा सुमधुर संगीत ने जनता को मन–मुग्ध कर दिया। दिल्ली से पधारे प्रख्यात भजनोपदेशक श्री श्यामवीर 'राघव जी' का 'इसीलिए भारत के सपने अधूरे हैं' की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई। लखनऊ से पधारे श्री नेम प्रकाश शास्त्री जी की धर्नुविद्या प्रदर्शन शब्द भेदी बाण के प्रदर्शन ने लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया।

गाजियाबाद के अमर स्वामी प्रकाशन की ओर से पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई। लोगों में आर्य पुस्तकों के प्रति काफी उत्साह रहा।

नरकटियागंज में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर नरकटियागंज में ४ सितम्बर से १० सितम्बर २००६ तक वेद प्रचार हुआ।

इस सप्तदिवसीय बृहद वैदिक समारोह में ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री जम्मू, सदानन्द शास्त्री बैरगनीया के प्रेरक एवं हितकारी उद्‌बोधन से श्रोतागणों ने बौद्धिक लाभ उठाया।

भजन सम्राट पं० सत्यपाल 'पथिक चंडीगढ़ के सुमधुर भजनों का रसास्वादन भी किया। अन्त में नगरवासियों, श्रोताओं एवं सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापन प्रधान कैलाश आर्य ने किया।

अंग्रेजी त्रैमासिक वेद सन्देश

आर्यसमाज वी०वी० पुरम, बंगलौर – ५६०००४ के द्वारा अंग्रेजी भाषा में वैदिक साहित्य की चुनी हुई सामग्री प्रकाशित की जाती है। त्रैमासिक पत्रिका वेद सन्देश के रूप में प्रकाशित यह पत्रिका केवल ३० रु० वार्षिक सहयोग से प्राप्त की जा सकती है। यह प्रकाशन कार्य शतायू पूर्ण कर चुके वैदिक विद्वान श्री सुधाकर चतुर्वेदी जी के मुख्य सम्पादक निमन्त्रण तथा श्री बी०वी० यतीराज जी के सम्पादकत्व में चल रहा है। आर्य परिवारों में युवा बच्चों को ऐसे प्रकाशन अवश्य उपलब्ध कराएं।

– प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी का निधन



सार्वदेशिक सभा के कई वर्षों तक प्रतिष्ठित सदस्य रह चुके स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी का निधन ८८ वर्ष की अवस्था में गत २५ अप्रैल, २००७ को हो गया। वे लम्बी अवधि से रूग्ण थे।

स्वामी जी का अन्तिम संस्कार आर्यसमाज जोरबाग द्वारा संचालित निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। अन्तिम संस्कार में स्वामी जी के सुपुत्र श्री गुलाब सिंह राघव, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, डॉ० कर्णदेव, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव तथा असंख्य आर्य नेता उपस्थित थे।

१९७६ में सन्यास लेने के उपरान्त स्वामी जी आर्यसमाज हनुमान रोड में ही रहकर आर्य समाज के प्रचार कार्यों में सहयोग किया करते थे।

आर्यसमाज पश्चिम विहार का २६वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न

आर्यसमाज पश्चिम विहार ए–३, का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ २३ अप्रैल से २६ अप्रैल को सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम से पूर्व दिनांक १८ अप्रैल से २१ अप्रैल तक पश्चिम विहार के सभी क्षेत्रों में 'प्रभात फेरी' प्रातः ५.३० से ७.३० बजे तक सफलतम् रूप में निकाली गई। प्रभात फेरी में भी क्षेत्रवासियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।



इस अवसर पर सामवेद महायज्ञ के ब्रह्मा डॉ० धर्मवीर जी आचार्य ने यज्ञ के वैज्ञानिक पक्ष को आर्यजनों के समक्ष रखा एवं कहा कि पारिवारिक समस्याओं का समाधान यज्ञ का अनुष्ठान ही है। यज्ञों को करने वाला मानव सामाजिक प्रतिष्ठता के साथ सर्वगुण सम्पन्न बनता है। डॉ० धर्मवीर आचार्य जी ने यज्ञ ब्रह्मा के रूप में वार्षिकोत्सव पर अपनी प्रतिभा एवं वाक्शक्ति की अनूठी छाप छोड़ी। प्रतिदिन विभिन्न प्रवचनों के द्वारा आर्य जनता को अपने प्रवचनों से सराबोर कर दिया और यज्ञ के मन्त्रों के प्रति जिज्ञासा भर दी।

वार्षिकोत्सव में अनेक विद्वानों एवं महानुभावों ने भाग लिया जिन में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ० महेश विद्यालंकार डॉ० महावीर जी मीमांसक, आचार्य आर्य नरेश, आचार्य आनन्द प्रकाश, आचार्य राजेन्द्र व मुनि बालेश्वर जी एवं पूज्या आशा माता जी के विचारों को सुनने का सुअवसर मिला। भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र जी एवं श्री लेखराम जी ने सब को अपने भजनों से आनन्दित किया। यज्ञ में सामवेद के रूप में श्रीमती सुलक्षणा जी एवं श्रीमती इन्दुमति जी ने भरपूर सहयोग दिया।

मन्त्री श्री राजेन्द्र लाम्बा जी ने बड़ी सफलता के साथ मंच का संचालन करे हुए आर्य समाज की प्रगति एवं भविष्य की योजना पर विचार रखे। पूज्या आशा माता जी के आशीष वचनों के उपरान्त आए हुए समस्त महानुभावों का प्रधान जी ने हार्दिक धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय सर्वश्री नरेश गुलाटी, सुनील बत्रा, योगेश मल्होत्रा, श्री देवेन्द्र अरोड़ा, श्री राजेश कालरा, श्री दीप लाम्बा, श्री अनिल गर्ग, श्री राजेश कालरा आदि को जाता है। शान्ति पाठ पश्चात् भी आगन्तुकों ने ऋषिलंगर का आनन्द प्राप्त किया।

वेदाध्ययन कार्यशाला में कार्यक्रम परिवर्तन

सार्वदेशिक साप्ताहिक के विगत अंक में प्रकाशित सूचना में निम्न परिवर्तन नोट करें।

शिविर तिथियां : २ जून से ४ जून २००७

पं० शुल्क : रु० २००/- (बिना आवास) प्रीति भोज सहित

रु० ५००/- (आवास सहित) प्रीतिभोज सहित

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र – ०११ – २५१०२३१६

घर बचाओ - देश बचाओ अभियान

घर बचेगा तो समाज बचेगा, समाज बचेगा तो देश बचेगा। पश्चिमी संस्कृति और टेलीविजन के कारण परिवार टूट रहे हैं और बीमार पड़ रहे हैं। घर को बचाने का काम कौन करेगा ? आइए, हम ओर आप करते हैं ! घर बचाओ – देश बचाओ अभियान के संदेश को धीरे – धीरे एक लाख घरों तक पहुंचाना है। देश भर में अभियान की शाखाएं स्थापित करनी है। आपके सहयोग के बिना यह काम नहीं हो सकता। आपका थोड़ा सा समय इस अभियान को सफल बना सकता है और एक सार्थक आन्दोलन में तब्दील कर सकता है।

शुरूआत एक लघु पुस्तिका 'घर बचाओ देश बचाओ' के प्रकाशन से की जा रही है। पुस्तिका में एक बेहद उपयोगी पोस्टर, वैचारिक सामग्री और राष्ट्रीय संयोजक कवि – व्यंग्यकार अक्षय जैन के गीत शामिल किए गए हैं। पुस्तिका के लिए दस रूपये नकद या एक रुपये वाले दस डाक टिकट भेजें। सम्पर्क : 'दाल–रोटी', १३ रशमन अपार्टमेंट, उपासनी हॉस्पिटल के ऊपर, एस०एल०रोड, मुलंड (पश्चिम), मुम्बई – ४०००८० फोन : ०२२ – २५६०१५८८

विदेशी कंपनियों के विज्ञापन करने वाले अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की फिल्मों और सीरियलों के बहिष्कार से वैसा ही संतोष प्राप्त होगा जैसा दान देने से मिलता है।

Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 20-05-2007 अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 17/18-05-2007

प्रतिष्ठा में
गुरुकुल कांगड़ी वि॰
हरिद्वार (उत्तरांचल)

प्रवेश आरम्भ

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

प्रथम पाठ्यक्रम - महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरि.) से मान्य प्रथमा (८ के समकक्ष) पूर्वमध्यमा (१० के समकक्ष), उ०म० (१२ के समकक्ष), शास्त्री (बी.ए.), आचार्य (एम.ए.) तक १० वर्ष अध्ययन काल है। वेद, दर्शन, उपनिषद्, संस्कृत प्राच्य व्याकरण, संस्कृत साहित्य, हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गणित आदि विषय पढ़ाये जाते हैं। इस पाठ्यक्रम को पूर्ण कर छात्र सरकारी सेवा में जा सकता है। **योग्यता** – ७ कक्षा पास अनुशासनप्रिय प्रवेश पा सकता है।

द्वितीय पाठ्यक्रम – उपदेशक एवं पुरोहित प्रशिक्षण – यह पाठ्यक्रम चार वर्ष का है। वेद, दर्शन, उपनिषद्, संस्कृत एवं स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित सभी ग्रन्थों का अध्ययन भी कराया जाता है। सिद्धान्त परिचर्य, सि० विशरद, सि. विशारद, सि० शास्त्री एव सिद्धान्त आचार्य की उपाधियां दी जाती हैं। इस पाठ्यक्रम में आसमाज के प्रचारक, पण्डित, पुरोहित, उपदेशक, एवं भजनोंदेशक, धर्मशिक्षक तथा समाज सेवक तैयार किए जाते हैं। इस पाठ्यक्रम में आर्यसमाज के प्रचारक, पण्डित, परोहित, उपदेशक एवं भजनोदपेदशक, धर्मशिक्षक तथा समाज सेवक तैयार किए जाते हैं। इस पठयक्रम को पूर्ण कर छात्र सरकारी सेवा में न जाकर स्वतन्त्र रूप से प्रचारक बन सकता है।

अनिवार्य प्रशिक्षण – (दोनो पाठ्यक्रमों के लिए) – कम्प्यूटर, भजन, प्रवचन, सस्वर वेदपाठ, सोलह संस्कार, क्रियात्मक योग तथा आर्य वीर दल प्रशिक्षण।

विशेष – शिक्षा, आवास, भोजन निःशुल्क है। अन्य व्यय छात्र को स्वतः करने होंगे। प्रवेश शुल्क २०००/– १५ जून २००७ तक जमा करना होगा। निम्न पते पर सम्पर्क करें। प्राचाचार्य श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, जि. राजकोट – ३६३६५० दूरभाष : ०२८२२ – २८७७५६ चलभाष : ०९८६५८७७५६

– आचार्य विद्यादेव

वैदिक विद्वान् 'आचार्य भगवानदेव वेदालंकार जी' एवं 'आचार्य यशपाल शास्त्री जी सम्मानित



आर्ष गुरुकुल वड्लूर कामारेड्डी (आन्ध्रप्रदेश) के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आन्ध्रप्रदेश जैसे क्षेत्र में समाज सुधार, कुरीति–निवारण, वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार एवं साहित्य लेखन जैसे अभूतपूर्व प्रशंसनीय कार्य करने वाले आचार्य 'श्री वेदव्रत जी मीमांसक' ने उड़ीसा निवासी – स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती एवं हरिद्वार योगधाम के अध्यक्ष – स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी से सन्यासाश्रम की दीक्षा ग्रहण कर, समाज के सामने महान् उच्चादर्श स्थापित किया है। अब उनको 'स्वामी ब्रह्मानद जी सरस्वती' इस नाम से जाना जायेगा। गुरुकुल के इस दीक्षा महोत्सव के शुभ अवसर पर भारत के भिन्न भिन्न प्रान्तों से चुने हुए कुछ त्यागी, तपस्वी, परोपकारी, समाज सेवी विद्वानों को सम्मानित किया गया है। दिल्ली से वैदिक विद्वान् 'आचार्य भगवानदेव वेदालंकार जी' को एवं गुरुकुल के पूर्व 'आचार्य श्री यशपाल शास्त्री जी' को स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र एवं शाल देकर आर्यबन्धु इस उपाधि से सम्मानित किया गया है।

– सुधंश आर्य

सामयिक विषयों पर लेख

सार्वदेशिक साप्ताहिक के विद्वान लेखकों तथा सभाओं और आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि विशेष उत्सवों आदि की सूचना प्रकाशनार्थ कम से कम १५ दिन पूर्व अवश्य भेज दिया करें। इसी प्रकार विद्वान लेखक विशेष उत्सवों, दिवसों आदि से सम्बन्धित लेख भी न्यूनतम १५ दिन पूर्व अवश्य भेजें।

अधिकाधिक सामयिक विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रियाएं भी भेजें। "सार्वदेशिक" के सम्बन्ध में लेख, सूचनाएं तथा अन्य पत्र निम्न पते पर भेजें –

सार्वदेशिक प्रकाशन, 1488, पटौदी हाउस (नजदीक आर्य अनाथालय)
दरियागंज, नई दिल्ली-2, फोन : 23270507
E-mail : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

– प्रो० स्वतन्त्र कुमार, प्रबन्ध सम्पादक एवं सभा मन्त्री, मो० ०९७१९००४४५१

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9312912139) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सार्वदेशिक

साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४६ अंक ४ ३ जून से ६ जून, २००७ तक दयानन्दाब्द १८५ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ सम्वत् २०६४ ज्ये०कृ०२

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न

अमृतसर-हरिद्वार स्वतन्त्रता आन्दोलन स्मृति यात्रा अगस्त माह में

वेद प्रकाशन एवं टी० वी० कार्यक्रम का शुभारम्भ होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि भा की नव निर्वाचित अन्तरंग भा की प्रथम बैठक २७ मई ००७ को दीवानहाल दिल्ली में म्पन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने की तथा संचालक सभामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार ने किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में भा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने कहा कि प्रचार कार्यों में किसी प्रकार की कमी कहीं भी न ाने पाए। इसमें कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए हमसे जो भी सहयोग अपेक्षित होगा हम उसे पूरा करने का प्रयास करेगे। देश–विदेश में जहां कही भी आर्यसमाज की गतिविधियां धन के अभाव में यदि बाधित होती हो तो सक्षम आर्य जनों एवं संस्थाओं को इस कार्य में सदैव सहयोग के लिए अग्रसर रहना चाहिए।

सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा ने कहा कि सभाओं के कार्य वास्तव में अब धर्मरक्षा अभियान बन गए हैं। चारों तरफ स्वार्थ, लोभ को पालकर लोग आर्यसमाज जैसी पवित्र संस्था पर गिद्ध दृष्टि लगा कर बैठे हैं। हर कीमत पर इस पवित्र संगठन की रक्षा के लिए हम तैयार हैं।

सभा मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार ने कहा कि देश विदेश की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं से हम एक जुट होने की अपील करेंगे।

इस अन्तरंग बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। वेद प्रकाशन के कार्य को यथाशीघ्र पूर्ण करना तथा किसी निजी टी० वी० चैनल पर सार्वदेशिक सभा की देखरेख में आर्यसमाज की विचारधारा को प्रचारित करना सभा की प्रमुखताएं हैं।

पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने सुझाव दिया कि १८५७ की १५०वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में यह निर्णय लिया गया कि अमृतसर से आरम्भ करके जालन्धर, लुधियाना, अम्बाला, पानीपत, सोनीपत, दिल्ली, गाजियाबाद, मेरठ, मुजफ्फरनगर, रुडकी होती हुई हरिद्वार तक की अमृतसर-हरिद्वार स्वतन्त्रता आन्दोलन स्मृति यात्रा का आयोजन अगस्त माह में किया जाएगा। अन्तरंग बैठक में इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

इस यात्रा की तैयारियों के लिए पंजाब, हिमाचल, जम्मू, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड सभाओं के अधिकारियों के साथ बैठके करके विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया जाएगा।

सम्भवतः यह यात्रा ८ अगस्त भारत छोड़ो आन्दोलन दिवस से प्रारम्भ होकर १५ अगस्त स्वतन्त्रता दिवस पर सम्पन्न होगी।

पंजाब की डेरा सच्चा सौदा समस्या

अकाल तख्त द्वारा सार्वदेशिक सभा का धन्यवाद

पंजाब में डेरा सच्चा सौदा मुख महन्त/मठाधीश श्री राम हीम दास के द्वारा गुरु गोविन्द ंह जी के रूप–वेश में चित्र चारित करने के विरुद्ध सिक्खों शिरोमणी संगठन अकाल तख्त द्वारा कड़ा मोर्चा बांध दिया या है। श्री रामरहीम दास के रुद्ध पहले भी कई अपराधिक ार्यों की शिकायते जनता और रकारों के लिए समस्या बनी ई थी। अकाल तख्त ने डेरा च्चा सौदा के समस्त आश्रमों बन्द करके प्रमुख की स्पष्ट फी का फरमान जारी कर दिया ा था। इसी श्रृंखला में २२ मई पंजाब बन्द का आह्वान भी या गया।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री तन्त्र कुमार ने पंजाब की जनता से बन्द को शान्तिपूर्वक करने की अपील करने के साथ–साथ पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री प्रकाश सिंह बादल को भी आर्य समाज के विचारों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि केन्द्र की कांग्रेस सरकार ने अपने कुछ मध्यस्थों को बीच बचाव का मार्ग तलाश करने के लिए कहा है। ऐसे तत्वों से आर्यसमाज का कोई लेना देना नही है।

अकाल तख्त के प्रमुख जत्थेदार श्री वेदान्ती ने टी०वी० चैनलों पर भी सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार का ध न्यवाद व्यक्त किया।

उल्लेखनीय है कि अग्निवेश स्वतः ही अपने तथा एक इसाई, एक मुसलमान आदि मुखोटो को साथ लेकर इस बीच बचाव में प्रेस–प्रचार लूटने के लिए पंजाब पहुंच गया। परन्तु अकाल तख्त के सिक्ख नेताओं में ऐसी कथित सर्वधर्म समीति के सदस्यों का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं किया।

अमृतसर-हरिद्वार क्रान्ति यात्रा के आयोजन हेतु बैठकें आयोजित करे

आगामी अगस्त माह में उक्त क्रान्ति यात्रा के आयोजन के लिए अमृतसर, जालंधर, लुधियाना, अम्बाला, पानीपत, सोनीपत, दिल्ली, गाजियाबाद, मेरठ, मुफ्फरनगर, रुडकी तथा इस मार्ग पर आने वाले अन्य शहरों–कस्बों और गांवों के आर्यजन स्थानीय बैठके आयोजित करके हमें सूचित करें जिससे आपके साथ उक्त यात्रा की सफलता के लिए कार्यक्रम निर्धारित किया जा सके।

– स्वतन्त्र कुमार, सभामन्त्री, फोन - 0971900441

समूच आर्य जगत केन्द्र सरकार से मांग करे
दिल्ली - मेरठ - हरिद्वार मार्ग नाम क्रान्तिपथ घोषित हो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक २७ मई, २००७ में पारित प्रस्ताव में केन्द्र सरकार से मांग की गई है कि दिल्ली से मेरठ होते हुए हरिद्वार तक के मार्ग का नाम 'क्रान्ति पथ' रखा जाना चाहिए। मेरठ जहां १८५७ के स्वतन्त्रता युद्ध के शुभारम्भ का प्रतीक है वही दिल्ली से हरिद्वार तक की जनता ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के मार्ग दर्शन में १८५४ से १८५७ तक उस क्रान्ति की पृष्ठभूमि का निर्माण करने में भूमिका निभाई है। अतः दिल्ली – मेरठ – हरिद्वार के राष्ट्रीय राजमार्ग का नाम 'क्रान्ति पथ' घोषित करना पूर्णतः न्याय संगत है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह तथा मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार ने सारे देश–विदेश की आर्य जनता को आह्वान किया है कि भारत के प्रधानमन्त्री डॉ० मनमोहन सिंह को ७ रेस कोर्स रोड, नई दिल्ली के पते पर पत्र भेजकर इस मांग का प्रस्तुतिकरण अधिकाधिक संख्या में करें।

अपने पत्र की एक प्रतिलिपि सार्वदेशिक सभा को १४८८ पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली के पते पर अवश्य भेजें। □

प्रबन्ध सम्पादक
प्रो० स्वतन्त्र कुमार सभा मन्त्री

सह सम्पादक

सम्पादक

आर्य साहित्यसेवी कोश

The Encyclopaedia of Arya Literateurs and Devotees

योजना १ - दिवंगत आर्य साहित्यसेवी
योजना २ - वर्तमान आर्य साहित्यसेवी

ओम् प्रतिष्ठान की ओर से एक योजना बनायी गई है कि वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में अपना सर्वस्व आहूत करने वाले साहित्य सेवियों का परिचय एक ही स्थान पर दिया जाए। पिछले दिनों यह देखने में आया कि प्राचीन आर्य साहित्य का पुनर्मुद्रण विद्वान् लेखक और प्रकाशक कर रहे हैं, पर उन पुस्तकों पर मूल लेखक का परिचय नहीं दिया जाता। इसका परिणाम यह है कि आर्यसमाज और वैदिक साहित्य का प्रणयन करने वाले सर्वात्मना समर्पित विद्वान् लेखकों, कवियों, निबन्धकारों तथा अन्य विधाओं में लिखने वाले मनीषियों को वर्तमान पीढ़ी के लोग भूल चुके हैं। पत्र पत्रिकाओं में लेखक का संक्षिप्त परिचय नहीं दिया जाता। अभी एक पत्र में एक लेखक के नाम के साथ चित्र किसी अन्य लेखक का प्रकाशित हुआ था। ऐसा ही प्रकरण गत दिनों हमारे सामने आया। एक आर्यसमाज के लिए समर्पित प्रकाशक ने एक पुराने आर्य लेखक की पुस्तक प्रकाशित की। हमने उनसे पूछा कि आप जानते हैं कि ये लेखक कौन हैं जिनकी पुस्तक का आपने पुनर्मुद्रण किया है। उन्होंने उस लेखक के नाम के स्थान पर दो तीन लेखकों के नाम लिए, पर वे मूल लेखक के विपय में नहीं बता पाए। ऐसी समस्या विभिन्न लेखकों, प्रकाशकों तथा सम्पादकों के सामने आना स्वाभाविक है। अतः ओम्–प्रतिष्ठान के तत्त्वावधान में इस योजना को लिया गया है।

संसार का यह नियम है कि विपदा को कोई नही चाहता और सम्पदा को सब कोई चाहते हैं। ये दोनों सम्पदा और विपदा भी संसार की अन्य वस्तुओं तथा विचारों की भांति सापेक्ष हैं। एक का दुःख दूसरे के लिए सुख बन जाता है, यदि उनके बीच में शत्रुता का भाव हो, प्रतिस्पर्धा का भाव हो अथवा अन्य मानसिकता का भाव हो। विवेकवान व्यक्तियों की दृष्टि में विपदा और सम्पदा की व्याख्याएं अलग ही हैं। उनकी दृष्टि में भगवान् का, सत्पुरुषों का, सद्भावना, उदात्त विचारों का तथा सत्य इतिहास का विस्मरण ही आपदा है। 'विपद् विस्मरणं परमात्मनः सम्पत् परमात्मनः स्मृतिः' हम प्रायः उसे भूल जाते हैं जिसे भूलना नहीं चाहिए और उसे याद करते हैं जिसे भूल जाना चाहिए। हमारे जीवन में उल्टा हो रहा है कृतज्ञता के स्थान पर हमारे जीवन में कृतघ्नता का भाव अपना अधिकार जमा रहा है। हमें कृतघ्नता के पाप से मुक्त होना होगा। जिन आर्य लेखकों ने विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन किया है उनके प्रति कृतज्ञता का विचार अपनाना होगा। हमें असत् का विस्मरण तथा सत् का स्मरण करना होगा। यदि हम ऐसा समय रहते न कर सके तो हमें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। हमारे विद्वानों और साहित्यकारों के बारे में अनर्गल और भ्रान्तिपूर्ण सूचनाएं छपने लगेंगी। हमने पुराने दिगज आर्य साहित्यकारों के परिजनों से सम्पर्क किया। वे आज के भौतिकवाद की जीवन विधा में इतने संलिप्त हैं कि उन्होंने अपने पूर्वजों के विषय में बताने में रुचि नहीं दिखायी।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन दिवंगत आर्य साहित्यसेवियों को स्मरण करें जिन्होंने हमारा मार्गदर्शन किया था। हमने वैदिक साहित्य का आह्वान करके लगभग एक हजार नामों की सूची बना ली है, परन्तु यह सूचती तो अभी बहुत लम्बी है। वैदिक साहित्य और आर्यसमाज का साहित्य किसी एक देश तक सीमित नहीं है, वह किसी एक भाषा में नहीं है। आर्यसमाज का सन्देश तो विश्व भर में वितरित हो चुका है ओर हो भी क्यों नहीं। उसका तो उद्घोष वाक्य ही है – कृण्वन्तों विश्वमार्यम्। विश्व के अधिकांश देशों, विश्व की अधिकांश भाषाओं में तथा विभिन्न विधाओं में पिछले लगभग डेढ़ सौ वर्षों में विपुल आर्य साहित्य का प्रणयन हुआ है। हमारी योजना है कि हम सभी की जानकारी एक स्थान पर उपलब्ध करायें। इसमें सभी लेखकों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों, कवियों, पत्रकारों, समालोचकों तथा विभिन्न विधाओं के साहित्यकारों को सम्मिलित किया जाएगा जिन्होंने ग्रन्थों का प्रणयन किया तथा लेखादि लिखे। वैदिक सिद्धान्तों, योग, नीति आदि पर अनेक विद्वानों ने अग्रलेख लिखे तथा ग्रन्थ सम्पादित किए हैं। उन्होंने भी इसमें सम्मिलित किया जाएगा। जिन्होंने मात्र एक लेख लिखा, वे भी मान्य हैं। कई वर्षों के सतत प्रयास के बाद लगभग ५०० दिवंगत आर्य लेखकों का परिचय हमने संकलित कर लिया है पर इसका व्यवस्थित लेखन अभी बाकी है। हम इस दिशा में प्रयासरत हैं।

इस योजना में दिवंगत आर्य लेखकों के साथ वर्तमान आर्य लेखकों का परिचय संकलन भी है। इन दोनों प्रकार के लेखकों का अलग अलग योजनाओं में अनेक खण्डों में प्रकाशन प्रस्तावित है। कुछ आयु प्राप्त आर्य लेखक हमारे परिचय में हैं जिन्हांने अपने जीवन काल में बहुत कार्य किया, पर अब वे स्वयं शिथिल हो चुके हैं। उनके विषय में लिखना उनके परिजनों का कर्त्तव्य है, उन संस्थाओं के अधिकारियों का कर्त्तव्य है जिन संस्थाओं के साथ वे जुड़े रहे हैं।

विश्व भर के सभी लेखकों से, सभी भाषाओं के लेखकों से, सभी विश्व की आर्यसमाजों के अधिकारियों से, सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों से, प्रादेशिक सभाओं के अधिकारियों से, गुरुकुलों और डी०ए०वी० स्कूलों तथा अन्य स्कूलों, आश्रमों, ट्रस्टों के अधिकारियों से तथा देश–विदेश के विभिन्न भाषाओं के प्रकाशकों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे वर्तमान लेखकों तथा दिवंगत लेखकों का जीवन–परिचय, उनके साहित्य का विस्तृत परिचय तथा उनका पासपोर्ट आकार का चित्र अविलम्ब हमें भेजने की कृपा करें। आपके द्वारा प्रेषित सामग्री हमारे लिए महत्वपूर्ण है जिसका हम तक सही रूप में पहुंचना आवश्यक है। अतः आप सारी सामग्री कोरियर माध्यम से भेजें।

परिवार के सदस्यों से भी निवेदन है कि वे अपने अग्रजों का इसी प्रकार परिचय भेजें। परिवार के सदस्यों का यह पुनीत कर्त्तव्य बनता है कि वे अपने अग्रजों के परिचय तथा चित्र भेजें। हमें विश्वास है कि उन्हें अपने पूर्वजों का विवरण तथा चित्रादि प्रकाशित देखकर प्रसन्नता होगी।

– मूलचन्द गुप्त

न्यायाधीश फैसला देने में अक्षम नहीं होत

– स्वामी शारदान

उज्जैन। महर्षि दयानन्द ने जो न्याय व्यवस्था बताई है वह समाज को भयमुक्त करने वाली है। महर्षि दयानन्द ने भी मनुस्मृति के आधार पर न्याय व्यवस्था बताई है। रामायण काल में बुद्धिजीवियों का संरक्षण हुआ था। जिसके कारण ही रामराज्य विख्यात हुआ था। जबकि रावण बुद्धिजीवियों को मार कर आतंक का पर्याय बन गया था। न्यायाधीश फैसला देने में अक्षम नही है। अनुकूल निर्णय नहीं देने पर उसका स्थानान्तरण कर दिया जाता है। न्याय की वकालत भी आज संभव नहीं है, शिक्षा पद्धिति खोखली और निष्प्राण है यही कारण है कि आज भी हमारा समाज भयमुक्त नहीं बन पाया है। हर स्तर पर आतंक फैला हुआ है। मोह और विमोह बना हुआ है। कर्त्तव्यपथ पर न चलते हुए स्वार्थ को मान्यता है, पीठ पर छुरी भोंकी जाती है। जिस देश में शिक्षा कलंकित हो और जो आदर्श चरित्र, तपस्वी, ब्रह्मचारी युवाओं को नहीं बना सकती है, ऐसे में स्कूल कालेज बन्द कर देना चाहिए। पगडण्डी पर चलना हो तो पत्थर और कांटे लगेंगे ही। सबसे पहले हमें अपनी शिक्षा को संस्कारित करना पड़ेगा।

ये विचार आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में टंकारा से पधारे राजस्थान की न्याय व्यवस्था से जुड़े पूर्व न्यायाधीश स्वामी शारदानन्द जी ने उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने आगे कहा कि वेद को स्वयं पढ़ें और ब्रह्मचारी को पढ़ावें, वेद को सुनें और चारों वर्णों को सुनावें उसकी व्याख्या करें। आश्रमों में व्रत और सत्य होगा तभी सही न्याय मिलेगा। हमें ऋषियों के बताये मार्ग पर भारत को लाना होगा। तभी हम अपनी व्यवस्था को सुन्दर बना सकेंगे।

सत्संग से पूर्व देवयज्ञ किया गया। श्रीमती निशा तनेजा ने ईशभक्ति के भजन प्रस्तुत किए। बाबूलाल पंड्या एडवोकेट ने सत्यार्थ प्रकाश और जितेश बर ने महर्षि जीवन का पाठ किया।

सत्संग में विशेष रूप से सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, नन्दकिशोर ताण्डी, ओमप्रकाश अग्रवाल, सुखदेव व्यास, रामनिवास आर्य, रामप्रसाद मालाकार, डॉ० कुशवाह, वेदप्रकाश सेण्डो, कृष्णवल्लभ उपाध्याय आदि नगर के नागरिकगण उपस्थित थे।

सत्संग में पधारे जनसमुदाय के प्रति आभार आर्यसमाज के प्रधान राजेन्द्र व्यास ने माना और संचालन आर्यसमाज के मन्त्री ओमप्रकाश यादव ने किया।

आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द विद्यापीठ आश्रम जमानी जिला–होशंगाबाद के तत्वावधान में १५ मई से २२ मई, २००७ तक सात दिवसीय आर्यवीर दल के शिविर का आयोजन ग्राम जमानी, ग्राम तीखड़ एवं ग्राम मलोधर में किया गया। ग्राम जमानी में ८०, ग्राम तीखड में ८५ एवं ग्राम मलोधर में ११० आर्यवीरों ने उक्त शिविर में भाग लिया, जिसमें शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विषयों पर प्रशिक्षण प्रशीक्षण प्रशीक्षक श्री विजय आर्य, श्री भगवान सिंह, एवं श्री रूपसिंह आर्य द्वारा किया गया।

महर्षि दयानन्द विद्यापीठ आश्रम विगत एक वर्ष से ब्रह्मचारी नन्दकिशोर एवं परम पूज्य स्वामी अमृतानन्द जी (खण्डवा) के मार्गदर्शन में प्रारम्भ किया गया। आश्रम के मुख्य कार्य में वैदिक धर्म का प्रचार दूरस्थ अंचलों में किय ज़ाना तय किया गया। उक्त शिविर इसी उद्देश्य की प्रथम कड़ी थी।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज अमर कालोनी	आर्यसमाज उदयपुर
प्रधान : श्री जितेन्द्र कुमार डाबर	**प्रधान** : डॉ० प्रेमचंद गुप्त
मन्त्री : श्री ओम प्रकाश छाबड़ा	**मन्त्री** : डॉ० श्रीराम आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री सुभाषचन्द आर्य	**कोषाध्यक्ष** : श्री मीठालाल चौधरी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य यशपाल बने

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के विगत माह सोनीपत में हुए साधारण निर्वाचन अधिवेशन में आचार्य यशपाल को पुनः आगामी तीन वर्षों के लिए सभा का प्रधान तथा श्री सत्यवीर शास्त्री मोखरा को मन्त्री चुना गया। श्री नवनीत सिगला, पानीपत कोषाध्यक्ष चुने गए।

अमेरिका में 17वां आर्य महासम्मेलन

Arya Pratinidhi Sabha America

17th Arya Maha Sammelan — Dallas, July 19th – 22nd, 2007

Make the World Noble

Hosted by Greater **Dallas Arya Samaj**

"Communication of Vedic Values to our Next Generation"



Our Mission: *Promoting health and wellness by Vedic teaching*

FIRST TIME IN DALLAS

- The 17th Arya Maha Sammelan of Arya Pratinidhi Sabha of America is being hosted by Greater Dallas Arya Samaj this year from July 19th to 22nd, 2007 at Richardson Hotel, Richardson TX 75081.
- Those of you who have attended the annual Maha Sammelans held at different places in North America are familiar with the invigorating & rejuvenating experience of spending couple of days among like-minded folks. You are urged to be part of this unique gathering of people having great reverence for the Vedas & Rishi Dayanand.
- The theme of this year's Arya Maha Sammelan is once again centered on Simplification and Communication of Vedic values to our next generations. We will be holding combined and parallel sessions/workshops of adults & youth during this event.
- Please encourage your youth to take an active part in the proceedings. The participants will have an opportunity to listen to distinguished speakers from all over the world and participate in Yoga, meditation, Yajna and cultural activities.

PROGRAM HIGHLIGHTS

YOGA, MEDITATION, YAJNA — YOUTH SESSIONS & FIELD TRIP
ADULT SESSIONS & WORKSHOPS — JOINT ADULT-YOUTH PANEL DISCUSSION
WORKSHOPS FOR YOGA — CULTURAL PROGRAMS

FOR MORE INFORMATION & REGISTRATION, PLEASE VISIT
www.aryasamajdallas.org or ***www.aryasamaj.com*** or CALL:

DEV MAHAJAN (713) 468-4339
VIJAY BHALLA (972) 390-9059 — RAJNEESH GUPTA (972) 370-9493
GIRISH KHOSLA (248) 703-1549 — SATI GURDIAL (718) 380-1781
MUL RAJ SETHI (905) 737-8380 — ARUN KUNDRA (850) 322-6600
SUDHIR ANAND (323) 664-8103 — BHUSHAN VERMA (281) 980-2080

PROGRAM

Thursday, July 19th:2007
Welcome & Registration (Noon-8PM)
Dinner/Cultural Program (Adult) (6-9:30PM)

Friday, July 20th:2007
Yoga, Meditation, & Yajna (7AM-8.30.AM)
Breakfast (8:30-9:30AM)
Welcome & Registration (8AM-2PM)
Sessions (9:30AM-Noon)
Lunch (Noon-1PM)
Workshop (1-5PM)
Dinner/Cultural Program (Children) (7-9:30PM)

Saturday, July 21s) 2007:
Yoga, Meditation, & Yajna (7AM-8:30AM)
Breakfast (8:30-9:30AM)
Welcome & Registration (8AM-2PM)
Sessions (9:30AM-Noon)
Lunch (Noon-1PM)
Joint Adult-Youth Session, Panel Discussion (1-5PM)
Banquet (7-9:30PM)

Sunday, July 22nd:2007
Yoga, Meditation & Yajna (7AM-8:30AM)
Breakfast (8:30-9:30AM)
Satsang, & closing (9:30AM-Noon)
Departures (1-5PM)

Note: Details for all sessions, workshop, panel discussion and registration will be available on web sites *www.aryasamajdallas.org* or *www.aryasamaj.com*
Please register early on line and save.

पुस्तक समीक्षा

अश्वमेध यज्ञ का रहस्य

लेखक : डॉ० भवानी लाल भारतीय मूल्य : अप्रकाशित

प्राप्ति स्थान : आर्यसमाज, बड़ा बाजार,
१ मुंशी सदरुद्दीन लेन, कोलकाता-७

महर्षि दयानन्द सरस्वती को यज्ञ विशेषज्ञ कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी। वर्तमान युग में यज्ञ की भूमिका व्यक्तिगत एवं सामाजिक उत्थान के लिए क्या है ? इसे स्पष्ट करने के लिए महर्षि के विचार सर्वोपरि है। मध्यकालीन युग में यज्ञों का विकृत रुप बन गया था। अश्वमेध यज्ञ का नाम सुनते ही सामान्य व्यक्ति अश्व (घोडे) की बलि से यज्ञ का मिलान करना प्रारम्भ कर देता है। इसी प्रकार गोमेध तथा नरमेध शब्दों का बुरा हाल सामान्य जनों के मस्तिष्क में था।



डॉ० भवानीलाल भारतीय जी ने इस प्रकार के कई पाखण्डों में समाहित अनर्थ को उजाकर करते हुए यज्ञ की वास्तविक विचारधारा एवं अर्थ को स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है।

इस लेख प्रकाशन को श्रृंखला बद्ध करके सार्वदेशिक साप्ताहिक के अगले अंक से प्रकाशित किया जाएगा। कर्मठ आर्य नेता, सभाओं एवं समाजों के अधिकारी इस संकलन को लघु ग्रन्थाकार रुप में प्रकाशित करवा कर अधिकाधिक प्रचारित कर सकते हैं।

– विमल वधावन आर्य,
सम्पादक

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती पुनः हिमाचल सभा के प्रधान निर्वाचित

यति मण्डल के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी को आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल के धर्मशाला में सम्पन्न साधारण निर्वाचन अधिवेशन में पुनः तीन वर्षों के लिए सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने कहा कि शीघ्र ही हिमाचल में एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा जिसमें सारे देश की प्रान्तीय सभाओं को आमन्त्रित किया जाएगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी एवं मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार जी ने स्वामी जी को दूरभाष से बधाई देते हुए कहा कि आप जैसे सन्तों के निर्देशन की आर्य जगत को आज महती आवश्यकता है।

प्रवेश सूचना

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

कक्षा १ से ८ तक NCERT पाठ्यक्रम तथा कक्षा ६ से १२ तक उत्तराखण्ड बोर्ड द्वारा संचालित सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम, आधुनिक विज्ञान विषय एवं कक्षा ४ से अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा। पंजीकरण नियमावली रु० १५०/– रजिस्ट्री से मंगाने हेतु रु० ५०/– अतिरिक्त। मनीआर्डर/ड्राफ्ट अथवा नगद **'सहायक मुख्याधिष्ठाता' गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार-२४६४०४** के नाम भेजकर प्राप्त करें।

कक्षा ६ एवं ११ में प्रवेश हेतु विद्यालय कार्यालय में पंजीकरण प्रारम्भ। प्रवेश लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर किया जायेगा।

वैदिक संस्कारों पर आधारित अनुशासित,.मर्यादित, शारीरिक, बौद्धिक, चारित्रिक रूप से विद्यार्थियों का उत्तम सर्वांगीण विकास। प्रवेश, परीक्षा के आधार पर १५ जुलाई २००७ तक। कक्षाएं १५ जुलाई, २००७ से प्रारम्भ।

कन्या गुरुकुल देहरादून

कन्याओं के प्रवेश हेतु, कन्या गुरुकुल ६०, राजपुर रोड, देहरादून उत्तराखण्ड को लिखे। फोन : ०१३३४–२४६४४७ एवं मोबाइल – ६७१६०५३७६४

वैदिक संस्कृति की आध्यात्मिक खोज

– वैद्य कुलदीप सिंह सोहल



इस खोज का छान्दोग्य तथा माण्डूक्य उपनिषदों में उल्लेख है कि मानव की दो सत्ताएं हैं – एक उसका 'शरीर' दूसरी उसकी 'आत्मा'। इस खोज के दो रूप हैं। इस खोज का पहला रूप है कि शरीर अलग हैं, आत्मा अलग है। हमारा शरीर ही अन्तिम सत्ता नहीं है, शरीर के नष्ट हो जाने से सब नष्ट नहीं हो जाता, शरीर के नष्ट हो जाने पर भी जो बचा रहता है वह आत्मा है। इन दोनों को अलग, अलग समझ लेना आवश्यक है।

इस खोज का दूसरा रूप यह है कि शरीर अनित्य है व आत्मा नित्य है, शरीर भंगुर है, नाशवान है, आत्मा अभंगुर है, नाशरहित है। अनित्य का यह अर्थ नहीं है कि, है ही नहीं। जो है, दीखता है, जो भी दीखता है – उसे नहीं है, कौन कह सकता है। शरीर है – यह तो स्पष्ट है। परन्तु यह होता हुआ भी अनित्य है, टिकाऊ नहीं है। हममें यह शरीर और सृष्टि में यह भौतिक जगत – ये दोनों हर समय बदल रहे हैं, इस क्षण जो है, दूसरे क्षण वह नहीं रहता – इसलिए संस्कृत में हमारे पांच भौतिक देह के लिये 'शरीर' तथा पांच भौतिक विश्व के लिए जगत, संसार – ये शब्द प्रयुक्त होते हैं। शरीर का अर्थ है जो क्षरण होने वाला हो, क्षीण हो रहा है, पल पल जः खर रहा है, जगत का अर्थ है जो गति कर रहा हो – गच्छतीति जगत् – पल पल जिसके अणु परमाणु बदल रहे हो। संसार शब्द का भी यही अर्थ है – संसरतीति संसार – जो सरण कर रहा हो। चलायमान हो, टिक न रहा हो। शरीर तथा संसार को अनित्य कहने का यही अर्थ है कि न शरीर टिकने वाला है, न संसार टिकने वाला है, दोनों बदल रहे हैं। ऐसे बदल रहे है जैसे नदी की धारा क्षण क्षण बदलती जाती है। इस क्षण तो जल धारा सामने है दूसरे क्षण वह नही है न होते हुए भी दीखती वही है।

शरीर के अणुओ के विषय में वैज्ञानिकों का कहना है कि शरीर की कोशिकाएं इस तेजी से बदल रही है कि सात साल में हमारा पुराना शरीर नहीं रहता नयन शरीर बन जाता है। पुराना मर जाता है, नया उत्पन्न हो जाता है। विश्व के परमाणु तो इससे भी तेजी से बदलते है। इसी लगातार बदलाहट को ही शास्त्रों ने 'अनित्य' कहा है। शरीर इन्हीं अर्थों में अनित्य है, संसार भी इन्हीं अर्थों में अनित्य है, परन्तु जो भी अनित्य है वह किसी नित्य के सहारे ही बदल रहा है। वह किसी न बदलनेवाले के सहारे टिका हुआ है। माला के मनके गिने जा रहे हैं, परन्तु उन्हें न गिने जाने वाले सूत्र ने संभाल रखा है, चक्की चक्कर काट रही है, परन्तु वह स्थिर कीली के सहारे घूम रही है। गाडी का पहिया गोलाई में घूम रहा है। परन्तु वह न घूमने वाली धुरी पर टिका है। चलने वाला चल नही सकता जब तक अचल के साधन हो, घूमने वाला घूम नहीं सकता जब तक स्थिर के साथ न बंधा हो। अनित्य नित्य नहीं हो सकता, अस्थिर, अस्थिर नही हो सकता, नाशवान्, नाशवान नहीं हो सकता जब तक अनित्य को नित्य का, अस्थिर को, स्थिर का नाशवान को अविनाशी का सहारा न हो।

अनित्य, अस्थिर नाशवान इस शरीर के पीछे नित्य स्थिर तथा अविनाशी जो तत्व है, वही शरीर में आत्मा है विश्व में परमात्मा है, अब प्रश्न यह रह जाता है कि अगर हमने ये दो बाते जान ली – यह जान भी लिया कि शरीर तथा आत्मा अलग अलग दो तत्व है – शरीर में आत्म तत्व और विश्व में परमात्व तत्व – यह जान लिया कि शरीर और जगत अनित्य है व आत्मा तथा परमात्मा नित्य है – तो इसका व्यवहारिक रूप में हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ने वाला है।

अगर गहराई से सोचा जाये तो हमारी हर समस्या का मूल स्रोत एक है, वह मूल स्रोत यह है कि हम अस्थिर को स्थिर चाहते हैं, नाशवान को अविनाशी चाहते हैं, अनित्य को नित्य चाहते हैं अगर हमे समझ पड़ जाये कि शरीर अलग है, आत्मा अलग है, जगत अलग है, परमात्मा अलग है, शरीर को जीवन आत्मा देता है, आत्मा को जीवन शरीर नही देता, संसार को जीवन परमात्मा देता है। परमात्मा को जीवन संसार नहीं देता। शरीर तथा संसार अनित्य है। परिवर्तनशील है। आत्मा तथा परमात्मा नित्य है, तो हमारा जीवन के प्रति दृष्टिकोण ही बदल जाता है। दृष्टिकोण किस प्रकार बदल जाये? शरीर स्वयं में कुछ नहीं, यह एक प्रकार का साधन है, उपकरण है – आत्मा का। आत्मा शरीर का मालिक है। इसके द्वारा वह संसार के विषयों का उपभोग करता है। अगर शरीर साधन है तो साधन के प्रति जो दृष्टि होनी चाहिए वही दृष्टि शरीर के प्रति होना ही यथार्थ दृष्टि है।

हमारी मुसीबत का कारण क्या है ? हम धन जमा करते हैं, धन अनित्य है, रुकनेवाला नहीं है। परन्तु हम उसे नित्य बनाना चाहते हैं। हम मकान बनाते हैं, मकान अनित्य है, परन्तु हम उसे नित्य बनाना चाहते हैं। हमारे सब सम्बन्ध अनित्य है, पिता के लिए पुत्र, पुत्र के लिए पिता पति के लिए पत्नी, पत्नी के लिए पति। ये सब रिश्ते है। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता, परन्तु ये सब अनित्य है, इन्हें अनित्य जानकर चलने से जब ये टूटते हैं और टूटते ये किसी न किसी दिन अवश्य हैं – तब हमें दुःख के सागर में डुबो देते हैं। अनित्य कहने का यह अर्थ नहीं कि धन की, मकान की, सम्पत्ति की, पिता पुत्र पत्नी के रिश्तों की कोई सत्ता नहीं है, इनकी सत्ता है। परन्तु इनकी सत्ता उतनी ही है जितनी बहते पानी में नदी के प्रवाह की सत्ता है। जो हमारे सामने से बहकर आगे चला जा रहा है। यह दृष्टिकोण यथार्थ दृष्टिकोण है यही व्यवहारिक दृष्टिकोण है। यही आत्मा को नित्य और शरीर को अनित्य जानने का दृष्टिकोण है।

भौतिक जीवन तभी तक भौतिक है जब तक वह आध्यात्मिक जीवन का अंग है। उसके साथ बंधा है। श्रृंखला की एक कड़ी है। जब तक हम शरीर का ही आत्मा समझते हैं, तब तक अजर अमर आत्मा के क्षेत्र में नहीं पहुंच पाते, मरण धर्म शरीर के इर्द गिर्द ही चक्कर काटते रहते हैं। इस तरह से शरीर को ही सब कुछ समझ लेना और भौतिक जगत से आगे न देखना मृत्यु है। शरीर के भीतर वास करने वाले आत्मा को पा लेना जीवन है। भौतिक जगत को ही सब कुछ समझ लेना और भौतिक जगत से आगे न देखना मृत्यु है। भौतिक जगत के भीतर बस रहे परमात्मा को पा लेना ईशावस्यमिदं सर्व जीवन है।

– १२५, साऊथ अनार कली
सोम बाजार गली नं० १
दिल्ली – ११००५१

फैशन के नाम पर ... / संस्कृति प्रदूषिका



हाथ में मोबाइल और परिधान में जींस–टॉप, पता नहीं ये कौन सा है स्टाइल। पश्चिमी सभ्यता हमारे देश की युवतियों पर हावी होती जा रही है। हमारे देश की संस्कृति में इस सभ्यता का परिधान नहीं खपता। आजकल की फैशनग्रस्त युवतियां तनदिखाऊ कपड़े पहनकर हमारी संस्कृति को प्रदूषित कर रही है। इन वस्त्रों के कारण उन युवतियों को अपनी असुरक्षा की भावना सताती रहती है। इन कारणों से ही आजकल छेड़खानी, बलात्कार तथा बाद में उसकी निर्मम हत्या जैसी कुकृत्यों में काफी तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है। फैशनपरस्त युवतियों से मेरा आग्रह है कि वे तनदिखाऊ पोशाकों के बदले भारतीय संस्कृति के अनुकूल परिधान पहनकर, युवकों को पथभ्रष्ट होने से बचायें। इस नये दौर में पुराने मूल्य, मान्यताओं और आस्थाओं को टूटने से बचाने की जिम्मेदारी हम युवा मन की है।

– विकास रौशन आर्य, सिवान, बिहार

हजरत जहां बनी मंजू आर्य

कोटा मोहर्रम के अवसर पर सुल्तानपुर के राजकीय बालिका विद्यालय में शिक्षिका के पद पर कार्यरत एक महिला ने बुधवार को स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण कर लिया। महिला का कहना था कि उसने वेदों से प्रभावित होकर स्वेच्छा से यह कदम उठाया है।

आर्यसमाज रामपुरा के प्रांगण में समाज के पुरोहित पंडित बिरधीचंद के पुरौहित्य में हुए हवन के बाद हजरत जहां से मंजू आर्य बनी शिक्षिका ने बताया कि पिछले २२ वर्ष से वह वैदिक रीति रिवाजों के अनुसार ही जीवन यापन कर रही थी। उसने अपने घर में एक मंदिर भी बना रखा है। वह वैदिक धर्म के बारे में और जानना चाहती थी जिसके लिए उसने वैदिक धर्म अपना लिया। महिला ने बताया कि काफी समय पहले पति से उसका तलाक हो चुका है। उसके बेटे अमित तथा परिवार के अन्य सभी सदस्यों को न सिर्फ उसके इस कदम की जानकारी है बल्कि उन्होंने सहयोग भी किया। अमित की परवरिश तो शुरूआत से ही हिन्दु रीति रिवाजों के अनुसार हुई है। कानूनी कार्यवाही पूरी होने के बाद बुधवार को आर्यसमाज के प्रांगण में हवन के पश्चात् हजरत जहां को शुद्धि संस्कार के पश्चात् उसका नामकरण संस्कार करके मंजू आर्य नया नाम दिया गया।

– डी०पी० मिश्रा, मंत्री
आर्यसमाज रामपुरा, कोटा

घर बचाओ - देश बचाओ

आज अमेरिका की सबसे गंभीर समस्या बच्चों का मोटापा है। चॉकलेट में कीड़े, सॉफ्ट ड्रिंक्स में कीटनाशक और फास्टफूड में केमिकल होते हैं। इन चीजों से बच्चों को सौ मील दूर रखिए। चोर एक बार घर में घुस जाए, तो नुकसान थोड़ा–सा होगा लेकिन बर्गर, पीजा और नुडल्स घुस गए, तो आपके घर को तबाही से कोई नहीं बचा सकता। बच्चों को चाहिए माता पिता का समय, किताबें, संगीत और खेलकूद, गैर जरूरी ट्यूशन और क्लासेस नहीं।

तीन दिन में ५४० धार्मिक व्यक्तियों को याज्ञिक बनाया गया

यज्ञ प्रशिक्षण समिति ओढ़व, अहमदाबाद के तत्वाधान में अहमदाबाद के राष्ट्रीय मार्ग क्र. ८ स्थित रामेश्वर पार्क में दिनांक ११, १२, १३ मई, २००७ को एक त्रि-दिवसीय यज्ञ-प्रशिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया जिसमें विशाल पण्डाल था। पण्डाल की भूमि को गोबर से लेपन करके सुशोभित किया गया। उसमें १५१ हवन कुण्डों पर दूर-दूर से पधारे ५४० धार्मिक महानुभावों को, जो कि वैदिक यज्ञविधि से नितान्त अनभिज्ञ थे, आर्यसमाज के मन्तव्यों, सिद्धान्तों व आदर्शों से अपरिचित थे तथा वैदिक यज्ञ सीखने के इच्छुक थे, पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी दर्शनाचार्य दर्शनयोग महाविद्यालय रोजड (गुजरात) के निर्देशन में कुशलतापूर्वक प्रशिक्षण दिया गया।

यज्ञ से लोगों में परोपकार की भावना उत्पन्न होती है तथा निष्कामतापूर्वक उत्तम कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। आपने वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा वैश्विक उन्नति के लिए जन-जन को अपना कर्त्तव्य पालन करने हेतु जागृत किया। आपने अपने प्रवचन की श्रृंखला में बतलाया कि वेदमार्ग पर चलने से ही विश्व में शान्ति हो सकती है। जब से मानव समाज निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ परमेश्वर व उसकी आज्ञा पालन से विमुख हुआ है तभी से वह अशान्त, दुःखी, परेशान, भयभीत एवं असुरक्षित है।

अन्तिम दिन आचार्य जी ने शिविरार्थियों से दक्षिणा के रूप में दैनिक/साप्ताहिक/पाक्षिक/मासिक यज्ञ करने का संकल्प कराया।

आर्योपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या सम्मानित

आगरा की ऐतिहासिक नगरी की प्रसिद्ध समाज सुधारक संस्थाओं में अग्रणी आर्यसमाज नामनेर आगरा छावनी का दिनांक १६ मई २००७ से २० मई २००७ तक शताब्दी समारोह धूम-धाम से मनाया गया।



आर्यसमाज के इस शताब्दी समारोह के शुभ अवसर पर स्वामी धर्मानन्दजी (उड़ीसा), श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी (अबोहर) पंजाब, आचार्य विद्यादेव जी (टंकारा) गुजरात, श्री उमेशचन्द कुलश्रेष्ठ जी (आगरा), स्वदेश जी (मथुरा), प्रिं० शिवकुमार सिंह जी (आगरा), प्रिं० राजबहादुर गुप्त जी (आगरा) आदि विद्वानों के साथ महिलाओं में वेदव्यास डी०ए०वी० विद्यालय, विकासपुरी, दिल्ली से आर्योपदेशिका, संगीत-विदुषी श्रीमती सुदेश आर्या जी को दक्षिणा स्वरूप नगद राशि, प्रशस्ति पत्र तथा शाल देकर सम्मानित किया गया।

इनको यह सम्मान वैदिक धर्म की रक्षा, उसके विस्तार, समाज-सेवा, अध्यात्म एवं मूल्याधारित आर्यसमाज की शिक्षा, उसके प्रचार-प्रसार, विकास एवं सराहनीय सेवा के लिए दिया गया है।

सम्मान दिनांक २० मई, २००७ रविवार को आर्यसमाज नामनेर आगरा की अन्तरंग सभा एवं आर्य प्रतिनिधियों की ओर से शताब्दी समारोह में हजारों दर्शकों, गणमान्य जनों की उपस्थिति में प्रदान किया गया। □

आनन्दलोक मिशन में यज्ञोपदेश

आर्यसमाज कलकत्ता एवं आर्यसमाज चण्डीपुर के संयुक्त प्रयास से वसीरहाट में आनन्द लोक मिशन के प्रांगण में यज्ञ एवं उपदेश के साथ वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। चण्डीपुर आर्य समाज की तरफ से अमलकान्ति दत्ता के नेतृत्व में ७-८ ब्रह्मचारी कार्यक्रम को सफल कराने में प्रयत्नशील रहे। आर्यसमाज कलकत्ता की तरफ से प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, उपप्रधान श्री अच्छेलाल सेठ, कोषाध्यक्ष श्री दीपक आर्य, श्री अवधेश कुमार झा, श्री अमर सिंह सैनी, श्री महेन्द्र गुप्त प्रभृति ने भाग लिया। कार्यक्रम के अन्त में गणमान्य नागरिकों, समाजसेवी महानुभावों को एवं प्रतियोगिताओं में विजयी छात्रों एवं छात्राओं को पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किया गया। आर्यसमाज की ओर से आर्यसमाज कलकत्ता के प्रधान एवं पं० नचिकेता जी ने समस्त जनता का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम की पूरी परिकल्पना एवं प्रयास पं० नचिकेता का था।

१८५७ का स्वतन्त्रता संग्राम और महर्षि दयानन्द सरस्वती

१८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम को राष्ट्रीय चेतना के रूप में देखा जाना चाहिए। इस संग्राम में देश के नागरिक, राजा, नवाब, व्यापारी, सैनिक और हर वर्ग का नागरिक शामिल हुआ था। यह भी सत्य है कि इस संग्राम की असफलता के लिए भारतवासी स्वयं भी जवाबदार थे, क्योंकि मुट्ठीभर अंग्रेज कैसे इस देश पर कब्जा कर सकते थे ? क्योंकि सिंधिया, पटियाला की सिख फौज, नेपाल की गोरखा फौज तथा अन्य राजा और नवाबों ने, अपना राज्य नहीं चला जाय, इस भय से अंग्रेजों का साथ देकर भारत का विशाल राज्य अंग्रेजों को सौंप दिया। जिसकी टीस हर भारतवासी के मन में थी। इतने विशाल पैमाने पर देश में संघर्ष चल रहा हो और एक चेतनाशील संन्यासी उससे हरगिज अलग नहीं रह सकता था। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस संग्राम के समय सक्रिय रहे थे और पूरे घटनाक्रम को जानते थे।

इस संग्राम की असफलता के कारणों को भी वे जान गये थे, इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश से अशिक्षा, जातिवाद, छुआछूत, महिलाओं की गिरती स्थिति, राष्ट्रीय एकता का अभाव धार्मिक भेदभाव, अनेक मतमतांतर, गरीबी, भाषायी विविधता, धार्मिक अन्धविश्वास, पाखण्ड आदि को समूल समाप्त करने का संकल्प लिया और मथुरा स्वामी विरजानन्द जी के पास शिक्षा प्राप्त करने चले गये थे और उनसे शिक्षा प्राप्त करने के बाद गुरुदक्षिणा में जीवन ही उपर्युक्त उद्देश्य को प्राप्त करने शुद्ध सनातन वैदिक धर्म और वेदों को जनता में पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए दान कर दिया था।

जिन लोगों ने शोध किया है वे लोग बताते हैं कि महर्षि अज्ञात समय में क्रांति के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रहे थे।

— सुखदेव व्यास

ओ३म् के उच्चारण पर संसद का ध्यान आकृष्ट

१७ मई को लोकसभा में भाजपा सांसद श्री प्यारे लाल खंडेलवाल (मध्य प्रदेश) ने ओ३म् के उच्चारण पर संसद का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि महोदय, अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया जैसे देशों में ओ३म् के माध्यम से न सिर्फ शारीरिक विकार दूर किए जा रहे हैं, बल्कि नशे के गर्त में डूब रहे युवाओं को सही राह पर लाने में भी इस पवित्र ध्वनि का प्रयोग किया जा रहा है। ब्रिटेन के Science Journal में प्रकाशित रिपोर्ट में भी स्पष्ट रूप से ओ३म् की महत्ता स्वीकार की गई है। यहां तक कि वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि कुछ बीमारियां, जिनका सफल इलाज मेडिकल साइंस में उपलब्ध नहीं है, केवल ओ३म् के नियमित जाप से उनमें काफी कमी देखी गई है। खासकर पेट, मस्तिष्क और हृदय संबंधी बीमारियों में तो ओ३म् का जाप रामबाण औषधि की तरह काम करता है। ओ३म् की महिमा और प्रभाव का लोहा आज दुनिया मान रही है, किंतु अपने ही देश में यह उपेक्षित है। भारत जैसा देश, जहां काफी संख्या में पेट, मस्तिष्क तथा हृदय संबंधी बीमारियों से ग्रस्त गरीब मरीज चिकित्सा से वंचित हैं, उन्हें इस पवित्र ध्वनि के जाप से लाभ मिल सकता है।

ब्रिटेन के इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस के प्रमुख प्रो० जे. मार्गन और उनके सहयोगियों द्वारा सात वर्ष तक करीब पांच हजार स्त्री-पुरुषों पर किए गए परीक्षणों के परिणाम काफी चौंकाने वाले थे। प्रो० मार्गन के अनुसार विभिन्न आवृत्तियों और ध्वनियों के उतार-चढ़ाव से पैदा होने वाले कंपन मृत कोशिकाओं को पुनर्जीवित करते हैं और नई कोशिकाओं का निर्माण करे हैं।

उन्होंने सरकार से मांग करते हुए कहा कि वह इन शोध प्रयोगों को भारत में भी व्यापक स्तर पर करने के संबंध में गंभीरता से विचार करें, जिससे देश के करोड़ों गरीब मरीजों का भला हो सके।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस में प्रवेश प्रारम्भ

शिशु (नर्सरी) कक्षा से बी०ए० स्तर तक की निःशुल्क शिक्षा, ४ वर्ष की आयु से लेकर १८ वर्ष तक की कन्याओं का प्रवेश, सबका सीधा-सादा एक-सा रहन सहन, गांव-नगर से दूर स्वास्थ्यप्रद जलवायु, अनिवार्य छात्रावास। सामान्य विषयों के अतिरिक्त वेद, दर्शन, उपनिषद्, संस्कृत व्याकरण, अंग्रेजी, विज्ञान, मनोविज्ञान, पर्यावरण, भारतीय संस्कृति, नैतिकता, गृह कार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा। जलपान सहित भोजन शुल्क सहायतार्थ शिशु से पंचम श्रेणी तक ३६०/- एवं कक्षा ६ से अलंकार (बी०ए०) तक ४०० रु० मात्र। १५० रुपये मनीआर्डर/ड्राफ्ट भेजकर नियमावली मंगवायें। कम्प्यूटर ट्रेड में प्रवेश के अभिलाषी १७५ रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। गुरुकुलीय शिक्षा के साथ-साथ आई०टी०आई (शासन द्वारा मान्य प्रक्रिया के अन्तर्गत) सिलाई कढ़ाई में कक्षा ८ उत्तीर्ण एवं कम्प्यूटर ऑपरेटर एण्ड प्रोग्रामिंग असिस्टेन्ट में इण्टर अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कन्याओं का प्रवेश। आई.टी.आई. में छात्राओं को भी प्रवेश सुविधा, इसका शुल्क विवरण प्रथक है। कन्या गुरुकुल में भारत के १२ प्रदेशों एवं नेपाल की कन्याएं अध्ययनरत हैं।

— मुख्याधिष्ठात्री

आर्यसमाज कटनी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

कटनी (म०प्र०) गत दिवस आर्यसमाज कटनी का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव वैदिक यज्ञ, भजनोपदेश, प्रवचनों एवं विशिष्ट जनों के सम्मान के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रथम दिवस ध्वजारोहण उपरांत गुरुकुल नर्मदापुरम होशंगाबाद से पधारे श्री योगेन्द्र याज्ञिक द्वारा विशिष्ट वेद मंत्रों से यज्ञ पूर्ण हुआ तत्पश्चात बरेली उ०प्र० से पधारी श्रीमती प्रभादेवी आर्य ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। इसी क्रम में ज्ञान की गंगा बहाते हुए आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने कहा 'अश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाशुभम्' कर्म फल की विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा अच्छे एवं बुरे कर्मों का कोई ताल मेल नहीं हो सकता दोनों प्रकार के कर्मों का अलग अलग फल भोगना पड़ेगा। स्वामी ऋतस्पति महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि मनुष्यों का प्रथम कर्तव्य है कि वे प्रतिदिन हवन और संध्या करते हुए पवित्र एवं सात्विक जीवन जीएं।

द्वितीय दिवस अग्निहोत्र उपरांत स्वामी ऋतस्पति परिव्राजक, आर्य सन्यासी ब्रह्मानन्द सरस्वती, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक एवं श्रीमती प्रभादेवी आर्य का पुष्पहार से स्वागत आर्य समाज के प्रधान अश्विनी सहगल, दुर्गाप्रसाद विश्वकर्मा, हरीसिंह भदोरिया, बृजमोहन मनोचा हरिश्चन्द्र सूरी, जगदीश चंद्र बाठला एवं बलराज महेन्द्र एवं श्रीमती शोभा सहगल ने किया।

ऋषिद्रोही एवं राष्ट्रद्रोही हैं तीन नावों के सवार (१)

– अशोक कौशिक

कहावत प्रचलित है – 'जो स्वयं कांच के महलों में रहते हैं, वे दूसरों पर पत्थर नही फैंका करते।' किन्तु कामरेड कादियाण इसके अपवाद हैं। 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक की नकल करने में जब कामरेड अग्निवेश मात खा गये तो विवश होकर उन्हें 'वैदिक सार्वदेशिक' जिसका उपयुक्त नाम 'कामरेडी सार्वदेशिक' होना चाहिए था, प्रकाशित करना पड़ा और कामरेड कादियाण को उन्होंने इसका प्रबन्ध सम्पादक नियुक्त किया। इस साप्ताहिक के वर्ष–२ अंक ३५ के संपादकीय का शीर्षक है – 'ऋषिद्रोही हैं दो कश्तियों के सवार'। कामरेड कादियाणा के अनुसार वे दो कश्तियां हैं – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और आर्यसमाज। जो बात ढ़ाई कॉलम से भी कम स्थान पर विस्तार से कही जा सकती थी उसे कलम घिस्सू कामरेड कादियाण ढ़ाई पृष्ठों में भी ठीक से नहीं कह पाये हैं। यह उनकी अपनी विशेषता है, कामरेडी सार्वदेशिक का उक्त अंक इसके साक्षी है। बात का बतंगड़ बनाकर पाठकों को भ्रमित करना उनका नायाब नहीं नापाक तरीका है। कदाचित उनकी इसी विशेषता के कारण उनका प्रबन्ध संपादक के रूप में वरण किया गया हो। उनकी दूसरी विशेषता है कामरेड अग्निवेश का रक्षाकवच बनना। जबकि कामरेड कादियाणा अपने हर अंक में इस एक वाक्य की पुनरावृत्ति से कभी नहीं चूकते कि कामरेड अग्निवेश को किसी रक्षाकवच की आवश्यकता नहीं है। अस्तु,

संदर्भाधीन संपादकीय के अंतिम से पहले कॉलम के एक वाक्य पर ही हम टिप्पणी कर रहे हैं। कामरेड कादियाण का वह वाक्य है – 'पं० प्रकाश वीर शास्त्री को भी राज्य सभा में भेजने के लिए बाहर से संघियों ने सहयोग दिया था।' इस प्रसंग में कामरेड कादियाणा ने लाला रामगोपाल शालवाले से यह नामावलि प्रारम्भ कर श्री रासासिंह रावत पर, दो बार नामों में, समाप्त कर दी, जबकि यह नामावलि देवतास्वरूप स्व० भाई परमान्द, महाशय कृष्ण, लाला नारायणदत्त ठेकेदार, बाबा मिलखा सिंह, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर आदि से प्रारम्भ होकर शताधिक संख्या में है। इस प्रसंग में जो विशेष बात उल्लेखनीय है वह यह कि कामरेड कादियाण ने स्व० श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती का नामोल्लेख जानबूझकर नहीं किया। ऐसा नहीं कि कामरेड उनके विषय में जानते न हों, क्यों कि वे तो उनके पूज्य गुरुदेव रहे थे। श्री सिद्धान्ती जी जनसंघ के प्रत्याशी के रूप मे ५ वर्ष तक संसद के सदस्य रहे थे। इससे कामरेड कादियाण की कुटिल, कुत्सित और क्लुषित मनोवृति का परिचय मिलता है। वे स्वामी रामेश्वरानन्द जी का तो नाम लेते हैं किन्तु उनके समकालीन सिद्धान्ती जी का नामोल्लेख नही करते।

कामरेड अग्निवेश ने पादरी बालसन थम्पू के सम्मुख जिन कामरेड स्व० इन्द्रवेश को अपना पितातुल्य माना है, वे एक बार जन संघ के प्रत्याशी के रूप में रोहतक से संसद का निर्वाचन लड़कर पराजित हो गये थे दूसरी बार वे लोकदल के प्रत्याशी रूप में निर्वाचित हुए थे। उस समय लोकदल 'नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट' का एक घटक था और फ्रंट का मुख्य घटक दल था 'भारतीय जनता पार्टी'। क्या भा०ज०पा० के सहयोग के बिना कामरेड इन्द्रवेश तब संसद के सदस्य बन सकते थे? सांसद बनने के बाद वे संसद में ने०डे० फ्रंट के अंग के रूप में ही भाग लेते रहे थे, उस समय जेबी अथवा कागजी 'आर्यसभा' का राजनैतिक दल के रूप में कहीं नामो निशान नहीं था।

कामरेड कादियाण को भली भांति विदित होगा कि 'जनता पार्टी' आर्य समाज का मंच नहीं था और न ही आर्य समाज जनता पार्टी का कोई घटक दल था। जब कि 'जनसंघ' जनता पार्टी के घटक दलों में दो प्रमुख – कांग्रेस और भारतीय जन संघ में से एक प्रमुख घटक दल था। उसी जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में कामरेड अग्निवेश हरियाणा विधान सभा के सदस्य बन कर मंत्री तक बन गये थे। जनता पार्टी के घटक जनसंघ का यदि उनको सहयोग न होता तो क्या वे विधायक बन पाते? न कामरेड अग्निवेश ने ही यह घोषणा की थी कि जनता पार्टी के घटक दल जनसंघ का वे अपने निर्वाचन में सहयोग नहीं लेंगे। आर्यसभा उनकी जेबी अथवा कागजी संस्था मात्र थी।

कामरेड कादियाण ने उपरिवर्णित दोनों कामरेडों के निर्वाचन के इस तथ्य को भी इरादतन अपने दृष्टि–पथ से ओझल रखने का दुष्प्रयत्न किया है, उनके इस निन्दनीय कृत्य के लिए उनकी भर्त्सना की जानी चाहिए। स्पष्ट है कि कामरेड अग्निवेश और उनके रक्षा कवच सहित 'वेश कम्यून' के सभी भगवाधारी दो नहीं तीन-तीन नावों पर सवार हैं, अर्थात् उनकी तीसरी नाव है – 'कम्युनिज्म'। अतः वे सभी ऋषिद्रोही होने के साथ-साथ राष्ट्रद्रोही भी हैं।

(क्रमशः)

आरा (बिहार) में श्री कामता प्रसाद द्वारा प्रचार कार्य

आर्यसमाज आरा भोजपुर में कामता प्रसाद आर्य संचालक आर्यवीर दल बिहार द्वारा व्यापक रूप में वैदिक प्रचार प्रसार के लिए जुट गए हैं। उनका कहना हे कि आर्य समाज संस्था जब समाज के कार्य में संलग्न रहती थी तो आर्यसमाज शिखर पर था लेकिन जब से आर्यसमाज ने अपना कार्य आर्य अनुकूल छोड दिया है तब से समाज ने आर्यसमाज को छोड दिया। यदि आर्यसमाज ने श्रेष्ठ समाज बनाना है तो वाणी छोड कर कर्म में उतरें तभी पूर्व की भांति गरिमा को लौटाया जा सकता है।

आर्यसमाज संस्था में मानव सेवा के माध्यम से गरीब लाचार बेसहारा रोगियों को अस्पताल में ले जाकर दवा ईलाज, भरती कराना, लावारिश लाशों की व्यवस्था करना, पशु पक्षी की रक्षा हेतु संघर्ष करना आर्यसमाज के छठे नियम के अनुसार आर्य वीर दल के शाखा के माध्यम से प्रतिदिन ५ बजे सबुह आसन, व्यायाम, प्राणायाम का प्रशिक्षण कामता प्रसाद आर्य की देखरेख में चल रहा है जिससे प्राणायाम के माध्यम से अनेकों लोग रोग से मुक्ति पा रहे हैं। आर्यसमाज के सेवा कार्य से प्रभावित हो प्रशासन भी सहयोग कर रहा है।

जिला अधिकारी भोजपुर ने कामता प्रसाद आर्य के नेतृत्व में आरा बंदी गृह में बंदियों के आर्यसमाज आरा के बेनर में योग व्यायाम, प्राणायाम का कार्य चल रहा है इस कार्य से बहुत सन्तुष्ट है एक सप्ताह के कार्य को देखकर बंदी सरकार से मांग कर रहे हैं यह कार्य नित्य प्रति चलता रहे उन लोगों की मांग पर हो सकता है स्थायी रूप में आर्यसमाज को जेल में व्यवस्था करा दी जाय।

सीमन्तोन्नयन संस्कार सम्पन्न

आर्यसमाज हाथीखाना के युवा ट्रस्टी श्री भरत भाई सोनी के पुत्र संजय की धर्मपत्नी 'परिता' बेन का सीमन्त हुआ। परिता बेन के सभी संस्कार वैदिक परम्परा से सम्पन्न हुए। परिता बेन और संजय भाई दोनों आर्य परिवार हैं।

संस्कार डॉ० शिवदत्त पांडे ने सम्पन्न कराया। आचार्य श्री ने कहा जब कोई प्रिय मेहमान घर आता है तो उसको आने से पहले उसका स्वागत करते हैं और समय समय पर पूछते रहते है कि अब कहां हो, अब कहां हो, उसी तरह से इस जीवात्मा को (संतान) पूछते रहते हैं, २ महीने में पुंसवन संस्कार और सातवें में सीमन्तोन्नयन संस्कार करते हैं। संस्कार का महत्व यह है कि संतान का निर्माण माता पिता अपने अनुकूल करते हैं। सुयोग्य बनाना माता का प्रथम कर्तव्य है, जेसे मकान बनाने से पूर्व नक्शा तैयार करे है उसी तरह संतान को जन्म से पहले उसको नव निर्माण माता पिता अपने उत्तम विचारों से तैयार करते, और उसको स्वागत करने की खुशी से तत्पर रहते हैं, माँ उस कष्ठ को सहन करती उसकी खुशी मां को हृदय से होती है 'माता निर्माता भवति'। अन्त में श्री आचार्य जी ने कहा सभी को अपने अपने घरों में वैदिक संस्कारों द्वारा संतानों को उन्नत एवं दीर्घायु बनाओ।

आचार्य वेदपाल जी का निधन

आर्यसमाज गुजरांवाला टाऊन पार्ट–२ दिल्ली की यह आम सभा वैदिक विद्वान आचार्य वेदपाल जी के असामयिक निधन पर गहरा दुःख एवं संवेदना प्रकट करती है। आदरणीय आचार्य जी वेदों एवं ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के महान् प्रचारक और व्याख्याता थे – आर्यसमाज, गुजरांवाला टाऊन में गत कई वर्षो से हर मास उनके प्रवचन – उपदेश नियमित रूप से हो रहे थे – अपने जीवन के कई वर्ष उन्होंने देश – विदेशों में ऋषि के मिशन के प्रचार प्रसार में अर्पित कर दिए थे – उनके मेधावी विद्वान सुपुत्र श्री राजू वैज्ञानिक एवं संन्यासिनी सुपुत्री ऋषिका मा संजीवनी उन्हीं के पद चन्हों पर चलते हुए ऋषि दयानन्द के सन्देशों को घर–घर पहुंचाने में रत हैं – ऐसे वैदिक विद्वान के प्रयाण पर जहां उनका परिवार शोक संतप्त है, वही समस्त आर्य जगत् को उनके निधन से अपूर्णनीय क्षति पहुंची है। परम पिता परमात्मा से दिवंगत महान् आत्मा को अपने चरणों में शरण देने एवं समस्त संतप्त परिवार को इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

शोक एवं संवेदना सहित –
चन्द्रशेकर कपूर, मन्त्री

श्री रमेश चन्द्र आर्य चन्दौसी का देहावसान

मान्यवर,

हमारे पूज्यनीय पिता श्री रमेश चन्द्र आर्य अवकाश प्राप्त टेलीफोन सुपरवाइजर उम्र ८७ वर्ष का देहान्त दिनांक १६–१–०७ को अचानक हो गया। वह अपने जीवन काल में आर्यसमाज बरेली, शाहजहांपुर मुरादाबाद, चन्दौसी विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे। नित्य यज्ञ करते थे। पिछले ४० वर्षो से सार्वदेशिक साप्ताहिक अखबार पढ़ते थे उनके पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके दोनों पुत्र डॉ० प्रमोद कुमार, दिनेश कुमार आर्यसमाज चन्दौसी के सदस्य हैं श्री रमेश चन्द्र आर्य जी ८७ वर्ष से अधिक का पुरुषार्थमय भरपूर जीवन जीने वाले आर्य जी, सिद्धान्तों के धनी और मनसा वाचा कर्मणा आर्यसमाज को समर्पित थे। अपने सक्रिय जीवन में हिन्दी सत्याग्रह किया। अपने पीछे छ' पुत्र एक पुत्री को छोड गए हैं। सभी पुत्र अच्छे पदों पर कार्यरत हैं।

– डॉ० प्रमोद कुमार

देश, धर्म वैदिक संस्कृति का विनाशक अग्निवेश

'अग्निवेश की एक ही प्यास, मीडिया में चमकें
कल या आज भले ही बिगड़ जाये देश, धर्म समाज'

– ब्र० कौशलार्य नैष्ठिक

अत्यन्त खेद का विषय है कि गत वर्षों से 'अग्निवेश' नाम के एक तथाकथित लाल वस्त्रधारी व्यक्ति को साम्प्रदायिक मंचो से विचित्र घोषणायें करते हुए देख रहे हैं। आदि से अन्त तक इस विचित्र व्यक्ति की एक ही चाहना प्रकट होती है कि जैसे-तैसे वह समाचारों में बना रहे। जबकि इस रंग रूप वाले व्यक्ति समाज के बड़े जिम्मेवार साधू रहे हैं। जिन्होंने लोकैषणा को ठुकराकर सदा ही सत्य का पक्ष लिया है भले ही कूटनीतिज्ञ व वोट लोभी नेताओं ने उनकी अवहेलना की हो अथवा विषदान किया हो। स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी अभयानन्द व स्वामी स्वतन्त्रानन्द आदि ऐसे महान् सन्यासी थे।

शर्म की बात है कि आर्यसमाज में छल कपंट व सोनिया जी के आशीर्वाद से घुसा यह व्यक्ति सदा ही वेदशास्त्र तथा महर्षि दयानन्द की आर्य मान्यताओं से विरुद्ध रहा है। कभी कम्युनिस्टों की भाषा धन और धरती बंटके रहेगी, कभी आरक्षण, कभी राम स्मारक के स्थान पर विदेशी हमलावर बाबरी मस्जिद, कभी धर्म रक्षण के स्थान पर धर्म परिवर्तन करने वाले पादरी स्टेन के पक्ष में झण्डा बुलन्द करता है।

इस धूर्त व्यक्ति ने आज तक कभी मौलवियों, चरित्रहीन लौण्डेबाजी समर्थक, आतंकवादियों, माओवादी नक्सलवादियों, भारत पर हमला करने वाले चीनियों, अरुंणाचल पर अपना अधिकार बताने वाले जियांगी या पूरे भारत को ईसाई बनाने की घोषणा करने वाले पोप का कभी विरोध नहीं किया। कहने का मूल अभिप्राय यह है कि अग्निवेश (साधु वेश में छिपा शत्रु) जब से समाज में प्रवाशित हुआ है तबसे ही भारत के सबसे बड़ तीन शत्रुओं – ईसाई, मुसलमान और कम्युनिस्टों का समर्थन रहा है।

गत दिनों जब भारतीय संस्कृति के कुछ हत्यारों ने देश की रीढ़ युवा पीढ़ी को पथभ्रष्ट करने हेतु समलैंगिकता का समर्थन किया तो 'मीडिया लालायित अग्निवेश का नाम सबसे आगे दिखाई दिया। मीडिया में छाने के इस मौके को हाथ से न गंवाने में प्रमुख मि० अग्निवेश 'लाल' ने इण्डिया टुडे में समलैंगिकता के समर्थन के साथ-साथ अपना एक सुन्दर सा चित्र भी छपवा दिया।

वाह रे वाह अग्निवेश जवाब नहीं तेरी ताबड़-तोड़ लौकेषणां नीति का। संशय नहीं कि कल को इसे वेश्याओं के पंजीकरण, सैक्स वर्करों व कॉल गर्ल्स के समर्थन में यदि सबसे आगे झण्डा लेकर चलने को कहा जाए तो भी यह विरोध नहीं करेगा बस मीडिया में फोटो आनी चाहिए।

कहां तो ब्रह्मचारी चरित्र तथा संयम का समर्थन करने वाले महर्षि दयानन्द, मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगेश्वर कृष्ण और उनके संयमी अनुयायी और कहां पुरुष को पुरुष से विषयभोग (लौंडेबाजी) का समर्थन करके आर्य धर्म को बदनाम करने वाला वेश। अधिकतर बुद्धिजीवी लोग ये जानते हैं कि विश्व में अधिकतर समलैंगिक लोग मुसलमान, ईसाई व कम्युनिस्ट ही हैं। भारतीय आर्य दर्शन से विरुद्ध पाश्चात्य लोगों का उद्देश्य मात्र भोग विलास अर्थात ईट ड्रिंक एण्ड बी मैरी है। जबकि आर्यदर्शन संयम व साधना तथा समाज सेवा का उपदेश देता है। आंख का अन्धा तथा गांठ का पूरा अग्निवेश यह जानता ही होगा कि जहां 'भोग विलास व लूट' रोग, अशान्ति तथा आतंकवाद को जन्म देते हैं वहां 'संयम, साधना व सेवा' निरोगता, शान्ति तथा मानवतावाद को जन्म देते हैं।

आर्युवैदिक चिन्तकों तथा अर्वाचीन वैदिक आर्य विद्वानों के अनुसार ब्रह्मचर्य (वीर्यरक्षा) जहां जीवन को स्वस्थ, सुन्दर तथा प्रभु के योग्य बनाता है वहीं वीर्य का नाश रोगों, मानसिक तनाव व प्रभु दर्शन से दूर ले जाता है। गवेषक जन यह जानते हैं कि श्वेत रक्त (वीर्य रज) लाल रक्त की अपेक्षा हजारों गुना अधिक मूल्यवान उपयोगी होता है। श्वेतकण शरीर की कोशिकाओं को शक्तियुक्त करके उसे एड्स, कैंसर, पाईल्ज, डिप्रेशन, दमा, सिरदर्द, एसिडिटी व कब्ज जैसी अनेक बीमारियों से बचाता है। परन्तु वीर्य का समलैंगिकता आदि से नाश करने वाले लोग बदहजमी, कब्ज, जुकाम, साईनस, पाइल्स, डिप्रेशन के शिकार रहते हैं।

नादान अग्निवेश को यह सोचंना चाहिए कि जब देशों में वेश्याओं, कॉलगर्ल्स व कैबरें डांसरों की समस्या ही सरकार नहीं सम्भाल पा रही तो क्या समलैंगिकता (लौंडेबाजों) का आतंक परिवार, समाज व देश को शान्ति तथा इज्जत से जीने देगा ?

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद (उ०प्र०) आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर (११ से १७ जून, २००७)

पूर्व माध्यमिक विद्यालय करैहडा, मोहन नगर गाजियाबाद में ७ दिवसीय आर्य वीर प्रशक्षिण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। समापन समारोह में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार तथा कई अन्य राजनेता एवं वैदिक विद्वानों को आमन्त्रित किया गया।

आर्यसमाज मन्दिर धूरी में चरित्र निर्माण शिविर

आर्यसमाज मन्दिर धूरी में आर्य वीर दल के तत्वावधान में चरित्र निर्माण शिविर १६ से २० मई, २००७ तक लगाया जा रहा है जिसमें व्यायाम, आसन, प्राणायाम और खेलों के साथ-साथ बच्चों को ईश्वर भक्ति, मातृ, पितृ, गुरु भक्ति और राष्ट्र भक्ति का प्रशिक्षण दिया जाएगा। देश, धर्म और जाति की सेवार्थ १२ से २५ वर्ष तक की आयु के बच्चों को प्रशिक्षण और प्रेरणा दी जाएगी।

– महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी

मोगा में भजन सन्ध्या व विशेष समारोह

आर्यसमाज मोगा के तत्वावधान में स्थानीय डी०एम०कॉलेज की पवित्र यज्ञशाला एवं प्रांगण में विशेष समारोह एवं भजन सन्ध्या का कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। जिसमें चतुर्वेद शतकम् मन्त्रों से आठ दिन तक आर्यसमाज में हर रोज अनेकों यजमान दम्पत्तियों ने उपस्थित होकर आहुतियां डालते रहे। इस कार्यक्रम में आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री विजय आनन्द जी (फिरोजपुर छावनी) के सुमधुर भजन एवं उपदेश हुए। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री जगदीश अग्रवाल, श्री सत्यपाल, श्री विजय साथी, श्री जगदीश पुरी, श्री प्रियतम देव, श्री विनोद धवन, श्री बदलेव बंसल, श्री नरेन्द्र सूद एवं उपदेश पं० दिवाकर भारतीय आर्य का विशेष योगदान रहा।

– विनोद धवन, मन्त्री

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में परिवार मिलन समारोह

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में परिवार मिलन समारोह व सम्मान समारोह किया गया। समारोह से पूर्व सात कुण्डीय गायत्री महायज्ञ किया गया। यज्ञ के पश्चात् श्री नरेन्द्र सिंह जी भल्ला की अध्यक्षता में समारोह आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम एस०डी० गर्ल्ज सीनियर सै. स्कूल पुराना बाजार की छात्राओं ने बहुत ही सुन्दर प्रभु भक्ति के भजन सुनाये तत्पश्चात् आर्य जगत के प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री सुभाष सतीश सुमन भजनमण्डली ने बहुत ही सुन्दर प्रभु भक्ति के भजनों से सारी संगत को बांधे रखा। समारोह के मुख्यवक्ता स्वामी माध्वानन्द जी हिसार ने अपने सम्बोधन में कहा कि वेद के कल्याणकारी मार्ग पर चलकर ही मानव मात्र का हित तथा इस पर चलकर तीनो प्रकार की शान्ति पाप्त की जा सकती है।

आर्य परिवार मिलन सम्मेलन

२४ व २५ जून, २००७ को आर्यसमाज मन्दिर, प्रकाश वीर भवन, ब्रजघाट, गाजियाबाद में आर्य परिवारों का मिलन समारोह आयोजित हो रहा है। यह कार्यक्रम दोनों दिन प्रातः ७ से १० बजे यज्ञ प्रवचन तथा २४ जून को दोपहर ३ से ६ तथा रात्रि ८ से ११ बजे के सत्रों में आंयोजित होगा। **– माया प्रकाश त्यागी** ६३१६८०५५०४

निर्वाचन समाचार

स्त्री आर्यसमाज गुरदासपुर
पघाना : श्रीमती ज्योति नन्दा
मन्त्राणी : श्रीमती परसीनी देवी
कोषाध्यक्षा : श्रीमती लीला गुप्ता

आर्यसमाज शहीद भगतसिंह नगर, जालन्धर
प्रधान : श्री ओम् प्रकाश अग्रवाल
मन्त्री : श्री रणजीत आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री राजेश प्रेमी

आर्य केन्द्रीय सभा, सोनीपत
प्रधान : श्री वेदपाल आर्य
मन्त्री : श्री सुरेन्द्र कुमार खुराना
कोषाध्यक्ष : श्री प्रीतम हंसीजा

आर्यसमाज फाजिल्का
प्रधान : श्री सुशील वर्मा
मन्त्री : श्री किशोर चन्द
कोषाध्यक्ष : श्री कृष्ण लाल आहूजा

आर्यसमाज बरनाला, पंजाब
प्रधान : श्री हरमेल सिंह जोशी
मन्त्री : श्री महेश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री विजय कुमार

सामयिक विषयों पर लेख

सार्वदेशिक साप्ताहिक के विद्वान लेखकों तथा सभाओं और आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि विशेष उत्सवों आदि की सूचना प्रकाशनार्थ कम से कम १५ दिन पूर्व अवश्य भेज दिया करें। इसी प्रकार विद्वान लेखक विशेष उत्सवों, दिवसों आदि से सम्बन्धित लेख भी न्यूनतम १५ दिन पूर्व अवश्य भेजें।

अधिकाधिक सामयिक विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रियाएं भी भेजें। "सार्वदेशिक" के सम्बन्ध में लेख, सूचनाएं तथा अन्य पत्र निम्न पते पर भेजें –

सार्वदेशिक सभा, 1488, पटौदी हाउस (नजदीक आर्य अनाथालय)
दरियागंज, नई दिल्ली-2, फोन : 23270507
E-mail : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

– प्रो० स्वतन्त्र कुमार, प्रबन्ध सम्पादक एवं सभा मन्त्री, मो० ०६७१६००४४५१

Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 03-06-07 से 09-06-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 31-05-07/01-06-07

आर्यसमाज गान्धी नगर-१ जालन्धर का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज वेद मन्दिर गांधी नगर–१ जालन्धर का वार्षिक उत्सव बड़ी श्रद्धा व लग्न से मनाया गया।

सर्वप्रथम प्रभात फेरियों का कार्यक्रम प्रातः पांच से छः बजे तक ६ अप्रैल से १५ अप्रैल तक रखा गया। तत्पश्चात १६ अप्रैल से २१ अप्रैल २००७ तक भिन्न भिन्न आर्य परिवारों में रात्रि पारिवारिक सत्संगों का आयोजन किया गया। तत्पश्चात २२ अप्रैल को मुख्य उत्सव किया गया। श्री बाबू सरदारी लाल जी आर्य रत्न (उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन आरम्भ हुआ। श्री सरदारी लाल जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि यह आर्यसमाज जालन्धर की समाजों में सबसे पुरानी आर्यसमाज है।

इस अवसर पर कई वक्ताओं ने अपने अपने विचार प्रस्तुत किए जिनमें मुख्यवक्ता श्री पं० धर्मदेव जी आर्य कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री डॉ० राम अवतार शर्मा, श्री सुदर्शन कुमार जी शर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व चांसलर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब, पं० विजय शास्त्री, पं० सुनील शास्त्री व भजन गायक श्री पं० अरुण विद्यालंकार, श्री राजपाल जी, श्री मास्टर प्रिंस, श्री तिलक राज, श्रीमती पुष्पा व सत्या देवी जी व कान्ता जी आदि ने मिलकर अपने अपने विचार प्रस्तुत किए व ऋषि महिमा का गुणगान किया। उसके बाद श्री सुदर्शन शर्मा द्वारा ध्वजारोहण किया गाय।

– ईश्वर दास सपरा, मन्त्री

प्रतिष्ठा में
10150 पुस्कालयाध्यक्ष (12/99)
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

श्री राममेहर एडवोकेट नहीं रहे

७ मई, २००७ को ह्रदय गति रुक जाने से ७४ वर्ष की अवस्था में श्री राममेहर एडवोकेट का रोहतक में देहावसान हो गया। वे सुप्रसिद्ध अधिवक्ता एवं आर्य नेता थे। हरियाणा सभा सार्वदेशिक सभा तथा गुरुकुल कांगड़ी को सदैव उनका नीतिगत मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति पूर्ण आस्थावान तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ व्यक्तित्व के धनी श्री राममेहर सदैव आर्यसमाज के प्रत्येक कार्य में अग्रणी रहे।

सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री राममेहर की आत्मा की सद्गति एवं शोक संतप्त परिजनों को हौंसला प्रदान करने की प्रार्थना की गई। □

रमेश नगर आर्यसमाज द्वारा भव्य भजन संध्या

आर्यसमाज मंदिर ६ ब्लॉक, रमेशनगर द्वारा रविवार को भव्य भजन संध्या का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आर्यसमाज मंदिर के प्रधान व दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य सुमन ने अपने मधुर भजनों द्वारा उपस्थित श्रद्धालुओं का भरपूर मनोरंजन किया।

इस समारोह में सर्वश्री विमल वधावन, वैद्य इन्द्रदेव, भजन प्रकाश आर्य, जगदीश आर्य, बलदेव राज सेठ, श्रीमती शशि प्रभा आर्या, श्रीमती कृष्णा रसवन्त, हीरा लाल चावला, सुभाष सचदेवा (विधायक), श्रीमती ऊषा मेहता (निगम पार्षद) तथा दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारी तथा सदस्य उपस्थित थे।

विधायक सचदेवा ने नरेन्द्र आर्य सुमन को आश्वासन दिया कि आर्य समाज के विकास में उनसे जो अपेक्षा की जाएगी वे इसे पूरा करने का प्रयास करेंगे।

सम्पादक ललित 'सुमन' ने कहा कि नैतिक व चारित्रिक उत्थान आवश्यक है और इसमें आर्यसमाज अहम भूमिका अदा करता रहा है और आर्यसमाज को समाज में जागृति लाने के लिए पूरी तरह प्रयासरत रहने की आवश्यकता है।

समारोह उपरांत भव्य लंगर की व्यवस्था की गई थी।

मानसिक और पारिवारिक शांति छीन लेने वाली विदेशी कंपनियों की नौकरियों से बेहतर है स्वरोजगार।

औषधि दर्शन

त्रिफला चूर्ण : पेट की समस्याएं जब गम्भीर रुप धारण कर लेती हैं तो अनेकों बीमारियों को आमन्त्रण मिल जाता है। पेट की नियमित सफाई अत्यन्त आवश्यक है इसके अभाव में उच्च रक्तचाप, लकवा, शुगर, तनाव, गठिया रोग तथा अन्य दर्जनों रोग पनपते रहते हैं। सबसे गम्भीर रोग है बवासीर अर्थात् शौच के साथ खून का आना। कुछ समय तक यदि इसे काबू न किया जाए तो यह जानलेवा बन सकता है। त्रिफला चूर्ण जिसमें आंवला, हरड़ और बहेड का समान मात्रा में चूर्ण मिलाया जाता है उसका एक चम्मच प्रतिदिन रात्रि में जल या दूध के साथ सेवन करना पेट की सफाई के लिए अति उत्तम उपाय है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो0 9312912139) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४६ अंक ५ | २४ जून से ३० जून, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | ज्ये०शु०६

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुदी डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

अमृतसर - दिल्ली - हरिद्वार

"क्रान्ति यात्रा"

700 कि०मी० से अधिक क्षेत्र को वैदिक धर्म, आर्यसमाज, राष्ट्रभक्ति और ईश्वर भक्ति के रंग में रंगने की योजना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार, वरिष्ठ उपप्रधान, श्री वैद्य इन्द्रदेव, कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार, उपमन्त्री श्री देवराज जी, श्री आचार्य यशपाल, श्री वेद प्रकाश शास्त्री, श्री आर्य तपस्वी सुखदेव तथा श्री सुरेन्द्र सिंह शास्त्री आदि ने हरिद्वार में एक विचार विमर्श बैठक में "क्रान्ति यात्रा" के आयोजन को एक सुन्दर एवं व्यापक प्रचार कार्यक्रम के रूप में सजोने की रूपरेखा तैयार की। हरिद्वार में आयोजित इस बैठक में यह विचार किया गया कि किस प्रकार समस्त छोटे बड़े शहरों, कस्बों और गांवों को इस प्रचार यात्रा के सम्पर्क में लाया जाए। क्रान्ति यात्रा के कार्यक्रम को निर्धारित करने तथा यात्रा के बीच–बीच प्रत्येक शहर, नगर में व्यापक पैमाने पर शोभा यात्राएं आयोजित करने के लिए सभा मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार ने प्रान्तीय संयोजक तथा सह संयोजक एवं प्रत्येक शहर के संयोजक और सह संयोजकों को सम्मलित करके यात्रा की सहायक मण्डलियां नियुक्त करकने का विचार दिया।

उन्होंने कहा कि इस सम्बन्ध में वे शीघ्र ही प्रत्येक शहर के आर्य महानुभावों से विचार विमर्श करके नामों का निर्धारण करेगें। ३० जून (शनिवार) को प्रातः ११ बजे दिल्ली में उन प्रमुख आर्य नेताओं की बैठक बुलाई गई है जो पांच प्रान्तों से गुजरने वाली इस "क्रान्ति यात्रा" में अपने अपने प्रान्त के शहरों में आयोजन एवं प्रबन्ध में मुख्य सहयोगी होंगे।

सभा मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार तथा कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार शीघ्र ही इन प्रान्तों का दौरा करके कार्यक्रम की सूक्ष्म रूपरेखा तैयार करेंगे।

"क्रान्तियात्रा" संयोजकों की बैठक ३० जून को दिल्ली में

पांच प्रान्तों पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड से गुजरने वाली क्रान्ति यात्रा के सफल संचालन के लिए प्रत्येक शहर में संयोजक तथा सहायक मण्डलों के गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है।

इस सम्बन्ध में ३० जून (शनिवार) को सतभ्रावां विद्यालय, करोल बाग, दिल्ली में प्रातः ११ बजे एक अत्यावश्यक बैठक रखी गई है। बैठक में संयोजकों – सहसंयेजकों तथा अन्य सहायक कार्यकर्त्ता आर्य जनों को आमन्त्रित किया गया है। आर्य जनों के सुझावों का स्वागत है।

– स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री (मो0- 09719004451)

मा० कुवरपाल सिंह जी का १ जुलाई को वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश

उत्तर प्रदेश के बागपत, गाजियाबाद जिलों की सीमा पर स्थित रटौल कस्बे के आम रटौल आम के नाम से प्रसिद्ध है।

इसी कस्बे के सुप्रसिद्ध आर्य नेता मास्टर कुंवरपाल सिंह जी १ जुलाई २००७ (रविवार) को धूमधाम से समारोहपूर्वक वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करेंगे। विशाल यज्ञ के द्वारा उन्हें वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा परम पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती, प्रभात आश्रम मेरठ के द्वारा प्रदान की जाएगी।

इस समारोह में हरयाणा सभा के प्रधान श्री आचार्य यशपाल आर्य एवं कई अन्य आर्य पदाधिकारियों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं को आमन्त्रित किया गया है।

सत्यवादी व्यक्ति ही पक्का आर्य है

आर्यवीर दल मुज्जफरनगर का साप्ताहिक शिविर स्थानीय नगरपालिका विद्यालय में आयोजित किया गया।

शिविर में मध्य एक बौद्धिक सत्र में श्री विमल वधावन आर्य ने शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए सत्य को जीवन का लक्ष्य, जीवन का मार्ग और अपने श्वास के समान धारण करने के विषय में विचारों से प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि जिस व्यक्ति की जिव्हा से कभी असत्य शब्दों का प्रवाह न हुआ हो वही सच्चा आर्य है केवल आर्यसमाज के पदाधिकारी या सदस्य बनकर ही आर्यत्व का प्रमाण पत्र प्राप्त नहीं हो जाता।

हमारा मानव जीवन ईश्वर द्वारा हमें सर्वोच्च पद पर नियुक्ति के समान है जिसके बाद हमारी सेवानिवृति सामान्यतः आवश्यक है। परन्तु जैसे कुछ विशेष लक्षणों – ईमानदारी, कर्मठता, ज्ञान आदि के कारण कभी कभी सेवा निवृति काल के बाद भी नौकरी की अवधि को आगे बढ़ाना मालिक को प्रिय लगता है। उसी प्रकार यदि यह लक्षण हमारे भीतर मृत्यु पर्यन्त रहें तो हमारा मालिक (ईश्वर) भी प्रसन्नता पूर्वक हमें पुनः मनुष्य पद या मोक्ष की प्राप्ति जैसा गौरव प्रदान करेगा।

उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा अन्य ऋषियों मुनियों के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सत्य का पर्यायवाची बनाने की कल्पना ब्रह्मचारियों के समक्ष प्रस्तुत की।

शिविर में गांधी कालोनी आर्यसमाज के श्री रोशनलाल बत्रा, श्री डॉ० जगदीश जी, श्री मदनपाल राठी, शिक्षक तथा कई अन्य आर्य विद्वान उपस्थित थे। इस सत्र में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार जी का भी अभिनन्दन किया गया।

प्रवन्ध सम्पादक
प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री

सह सम्पादक
देवराज आर्य

सम्पादक

भारत सरकार से मांग

दिल्ली हरिद्वार मार्ग का नाम 'क्रान्ति-पथ' रखें

सेवा में,
डॉ० मनमोहन सिंह जी,
प्रधानमन्त्री भारत सरकार, ७ रेस कोर्स रोड, नई दिल्ली।

विषय : दिल्ली - मेरठ - हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग का नामकरण।

श्रीमान् जी

सविनय निवेदन है कि भारत की १८५७ ई० की आजादी की प्रथम लड़ाई में आर्यसमाज की भूमिका किसी से छिपी हुई नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती अशफाक उल्ला खां, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भाई परमानन्द, मदनलाल ढींगरा, उधम सिंह, वीर सावरकर जैसे महान् क्रान्तिकारी प्रथम पंक्ति में आ जाते हैं। इनके बाद तो एक श्रद्धांजलि होगी जिन्होंने क्रान्तिकारियों को यह मूल मंत्र दिया था कि विदेशी सरकार चाहे कितनी भी अच्छी हो उससे कही बेहतर अपनी सरकार होती है।

अन्त में हमारा भारत सरकार

आर्यसमाज आवास विकास कालोनी, आगरा ने भी प्रधानमन्त्री से दिल्ली-हरिद्वार मार्ग को क्रान्ति पथ घोषित करने की मांग की।

क्रान्तिकारियों के मुख्य स्रोत थे और वे १८५७ ई० के कालखण्ड में स्वयं विद्यमान थे। मेरठ में उन्होंने सिपाहियों को विदेशी राज्य के विरुद्ध तैयार किया और उन्हें गो की चर्बी और सुअर की चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग न करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार मेरठ १८५७ ई० के स्वतंत्रता युद्ध के शुभारम्भ का प्रतीक है।

स्मरण रहे कि १८७५ ई० में आर्यसमाज की मुम्बई में स्थापना के पश्चात् क्रान्तिकारियों की एक क्रान्तिकारियों की एक झड़ी सी लग गई जिससे भारत के पटल से विदेशी राज्य के बादल छटने लगे। नही भुलाया जा सकता बहादुर शाह, तात्या टोपे, मंगल पाण्डे, नाना साहब, रानी लक्ष्मीबाई आदि महान विभूतियों को जिन्होंने स्वतन्त्रता की प्रथम लड़ाई का बीजारोपण किया।

हमारी भारत सरकार से विनम्र किन्तु पुरजोर मांग है कि **दिल्ली-मेरठ-हरिद्वार के राष्ट्रीय राजमार्ग का नाम "क्रान्ति-पथ"** से अनुरोध है कि १८५७ की स्वतंत्रता की प्रथम लड़ाई के महत्व को समझते हुए दिल्ली–मेरठ– हरिद्वार के राष्ट्रीय राजमार्ग का नाम क्रान्ति–पथ घोषित किया जाए। यही होगी एक सच्ची श्रद्धांजलि उन क्रान्तिकारियों के नाम जिन्होंने अपना जीवन, सर्वस्व देश की आजादी के लिए झोंक दिया।

ह० प्रधान   ह० मन्त्री
आर्यसमाज कमालपुर,
होशियार पुर – १४६००१, पंजाब

ऐसी फौज तैयार हो गई जिन्होंने देश को आजाद करवाने के पुनीत कार्य को अपने जीवन का मूल मन्तव्य बना लिया। गणना की जाये तो शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, सुभाषचन्द्र बोस, दयानन्द के प्रति घोषित किया जाये। ऐसा करने से महान सेनानी और राष्ट्र पितामह देव

इस प्रकार के मांगपत्र आप भी भारत सरकार को भेजे। एक प्रतिलिपि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा १४८८ पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–२ के पते पर भी भेजें।
– स्वतन्त्र कुमार, महामन्त्री मो०- 09719004451

आर्यसमाज चन्दन पार्क का वार्षिकोत्सव

'जीना है तो आर्यसमाज में आ ...'

दिल्ली के आजादपुर नरेला क्षेत्र में स्थित आर्यसमाज चन्दन पार्क (जीवन पार्क) का वार्षिकोत्सव १ जून से ३ जून तक सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम ध्वजारोहण एवं राष्ट्रीय प्रार्थना के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान वैद्य इन्द्रदेव जी ने इस वार्षिकोत्सव प्रचार कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री विमल वधावन आर्य एडवोकेट ने की।



ध्वजारोहण के उपरान्त अपने उद्बोधन में वैद्य इन्द्रदेव जी ने देहाती क्षेत्रों में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार कार्यक्रम की सुगमता पर प्रकाश डाला। उद्बोधन के उपरान्त श्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने एक चिर परिचित भजन 'जीना है तो आर्यसमाज में आ...' के द्वारा ग्रामीण नर नारियों का मन मोह लिया।

श्री विमल वधावन आर्य ने कहा कि महिलाओं को आधुनिक भौतिकवादी वातावरण का सबसे बुरा प्रभाव झेलना पड़ रहा है। कुविचारी वातावरण में स्वयं को सुरक्षित रखने का एक ही उपाय है कि समस्त मातृ शक्ति अपने चरित्र को मजबूत बना कर रखे तथा भौतिकवादी वातावरण विशेष रूप से टी०वी० जैसी बीमारी से सदैव दूर रहे।

अन्य सत्रों के प्रचार कार्यक्रमों में श्री आर्य तपस्वी सुखदेव, श्री शिवमुनि वानप्रस्थी, डॉ० देव शर्मा, श्रीमती शकुन्तला यादव, श्रीमती निशामान, श्रीमती कमलेश गुप्ता, श्रीमती अंगूरी देवी यादव आदि को आमन्त्रित करके मार्ग दर्शन प्राप्त किया गया। वार्षिकोत्सव कार्यक्रमों का संचालन प्रधान श्री राजपाल शास्त्री, मन्त्री श्री सत्यपाल जिन्दल तथा प्रचार मन्त्री पं० देवदत्त शर्मा ने किया।

आर्यसमाज अशोक विहार फेस-२ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक १ से ३ जून, २००७ तक आर्य समाज मन्दिर, अशोक विहार, फेज–२, दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। सायंकाल कु० निवेरा सक्सेना एवं पं० सतीश शास्त्री के ईश्वर भक्ति के भजन तथा डॉ० चन्द्रशेखर शर्मा शास्त्री के 'ईश्वर, जीव, प्रकृति एवं उनका समन्वय विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुए। प्रातः पं० काशीराम शास्त्री जी द्वारा ऋग्वेद शतक के साथ विशेष यज्ञ कराया गया। रविवार को आचार्य योगेन्द्र शास्त्री ने विशेष गीत प्रस्तुत किए।

रविवार ३ जून, २००७ को प्रातः बृहद् यज्ञ के पश्चात् श्री अजय सहगल (सहमन्त्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। साथ ही उन्होंने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में ओ३म् ध्वज एवं यज्ञ में श्रद्धाविषय पर विशेष विचार रखे। यह कार्यक्रम दो सत्रों में दोपहर एक बजे तक वैद्य इन्द्रदेव (प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) एवं श्री श्याम सुन्दर आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। यज्ञ में लगभग १५० परिवारों ने भाग लिया। यह सारा कार्यक्रम श्री सत्यपाल गांधी (प्रधान) के नेतृत्व में श्री राकेश वेदी (मन्त्री) एवं श्री धर्मवीर (प्रचारमंत्री) के संयोजन में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम की व्यवस्था में श्री सतीश कुमार चौधरी (एडवोकेट) सत्येन्द्र पाल भाटिया श्री विजय कुमार सहगल एवं श्री देवेन्द्र स्वरूप रायजादा का विशेष योगदान रहा।

इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में श्री मांगेराम गर्ग (विधायक –वजीरपुर क्षेत्र), श्री श्यामसुन्दर आर्य सरदा रविन्दर सिंह खुराना (जनरल सैक्रेट्री, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति), निगम पार्षद डॉ० महेन्द्र नागपाल, श्री देवराज, कु० ममता ढिका तथा अनिल आर्य (अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्) श्री जय प्रकाश अग्रवाल डॉ० सुभाष जिन्दल, श्री रविन्द्र कुमार (मैनेजर कुलची हंसराज डी०ए०वी० स्कूल अशोक विहार) आदि महानुभावों का आर्यसमाज की ओर से विशेष सम्मान किया गया। अन्त में सभा प्रधान श्री सत्यपाल गांधी ने उपस्थित जन समूह का धन्यवाद किया। श्री जगदीश कुमार बिन्द्रा एवं श्री राजेश गांधी द्वारा ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।



चित्र में बाएं से सर्वश्री धर्मवीर, पं० काशीराम, रूपचन्द गुप्ता, डॉ० एच०सी०गुप्ता, वैद्य इन्द्रदेव, डॉ० महेन्द्र नागपाल, मांगेराम गर्ग, देवराज, सत्यपाल गांधी, राकेश वेदी तथा ... चन्द्रशेखर शर्मा (बैठे हुए)।

योगदर्शन के एक सूत्र में भूल सुधार

एक विद्वान् ने योगदर्शन के प्रथम पाद के सोलहवें सूत्र के विषय में प्रश्न उठाया है – सूत्र – **तत्परं पुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्ण्यम्।**

इस सूत्र में जो 'पुरुष' शब्द का प्रयोग हुआ है। इस विषय में मुझसे प्रश्न पूछा है कि आपने अपनी पुस्तक 'योग मीमांसा' में इस सूत्र में जो 'पुरुष' शब्द आया है, उसका अर्थ 'ईश्वर' किया है। और योगदर्शन के इसी सूत्र के सूत्रार्थ, व्यासभाष्य–अनुवाद, योगार्थ प्रकाश में इसका अर्थ जीवात्मा किया है। इसमें क्या कारण है ?

इस प्रश्न का उत्तर :–

अजमेर में ऋषि–उद्यान में दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाई गई थी। उस समय मैंने यह 'योग–मीमांसा' पुस्तक लिखी थी। उस समय इस सूत्र में 'पुरुष' शब्द का अर्थ ईश्वर किया था। उस समय पठन–पाठन में, 'ईश्वर' ही, अर्थ करता था। लम्बे काल के पश्चात् योगदर्शन का मैने सूत्रार्थ व्यासभाष्य अनुवाद भाष्य = योगार्थ प्रकाश किया। उसमें मैंने योगदर्शन १/१६ सूत्र में आए 'पुरुष' शब्द का अर्थ 'जीवात्मा' किया। इस भाष्य = योगार्थ प्रकाश को करते समय सूत्र के अर्थ पर गम्भीरता से विशेष विचार किया गया। उससे यह पता चला कि इस सूत्र में आए 'पुरुष' शब्द का योगदर्शन के सूत्रों के अनुसार और व्यास भाष्य के अनुसार योगदर्शन के १/१६ सूत्र में आए 'पुरुष' शब्द का अर्थ मेरी बुद्धि के अनुसार जीवात्मा लेना ही उचित है। 'पुरुष' शब्द का अर्थ 'ईश्वर' लेना ठीक नही है।

आप इस योगदर्शन के सूत्रों पर और इस योगदर्शन के १/१६ सूत्र के भाष्य पर विचार करें। इस सूत्र में आए 'पुरुष' शब्द का अर्थ 'जीवात्मा' जिस कारण से किया गया है, वह कारण योगदर्शन के सूत्रों की व्याख्या करने से और योगदर्शन के १/१६ सूत्र की व्यास–भाष्य की व्याख्या करने से स्पष्ट हो सकता है। परन्तु वर्तमान में मेरा स्वास्थ्य ठीक न होने से मैं इस कार्य को नहीं कर सकता।

– स्वामी सत्यपति परिव्राजक
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर
जिला साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७

यज्ञ क्या है ? (1)

– डॉ० भवानी लाल भारतीय

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" - यज्ञ सब श्रेष्ठ कर्मों से भी श्रेष्ठ कर्म है

'यज्ञ' शब्द का प्रयोग विश्व के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ–वेदों में अनेक स्थानों पर हुआ है। ऋग्वेद का प्रथम मंत्र –

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।

ज्ञानस्वरूप तथा प्रगति के मार्ग पर ले चलने वाले अग्नि परमात्मा को यज्ञ का देव कहता है। यजुर्वेद के प्रथम मंत्र इषे त्वोर्जे त्वा (१/१) में जिसे श्रेष्ठतमं कर्म कहा गया है वह यज्ञ ही है। सामवेद (१/१/२) में अग्नि को यज्ञ का होता (विधायक) तथा सब प्राणियों का हित साधक कहा गया है। वेदों के व्याख्यान रूप ब्राह्मण ग्रंथों में यज्ञ को श्रेष्ठतमं कर्म तथा उसे सर्वत्र व्यापक विष्णु का प्रतीक कहा गया – **यज्ञो वै विष्णुः।** यजुर्वेद के पुरुषसूक्त में परमात्मा को यज्ञ नाम से पुकारा गया तथा यज्ञ (उपासना तथा परोपकार) से ही उसका भजन–पूजन करने के लिए कहा गया है।

यजेन यज्ञमयजन्त देवाः। साथ ही यह भी कहा गया कि इसी सर्व पूज्य यज्ञ परमात्मा के द्वारा ऋग्वेदादि चारों वेदों का सृष्टि के आदिकाल में आविर्भाव हुआ है – **तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे। छंदांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद् अजायत।।**

अतः यह स्पष्ट है कि वैदिक धर्म में यज्ञ की अवधारणा अत्यन्त प्राचीन तथा वेदोक्त है।

यज्ञ शब्द संस्कृत के यज् धातु के निष्पन्न हुआ है। इस धातु के तीन अर्थ माने गये हैं – देव पूजा, संगतिकरण तथा दान। यज्ञ के माध्यम से भौतिक और अभौतिक देवताओं की पूजा–सत्कार किया जाता है। सर्वोपरि देव परमात्मा का भजन–पूजन ही यज्ञ का प्रमुख लक्ष्य है। यज्ञ के द्वारा समाज के विभिन्न घटकों में समन्वय तथा सामञ्जस्य स्थापित किया जाता है। समाज के सभी वर्ग यज्ञ करने के अधिकारी हैं। यज्ञ में त्याग या दान की भावना प्रमुख है। मनुष्य को चाहिए कि वह संग्रह की वृति को त्याग कर लोकहित के लिये स्वयं को तथा स्वोपार्जित धन–सम्पत्ति को लोककल्याण के लिये समर्पित करे। अग्निहोत्र में मंत्र तत्र. इदं न मम का प्रयोग यही बताता है कि यज्ञ में प्रयुक्त वस्तुओं पर हमारा एकाधिकार नहीं है अपितु इसे अन्यों को प्रदान कर हम यज्ञ रूपी त्याग वृत्ति का परिचय दे रहे हैं।

सामान्यतया यज्ञ को हवन, होम, अग्निहोत्र का वाचक मानकर अग्नि में कतिपय सुगंधयुक्त पदार्थों को होमना ही इस कृत्य का अभिप्राय समझा गया, परन्तु



ऋषि दयानन्द ने यज्ञ को व्यापक अर्थवत्ता प्रदान की और बताया कि लोकोपकार के समस्त कृत्य तथा समाज में एकता, सामञ्जस्य तथा संगठन के भावों को भरने वाले कृत्यों को यज्ञ नाम से संबोधित किया जाता है। वर्तमान काल में यज्ञ की इसी अर्थ व्याप्ति को लक्ष्य में रखकर भूदान यज्ञ, श्रमदान यज्ञ आदि विविध सामाजिक कृत्यों को गौरव प्रदान किया गया। महर्षि दयानन्द ने यज्ञ (अग्निहोत्र) के द्वारा पर्यावरण की शुद्धि तथा वायुमण्डल में व्याप्त विषैले तत्वों को दूर करने की बात कही। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अग्नि में भेदक शक्ति होती है जो हुत द्रव्यों को खण्ड–खण्ड करती है तथा उन्हें सूक्ष्म रूप देकर सर्वत्र फैला देती है। इस प्रकार अग्निहोत्र की वेदी में उद्दीप्त अग्नि की तीव्र लपटों में पुष्टिकारक, सुगंधियुक्त, मिष्ट तथा आरोग्यवर्धक पदार्थों का शकल्य (सामग्री) मंत्रोच्चारण पूर्वक प्रक्षिप्त किया जाता है जो अग्नि के द्वारा विश्लेषित होकर वायुमण्डल में सर्वत्र व्याप्त हो जाता है और हानिकारक तथा रोग को फैलाने वाले विषाणुओं को नष्ट कर देता है। अनादिकाल से यज्ञ की महिमा आर्यावर्त के निवासी आर्यों में प्रचलित रही है। वेदों के परवर्ती ब्राह्मण, सूत्र, स्मृति, दर्शन, इतिहास–पुराण आदि विस्तृत साहित्य में यज्ञ के इतने संदर्भ मिलते है जिनका संग्रह और विवेचन भी शक्य नही है। यज्ञ के अर्थ की व्याप्ति को लक्ष्य में रखकर महर्षि मनु ने गृहस्थियों द्वारा प्रतिदिन किये जाने वाले पञ्च महायज्ञों का विधान किया। स्मृतिकार मनु का आदेश है कि **ऋषि यज्ञ** (संध्या एवं स्वाध्याय रूपी ब्रह्म यज्ञ), **देव यज्ञ** (अग्निहोत्र), **भूत यज्ञ** (बलिवैश्वदेव–क्षुद्र प्राणियों का रक्षण), **पितृ यज्ञ** (माता–पिता तथा वृद्धजनों की सेवा) तथा **नृ यज्ञ** (अतिथियों की सेवा) नित्य कर्तव्य हैं। इनमें अवकाश की कोई गुंजाइश नहीं है।

यज्ञ में वेद मंत्रों के पाठ के व्यावहारिक लाभ का संकेत करते हुए ऋषि दयानन्द ने कहा – इससे वेद वाङ्मय की सुरक्षा होती है तथा यज्ञ विधि में निहित इस कार्य के लाभों का भी हमें ज्ञान होता है। प्राचीन ऋषियों ने विभिन्न मंत्रों में संकेतित यज्ञ कर्मो का उल्लेख देखा और यज्ञ के समय किये जाने वाले कृत्यों में उन मंत्रों को बोलने का विधान किया। इसे ही यज्ञ में वेद मंत्रों का विनियोग कहा गया है। ऐतरेय ब्राह्मण में स्पष्ट कहा गया है कि विनियोग सार्थक अर्थात् रूपसमृद्ध होने चाहिएं। यदि हम जल से आचमन करते समय **शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तुनः** (यजु ३६/१२) मंत्र का पाठ करते हैं तो यह सार्थक या रूप समृद्ध विनियोग है क्योंकि स्वच्छ, शीतल, पवित्र जल से आचमन करते समय हम जो मंत्र बोल रहे हैं उसमें परमात्मा से सुखों की वर्षा करने की प्रार्थना है। सुखवर्षण का प्रतीक जल वर्षण तथा जल से आचमन करना है।

(क्रमशः)

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

प्रधान : श्री अरूण प्रकाश वर्मा
मंत्री : श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा
कोषाध्यक्ष : श्री सत्य नारायण आर्य

आर्यसमाज नवांशहर, पंजाब

प्रधान : श्री प्रेम कुमार भारद्वाज
मन्त्री : श्री अमित शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री कलवंत राय

श्री शिशुपाल सिंह जी आर्य का निधन

आर्यसमाज कर्णपुरदत्त से काफी वर्षों से जुड़े रहे। श्री शिशुपाल सिंह जी का दिनांक ५–५–२००७ को स्वर्गवास हो गया है। जिनके छोटे पुत्र श्री बलवीर सिंह जी ने वैदिक रीति से श्री पं० कमल किशोर आचार्य राजेपुर द्वारा अन्त्येष्टि संस्कार किया। इन्होंने ६५ वर्ष तक जीवन यापन किया। इनके तीन पुत्र और पुत्रियां नाती पोतियों से भरपूर परिवार है। इनके अंत्येष्टि संस्कार में समस्त ग्रामवासियों एवं विद्वतजन आर्य नेता उपस्थित थे। — सत्यपाल सिंह, मंत्री

माता सुमना यति जी का देहावसान

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के लिए समर्पित जिन्होंने आजीवन आर्यसमाज की सेवा की है। माता सुमनायति जी का ३.६.२००७ रविवार को आर्यसमाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में दोपहर बाद दो बजे देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूरी वैदिक रीति से ३.६.०७ को सायं ६ बजे लुधियाना में कर दिया गया। माता जी पिछले कुछ समय से बीमार चल रही थी। अब उनकी आयु भी ६३ वर्ष की हो गई थी। जबसे उन्होंने संन्यास लिया था तब से वह आर्यसमाज स्वामी दयानन्द बाजार लधियाना में रह रही थी। मोहन आश्रम हरिद्वार में भी उन्होंने अपनी एक कुटिया बना रखी थी। कभी–कभी वह हरिद्वार भी चली जाती थी। पिछले कुछ समय से तो वह लगातार लुधियाना में ही रह रही थी। उनके देहावसान का सभी आर्य बन्धुओं व बहनों को हार्दिक दुःख हुआ है।

ध्यान योग विज्ञान शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम, दिल्ली रोड बहादुरगढ़ हरियाणा में २१ जून से १ जुलाई तक महामृत्युञ्जय मन्त्र की सवा लाख आहुतियों से यज्ञ एवं ध्यान योग विज्ञान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरार्थी के रूप में भाग लेकर पुण्य लाभ के भागी बनें।

दूरभाष : 01276 - 230195, 9416054115

श्री विद्या कुमार आर्य (सक्सेना) नही रहे

आर्य समाज सदर बाजार दिल्ली के वयोवृद्ध मार्गदर्शक एवं विद्वान नेता श्री विद्या कुमार आर्य (सक्सेना) का ६१वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। श्री विद्या कुमार दिल्ली में आर्य समाज के प्रारम्भिक दौर में कुमार सभा की गतिविधियों, समाज सेवा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आदि की गतिविधियों में पूर्ण मनोयोग से सहयोगी रहे।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने श्री आर्य के देहावसान को अपूर्णीय क्षति बताया। श्री आर्य का अन्तिम संस्कार पंजाबी बाग शमशान घाट पर वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ का आयोजन आर्यसमाज विकासपुरी में सम्पन्न हुआ।

नव निर्वाचित निगम पार्षद श्री देवराज का जन्म दिवस आर्यसमाज अशोक विहार फेज-३ में

दिल्ली के अशोक विहार क्षेत्र से नव निर्वाचित निगम पार्षद श्री देवराज का जन्म दिवस १० जून को आर्यसमाज अशोक विहार फेस–३ दिल्ली में यज्ञ के उपरान्त अभिनन्दन करके आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री विमल वधावन आर्य ने श्री देवराज को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के राष्ट्रभक्ति एवं समाज सेवा पूर्ण विचारों से अवगत कराया। आर्यसमाज की मातृशक्ति की ओर से श्रीमती प्रेम सब्बरवाल एवं अन्य माताओं ने भगवा अंगवस्त्र तथा प्रधान श्री वेदमित्र अग्रवाल, मन्त्री श्री अशोक आहूजा, कोषाध्यक्ष श्री भारतभूषण ग्रोवर आदि ने सत्यार्थ प्रकाश, वैदिक साहित्य तथा शाल भेंट करके अभिनन्दन किया।

सामयिक विषयों पर लेख

सार्वदेशिक साप्ताहिक के विद्वान लेखकों तथा सभाओं और आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि विशेष उत्सवों आदि की सूचना प्रकाशनार्थ कम से कम १५ दिन पूर्व अवश्य भेज दिया करें। इसी प्रकार विद्वान लेखक विशेष उत्सवों, दिवसों आदि से सम्बन्धित लेख भी न्यूनतम १५ दिन पूर्व अवश्य भेजें।

अधिकाधिक सामयिक विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रियाएं भी भेजें। "सार्वदेशिक" के सम्बन्ध में लेख, सूचनाएं तथा अन्य पत्र निम्न पते पर भेजें –

सार्वदेशिक सभा, 1488, पटौदी हाउस (नजदीक आर्य अनाथालय)
दरियागंज, नई दिल्ली-2, फोन : 23270507
E-mail : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

प्रो० स्वतन्त्र कुमार, प्रबन्ध सम्पादक एवं सभा मन्त्री, मो० ०९७१९००४४५१

Licence No. U(C) 93/2006-0
Licensed to Post Without Pre-paymen

सार्वदेशिक साप्ताहिक 24-06-07 से 30-06-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 21/22-06-07

.. एवं राष्ट्रद्रोही हैं तीन नावों के सवार (२)

प्रतिष्ठा में

...गवश एक अन्य घटना ... भी उल्लेख कर दें। वह है कामरेड अग्निवेश द्वारा दूरदर्शन पर संचालित 'मंथन' कार्यक्रम, जिसमें कम्युनिज्म का प्रचार और प्रकारान्तर से आर्य समाज अथवा भारतीयता का अपप्रचार किया जा रहा है जिसे कम्युनिज्म और कैथोलिसिज्म की बैशाखी के आधार पर चलने वाली सरकार समर्थन देने के लिये विवश सी है। 'मंथन' में आर्यसमाज के सिद्धान्तों की बलि दी जा रही है।

जहां तक 'वेश–कम्यून' की बात है वह स्वयं को संन्यासी कहता है किन्तु वेश कम्यून का कोई भी सदस्य न संन्यास धर्म को जानता है और न मानता है। डॉ० रामप्रकाश जी के कथनानुसार, जिसका कामरेड अग्निवेश ने कभी खंडन भी नही किया, कि भगवावस्त्र धारण करने मात्र से ही कोई संन्यासी नहीं हो जाता। तदनुसार 'वेश–कम्यून' के सदस्य भगवा वस्त्र धारण कर भोले भाले भारतीयों को भ्रमित कर रहे हैं वे सन्यासी नही है।

इसी प्रसंग में संदर्भाधीन सप्ताह में घटित एक नव–दीक्षित कामरेड की बात का भी उल्लेख कर दें। वे नव दीक्षित कामरेड हैं, कामरेड अग्निवेश के एक अन्य रक्षा कवच और वैश कम्यून के 'थिंक टेक' कामरेड वेदप्रताप वैदिक। कामरेड वैदिक इंदौर के एक निष्ठावान और वर्तमान में संन्यासी आर्य समाजी के सुपुत्र हैं। अपुष्ट सूचना के आधार पर कभी उनका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनसंघ से भी संबन्ध रहा है। कम्युनिज्म के लिए उर्वराभूमि जे०एन०यू० में भी कुछ समय वे रहे किन्तु अधिक नहीं टिक पाये। उन्हीं का एक लेख २ अप्रैल २००७ के 'आर्य जगत्' साप्ताहिक में '१८५७ का विद्रोह. ..' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। सवा दो पृष्ठों के उस लेख में कामरेड वैदिक ने छः बार कामरेड 'मार्क्स' का नाम–जप किया है और उसे उन्होंने 'मन्त्र द्रृष्टा' भी लिखा है। उन्होंने लिखा है – 'मार्क्स ने तो १८५७ की घटनाओं पर उसी समय लिखा। न्यूयार्क डेली ट्रिब्यून में छपे अपने लेखों में मार्क्स ने ठोस आंकड़ों और तथ्यों के आधार पर सिद्ध किया है कि अंग्रेजी अत्याचारों के कारण सम्पूर्ण भारत बारूद के ढ़ेर पर बैठा हुआ था। डेली ट्रिब्यून के किन अंकों में अथवा किन तिथियों में मार्क्स के लेख छपे थे और वे ठोस कारण, जिनके आधार पर भारत बारूद के ढेर पर बैठा था, क्या थे, उनका भी उल्लेख करना कामरेड वैदिक ने समीचीन नही समझा। इससे आशंका होती है कि कामरेड वैदिक केवल मार्क्स को महिमा मंडित कर रहे हैं। इस आशंका की पुष्टि तब और भी हो जाती है, जब वे उसी लेख में कामरेड पी०सी०जोशी को 'विद्वान्' का दर्जा प्रदान करते हैं, किन्तु उन तथाकथित विद्वान पी०सी० जोशी ने १८५७ के संदर्भ में क्या लिखा इसका उल्लेख करना भी कामरेड वैदिक ने समीचीन नहीं समझा। कामरेड जोशी अपने समय में वर्तमान के कामरेड प्रकाश करात थे, इससे अधिक कुछ नहीं। जबकि उनके दो भाई स्व० श्री गोविन्द जोशी और श्री सुशील जोशी रा०स्व०संघ के प्रचारक थे और शेष दो भाई भी निष्ठावान स्वयंसेवक है।

महर्षि दयानन्द स्वराज के विषय में उनके क्या विचार थे, उनके ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के पृष्ठ इसके साक्षी हैं। अनेक आर्यो की यह मान्यता है कि भारत के इस प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन में महर्षि ने भरपूर सहयोग किया था यद्यपि इसका विवरण कहीं भी किसी रूप में भी उपलब्ध नहीं है। कदाचित इसीलिए कामरेड वैदिक ने इस प्रसंग में महर्षि का नामोल्लेख करना भी समीचीन नहीं समझा होगा। वैसे भी दयानन्द की अपेक्षा मार्क्स और जोशी अब उनके नये मंत्रदृष्टा और विद्वान् हो गये हैं।

दो कश्तियों के सवारों को कामरेड कादियाण ने ऋषिद्रोही घोषित किया है। हम तीन नावों के सवारों को ऋषिद्रोही होने के साथ–साथ राष्ट्रद्रोही भी घोषित करते हैं।

महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को अनेकशः मनुस्मृति के उद्धरणों से पुष्ट किया है। उसी मनुस्मृति को भस्मीभूत करने और जयपुर में स्थित मनु की प्रतिमा को नष्ट भ्रष्ट करने के दुष्कृत्य से कामरेड अग्निवेश तो पहले ही ऋषिद्रोही और राष्ट्रद्रोही सिद्ध हो चुके हैं। उसी ऋषि द्रोही से आज समझौता और एकता की बात की जा रही है। हम पहले भी कह चुके हैं कि 'न तो चूहों को मारने के लिए सांपों को दूध पिलाना उचित है और न ही सांप और नेवले में कभी समझौता हो सकता है। हमारा तो दृढ़ मत है कि समस्त वेश कम्यून को आर्यसमाज की वेदी से आजीवन बहिष्कृत करना ही श्रेयस्कर होगा। नान्यः पंथा विद्यते अयनाय।

– अशोक कौशिक
३८५, साइट–१, विकासपुरी,
नई दिल्ली–१८

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये

ओ३म्

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४६ अंक ६ | ८ जुलाई से १४ जुलाई, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | आ०कृ०८

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के 17वें आर्य महासम्मेलन की तैयारियां पूर्ण

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह भाग लेंगे

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का १७वां आर्य महासम्मेलन १६ से २२ जुलाई २००७ तक आयोजित किया जा रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह कई आर्य बन्धुओं के साथ १४ जुलाई को इस महासम्मेलन में भाग लेने के लिए अमेरिका प्रस्थान करेंगे।

वैदिक विचारों तथा ऋषि दयानन्द में आस्था रखने वाले महानुभावों का यह अनूठा समागम प्रतिवर्ष अमेरिका में आयोजित किया जाता है। जिसमें सामान्य महासम्मेलनों से भिन्न कोरी भाषणबाजियों से दूर एक गहन चिन्तन मनन प्रक्रिया के द्वारा अमेरिका में आर्य समाज की गतिविधियों के प्रचार–प्रसार को तीव्रगामी बनाने पर विचार किया जाता है। गत वर्ष की गतिविधियों पर प्रेमपूर्वक चर्चा की जाती है।

आर्यसमाजों से जुड़े परिवारों को व्यक्तिगत रूप से आर्यसमाज की गतिविधियों से जोडने का यह वार्षिक प्रयास एक सफल मार्ग है।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री देव महाजन, श्री गिरीश खोसला तथा अन्य आयोजक आर्य नेताओं द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि इस वर्ष के महासम्मेलन का विशेष उद्देश्य युवा वर्ग को आर्यसमाज और वैदिक विचारों से अवगत कराने का विशाल अभियान चलाना है।

विशेष गतिविधियों में इस महासम्मेलन के दौरान योग, ध्यान, यज्ञ एवं कई अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों को शामिल किया गया है। यह महासम्मेलन टैक्सास के एक भव्य होटल में आयोजित किया गया है।

कलयुगी वातावरण से परिवारों को बचाने का उपाय आर्य परिवार संगठित होकर प्रेम भक्ति से आर्यसमाजों में जाएं

उत्तर प्रदेश में गंगा के किनारे पर गाजियाबाद एवं मुरादाबाद के मध्य गढ़मुक्तेश्वर भी हरिद्वार की तरह एक धार्मिक नगरी का रूप लेता जा रहा है। उत्तर–प्रदेश के आर्य नेताओं प्रमुखतः स्व० श्री इन्द्रराज जी सूझ–बूझ से एक भूखण्ड क्रय करके आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण किया गया जिसका नाम स्व० श्री प्रकाशवीर स्मृति भवन रखा गया। हापुड से ३० किलोमीटर तथा दिल्ली से कुल १०० कि०मी० की दूरी पर स्थित इस भवन में गाजियाबाद आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य परिवार मिलन का दो दिवसीय कार्यक्रम निर्धारित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सार्वदेशिक सभा के पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य जी उपस्थित थे।

जिला सभा के प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य, मन्त्री श्री माया प्रकाश त्यागी, श्री श्रद्धानन्द शर्मा, श्री राम जीवन योगाचार्य हापुड, आर्यसमाज के प्रधान श्री आनन्द जी तथा कई अन्य गणमान्य आर्य महानुभावों की उपस्थिति में यह सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

श्री विमल वधावन आर्य ने कहा कि आर्य समाज से जुड़ना हमारे परिवार की चारित्रिक एवं आध्यात्मिक सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है।

आर्यसमाज के मन्तव्यों में ईमानदारी, सदचरित्रता, धार्मिकता आदि लक्षणों का सर्वोपरि स्थान है। आर्य लोग सच्चे और पक्के ईश्वर भक्त होते हैं। अतः ऐसे सच्चे आर्यों के आशीर्वाद एवं मेल जोल से परिवारों में भी उन्हीं भावनाओं का संचार होता है।

उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति राष्ट्र और समाज की रक्षा के लिए पूरे उत्साह और समर्पण भाव से कार्य करता है उसके परिवार की रक्षा स्वतः ही हो जाती है। आजकल के बढ़ते कलयुगी वातावरण से अपने परिवारों को बचाने का एकमात्र उपाय है आर्य परिवार संगठित होकर प्रेम भक्ति से आर्यसमाज के कार्यक्रमों में भाग लें।

इस दो दिवसीय आर्य परिवार मिलन समारोह में सुप्रसिद्ध योग गुरु श्री राम जीवन जी ने बड़ी सरलता के साथ योग शिक्षा की ओर आर्य नर नारियों के मन में आकर्षण उत्पन्न कर दिया। उन्होंने बताया कि सच्ची ईश्वर भक्ति पतन्जली योग सूत्रों के स्वाध्याय एवं अभ्यास से ही सम्भव है। इस समारोह में कई अन्य उपदेशकों, भजनोपदेशको आदि ने भी अपने अपने प्रेरक विचार प्रस्तुत किए। शेष पृष्ठ २ पर

स्वदेश प्रेम के इतिहास और भविष्य का मेल होगा क्रान्ति यात्रा में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित होने वाली क्रान्ति-यात्रा की तैयारियों के लिए प्राथमिक विचार विमर्श बैठक दिल्ली के सतभ्रावां आर्य कन्या विद्यालय में सम्पन्न हुई। इस बैठक में अमृतसर–दिल्ली–हरिद्वार मार्ग पर स्थित शहरो और कस्बो के आर्य नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओ ने भाग लिया। सभा मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार ने क्रान्ति यात्रा के उद्देश्य के बारे में बताते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के स्वतन्त्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान को उजागर करना तथा देशवासियों में स्वदेश प्रेम की भावनओं का विकास करना इस यात्रा के दो प्रमुख उद्देश्य है। इस प्रकार भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन इतिहास तथा आर्य समाज के क्रान्तिदूतों की आहूतियों का प्रचार करते करते स्वदेश प्रेम से ओतप्रोत भविष्य की भूमिका निर्माण में एक मील का पत्थर साबित होगी यह क्रान्ति यात्रा।

अमृतसर से जठियाला गुरु, करतारपुर, जालन्धर, फगवाडा, लुधियाना, नवांशहर राजपुरा, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत, सोनीपत, दिल्ली, मोहननगर, गाजियाबाद, मुरादनगर, मोदी नगर, मेरठ, मुज्जफरनगर, रूडकी होती हुई हरिद्वार तक यह यात्रा ७ दिवस में पूर्ण होगी।

सभा मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार ने कहा कि इस यात्रा में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा नवनिर्मित एक वेद प्रचार रथ को भी जोड़ा जाएगा।

सभा मन्त्री ने इससे पूर्व राजपुरा, लुधियाना, नवाशहर, जालंधर आदि स्थानों पर आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की बैठकों में यात्रा की तैयारियों पर व्यापक चर्चा की है। स्थान–स्थान पर बैठकों का व्यापक कार्यक्रम आगामी माह में भी आयोजित किया जा रहा है।

इस बैठक में श्री माया प्रकाश त्यागी, आचार्य यशपाल, श्री वैद्य इन्द्रदेव, श्री नरेन्द्र आर्य, श्री स्वराज चन्द, श्री ओम प्रकाश जौहरी, श्री श्रद्धानन्द शर्मा, श्री अशोक छाबड़ा, श्री राकेश मेहता, कैप्टन रमेश गुप्ता, श्री देवराज आर्य, श्री रोशन लाल बत्रा, श्री महेश, श्री लोकेन्द्र कुमार आदि ने अपने विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किए। शेष पृष्ठ २ पर

प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री
प्रबन्ध सम्पादक (09719004451)

देवराज आर्य
सह सम्पादक

विमल आर्य
सम्पादक (9312912130)

ओह ! वे तेजस्वी आर्यपुरुष चल बसे !

सभा के पूर्व प्रधान दौलतरामजी चड्ढा का देहावसान

आर्यसमाज के क्रांतिकारी वयोवृद्ध नेता एवं महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री दौलतराम जी चड्ढा का दिनांक ३० मई २००७ को प्रातः ७ बजे दुःखद निधन हुआ। वे ६४ वर्ष के थे। गत कई दिनों से वे बिमार चल रहे थे।

लगभग छः वर्ष तक महाराष्ट्र आर्यसमाज का नेतृत्व करने वाले वैदिक धर्म के कट्टर अनुयायी एवं महर्षि दयानन्द के दीवाने पूज्य चड्ढाजी से कौन व्यक्ति अपरिचित होगा ? निडर स्वभाव, चेहरे पर झलकने वाली क्षात्रतेज की आभा, कार्यों के प्रति लगनशीलता, आर्य सिद्धान्तों के प्रचार की धुन आदि गुण उनमें प्रकट रूप में विद्यमान थे। वृद्धत्व की जर्जर काया होने पर भी उनमें युवाओं को भी लज्जित करनेवाला अपूर्व उत्साह विद्यमान था। असत्य व अन्याय के प्रति संघर्ष करना उनका स्थायीभाव था। कई बार उन्होंने आन्दोलनों में भी भाग लिया। आर्य (हिन्दू) जाति की उत्थान की दिशा में वे एक कदम आगे थे। अल्प शिक्षित होने पर भी उन्होंने 'पतन से वतन को बचाइए !', 'घर घर में पंचमहायज्ञ' आदि अनेकों छोटे-छोटे ट्रैक्ट छपवायें और वे मुफ्त में वितरित किये।

पांच महायज्ञों का आर्यो के घरों में नियमित अनुष्ठान होता रहे, इस पर वे सदैव आग्रही रहें। जगह जगह उन्होंने बृहद् महायज्ञों का आयोजन भी किया। यज्ञीय विधियों में त्रुटि या गड़बड़ी हुई, तो वे पुरोहितों को भी डांट लगाते थे।

देश के विघटन के बाद १९४८ में वे परिवार सहित सिंध पंजाब प्रान्त छोड़कर नाशिक (महाराष्ट्र) आये। सिख परिवार में जन्म होते हुए भी आर्य विद्वानों के सान्निध्य से वे आर्यसमाजी बनें। इस पर परिजनों से होने वाले वैर विरोध की परवाह न करते हुए वे वेद विचारों पर दृढ़ रहें। कपड़ा व्यापार के साथ ही देवालाली कैम्प, नाशिक में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और सत्संग आदि गतिविधियां बढ़ाते रहें। अनेकों आर्य विद्वानों को आमंत्रित कर उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार किया।

स्व० श्री पांडुरंगराव तेरकर एवं पूज्य हरिश्चंद्र गुरूजी (स्वामी श्रद्धानन्द) के मन्त्रित्व काल में महाराष्ट्र सभा के वे ६ वर्ष तक प्रधान रहे। सन १९८६ में निलंगा में हुए 'आर्य महासम्मेलन' की सफलता में उनका भारी योगदान रहा। 'निलंगा आर्य महासम्मेलन का जब भव्य जुलूस निकला, तब किसी पुलिस इन्स्पेक्टर ने मस्जिद के सामने से कूच करने वाले इस जुलूस को रोक दिया, तभी श्री चड्ढाजी आवेश के साथ आगे बढे और आर्यो के जुलूस को रोकने वाला कौन होता है ? यह कहकर पुलिसवालों को भी डांट लगायी। तब पुलिस को भी उनकी माननी पड़ी और इस प्रकार मस्जिद के सामने से ही आर्यो का जुलूस बड़ी शान के साथ आगे बढ़ा।'

श्री चड्ढाजी ने किलारी भूकम्प के समय घूम-घूमकर पीडितों की सेवा की। सार्वदेशिक सभा के प्रधान आनन्दबोध जी सरस्वती को उन्होंने वहां स्थिति से अवगत कराया था।

ऐसे आर्य कर्मठ कार्यकर्त्ता के परलोक गमन से आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। वे अपने पीछे ३ सुपुत्र एवं २ कन्याओं को छोड़कर विदा हुए। इनमें से एक पुत्र का पहले ही स्वर्गवास हो चुका है। दिवंगत चड्ढाजी के पार्थिव पर श्री संतोष आर्य (देवलाली) के निर्देशन में पूर्ण वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किया गया। उनके परिवार में दिनांक ६ जून को शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ।

वैदिक धर्म के कट्टर अनुयायी पूज्य, दौलतराम जी चड्ढा का सार्वदेशिक सभा एवं आर्य जगत् की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं शोकसन्तप्त परिवार के प्रति गहरी सम्वेदना।

स्वामी केवलानन्द जी की अन्तिम यात्रा

आर्यसमाज के ६७ वर्षीय वयोवृद्ध संन्यासी जो इस समय वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार में रह रहे थे का ६ जून २००७ को देहावसान हो गया। २७ मई २००७ रविवार को गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली से श्री विजय कुमार झा की अध्यक्षता में वेद प्रचार यात्रा आरम्भ हुई। इस यात्रा में स्वामी केवलानन्द जी भी हमारे साथ चल रहे थे। जब ६ जून २००७ को यात्रा इलाहाबाद से कानपुर की ओर बढ़ रही थ तब मार्ग में स्वामी केवलानन्द जी को दिल का दौरा पड़ा और सम्भालते सम्भालते उन्होंने दम तोड़ दिया। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करें।

– देवराज आर्य मित्र, दिल्ली

श्री जगदीश चन्द्र जी सरीन नहीं रहे

लुधियाना के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री, आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना के मन्त्री श्री विजय सरीन जी के बड़े भाई श्री जगदीश चन्द्र जी सरीन का ५.६.२००७ को लुधियाना में देहावसान हो गया। वह ७३ वर्ष के थे। वह बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे उन्होंने अपना जीवन साधुओं की तरह व्यतीत किया।

स्वामी सुमेधानन्द आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के प्रधान निर्वाचित

२७-५-२००७ को आर्य समाज बिलासपुर में स्वामी सुमेधानन्द की अध्यक्षता में हुई बैठक में उन्हें आगामी तीन वर्षो के लिए पुनः प्रधान निर्वाचित किया गया। २८-१-२००७ को आर्य समाज मण्डी में हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि दोनों पक्षों के प्रधान अपना पद त्याग कर एक संचालन समिति गठित करें। इस निर्णयानुसार स्वामी जी प्रधान, श्री कृष्ण चन्द्र आर्य उपप्रधान तथा श्री रत्नलाल वैद्य महामन्त्री नियुक्त किये गए। इस समिति को सर्वसमम्मति से यह आदेश दिया गया कि यह चार महीनों के अन्दर विधिवत चुनाव कराए।

इन निर्णयों को कार्यान्वित करने हेतु २५-३-२००७ को बिलासपुर में हुई बैठक में २७-५-२००७ को चुनाव कराने का निर्णय लिया गया। इसमें हिमाचल के लगभग सभी सक्रिय समाजों को भाग लेने हेतु आमन्त्रित किया गाय। प्रातः हवन के उपरान्त २७-५-२००७ को ११ बजे चुनाव प्रक्रिया श्री डॉ० विजय मोहन सिंघा चुनाव अधिकारी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई। कुछ वक्ताओं के सुझावों के बाद स्वामी सुमेधानन्द जी को सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। सभी की सहमति से यह निर्णय भी लिया गया कि स्वामी जी कुछ वरिष्ठ सदस्यों के साथ ७-६-०७ से १०-६-०७ के अपने शिमला प्रवास में विचार विमर्श करके बाकी कार्यकारिणी तथा अन्तरंग के संदस्यों की घोषणा करेंगे।

सारा कार्यक्रम बहुत ही सन्तोषजनक ढंग से पूरा हुआ तथा एकीकरण के इस अवसर पर सभी समाजों के सदस्यों ने अपनी प्रसन्नता प्रकट की। सभी ने यह संकल्प लिया कि भविष्य में इस एकता को कभी भी भंग नहीं होने दें। स्वामी जी ने यह घोषणा भी की कि तीन चार महीने के समय में एक बहुत बड़े आर्य सम्मेलन का हिमाचल में आयोजन किया जाएगा।

– रत्न लाल वैद्य, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश

पृष्ठ १ का शेष

कलयुगी वातावरण से ...

इस प्रकाशवीर स्मृति भवन में गाजियाबाद जिला सभा द्वारा एक छोटा सा विद्यालय भी चलाया जाता है। श्री विमल वधावन आर्य ने सुझाव दिया कि इस विद्यालय के साथ-साथ एक गुरुकुल का संचालन भी इसी भवन में से किया जा सकता है। सभा मन्त्री श्री माया प्रकाश त्यागी ने कहा कि यदि सभी आर्य महानुभाव इसमें सहयोग करे तो वे गुरुकुल स्थापना के लिए भी प्रयास करने को तैयार है। उल्लेखनीय है कि इस भवन के निर्माण के बार प्रारम्भ में यहां एक उपदेशक विद्यालय भी कुछ समय के लिए चलाया गया था। श्री रामजीवन जी ने इस भवन के निर्माण में कई बाद महत्वपूर्ण आर्थिक सहयोग भी दिया है। उन्होंने गुरुकुल संचालन में भी आर्थिक सहयोग का आश्वासन दिया।

पृष्ठ १ का शेष

स्वदेश प्रेम के इतिहास ...

यह यात्रा प्रत्येक शहर में लगभग ४-५ किलोमीटर की शहर शोभा यात्रा की तरह आयोजित की जाएगी। प्रचार सामग्री जैसे ट्रैक्ट, पोस्टर तथा बैनर इत्यादि की व्यवस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा की जाएगी। प्रत्येक शहर में संक्षिप्त सम्मेलनों के रूप में स्वदेश रक्षा सम्मेलन आयोजित होंगे। इस प्रकार यह क्रान्ति यात्रा ७ दिन में लगभग २० से अधिक स्थानों पर रूक कर भव्य आयोजनों के माध्यम से प्रचार कार्य सम्पन्न करेगी। इन सम्मेलनों में सभी वर्गो एवं मतों के राष्ट्रवादी महानुभावों को आमन्त्रित किया जाएगा।

सार्वदेशिक सभा द्वारा वर्ष २००२ में प्रकाशित ट्रेक्ट 'महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों का भारत' का पुनः प्रकाशन करवाकर हजारों की संख्या में निःशुल्क वितरित किया जाएगा। इस ट्रेक्ट में महर्षि दयानन्द सरस्वती के १८५७ क्रान्ति में योगदान का उल्लेख है। महर्षि दयानन्द जी की तांत्या टोपे, नाना साहब, रानी लक्ष्मीबाई आदि के साथ भेंटवार्ता का भी उल्लेख इस ट्रेक्ट में है।

सार्वदेशिक सभा द्वारा समूचे विश्व की आर्य समाजों को यह आह्वान किया जा रहा है कि अपने अपने स्तर पर यथायोग्य ऐसे सम्मेलन, गोष्ठियां आदि आयोजित की जाए जिसमें क्रान्ति यात्रा के उद्देश्यों पर लेख समाचार आदि दैनिक समाचार पत्रों को दिए जाए। इनमें महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्रान्ति में योगदान तथा भविष्य में स्वदेश प्रेम का प्रचार करने की आर्यसमाज की योजनाओं को स्पष्ट किया जाए। विशेष रूप से सभी आर्य शिक्षण संस्थाए अपने अपने संस्थानों में छात्र-छात्राओं आदि के मध्य इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करें।

इन कार्यक्रमों के लिए मार्ग दर्शन प्राप्त करने हेतु सार्वदेशिक सभा के कार्यालय १४८८ पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली पर पत्र व्यवहार करे अथवा दूरभाष पर सम्पर्क करें। श्री स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री (०९७१९००४४५१) श्री विमल वधावन आर्य (९३१२९१२१३९)। बैठक में यह विचार भी स्वीकार किया गया कि प्रत्येक शहर के स्वतन्त्रता सैनानियों अथवा उनके वरिष्ठतम परिजनों को इस यात्रा के दौरान सम्मानित किया जाएगा। प्रत्येक शहर के उन एतिहासिक स्थलों को महत्व दिया जाएगा जो स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास से जुड़े है।

पूर्व जन्म की पहेली

– श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

यह सत्य घटना दिनांक ५–६–२००७ समय रात ८ बजे ...ज तक' चैनल पर दिखलायी ... रही था। हरियाणा के ग्राम ...वाला की परमजीत लड़की जब ... वर्ष की थी तब उसकी बिजली ... करन्ट लगने से मृत्यु हो गई।

उसका पास के किसी गांव ... पुनर्जन्म हुआ जिसका नाम ...सके माता पिता ने शिवानी रखा। ...वानी जब ३ वर्ष की हुई तभी ... उसे उसका पूर्वजन्म का संस्कार ...रण होने लगा और अपने पिता ...ता से कहने लगी कि मेरा नाम ...रमजीत' है, मेरा घर अम्बाला ... है, हमारे माता पिता अमुक हैं। ...स प्रकार ५ वर्ष तक अपने पूर्व ... घर स्थान, संगी साथी सहेलियों ... भी नाम तथा कौन किस क्लास ...र किस स्कूल में पढ़ती थी, वह ... बताने लगी। जब उसके माता ...ता उसे उसके बताये गये गांव ...बाला ले गये तो उसने तुरन्त ...नी माता को पहचान लिया ...र कहने लगी कि मैं परमजीत ... जब उसने अपने अतीत की ... बताई तो उसकी पहली माता ...प्रेम वश उसे अपने गले लगा ...या। उसे विश्वास हो गया कि ... परमजीत आज पुनः शिवानी ...कर मेरे घर आई है। माता की ...खों से आंसू बहने लगे, उसने ... भी बाते बताई सब सच थी। ...ना आहार, बाल न कटवाने ... बात आदि जिससे लगता था ... शिवानी वहीं की थी। अतः ... पूर्व के माता पिता भी छोड़ना ... चाहते थे और वह भी अपने ... के माता पिता से अलग नहीं ... चाहती थी किन्तु दोनों तरफ ...फैसला यही हुआ कि जब ... मन करेगा वह यहां भी ... और इस जन्म के माता ... के यहां भी रहेगी।

...वहां दो मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ ...स्थित थे। एक ने यहां तक ... कि ३ वर्ष की बालिका का ... पूर्वजन्म का स्मरण हो जाना, ... ही और भी सहेलियों के ... आदि बता देना और जो भी ... गया उसे बिल्कुल सही ...ा देना, इससे उसका पुनर्जन्म ...होना निःसंदेह सत्य साबित ... है। किन्तु दूसरे से जब पूछा ... तो उसने इस प्रकार का ...न्म होने की बात को नक़ार ...। वह इसलिए कि विज्ञान ...थ्य को नहीं मानता, उसने ... युक्ति दिखाने की कोशिश ...परन्तु वहां की जनता ने ...जीत के पुनर्जन्म को ही सच ... जो इस जन्म में उसका नाम शिवानी रखा गया। विज्ञान माने या न माने किन्तु जो प्रत्यक्ष है, जो सत्य है उसे तो कभी न कभी मानना ही पड़ेगा। यदि पूर्वजन्म को नहीं माना जायेगा तो गीता, उपनिषद, शास्त्र और वेद सब झूठे साबित हो जायेंगे। वैज्ञानिक जन तभी ईश्वर को मानते हैं जब वे किसी संकट में फंस जाते हैं और तभी अपने इष्टदेव की प्रार्थना करने लगते हैं। प्रकृति का ज्ञान परिवर्तनशील है। इसी प्रकार वैज्ञानिकों की खोज में भी परिवर्तन हुआ करता है किन्तु ऋषियों के धार्मिक ग्रन्थों में जो ईश्वर, मुक्ति, पुर्नजन्म की बाते हैं उन्हें कोई भी असत्य प्रमाणित नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए तब तन, मन की एकाग्रता से ईश्वर की प्रार्थना की जाती है, तब उससे मानव का कल्याण अवश्य हो जाता है, विज्ञान ने भी इसका परीक्षण करके देख लिया है।

दिखये दिनांक १६–१२–२००३ और २४–८–२००४ को डिकबरी चैनल पर वैज्ञानिक अनुसंधान-कर्त्ताओं ने 'पुनर्जन्म का होना स्वीकार कर लिया साथ ही आत्मा को अमर भी घोषित किया।

उसी दिन आज तक चैनल में एक महिला ने जिसने ये बात कहकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया कि उसे ३ जन्मों का स्मरण था। दूसरे जन्म के बारे में कही कि इसके पहले मेरा जन्म पूर्वी बंगाल में हुआ था। वह हिन्दी भाषा के क्षेत्र में जन्मी थी। उसने बंगाल में एक कविता भी सुनाई जो पूर्व जन्म में गाती थी। उसके घर में सब हिन्दी जानने वाले थे।

अतः पूर्व जन्म सत्य है – श्रीमद्भागवत गीता में श्रीकृष्ण कहते है कि – **वासासि, जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्यातिनरोऽपराणि। तथा शरीराणिविहाय जीर्णान्यन्यानि संयातिनवानि देही।।** अ० २ श्लोक २२। अर्थात – और यदि तू कहे कि मैं तो शरीर के वियोग का शोक करता हूं तो यह भी उचित नही है, क्योंकि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नए शरीरों को प्राप्त होता है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।२३।। और हे अर्जुन ! इस आत्मा को शास्त्रादि न ही काट सकते है और न इसको आग ही जला सकती है तथा इसको जल भी गीला नही कर सकता और वायु भी इसे सुखा नही सकती।।२३।।

पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय ने 'जीवात्मा' नामक पुस्तक में लिखा है कि – पूर्व जन्म के देह त्याग के पश्चात यह पुराने संस्कार शरीर के परमाणु नहीं ला सकता। संस्कारों को लाने के लिए तो जीवात्मा ही होना चाहिए। जिस प्रकार वायु अथवा परमाणु तरंग के माध्यम से एक स्थान का शब्द दूसरे स्थान तक पहुंचता है अथवा श्रवण किया जाता है, उसी प्रकार आत्मा के माध्यम से पूर्वजन्म का संस्कार दूसरे जन्म में प्रवेश कर जाता है। क्योंकि लटकने का स्वभाव या स्मृति या ज्ञान चाहे प्रकट हो चाहे गुप्त, भौतिक नहीं किन्तु आध्यात्मिक है। इन संस्कारों से जीव जन्म से पहले का अस्तित्व स्पष्ट हो जाता है। (पृ० १८०)

पुनः इसके बाद लिखते हैं कि – 'भिन्न भिन्न बच्चों में भिन्न प्रवृत्तियां विकास के भिन्न भिन्न तलों पर मिलती है। कुछ बच्चे आरम्भ से ही शांति प्रिय, कुछ लड़ाकू, कुछ बुद्धिमान, कुछ बुद्धिहीन, कुछ गणित के प्रेमी, कुछ संगीत में प्रवीण पाये जाते हैं। यह क्यों होता है ? इसका और मुख्य कारण यही है कि उन्होंने पूर्वजन्म में एक विशेष प्रवृति का विशेष परिमाण में विकास कर लिया। अब उसके आगे उन्नति करनी है। प्रायः यह प्रवृतियां सुप्त सी रहती हैं और थोड़े से ही संकेत से जाग्रत हो जाती है। मास्टर मदन जैसे कई बच्चे चार पांच वर्ष की अवस्था में संगीत के बड़े भारी पंडित सिद्ध हुए। रामानुज महाशय बिना सीखे हुए ही गणित में ऐसे प्रवीण थे कि बड़े बड़े गणितज्ञ दांतों तले उंगली दबाते थे। यह गणित या संगीत का ज्ञान उन्होंने इस जन्म में प्राप्त नहीं किया बल्कि पिछले जन्म में ही आया होगा। आरम्भ में यह ज्ञान सुप्त सा था किसी अवसर पर जाग्रत हो गया। (पृ० १६१)

अभी हाल ही में दिनांक ७–४–२००७ को रात ८ बजे जी०टी०वी० में दिखाया जा रहा था कि महाराष्ट्र राज्य के एक २ वर्ष ५ मास का 'परम' नामक बालक ने संसार के नक्शे में कौन देश कहा हैं ? जिन देशों को, जिस किसी ने पूछा उसे वह तुरन्त उंगली से दिखा देता था और दिखाकर हंसने लगता था, इसे पूर्व जन्म का संस्कार नहीं तो और क्या कहा जायेगा।

प्रश्नोपनिषद के ऋषि कहते हैं कि – **'आत्मन एषप्राणो जायते। यथैषा पुरुषे छायैत स्मिन्नेतदाततं मनोधिकृतेनाऽऽयात्यस्मिन् शरीरे।।३२।।** प्राण सूक्ष्म शरीर का एक अंग है। सूक्ष्म शरीर के साथ आत्मा, स्थूल शरीर में प्रविष्ट हुआ करता है। इसलिए इस स्थूल शरीर में प्राण की उत्पत्ति का निमित्त आत्मा को बतलाया गया है। प्राण शरीर के देशविशेष में नहीं रहता किन्तु सारे शरीर में छायावत फैला हुआ रहता है।

'मनोधिकृत' नाम वासना का है – कर्म से वासना की उत्पति होती है यह वासना ही जन्म का कारण हुआ करती है। यह वासना उत्पन्न उन्हीं कर्मों से होती है जो फल की इच्छा से (सकाम) किए जाते हैं। इसी वासना से जीव, सूक्ष्म शरीर के साथ स्थूल शरीर को जन्म के द्वारा प्राप्त किया करता है।

प्रजापतिश्चरसि गर्भे त्वमेव प्रति जायसे तुभ्यं प्राण। प्रजास्त्विमा बलिं हरन्तिःयप्राणैः प्रतितिष्ठसि।।२३।। (प्रश्नेोपनिषद)

व्याख्या – शरीरान्तर्गत गर्भ में गर्भ की स्थापना का कारण प्राण है, यदि रज और वीर्य के साथ प्राण न मिले तो गर्भ की स्थापना नहीं हो सकती। प्राण के ही कारण गर्भ की वृद्धि होती है। (तात्पर्य यह कि आत्मा का प्राण से और प्राण का जब माता के गर्भ में वीर्य का रज अण्ड से सम्बन्ध हो जाता है, तभी गर्भ की वृद्धि होती है, अतः प्राणभूत के आश्रय से ही बालक की उत्पत्ति होती है) अगले मंत्र का अर्थ है कि इन्द्रियों को जो पुष्ट भोजन करने से प्राप्त होती है, वे सभी उसी पुष्ट का वह भाग, जितना प्राण के लिए जरूरी है, प्राण को देती है। इसी को वाक्य में बलि (कर) देना कहा गयाहै। २३।। (प्राण सूक्ष्म शरीर का एक अंग है, उसी के द्वारा गर्भ में बालक का जन्म होता है और गर्भ में वही नाभिनाल द्वारा माता के भोजन से प्राण रसादि जितना उसके लिए जरूरी है उतना उसे मिल जाता है।)

इस प्रकार पुर्नजन्म का होना सत्य है, क्योंकि वेद भी कहता है –

'अपस्वग्नेसधिष्टवसौषधरनुध यसे। गर्भसन् जायसे पुनः।।

(यजुर्वेद १२/३६)

अर्थ – (अग्ने) हे तेजस्वी जीव! (शरीर छोड़ने के बाद) (संधि) सहनशील (अप्सु) जलों और (ओषधीः) औषधि में (अनुरुध्यसे) प्राप्त होता है। (सः) वह तू (गर्भेसन) गर्भ में स्थित होकर (पुनः तव) फिर तेरा (जन्म होता है)।

'अजोनित्यः शाश्वतोयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

(कठोपनिषद)

यह (आत्मा) अजन्मा है, नित्य है। सदा रहने वाला और पुराना है। शरीर के नाश होने पर उनका नाश नही होता।'

'जीव पेतं वावकिलंदं भ्रियते न जीवोभ्रियते।। (छान्दोग्य ६/११)

जीव नही मरता। जब जीव शरीर से निकल जाता है तो यह शरीर मर जाता है।

प्रश्नोपनिषद के तीसरे प्रश्न के उत्तर में पिप्लाद ऋषिका कथन है – **'यच्चितस्ते नैषः प्राणमयाति प्राजस्तेजसायुक्तः महात्मना यथा संकल्पितं लोकं नयति।।**३/१०

जो चित्त (मन) में वासना (संकल्प) है उसी से यह जीव प्राण को प्राप्त होता है। प्राण तेज से युक्त होकर आत्मा के साथ उसको जैसा या संकल्पित (इच्छित) लोक हैं अथवा योनियां हैं में ले जाता है, या प्राप्त करता है।

मृत्यु के बाद और जन्म से पहले उसे कोई नहीं देख सकता। किन्तु जब गर्भ में उसका संयोग होता है, तभी उसे देखा जाता है। शरीर के नाश से आत्मा का नाश नही होता, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि बच्चा जन्म के बाद जब सोता है तो कभी रोने और कभी हंसने जैसी हरकत करता है। इससे यह सिद्ध होता है कि

शेष पृष्ठ ८ पर

Licence No. U(C) 93/2006-
Licensed to Post Without Pre-paymen
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 8-07-07 से 14-07-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 93/2006-08 in NDPS on 5/6-07-07

पृष्ठ ७ का शेष

पूर्व जन्म की पहेली

उसके सूक्ष्म शरीर में पूर्वजन्म के संस्कार उस अवस्था में स्मरण रहते हैं। फिर जैसे वह बालक बड़ा होता जाता है वैसे वैसे ही वह सुप्त अवस्था को प्राप्त होने से वह भूलने लगता है। किन्तु संसार में कुछ ऐसे बालक बालिका होते हैं, जिनके मस्तिष्क में पूर्वजन्म का स्मरण होने लगता है। जैसा कि शिवानी और श्रीलंका के विलुक्षी को होने लगा।

जब किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में ऐसी जगह चोट लग जाती है जिससे वह पूर्व स्मरण बिल्कुल भूल जाता है। कौन माता है, कौन पिता है आदि का ज्ञान नहीं कर सकता, क्योंकि उस स्नायु पर चोट लग जाने से कुछ अन्दरुनी परिवर्तन द्वारा ऐसा हो जाता है। किन्तु कभी कभी प्रयत्न करने पर उसे पूर्व का स्मरण प्राप्त होने लगता है।

इसी प्रकार मृत्यु अंतिम आघात होता है, जो सब कुछ भूल जाता है अथवा अतिव्याधि, कष्ट के कारण शरीर अज्ञान होकर नष्ट हो जाता है जीवन शक्ति आत्मा अदृश्य में विलीन हो जाती है। फिर दूसरे जन्म में उसके मस्तिष्क कोष के स्नायु मण्डल, संस्कार गुण के अनुसार गर्भ में सभी नए बनने लगते हैं। यहां तक कि हारमोन्स के कारण लिंग में भी परिवर्तन हो जाता है मनुष्य योनि में ज्ञानेन्द्रियों के स्नायुओं में अंतर बहुत सूक्ष्म होता है जिससे उस बच्चे के स्नायु सबल और उसके सचेत हो जाने पर उसे पूर्व का स्मरण नही होता, उसका स्वभाव आकार प्रकार भी बदल जाता है किन्तु उसके पूर्व संस्कार सूक्ष्म शरीर में 'रेकार्ड' रहता है (जो सुप्त अवस्था में रहता है) वह किसी भी यन्त्र से दिखलाई नहीं देता।

वैसे हम लिख चुके हैं कि जन्म लेने के बाद सोते समय जब बच्चा रोने और हंसने जैसा भाव प्रकट करता है तो इससे यहसमझना चाहिए कि उसके सूक्ष्म शरीर में संचित सुख दुःखों के कारण ऐसा हो रहा है।

परमेश्वर के नियम में यह पुनर्जन्म अर्थात आवागमन की घटना बड़ी ही विचित्र है। मनुष्य मरने के बाद १ से ३ वर्ष के अन्दर (छान्दोग्यपनिषद एवं वेद मंत्र वर्णन करता है – **सविता प्रथमेऽह, हन्नग्निद्वितीये, वायुस्तृतीये, आदित्यश्चतुर्थे, चन्दमा पंचमऽऋतुः षष्ठे, मरुतः सप्तमें, वृहस्पतिरष्टमें। मित्रोनवमें, वरुणोदशमें, इन्द्र एकादशे, विश्वे देवा द्वादशे।** यजुर्वेद ३६/६, अर्थात इन दैवी शक्तियों के माध्यम एवं प्रभावों से गुजरते हुए। परमात्मा की प्रेरणा से, सूर्य से दूर्शन शक्ति, चन्द्र से मनन शक्ति, दिशाओं से श्रोत्र शक्ति, वायु से स्पर्श शक्ति, पृथिवी से घ्राण शक्ति, जल से रसना शक्ति, अग्नि से रूप शक्ति से सम्पन्न होकर) जीवात्मा पुनः नये शरीर के लिए गर्भ में प्रवेश कर जन्म ग्रहण करती है।

प्रतिष्ठा में

गर्भधारण के पहले वेद कहता है कि –

'विष्णुर्येनि कल्पयतु त्वष्टा रुपाणि पिंशतु। आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भे दधातु ते।।१।। गर्भ धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा।।२।। हिरण्ययी अरणी य निर्मन्थतो अश्विना। तं ते गर्भं हवामहे दशमे मासि सूतवे।।३।।

ऋग्वेद १०/१८४

अर्थात् हे वधू! विष्णु तेरे गर्भ स्थान को गर्भ ग्रहण करने के योग्य करे, त्वष्टा तेरे गर्भ के आकार को स्पष्ट करे, प्रजापति जीवनी शक्ति का संचार करे और धाता गर्भ की पुष्टि करे। चन्द्रशक्ति गर्भ को धारण करे, सरस्वती गर्भ को धारण करे और .... अश्विनी देवता गर्भ का पोषण करे। अश्विनी देवता जिस विद्युत प्रेरणा से गर्भ को बाहर लाते है, उस शक्ति द्वारा दशवें महीने में गर्भ को बाहर लाने के लिए हम उनका आवाहन करते हैं। इस प्रार्थना में विष्णु त्वष्टा, प्रजापति, धाता, चन्द्र सरस्वती और अश्विन आदि शक्तियों का वर्णन आया है। ये दे सूक्ष्म शक्तियां हैं, जिनके द्वारा गर्भ का धारण, पोषण और जनन होता है।

– मु०पो० मुरारई
जिला – वीरभूम (पं० बंगाल)
पिन – ७३१२१९

घर के बाहर तख्ती लगवाएं – शराब, शेयर मार्केट और ड्रग्स का प्रवेश वर्जित है।

शरीर रक्षा

कर्णेन्द्री का ध्यान रखें : कान मनुष्य के लिए एक महत्वपूर्ण इन्द्री है, ज्ञान की प्राप्ति का महत्वपूर्ण साधन है। मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि कान में लगातार वायु के माध्यम से कई प्रकार के कण कान में प्रवेश करके मैल के रूप में जमा हो जाते हैं। लगातार प्रतिमाह या दो महीने में एक बार शुद्ध सरसों के तेल की दो–दो बूंदे चम्मच में गरम करके गुनगुने असर की गर्मी के साथ कान में डालने से कान का मैल स्वतः साफ हो जाता है। मैल को रुई आदि के माध्यम से निकाल लें।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : **विमल आर्य** (मो० 9312912139) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन एवं फैक्स : २३२७०५०७) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित।
ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
मूल्य : २ रुपये

ओ३म्
वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४६ अंक ७ | २२ जुलाई से २८ जुलाई, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | आ०शु०८
भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

जीवन प्रभात पांडिचेरी का शिलान्यास सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सुनामी पीड़ित क्षेत्रों में सहायता कार्य सम्पन्न करने के उपरान्त एक स्थायी सेवा प्रकल्प प्रारम्भ करने की योजना के रूप में जीवन प्रभात आश्रम पांडिचेरी में स्थापित करने का निर्णय लिया था। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने यह जिम्मेवारी आर्यसमाज गांधीधाम को सौंपी थी। परिणामतः जीवन प्रभात पांडिचेरी की योजना सार्वदेशिक सभा ने तैयार करके उसे कार्यरूप देने के लिए आर्यसमाज गांधीधाम के अधिकारियों को अधिकृत किया। इस सारे प्रकल्प की वित्तीय सहायता आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री देव महाजन, पूर्व मन्त्री श्री गिरीश खोसला, श्री राजेन्द्र गांधी, श्री शेखर अग्रवाल, श्री अरूण कुन्द्रा आदि ने अमेरिका से भिजवाने का आश्वासन दिया।

अपने इस आश्वासन को इन आर्यनेताओं ने कर्मठतापूर्वक निभाना भी प्रारम्भ कर ,दिया जिसके परिणाम स्वरूप विगत २६ जून, २००७ को जीवन प्रभात पांडिचेरी का शिलान्यास पांडिचेरी के उप–राज्यपाल श्री मुकुट मित्थी तथा पांडिचेरी के परिवहन मन्त्री श्री शाहजहां के करकमलों से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा हुआ।

इस समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान डॉ० तुलसीराम बांगिया, आर्यसमाज गांधीधाम के प्रधान श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल, सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य श्री आर्य तपस्वी सुखदेव, डॉ० मदनमोहन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सार्वदेशिक सभा के पूर्व उपमन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य ने किया।

पांडिचेरी के उप–राज्यपाल श्री मुकुट मित्थी ने कहा कि मुझे यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि पांडिचेरी में भी आर्यसमाज स्थायी रूप से अब स्थापित है।

परिवहन मन्त्री श्री शाहजहां ने कहा कि आर्यसमाज की सेवा से जीवन प्रभात पांडिचेरी में रहने वाले बच्चों का भविष्य सुरक्षित है। डॉ० तुलसीराम बांगिया ने कहा कि सुनामी पीडित क्षेत्रों में असंख्य संस्थाएं सहायता के लिए पहुंची थीं। परन्तु केवल आर्यसमाज ने स्थायी रूप से सेवा कार्य प्रारम्भ किया है।

श्री आर्य तपस्वी सुखदेव ने सभी आगन्तुक महानुभावों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि परमात्मा के पुत्र पुत्रियों की सेवा ही सच्ची ईश्वर पूजा है। डॉ० मदनमोहन ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया। □



बाएं से उपराज्यपाल श्री मुकुट मित्थी, परिवहन मंत्री श्री शाहजहां, श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल, श्री आर्य तपस्वी सुखदेव, श्री वाचोनिधि आर्य, डॉ० तुलसीराम बांगिया, डॉ० मदन मोहन जी।

अमेरिका सभा के १७वें महासम्मेलन में भाग लेने के लिए
श्री मिठाई लाल सिंह अमेरिका रवाना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा आयोजित १७वें आर्य महासम्मेलन- में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेने के लिए १६ जुलाई को अमेरिका रवाना हो गए हैं। प्रस्थान से पूर्व आर्यसमाज मांटूगा में मुम्बई की आर्यसमाजों तथा समस्त शिक्षण संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने श्री मिठाईलाल जी को विदेश यात्रा के लिए शुभकामनाए तथा विदाई देने के लिए एक समारोह का आयोजन किया।

अमेरिका सभा के आर्य महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्राप्त होने पर प्रकाशित की जाएगी।

दिल्ली हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग का नाम 'क्रान्ति पथ' घोषित करने की मांग

देश के विभिन्न भागों से आर्यसमाजों तथा अन्य आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा प्रधानमन्त्री डॉ० मनमोहन सिंह को पत्र भेजकर दिल्ली हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग का नाम **'क्रान्ति पथ'** घोषित करने की मांग की गई है।

पंजाब के जालन्धर स्थित आर्यसमाज मोहल्ला गोविन्दगढ़ तथा बिहार के आर्यसमाज मीठापुर बिहार के पदाधिकारियों द्वारा प्रधानमन्त्री को पत्र भेजकर यह मांग की है।

समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे भी इस प्रकार के पत्र **डॉ० मनमोहन सिंह प्रधानमन्त्री, भारत सरकार ७ रेसकोर्स रोड, नई दिल्ली-१ के पते** पर भेजकर उक्त मांग भारत सरकार के सामने रखें। अपने पत्रों की एक प्रति **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, १४८८ पटौदी हाउस, दरियांगज दिल्ली-२** के पते पर भी भेजें।

विद्यालयों में यौन शिक्षा के विरुद्ध प्रदर्शन

हमारी भारतीय संस्कृति में विद्या अध्ययन की अवधि में सैक्स (यौन विषय) से विद्यार्थियों को अलग रखने का प्रावधान रहा है, परन्तु खेद का विषय है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद ने हाई स्कूल व इण्टरमीडिएट की पाठ्य पुस्तकों में यौन शिक्षा का अश्लील अध्याय जोड़ दिया है।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद ने इस प्रकार के अश्लील पाठ्यक्रम का विरोध प्रदर्शन करके उ०प्र० सरकार से निवेदन किया है कि इस प्रकार के अश्लील अध्याय को तुरन्त हटाने की व्यवस्था की जाये, अन्यथा विद्या मन्दिरों को व्यभिचार का अड्डा न बनने देने के लिए आर्य जगत व्यापक जन आन्दोलन छेड़ेगा।

(नरेन्द्र कुमार आर्य)
प्रधान

(माया प्रकाश त्यागी)
मंत्री

प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री
प्रबन्ध सम्पादक (09719004451)

देवराज आर्य

विमल आर्य

१००वें जन्मदिन पर विशेष : सुखदेव व्यास सम्पादक 'आर्य संकेत' उज्जैन द्वारा

सदाचारी मनुष्य स्वस्थ ऐश्वर्यशाली, दीर्घायु और ख्याति प्राप्त करता है : स्वामी सर्वानन्द

श्री बाबूलाल जी पण्ड्या एडवोकेट द्वारा प्रतिवर्ष तीन दिन का वेद सम्मेलन और बालक–बालिकाओं का निःशुल्क यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन किया जाता है। वैसे तो प्रतिवर्ष स्वामी सर्वानन्दजी महाराज पधारते हैं। इस वर्ष कुछ विशेषता थी कि वे अपने जीवन के ९९ बसंत पूरे कर १००वें वर्ष में प्रवेश करने वाले हैं। आज भी उनमें युवाओं सा तेज है। आयु भी ६० से कम लगती है। सिर पर भव्य जटा उनके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाए हुए हैं। वे इस समय भारतीय इतिहास के जीवित प्रमाण बन चुके है। गुलाम भारत, आजाद भारत, आधुनिक भारत, उदारीकरण नीति का भारत, रेडियो, टी०वी० युग, देश के लगभग सभी राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री, विरोध दलों के नेताओं, प्रजातन्त्र के उतार चढाव बातों के जीवित प्रमाण हैं। आर्यसमाज के गौरवपूर्ण इतिहास और विघटन की प्रत्यक्ष कहानी जानने वाले स्वामी सर्वानन्द जी ने इन १०० वर्षों में बहुत कुछ देखा सुना और परखा है। ये भारत में आर्य जगत के वयोवृद्ध अखण्ड ब्रह्मचारी संन्यसी हैं।

उनसे मिलने की प्रबल इच्छा मन में थी! कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद मैं, गोपाल सोनी और जीतेश बत्रा उनके कक्ष में मिलने गये। उस समय उनके आसपास कानड के काशीराम अनल, ओमप्रकाश अग्रवाल, दिलीप चाहर, राजेन्द्र शर्मा और अन्य कई लोग बैठे थे। मैं चुचपाप बैठा था। उनके जाने के बाद, कुछ देर इधर–उधर की बातें होती रहीं तो मैंने उनसे पूछा – 'स्वामी जी ! आपके जीवन की अद्भुत घटना कौन सी घटित हुई ?' कुछ विचार कर बोले – 'जिन दिनों मैं विजय राघवगढ़ में था महानदी के किनारे जंगल में संध्या समाधि अवस्था में आ गया। उस समय एक काला नाग मेरे सिर पर से होता हुआ मेरे अंगों पर इधर उधर होने लगा, मुझे कुछ बोध हुआ तो शरीर पर काले नाग मेरे ऊपर से होता हुआ निकल गया। वैसे ही भोपाल के पास जंगल में पेड़ के नीचे बैठा था। वहां कहीं से शेर आकर बैठ गया, कुछ देर बैठकर चला गया, वैसे ही एक चीता भी आया, मेरे शरीर को सूंघा और चला गया। एक बार मुझे ५०–६० बन्दरों ने घेर लिया, वे मेरे पास नहीं आये दूर रहे, लेकिन एक बंदर ने मेरी गर्दन पर काट खाया था और उन्होंने गर्दन के पीछे का निशान बताया जहां दांत गढ़े थे। मैं जब जिला मन्दसौर के कनघड़ी गांव में था, उस समय भी मुझे लक्ष्मीनारायण हास्पीटल में भर्ती किया खून की जांच करने पर डॉक्टर ने कहा – यह आदमी कितना जहरीला है अगर किसी को काट खाय तो आदमी भी मर जाय। इस पर मैंने कहा कि मैं कोई कुत्ता बिल्ली नहीं हूं जो कभी हंसता नहीं, पर जोरों से हंसने लगा।'

इस घटना को सुनकर मैंने स्वामी जी से पूछा – स्वामी जी आपका रक्त जहरीला हो गया है ? तो उन्होंने बताया – मैंने ८६ साल से अन्न, नमक, मीठा और मसाले नहीं खाए। फल, फीकी साग–सब्जी खाता हूं। उन्होंने मजाक में कहा – रोटी–खोटी, जलेबी जानलेबी, बिस्कुट-विषकुट, नमक–सफेद जहर, शक्कर मीठा स्लोपाइजन, चाय काला जहर, शक्कर में तो मरे हुए जानवरों की हड्डी का पावडर डालकर साफ करते हैं। सिनेमा–सर्वनाश, गृहस्थी नाशक और टी०वी० विनाश का गढ़ है। इनसे आदमी को बचना चाहिए।

स्वामी जी आपने इतनी उम्र पाई, क्या आपने स्वतन्त्रता संग्राम में भी भाग लिया था ?

"मैं मिलेट्री में स्टोरकीपर था, मेरी पोस्टिंग शाहजहांपुर (उ०प्र०) में थी। उन दिनों मेरे अंग्रेज अधिकारी से राष्ट्रीयता और कुछ काम के विषय में विवाद हो गया। इस पर मैंने कहा – बांध लो बिस्तर फिरंगी, अब राज तुम्हारा जाने को है। इस बात पर मुझे नौकरी से निकाल दिया और चार दिन की सजा हुई थी। इसके अलावा हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गौ रक्षा आन्दोलन में भी भाग लिया। इस कारण चण्डीगढ़ और तिहाड़ दिल्ली जेल में तीन–तीन माह बंद रहा।"

"आपका दैनिक जीवन कैसा है ?"

मैं नियमित साढ़े तीन बजे उठ जाता हूं। नित्यकर्म से निवृत हो आसन, प्राणायाम करता हूं। यह क्रम मेरा १९३९ से चल रहा है। मैं बिस्तर पर नहीं सोता, पहले केल के पत्ते पहना करता था, मूंज की रस्सी बांध लंगोट लगाता, कपड़े नहीं पहनता था, सभी दूर उपदेश देता था, कहीं एक जगह नहीं रहता था, जहां रहता छोड़ते समय सारा सामान वही छोड़ देता था। बिछाने ओढ़ने का नहीं था। खड़े–खड़े चलते हुए दो मिनट की नींद आराम के लिए लिया करता था और तीन सौ प्रकार के आसन लगा सकता हूं।

"आप आर्यसमाज की ओर कैसे आए ?"

"होली के दिन थे। एक रुपया मिला था, मैंने सुशीला (तिलहर) से एक रुपये की संध्या की किताब ली। बड़े भाई ब्रजभूषण त्रिपाठी ने रामलाल कपूर ट्रस्ट की पुस्तक गायत्री मन्त्र, संध्या के मन्त्र की पुस्तक, चार आने का सत्यार्थ प्रकाश लिया और उसे पढ़ने के बाद मुझ में परिवर्तन आया और आर्यसमाज की ओर उन्मुख हुआ।"

"आपके योग गुरु कौन थे ?"

स्वामी होलसमस्करी जी भिण्ड के सिकरोदा गांव के थे, उनसे प्रभावित हुआ। वे योग, संस्कृत, व्याकरण के महापंडित थे। उनसे मैंने योग सीखा तथा [illegible] था। स्वामी नारायणनन्द जी जिनके साथ वैदिक धर्म प्रचारार्थ दक्षिण अफ्रीका गया था। छह माह तक साथ रहे, उनसे भी योग के रहस्य, आसन, प्राणायाम का ज्ञान प्राप्त किया और आज इन्हीं गुरुओं के आशीर्वाद से ३०० आसन करता हूं। मॉरिशस में भी छह माह तक वैदिक धर्म का प्रचार किया और योग और उपदेश दिये। मेरे द्वारा अनेक डी०ए०वी० कॉलेज, भिण्ड, मुरैना, बड़वानी, उज्जैन और देश के विभिन्न भागों में योग की शिक्षा दी है। मेरा जीवन योग, भारतीय संस्कृति और संगीत के लिए समर्पित है।

"आपने शिक्षा कहां प्राप्त की ? आप तबला, हारमोनियम, तो बहुत सुन्दर बजाते हैं।"

इस पर उन्होंने कहा – मैंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से संगीत में बी० म्यूज० वाद्य यंत्र और कंठ संगीत में किया है। स्वामी जी की गायन और तबला, हारमोनियम बजाने में महारथ तो प्राप्त की ही है, अच्छे अच्छे संगीतकार उनके सामने टिक नहीं पाए हैं।

"क्या आप अपना व्यक्तिगत परिचय देंगे ?"

"इस प्रश्न पर विचारते हुए कहा – वैसे तो मेरा जीवन ब्रह्मचर्य से निकला है, विवाह नहीं किया। संन्यास भी उज्जैन में लिया था। संन्यासी तो पिछला सब कुछ छोड़ कर दीक्षा लेता है। वह तो पहले ही अपना तर्पण कर देता है। उसका न तो कोई रिश्तेदार होता है न नातेदार। मेरे लिये तो सारा संसार ही अपना है, किसे अपने से अलग देखूं। फिर भी मैंने उन पर दबाव डालकर कहा – कुछ तो परिचय होगा ही ? वे मंद मंद मुस्करा दिये और बोले – मैं कट्टर पौराणिक त्रिपाठी ब्राह्मण परिवार का हूं। मेरा जन्मनाम रामदुलारे त्रिपाठी, मेरे पिता की तीन सन्तानें हुई थी। बड़े भाई ब्रजभूषण त्रिपाठी, दूसरे नम्बर पर मैं और तीसरे नम्बर पर वेदाचार्य काशीनाथ त्रिपाठी। पिता पं० गया प्रसाद त्रिपाठी तथा माता कमलावती त्रिपाठी। मेरा जन्मस्थान अयोध्या है। महेसर के राजा ने हमारे पिता को चार गांव दिये थे। उन गांवों की आय से १० गांव पलते थे।

मैंने पांच वर्ष की आयु में धर छोड़ दिया था, क्योंकि मेरे माता पिता ने मुझे सीधी जिला कोठार के राजा जीवनसिंह चौहान को गोद दे दिया था। उनकी कोई संतान नहीं थी। उनकी रानियां मुझ पर बहुत प्रेम रखती थीं। इतना खिलाती–पिलाती थीं कि मैं इतना मोटा हो गयाथा कि मेरा नाम ही गदेला रख दिया था। एक दिन मैं नाराज होकर चला गया। जब मैंने अपनी माताओं से कहा – अब मैं यहां नहीं रहूंगा, तो उन माताओं को बहुत दुःख हुआ और कहा तू यह सब छोड़ कर कहां कहां भटकेगा, फिर भी मैं लाखों की जायदाद छोड़कर चला आया, अपनी माताओं की बात नहीं मानी। आज उनके ही आशीर्वाद कहो या श्राप, कहीं स्थायी नहीं रह पाया, वहां छोड़ने के बाद आज तक वहां नहीं गया।"

इतना कहते कहते उनके चेहरे पर करूणा भावना,आई, लेकिन बिजली के समान चमत्कर गायब हो गई। वातावरण बोझिल–सा हो गया। मैंने स्वामीजी से कहा – क्या आप आर्यसंकेत के माध्यम से कोई संदेश देना चाहते हैं ? उन्होंने गम्भीर होकर कहा – युवाओं को वैदिक सदाचार का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सदाचारी मनुष्य स्वस्थ, ऐश्वर्यशाली, दीर्घायु और ख्याति प्राप्त करता है। इसके विपरीत दुराचारी व्यक्ति से सभी भयभीत रहते हैं और ऐसे लोग दीर्घायु नहीं होते हैं। अगर मनुष्य अपना कल्याण चाहता है तो उसे सदाचार का पालन करना चाहिए। सदाचार धर्म और चरित्रवान पुरुष का लक्षण होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक सदाचार के महत्व को बताया है, उसका सभी को पालन करना चाहिए, विशेषकर युवाओं को।

अब मैं आपसे अंतिम प्रश्न पूछना चाहता हूं। इस पर वे मुस्करा दिये। मैंने पूछा अब आपकी क्या इच्छा है ? वे बोले अब बहुत घूम लिया, वैदिक धर्म का बहुत प्रचार किया। मेरी इंच्छा है अब आप लोगों के बीच रहूं। मेरे पास जो कुछ है, उसे अपने पास रखना नहीं चाहता। सब आप लोगों में वितरित करना चाहता हूं। आसन, प्राणायाम आदि जो ज्ञान प्राप्त किया, उसे अपने पास रखना नहीं चाहता हूं। हजारों लोगों का सुधार किया, शराब, भांग, गांजा आदि नशे छुड़ाये। चोरी डकैती छुड़ाई, गांवों में सुधार किया। बस शेष जीवन आप लोगों के बीच व्यतीत करना चाहता हूं।

स्वामी सर्वानन्दजी की शताब्दी उज्जैन में बड़े ही धूमधाम से मनाई जाएगी, जिसमें आर्यजगत की विभूतियां भाग लेंगी।

वेदाध्ययन कार्यशाला संपन्न

नई दिल्ली ५ जून। नई दिल्ली के वेद संस्थान ने २ से ४ जून, २००७ तक एक त्रि–दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसका लक्ष्य था हिंदी भाषी जनता को घर बैठे वेदाध्ययन करने की विधि की जानकारी देना। इस विधि को देखने, परखने के लिए संस्कृत जानने वालों को भी आमंत्रित किया गया था ताकि इस विधि से वे अन्यों को वेदाध्ययन करा सकें और स्वयं भी वेदों का गहन, प्रगति अनुशीलन कर सकें।

कार्यशाला में प्रश्नोत्तर शैली में निबद्ध १८ मंत्रों का अध्ययन कराया गया। ये मंत्र शुक्ल यजुर्वेदीय संहिताओं के अश्वमेध प्रकरण में मिलते हैं। इनके कुल ३२ प्रश्नोत्तरों का भौतिक विज्ञान की दृष्टि से विश्लेषण 'कार्यशाला' की एक अन्य विशेषता रही जिसे भौतिकविज्ञानविद्–वेदज्ञ श्री डॉ० मनोहरलाल गुप्त ने प्रस्तुत किया।

वेदानुशीलक वैज्ञानिक डॉ० [illegible] टाइम्स के पूर्व संपादक डॉ० सूर्यकांत बाली आदि ने कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में वेद–संस्थान द्वारा विकसित वेदाध्ययन शैली को देखा और उसकी उपयोगिता का आकलन किया। कार्यशाला में लगभग १४ घंटे अध्यापन कार्य वेद संस्थान के अध्यक्ष डॉ० अभयदेव शर्मा ने किया। यह घोषणा भी की गई कि कार्यशाला के पश्चात् १० जून से साप्ताहिक (रविवारीय) सांध्य वेदकक्षाएं ३.३० से ५.३० बजे वेद संस्थान में लगी करेंगी।

कार्यशाला में ६० अध्येताओं ने अध्ययन किया। कई संस्कृतज्ञ भी कार्यशाला में आ कर वेदाध्ययन और वेदाध्ययन की पद्धति देख गए हैं। ५८ पृष्ठों की अध्ययन–सामग्री अध्येताओं को दी गई। यह अब 'वेदाध्ययन कैसे करें और कराएं' शीर्षक से सुलभ है, रु० १००/– में। कार्यशाला की ऑडियो कैसेटों और सी.डी. पर रिकार्डिंग की गई है। इनकी [illegible] कर विक्रयार्थ उपलब्ध कराई गई है।

वर्तमान में पूरी या अधूरी उपलब्ध सब ११ वेद–संहिताओं को प्रदर्शित किया गया, जिन्हें कार्यशाला के अध्येताओं ने कभी एक साथ देखा नहीं होगा, पढ़ने की तो बात ही दूर की है। वेदों के बारे में अध्येताओं की जानकारी बढ़ी और उनकी अनेक भ्रांतियां दूर हुईं यह सबका अनुभव रहा।

वेद–अध्ययन–कार्यशाला के उपलक्ष्य में हमें कई शुभकामनाएं प्राप्त हुई हैं। इनमें से एक M.K. Byrski पोलेंड से आई है। दूसरी श्री भूदेव शर्मा, अटलांटा (अमेरिका) से प्राप्त हुई है। हम सब का आभार प्रकट करते हैं।

जो लोग अपने अपने नगर में इस तरह की 'कार्यशाला' का आयोजन करना चाहें वे वेद–संस्थान से संपर्क करें।

– सी २२, राजौरी गार्डन
नई दिल्ली ११००२७
दूरभाष : २५१०२३१
ईमेल vedic_science@yahoo.co.in

यज्ञ क्या है ? (3)

– डॉ० भवानी लाल भारतीय

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" - यज्ञ सब श्रेष्ठ कर्मों से भी श्रेष्ठ कर्म है

गतांक से आगे

महाभारतोत्तरकाल में जब वैदिक धर्म का ह्रास हुआ और जैन, बौद्ध आदि अनीश्वरवादी, वेद विरोधी मतों का प्राबल्य हुआ तो इन नास्तिक मतों के प्रतिकार में वैष्णव मत की वृद्धि हुई। रामानुज, माध्व, निम्बार्क, वल्लभ तथा चैतन्य आदि आचार्यों ने हिंसा प्रधान कृत्यों से किनारा किया तथा इनके स्थान पर भगवान्नाम स्मरण, मूर्तिपूजा आदि आचारों को महत्व दिया।

जब मध्यकालीन आचार्यों का ध्यान अश्वमेध आदि हिंसापूर्ण कृत्यों के अनौचित्य की ओर आकृष्ट किया गया तो उन्होंने कलिवर्ज्य का एक नया बखेड़ा खड़ा कर दिया और कहा कि न केवल अश्वमेध, गवालम्भ आदि हिंसापूर्ण कृत्य अपितु नियोग के द्वारा विधवा का सन्तानोत्पादन, संन्यास धारण करना तथा मृतक पितरों के लिए श्राद्ध विधि में मांस का विधान, यह सब कलियुग में वर्जित है। यह भी पाखण्ड ही था, बल्कि एक पाप को छिपाने का मूर्खतापूर्ण प्रतिकार था। कारण कि कलिवर्ज्य में जिस संन्यास धारण करने को वर्जित कहा, उसका प्रत्यक्ष विरोध तो आद्य शंकराचार्य आदि पौराणिक धर्म के मान्य व्यक्तियों ने ही स्वयं संन्यास धारण कर के दिया।

कलिवर्ज्य के इस पाखण्ड का पर्दाफाश करते हुए स्वामी दयानन्द ने लिखा था कि यज्ञ में

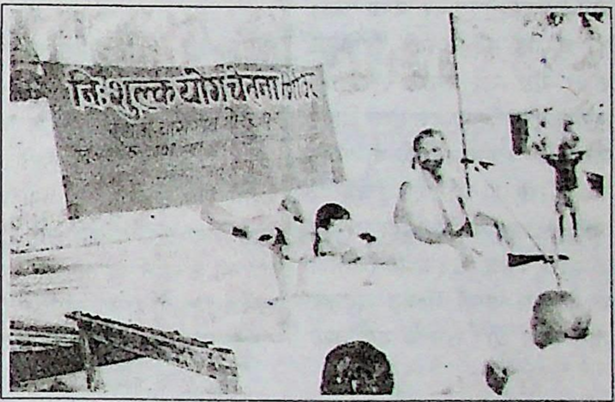


पशु हिंसा तो सर्वकाल में वर्जित है तथा संन्यासादि का स्वीकार सर्वत्र विधेय है। सभी युगों में वैराग्यवान, त्यागी महापुरुषों ने लोक कल्याणार्थ संन्यास को स्वीकार किया है। भारत में अंतिम अश्वमेध संभवतः शुंग–वंश के राजा पुष्यमित्र ने किया था। इसका पौरोहित्य महर्षि पतञ्जलि ने किया था, इसकी पुष्टि व्याकरण महाभाष्य से होती है। वस्तुतः अश्वमेध यज्ञ राजाओं द्वारा किया जाता है, सामान्य व्यक्ति अश्वमेध करने कराने का अधिकारी नही है। तथापि एक नये सम्प्रदाय गायत्री परिवार ने विगत कई वर्षों से विभिन्न स्थानों पर अश्वमेध यज्ञ का पाखण्ड चला रखा है। ऋषियों द्वारा निर्धारित अश्वमेध यज्ञ पद्धति से अनभिज्ञ ये पाखण्डी इस आर्ष यज्ञ के नाम में मनमानी क्रियाएं करते हैं तथा जन सामान्य को पाखण्ड के गर्त में गिराते हैं।

कुछ समय पूर्व मेरे अनन्य मित्र तथा वैदिक धर्म के प्रति परम निष्ठावान कोलकाता निवासी श्री चांदरतन दम्माणी ने इस विषय की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया और उक्त संस्था द्वारा कराये जाने वाले कृत्रिम अश्वमेध की एक मनमानी बनाई विधि की प्रति भी भेजी। उनका आग्रह था कि इस पाखण्ड यज्ञ की तथ्याधारित समीक्षा लिखी जानी चाहिए। उक्त परामर्श को ध्यान में रखकर ही मैंने 'अश्वमेध यज्ञ का रहस्य' पुस्तक लिखी। आशा है इससे द्वारा अश्वमेध यज्ञ की वस्तुस्थिति स्पष्ट होगी तथा श्रीराम शर्मा के समुदाय द्वारा प्रवर्तित कृत्रिम अश्वमेध यज्ञ के आडम्बर से पाठक परिचित होंगे। □

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के ब्रह्मचारी अभिषेक ने योग में नए कीर्तिमान बनाएं

गोरखपुर जनपद के बारीगांव, तहशील बांसगांव निवासी श्री संग्राम सिंह का पुत्र अभिषेक सिंह इस समय गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० (विद्यालय विभाग) हरिद्वार उत्तरांखण्ड का छात्र है। तरेह वर्षीय अभिषेक इस समय आठवीं कक्षा का छात्र है। अभिषेक सिंह ने अब तक उत्तराखण्ड, हरियाना, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, गुजरात, दिल्ली आदि राज्यों में आयोजित विभिन्न, प्रतियोगिताओं में योग के क्षेत्र में अपना परचम लहराया है। योग गुरु स्वामी रामदेव जी के गुरुभाई योगाचार्य सत्यपति जी के शिष्य अभिषेक सिंह को गुजरात के मुख्यमंत्री जी ने निःशुल्क बस पास प्रदान किया गया है (सम्पूर्ण गुजरात के लिए) और स्वयं स्वामी रामदेव जी ने अभिषेक के योग आसानों से प्रभावित हो अपना आशीर्वाद भी दिया। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री भी है इसकी प्रतिभा के कायल। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय योग एवं स्वास्थ्य जागरूकता सम्मेलन में श्री सुदर्शन अग्रवाल राज्यपाल उत्तरांखण्ड ने भी सम्मानित किया है। इसके अलावा कई योग सम्मेलनों में हिस्सा लेकर अपने योग आसनों से उपस्थित जन



समुदाय को अभिभूत कर चुका है। उत्तरांखण्ड में लगातार चार बार प्रथम स्थान हासिल कर कीर्तिमान स्थापित किया है। दिनांक ८–६–२००७ में स्वामी निश्रेयानन्द की अध्यक्षता में आयोजित योग चेतना शिविर में अभिषेक ने अपने योग आसनों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह आयोजन भारत सेवाश्रम संघ गोरखपुर में हुआ। दिनांक १२–७–२००७ में गुरुकुल कांगड़ी में बतौर अतिथि पंजाब सरकार के कृषि मंत्री सरदार सुच्चा सिंह जी अपने परिवार सहित गुरुकुल कांगड़ी के छात्रावास के प्रांगड़ में पधारे। छात्रावास के सभी छात्रों ने वेद मंत्रों द्वारा मंत्री महोदय का स्वागत किया। अंत में ब्र० अभिषेक ने योग की विविध क्रियाओं के द्वारा मंत्री महोदय, कुलपति महोदय, एवं अन्य अधिकारियों विद्वानों और सभी गुरुजनों को मंत्र मुग्ध कर द्रिया और सभी ने भूरि भूरि प्रशंसा की। मंत्री महोदय ने १०००/– रुपये भी प्रदान किए। सभी उपस्थित जन समूह ने अभिषेक ब्र० के भविष्य में आशा एवं कामना व्यक्त की। योग के क्षेत्र में भारत वर्ष का नहीं अपितु संपूर्ण विश्व का चकमता सितारा सिद्ध होगा।

साठ साल पुराना एक छोटा सा संस्मरण

सच्चे महात्मा की संगत

बात कुछ चालीसवें की है। १९४२ से १९४५ में मैं डी०ए०वी० कालेज हौश्यारपुर का छात्र था। पं० रताराम जी उस समय कालेज के प्रिंसिपल थे। रेडियो, टैलीवीजन, मोबाईल फोन और कम्प्यूटर के चलन से पहले का समय था।

एक बार स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक जो दोनों आंखों से ज्योति विहीन थे, होश्यारपुर स्थित साधु आश्रम में पधारे हुए थे। एक दिन, विद्यार्थी हित, उन्होंने कालेज के विद्यार्थियों को सम्बोधित किया जिसमें मैं भी सम्मिलित था। स्वामी जी की दी हुई शिक्षाएं कुछ ऐसा घर कर गईं कि मैं स्वामी जी को दोबारा मिलने पर बाध्य हो गया। स्वामी जी के साथ सम्पर्क बढ़ता चला गया।

साधुआश्रम हमारे घर से लगभग डेढ़ मील की दूरी पर था। स्वामी जी जितने भी दिन वहां रहे मैं नित्यप्रति प्रातः पांच बजे उठकर, पैदल साधु आश्रम जाता और स्वामी जी को प्रातः भ्रमण और शौचादि के लिए बाहर घुमाने ले जाता और वापस उनकी कुटिया में छोड़, घर जाकर तैयार होकर कालेज जाना मेरा नियम बन गया था।

स्वामी जी विशालकाय, हृष्ट–पुष्ट और तेजवान सन्यासी तो थे ही, उनके सम्पर्क से शरीर में एक लहर सी दौड़ जाती थी। उनकी सीधी सादी बातों में एक आकर्षण था जो मेरे मन पर एक गहरी छाप छोड़ जाती थी।

एक बार जब मैं उन्हें प्रातः भ्रमण कराकर आश्रम में उनकी कुटिया पर वापिस लाया तो बरामदे में रखे पानी से उनके हाथ धुलवा कर साबुन को पास ही रख दिया। मैरे साबुन को रखने की आहट को सुनकर स्वामी जी ने पूछा – बेटा चितरंजन साबुन रख दिया, कहां रखा है ? 'स्वामी जी, इधर रख दिया है'। मेरे बतलाने पर वे बोले वहीं पर रख दो, जो वस्तु जहां से उठाओ, उसे वहीं पर रख दिया करो। आज तो तुम मेरी सहायता कर रहे हो, कल जब मैं स्वयं यह सब करूंगा तो प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर ना पाकर मुझे असुविधा होगी। सच मानिए, यह छोटी सी बात मेरे मन पर इतनी गहरी छाप छोड गई कि वह दिन और आज एक ऐसी आदत प्रदान कर गई कि जिसका श्रेय मैं स्वामी जी की उस शिक्षा को देता हूं। तो यह होता है प्रभाव महात्माओं की संगत का।

इसके अलावा स्वामी जी ने मुझे प्रातः उठते समय और रात्रि को सोते समय की दो प्रार्थनाएं सिखाई थी जो मैं आज भी नियमित रूप से करता हूं। हिन्दी भाषा में होने से इतनी सरल है कि मैं समझता हूं कि वे बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है। मैं उन्हें नीचे उदृधत कर रहा हूं कि मेरे आंखे मिचने पर यह लघु प्रार्थनाएं कही लोप न हो जाएं।

प्रातः उठते समय की प्रार्थना -

निद्रा में जब था नहीं,
मुझको तन का भान।
तब जिसने पालन किया,
सबसे वही महान।।
प्रातः उठ उस ईश को,
पहले कर लूं ध्यान।
अन्य कार्य पीछे करूं,
कर के प्रभु का मान।।

सोते समय की प्रार्थना -

कच्चे बान्धव जगत के जब,
सारे सो जात।
पक्का बन्धु ईश ही तब,
जागृत रह जात।।
अप्रमाद रक्षा करे,
बिना स्वार्थ दिन रात।
जब जगने को कहत हम,
तब ही हमें जगात।।

– चितरंजन ...

सामयिक विषयों पर लेख

सार्वदेशिक साप्ताहिक के विद्वान लेखकों तथा सभाओं और आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि विशेष उत्सवों आदि की सूचना प्रकाशनार्थ कम से कम १५ दिन पूर्व अवश्य भेज दिया करें। इसी प्रकार विद्वान लेखक विशेष उत्सवों, दिवसों आदि से सम्बन्धित लेख भी न्यूनतम १५ दिन पूर्व अवश्य भेजे। अधिकाधिक सामयिक विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रियाएं भी भेजें। "सार्वदेशिक" के सम्बन्ध में लेख, सूचनाए तथा अन्य पत्र निम्न पते पर भेजें –

सार्वदेशिक सभा, 1488, पटौदी हाउस
(नजदीक आर्य अनाथालय) दरियागंज, नई दिल्ली-2
फोन : 23270507
E-mail : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

– प्रो० स्वतन्त्र कुमार, प्रबन्ध सम्पादक एव सभा मन्त्री ...

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न डीएल० (II)017/110/2006
Licence No. U(C) 93/2006-
Licensed to Post Without Pre-payme
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 22-07-07 से 28-07-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 19/20-07-07

श्रीमती वीना सचदेवा का देहावसान

दिल्ली दूरदर्शन से सेवा निवृत कमृठ आर्य श्री प्रेम सचदेवा जी की धर्मपत्नी श्रीमती वीना सचदेवा का ६० वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। वे विगत लगभग १० वर्ष से कैंसर रोग से पीड़ित थीं। उनका इलाज सिंगापुर के अस्पताल में चल रहा था। ६ जुलाई को सिंगापुर अस्पताल में ही उनके श्वास पूर्ण हुए। १० जुलाई को उनका पार्थिव शरीर वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार के लिए भारत लाया गया। दिल्ली में अनेकोंनेक आर्यजनों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्तिम संस्कार पंजाबी बाग शमशान घाट पर किया गया। १२ जुलाई को उनकी स्मृति में शांति यज्ञ एवं स्मृति सभा का आयोजन आर्यसमाज अशोक विहार फेज १ के सभागार में किया गया।

श्रीमती वीना सचदेवा आर्यसमाज अशोक विहार की कर्मठ सदस्या थीं। वे आर्यसमाज के समस्त कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग लेती थीं। उनकी यज्ञ तथा सत्संग में विशेष रूचि थी। उनका स्वभाव दानशीलता से ओत–प्रोत था। ३१ मई को ही वे दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग से सेवानिवृत हुई थीं। अपने सेवाकाल के उपरान्त प्राप्त फण्ड का उन्होंने स्वेच्छापूर्वक दान कार्यों में प्रयोग किया। संयोगवश सेवानिवृत्ति के केवल एक माह के बाद ही उनका जीवनकाल पूर्ण हो गया।

अन्तिम संस्कार तथा शोक सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य, आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रधान श्री अरूण वर्मा, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री कुलभूषण साहनी तथा कई गणमान्य आर्यजन उपस्थित थे। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति प्रदान करें।

दिल्ली के पूर्व मन्त्री तथा पूर्व केन्द्रीय मन्त्री

डॉ० साहिब सिंह वर्मा का निधन

दिल्ली के पूर्व मन्त्री तथा पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डॉ० साहिब सिंह वर्मा का गत माह सड़क दुर्घटना में अलवर के निकट निधन हो गया। वे ६४ वर्ष के थे। डॉ० साहिब सिंह वर्मा वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत तथा आर्यसमाज के समस्त कार्यों में सदैव बढ़चढ़कर भाग लेते थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से उनके पैतृक गांव मुंडका में किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल उपस्थित थे। डॉ० साहिब सिंह वर्मा श्री बंसल को अपना मार्गदर्शक तथा संरक्षक मानते थे। देहावसान से लगभग १ सप्ताह पूर्व ही उन्होंने लगभग ४–५ घंटे श्री रामफल बंसल के साथ उनके दिल्ली उच्च न्यायालय स्थित चैम्बर में बिताये।

प्रतिष्ठा में

20845 श्री रामनरेश शर्मा (5/05)
प्रशासन लेखा अनुभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरांचल)

...समाचार

आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई
प्रधान : श्री लालचन्द आर्य
मन्त्री : श्री संगीत आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल

आर्यसमाज, रामनगर, रुड़की
प्रधान : श्री चेतराम शास्त्री
मन्त्री : श्री राम अवतार यादव
कोषाध्यक्ष : श्री मदन पाल शर्मा

आर्यसमाज मोगा
प्रधान : श्री जगदीश चन्द्र पुरी
मन्त्री : श्री सत्यप्रकाश उप्पल
कोषाध्यक्ष : श्री बलराज सचदेवा

आर्यसमाज गिरिहिण्डा, शेखपुरा
प्रधान : श्री शांति प्रकाश आर्य
मंत्री : श्री गंगा प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री रामचन्द्र आर्य

आर्यसमाज जुरहरा, राज०
प्रधान : श्री मंगलदेव आर्य
मन्त्री : श्री डालचन्द आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री जयप्रकाश साहू

सार्वदेशिक सभा कार्यालय का नया दूरभाष

समस्त आर्यजनों को सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय का नया नम्बर 43580554 हो गया है। कृपया उक्त दूरभाष नम्बर को भविष्य में वार्तालाप हेतु अपने पास सुरक्षित कर लें।

– स्वतन्त्र कुमार, महामन्त्री

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन : 43580554) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित। ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४६ अंक ८ | १६ अगस्त से २५ अगस्त, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | श्रा०शु०६
भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

अमेरिका सभा के 17वें आर्य महासम्मेलन में 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का संकल्प

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का १७वां आर्य महासम्मेलन डलास शहर में अपार उत्साह और नव संकल्पों के साथ १६ से २२ जुलाई, २००७ को सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने मुख्य अतिथि के रूप में इस महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा –

"आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के १७वें आर्य महासम्मेलन में इस वर्ष भाग लेते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। आपके सम्मेलन की प्रशंसा मैं भारत में अक्सर सुना करता था। वास्तव में कृण्वन्तों विश्वमार्यम का जो नारा स्वामी दयानन्द जी ने दिया था उसको लागू करने का कार्य आप सबने तथा आपके पूर्वजों ने बहुत अच्छे तेरीके से किया है। मैं प्रार्थना करता हूं कि आपकी सन्ताने भी उसी प्रकार इस धर्म प्राचर के कार्य को करती रहे। ईश्वर उन्हें सब प्रकार की सम्पन्नता तथा धर्म के प्रति प्रेम करने का आशीर्वाद प्रदान करें।"

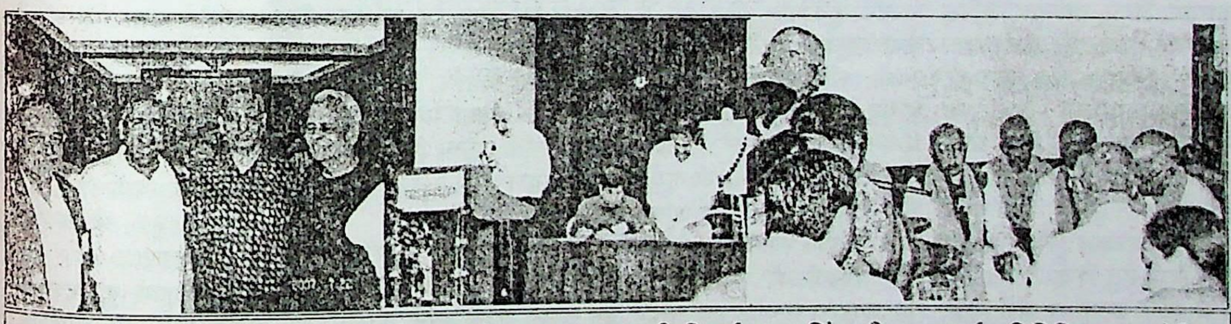
श्री मिठाई लाल जी ने कहा कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में सारा ज्ञान तथा संस्कार पहुंच जाए इसी उद्देश्य से इस प्रकार के सम्मेलन, गोष्ठियां तथा वार्ताए आयोजित की जाती है। युवा बच्चों में यज्ञ, योग और वैदिक धर्म के सिद्धान्त किस तरह पहुंचाएं जाए। इसका सर्वोत्तम तरीका है कि इन विषयों पर अंग्रेजी भाषा में छोटे छोटे ट्रेक्ट प्रकाशित करवा कर बटवाएं जाएं। साप्ताहिक सत्संगों में भी बच्चों को उनकी रूचि के अनुसार कार्यक्रम देने चाहिए। अमेरिका सभा की मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी और अधिक संख्या में किया जाना चाहिए। आयोजन की दृष्टि से भारत और अमेरिका के सम्मेलनों में बड़ा अन्तर है। भारत में धन की आवश्यकता सेवा और शिक्षा के कार्यों के लिए सदैव बनी रहती है। अनाथालय, वानप्रस्थ, गुरुकुल आदि भारत में आर्य समाज की मुख्य गतिविधियां है। शायद अमेरिका में इन कार्यों की आवश्यकता नहीं होगी। परन्तु अमेरिका में प्रत्यक्ष रूप से धर्म प्रचार की बहुत आवश्यकता है। कम से कम भारतवासियों के परिवार अपने वैदिक संस्कारों से सुरक्षित रहे तभी वे अमेरिका के मूल निवासियों को भी वैदिक संस्कृति से अवगत करवा पाएंगे।

सार्वदेशिक सभा प्रधान ने कहा कि आज आतंकवाद के बढ़ते प्रभाव से सभी देश दुखी है। यहां तक कि अब पाकिस्तान को भी पता लग गया है कि आतंकवाद से मानवता का भला नहीं हो सकता। इन परिस्थितियों में आप पर सबसे बडा ऋषि ऋण यह है कि अमेरिका की सरकार तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिकारियों तक यदा कदा यह संदेश पहुंचाते रहा करें कि वैदिक ज्ञान से व्यक्ति का व्यक्तिगत धार्मिक जीवन उच्च होता है

शेष पृष्ठ ८ पर

आध्यात्मिक, सामाजिक एवं नैतिक उपदेशों की प्रवचन श्रृखला का सारांश

पृष्ठ ४ से ६ तक



१. अमेरिका के आर्य नेताओं के साथ सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी। २. आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री देव महाजन जी। ३. आर्य महासम्मेलन का शुभारम्भ यज्ञ से करवाते हुए वैदिक विद्वान श्री प्रेमचन्द्र श्रीधर जी।

उत्तर प्रदेश सभा के निर्वाचन करवाने के लिए
न्यायमूर्ति श्री शैलेन्द्र सक्सेना प्रशासक एवं निर्वाचन अधिकारी नियुक्त

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लगभग २० वर्षों से चल रहे विवाद समाप्त कराने के लिए उच्च न्यायालय ने अवकाश प्राप्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री शैलेन्द्र सक्सेना को सभा के आगामी निर्वाचन सम्पन्न कराने के लिए प्रशासक एवं चुनाव अधिकारी नियुक्त किया है।

– **अरविन्द कुमार आर्य**, कोषाध्यक्ष उ०प्र० सभा

(विस्तृत समाचार अगले अंक में)

स्वतन्त्रता दिवस की बधाई
एक और स्वतन्त्रता आन्दोलन की आवश्यकता

समस्त पाठकों को ब्रिटिश साम्राज्य से भारत को मुक्त होने के उपरान्त ६० वर्ष अर्थात् षष्ठी स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में हार्दिक बधाई परन्तु वर्तमान भारत की व्यवस्था स्वतन्त्रता शब्द को लेकर आज भी प्रश्नवाचक चिह्न के साथ देश प्रेमी लोगों के लिए चिन्तन का विषय बनी हुई है। ब्रिटिश धूर्त साम्राज्य से तो मुक्ति मिल गई। उसमें बलिदान होने वाले समस्त महान आत्माओं को हमारा शत् शत् नमन। परन्तु आज पुनः एक स्वतन्त्रता आन्दोलन की आवश्यकता है जो भारत के उन धूर्त राजनेताओं से भारतीय व्यवस्था को मुक्ति दिलाये जो देश की धन सम्पदा को लूट लूट कर अपने हाथों से विदेशों मे विशेष रूप में स्विटजरलैण्ड के बैंकों तथा कई अन्य व्यवस्थाओं में समर्पित कर रहे हैं। परमपिता परमात्मा हमारे देश की स्वतन्त्रता, एकता और अखण्डता को निष्कलंक और वास्तविक रूप मे स्थापित करने के लिए आर्यजनों में विशेष उत्साह और कर्मठता का संचार करें।

यौन शिक्षा नहीं योग शिक्षा चाहिए

– डॉ० बिजेन्द्र पाल सिंह

भारत में आज भी विद्वानों की क़मी नहीं है परन्तु ऐसे विद्वानों, समाज के प्रहरियों, विचारकों की सुनता कौन है। किसी समय यह देश जगद्गुरु था। यहां विदेशी लोग वेद आदि की शिक्षा लेने आते थे। आज इस देश की स्थिति विपरीत है। आज हम विदेशी शिक्षा संस्कृति व राजनीति अर्थ व्यवस्था आदि के पिछलग्गू हो गए हैं। हमारी चक्षुइन्द्रियां विदेश में क्या, क्यों, कैसे हो रहा है सब देखती रहती हैं और हम वही करने लगते हैं जो विदेश में हो रहा है अर्थात् हम नकल करने में अभ्यस्थ हो गए हैं। चाहे वह विज्ञान की खोज हो, पाश्चात्य संस्कृति, फिल्मी दुनियां की भाषा हो, या शिक्षा व्यवस्था हो हम पीछे नहीं रहते। उस कड़ी में एक और विषय है यौन शिक्षा ! क्योंकि पाश्चात्य देशों में इग्लैण्ड, अमेरिका आदि में यह शिक्षा अधिक फैल रही है तो हम भी पीछे क्यों रहें। क्योंकि हमारे यहां भी छोटे बच्चों के हाथों में गर्भ निरोधक हों और यौन अपराध बढ़ें यह यहां भी होना चाहिए।

यौन शिक्षा लोगों का भ्रम है। विदेशों में यह चलाई जा रही है। फलस्वरूप वहां यौन अपराधों में वृद्धि हो गई। एक तो वैसे ही अपराध बढ़े हुए हैं। आतंकवाद चरम सीमा पर है उधर ऐसी शिक्षा देकर अपराधों को और जन्म दिया जा रहा है।

विदेशों में तो इस शिक्षा को लागू करना उनकी मजबूरी रही है क्योंकि वहां का वातावरण ही दूषित प्रकार का है। एक स्त्री या पुरुष जीवन में कई विवाह व तलाक कर सकता है। स्त्रियां अर्द्धनग्न अवस्था में घूम सकती हैं, कोई रोक नहीं। स्त्री–पुरुषों का आपस में हाथ मिलाना (हस्तालिंगन) या एक दूसरे का चुम्बन एक सामान्य प्रक्रिया है। पार्टियों में एक दूसरे का हाथ पकड़ कर गले में हाथ डाल कर नृत्य करना, पर स्त्री या पर पुरुष के साथ बैठ कर मद्यपान करना, देर रात तक अपने परिवार को छोड़कर अन्यत्र रहना कोई नई बात नहीं। शादी से पूर्व स्त्री पुरुषों के सम्बन्ध प्रायः रहते हैं और इसके अतिरिक्त भोजन में मांस मद्य का भरपूर प्रयोग और शिक्षा संस्थानों में सह शिक्षा (को–एजुकेशन) का होना वहां की जीवन शैली ही बनी हुई है। इसलिए वहां यौन अपराधों की भरमार है। इसी कारण वहां यौन शिक्षा की आवश्यकता हो गई। यौन शिक्षा का परिणाम यह हुआ के यौन अपराधों में और अधिक वृद्धि हो गई।

यह तो अति सूक्ष्म पाश्चात्य जीवन वृत्त दिया है। ब्रहत रूप में देखा जाय तो वहां सब कुछ कार्य कलाप ऐसे हैं जिनसे मादकता बढ़े। होटल, रेस्तरां, केबरे डांस, काकटेल पार्टी उन देशों में सामान्य जीवन का अंग बन गई है। वहां कामुकता पूर्ण जीवन है। भौतिकवाद को प्राथमिकता है। स्त्री, धन व प्रमाद के साधन जीवन के मुख्य अंग हैं। कर्म फल की भावना का अभाव है। खाओ पीओ मस्त रहो कल किसने देखा, ऐसी भावना है। जब ऐसा वहां का जीवन व्रत है तो अपराध तो बढ़ेंगे ही। वहां क्वारी माताओं की भी कमी नहीं और इस प्रकार के अनेक कारण रहे हैं जिससे वहां यौन शिक्षा लागू करनी पड़ी।

अब दृष्टि घुमाएं भारत की ओर – सदियों से दुनियां में आध्यात्मिक आस्था का केन्द्र जहां घर घर से यज्ञ हवन का धूम निकलता हो, वेद मंत्रों की ध्वनि सुनाई देती हो, जहां जीवन में ब्रह्मचर्याश्रम की पवित्र भावना हो। सन्यासी जहां वेदोपदेश देते फिरते हों, जहां ऋषि वाल्मीकि, विश्वामित्र, याज्ञवल्क्य, भर्तृहरि, चाणक्य, विदुर, दयानन्द, कपिल व कणाद, पातंजलि जैसे महान विद्वान महापुरुष होते आए हो, जहां गुरुकुल जैसी पवित्र शिक्षा हो, आचरण को पवित्र बनाने वाली शिक्षा हो, जहां राम व कृष्ण, भीष्म जैसे ब्रह्मचारी हुए हों, जहां समय समय पर संस्कार किए जाते हों, जहां राष्ट्र हेतु शिवाजी प्रताप व राणा सांगा छत्रसाल जैसे योद्धा हुए हो, हकीकत राय जैसे बालक और पदमिनी जैसी जौहर करने वाली छत्राणियां हुई हों, वहां आप सोच सकते हं कि ऐसी पावन भूमि पर क्या यौन शिक्षा होनी चाहिए।

विदेशों में जो नहीं है वह भारत में है और जो भारत में नहीं वह विदेशों में है। यहां शान्ति चाहने वाले हैं, वहां अशान्ति चाहने वाले लोग हैं। यहां आध्यात्मिक ज्ञान को महत्व दिया जाता है, वहां भौतिकवाद को, यहां मानवता को वहां दानवता है यहां शाकाहार को प्राथमिकता दी जाती है, वहां मांसाहार को, यहां गौपालन व कृषि का महत्व हैं तो वहां मद्य व कृत्रिम जीवन का, यहां आज भी सगे सम्बन्धियों का महत्व है वहां माता पिता तक को भी नकारा जाता है। यहां प्यार का अर्थ है देश प्रेम, भाई बहन का प्रेम, माता पिता व पुत्र का प्रेम, भाई भाई का पवित्र प्रेम। वहां प्रेम का अर्थ कामुकता से लिया जाता है। इसलिए पाश्चात्य संस्कृति हर प्रकार से भारतीय संस्कृति से निकृष्ट व विपरीत है।

इस प्रकार यदि हम देखे तो हमारे देश में यौन शिक्षा का बीज जो बोया जा रहा है किसी भी प्रकार से उपयुक्त नहीं लगता और आंख बन्द कर पाश्चात्य संस्कृति व शिक्षा का पालन करना भारत के भविष्य के साथ खिलवाड़ करना है। अतः अभी समय है कि इस ओर एक बार भली प्रकार से भारतीय शिक्षा की पुरातन प्रणाली को ध्यान में रखते हुए यौन शिक्षा को जबरदस्ती लागू करने पर विचार करना चाहिए और इसका दूसरा पहलू योग शिक्षा है जिस पर विचार करना आवश्यक है।

आज विदेशों में योग शिक्षा पर बल दिया जा रहा है। योग शिक्षा से आत्म बल, शारीरिक बल बढ़ता है योग से मन व चित्त वृत्तियों पर नियंत्रण होता है, पवित्रता आती है। मनुष्य स्वतः ही दुष्कर्मों से बचता है। इसका उदाहरण है हमारे ऋषि मुनि व सभ्यसमाज जहां आज भी चरित्र निर्माण को महत्व दिया जाता है 'सत्यं ब्रुयात प्रियं ब्रूयात' 'सत्यं वद धर्म चर' जैसी भावना मन में होती है। माता-पिता के पैर स्पर्श करने की प्रथा है। जहां आचरण को श्रेष्ठ बनाना ही प्रमुख है वहा यौन शिक्षा की आवश्यकता नहीं।

यदि करना ही है तो कुछ काम ऐसे करें जिससे पवित्र भावना का संचार हो जैसे –

१. विद्यालयों में सह शिक्षा समाप्त हो।

२. पाश्चात्य संस्कृति का विरोध हो।

३. पाश्चात्य संस्कृति प्रधान फूहड़ गाने व संवाद व चित्रण वाले सिनेमा कथानक, टी०वी० चैनल के कार्यक्रम बन्द हो।

४. अश्लीलता पर रोक लगे।

५. वैदिक नैतिक, आध्यात्मिक शिक्षा पर बल दिया जाय।

६. आचरण पर बल दिया जाय।

७. राजनीतिक अव्यवस्था, रिश्वत खोरी, अन्याय, पक्षपात, भ्रष्टाचार को समूल नष्ट किया जाय।

८. शिक्षा व्यवस्था को सुधारा जाय। लार्ड मैकाले की पद्धति व्यवस्था के साथ भारतीय भाषा को महत्व दिया जाय। आधुनिक ज्ञान विज्ञान कम्प्यूटर शिक्षा में और तेजी लाई जाय।

९. शिक्षा को आधुनिक शिक्षा व विज्ञान के साथ गुरुकुल व भारतीय पुरातन प्रणाली से जोड़ा जाय।

१०. योग शिक्षा को महत्व दिया जाय।

– चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

आश्रम व्यवस्थाओं को सामान्य जन अपना लें तो विधर्मियों के पांव पांच साल में उखड जाएंगे

: पू० स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के अन्तर्गत रटौल तहसील के मास्टर कुंवरपाल सिंह जी ने समारोहपूर्वक विगत १ जुलाई, २००७ रविवार को वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया। वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करने के लिए आयोजित यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य धर्मपाल शास्त्री थे। प्रभात आश्रम मेरठ से पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती की उपस्थिति से यह वानप्रस्थ समारोह एक सुन्दर उत्सव की तरह बन गया। इस वानप्रस्थ दीक्षा समारोह का संचालन श्री विनल वधावन आर्य ने किया।

पूज्य स्वामी जी ने वानप्रस्थ प्रवेश की दीक्षा प्रदान करते हुए अपने दीक्षान्त प्रवचन में कहा कि जब भी समाज में अव्यवस्थाओं के बीच कोई कार्य व्यवस्था से होता हुआ दिखाई देता है तो वह उत्सव बन जाता है। वैदिक युग में जब वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम सामान्य जीवन के अंग थे उस समय शायद इस परिवर्तन को कोई विशेष कार्य नही समझा जाता होगा परन्तु आज क्योंकि यह व्यवस्थाएं बन्द पड़ी हैं और ऐसे वातावरण में जब कोई व्यक्ति वानप्रस्थ या संन्यास की दीक्षा लेता है तो सामान्य जन उसे बड़ी हैरानी से देखते हैं। उत्सव प्रेरणा देता है। महोत्सव विशेष प्रेरणा देता है।

पूज्य स्वामी जी ने कहा शिक्षा कभी पूर्ण नही हो सकती। कोई भी गुरुकुल या अन्य शिक्षण संस्थान पूर्ण शिक्षा देने का दावा भी नहीं कर सकते। विद्या का बहुत बड़ा विस्तार है। ऋषि दयानन्द ने शिक्षा व्यवस्था पर बहुत गम्भीर चिन्तन किया और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उस चिन्तन को कार्यरूप दिया।

इतने विशाल धरोहर मार्गदर्शन और सिद्धान्तों के बीच हम सबको अपनी अपनी योग्यता के अनुसार उचित आयु, उचित परिस्थितियों और उचित साधनों सहित वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम को सफल बनाने के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि वैदिक धर्म के अनुयायी लोग वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की व्यवस्थाओं को व्यापक स्तर पर अपना ले तो हमारे देश में आज भी विधर्मियों के पांव एक समान्य सी पंचवर्षीय योजना के तहत उखड़ जायेंगे। विधर्मी लोग अपने बिना सिर पैर के सिद्धान्तों के प्रचार के लिए विशेष प्रशिक्षण अपने लोगों को देतें हैं तो क्या हम ईश्वर की मूल विचारधारा को फैलाने के लिए संकल्प और प्रशिक्षण नहीं ले सकते। हमारी परम्पराएं समाप्त होने से ही आज समाज में दुर्बलताएं उत्पन्न हुई हैं।

पूज्य स्वामी जी ने मा० कुंवरपाल जी को महात्मा देवमुनि नाम प्रदान करते हुए उन्हें ओ३म् का प्रचार, यज्ञों के आयोजन और सामान्य ग्रामीण वासियों में स्वाभिमान पैदा करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि ओ३म् सर्वोत्तम आध्यात्मिक एवं शारीरिक औषधि है।

पूज्य स्वामी यज्ञमुनि, श्रीपाल जी भजनोदेशक, आचार्य यशपाल (हरियाणा), श्री अजब सिंह, श्री सहदेव सिंह बेधड़क, श्री जगवीर हुड्डा, कै० महाराज सिंह, श्री जगदीश सिंह आर्य, बुलन्दशहर, श्री आनन्द मुनि, श्री हरप्रसाद पथिक, प्रि० रामपाल सिंह, श्री रामचन्द्र, श्री प्रेमराज आदि ने भी इस वानप्रस्थ दीक्षा समारोह में अपने मार्गदर्शन एवं शुभकामनाओं से आर्य जनों को अवगत कराया।

श्री विमल वधावन ने कहा कि महात्मा देवमुनि जी ने अपनी योग्यता के अनुरुप बागपत क्षेत्र में शिक्षा के प्रचार का ही संकल्प पहले से ले रखा है। आशा है वानप्रस्थ जीवन में श्री देवमुनि जी अपने इन संकल्पों को शीघ्र ही मूर्त रूप दे पायेंगे। हम भी इस कार्य में यथासम्भव सहयोग देने के लिए कृतसंकल्पित हैं।

इस समारोह में श्री विनोद आर्य ने विशेष रूप से आयोजन में सहयोग किया। महात्मा देवमुनि जी के दो विवाहित सपुत्र सर्वश्री वेदपाल आर्य तथा सत्यव्रत आर्य हैं तथा चार विवाहित सुपुत्रियां श्रीमती सुमन लता, श्रीमती सत्यवती, श्रीमती वेदप्रभा तथा श्रीमती सीमा आर्या हैं। □

वो सुबह कभी तो आयेगी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अवस्था दिनो दिन बेशक कमजोर होती दिखाई दे रही हो परन्तु इतना निश्चित है कि सारी दुनिया भी यदि आर्यसमाज की दुश्मन बन जाए तो भी मै दावे से कह सकता हूं कि आर्यसमाज की हस्ती को मिट्टी में मिलाने में कोई ताकत सफल नहीं हो सकती।

यह बात मेरे मुंह से केवल इसलिए नहीं निकली कि मैं स्वयं आर्यसमाजी हूं और महर्षि दयानन्द का अनुयायी हूं। इस बात का मजबूत और सैद्धान्तिक आधार है।

परमपिता परमात्मा ने सृष्टि बनाने के बाद सृष्टि के सुचारू संचालन के लिए अपने मार्गदर्शन को वेदरूप में प्रकट किया। चार ऋषियों को प्रदत्त परमात्मा का यह मूल ज्ञान ऋषि परम्परा के माध्यम से आज तक संसार में विद्यमान है। कलयुगी काल में और विशेष रूप से इस्लामी काल में इस वैदिक ज्ञान को नष्ट करने के सारे प्रयास सरकारी ताकत यहां तक कि तलवार के बल पर किए जाते रहे। उसके बावजूद भी ईश्वरीय ज्ञान आज मूल रूप में हमारे सामने विद्यमान है। उसका कारण है कि ईश्वरीय ज्ञान तो ईश्वरीय ज्ञान है। कम्युनिस्ट क्या, कांग्रेसी क्या, ईसाई क्या और मुसलमान क्या – ये सारी ताकते भी अगर एक इकाई बन जाए तो भी न तो ये परमात्मा को नष्ट कर पायेगी और न ही परमात्मा के उस ज्ञान को।

परमात्मा के उसी ज्ञान को एक लम्बी शिथिल अवस्था के बाद केवल टूटी कडियों को जोड़ने का कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने करके आर्यसमाज के रूप में एक मार्गदर्शन हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है। सच्चे वैदिक धर्मी इस आर्यसमाज रूपी विशाल संगठन को बड़े अच्छे तरीके से विगत १३० वर्षो से चलाते आ रहे थे।

परन्तु १३०वें वर्ष यानि २००५ ई०सम्वत में अग्निवेश नामक तत्व ने अपने जैसे कुछ और तत्वों को मिलाकर गुंडागर्दी का खुला नाच करते हुए सार्वदेशिक सभा के मुख्य कार्यालय पर हमला कर दिया। बस फिर क्या था – सरकार, स्थानीय प्रशासन, पुलिस और यहां तक कि अदालतों को भी सत्ता की अंगुलियों पर अपनी गुंडागर्दी के समर्थन में नचाने का कार्य कोई बहुत बड़ा कार्य नहीं था।

आज सत्ता क्या खेल दिखा रही है – यौन शिक्षा, भारत के गौरवशाली इतिहास को उखाडना, भारत की धन सम्पदा को लूटकर अपने खजाने में भरना और उसी धन सम्पदा को अपने जैसे दूसरे साथियों की गुडागर्दी से अपनी रक्षा करने में लगाना, केवल वोट की राजनीति के कारण अल्पसंख्यक तुष्टिकरण, भारत की बहुसंख्यक जनता की भावनाओं से खिलवाड़ आदि आज की कांग्रेस कम्युनिस्ट गठबंधन सरकार के नुख्य लक्ष्य बने हुए हैं।

इन्हीं लोगों के लक्ष्यों में स्वयं को उनका सहायक सिद्ध करने की होड़ में इस अग्निवेशी तत्व ने आर्यसमाज रूपी महान पवित्र वैदिक धर्मी विचारधारा को नष्ट करने का आश्वासन देकर ही तो ऐसे लोगों से सत्ता की खुर्चन के रूप में सहयोग प्राप्त किया है।

ऐसा व्यक्ति एक युग पुराने सार्वदेशिक साप्ताहिक के मुकाबले पर स्वयं को वैदिक दिखाने का छलावा करते हुए वैदिक सार्वदेशिक में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नाम पर मनगढ़न्त, निराधार और कोरी झूठी बातों का पुलन्दा छापकर स्वयं को आर्यसमाज का रक्षक सिद्ध करने निकला है। गुरुकुल कांगड़ी की वर्तमान अवस्था भारत के किसी भी अच्छे से अच्छे विश्वविद्यालय से बहुत अच्छी है। आज विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की दृष्टि में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की छवि बहुत सुन्दर मानी जाती है। इसे चार स्टार का दर्जा प्राप्त है। हमारे पास ऐसी अनेकों मिसाल हैं कि किसी विशेष निमित्त अनुदान आयोग से प्राप्त धन राशि का प्रयोग न होने पर या कम होने पर हमने शेष राशि अनुदान आयोग को वापस लौटायी है। ऐसा शायद ही कोई विश्वविद्यालय हो। कार के पैट्रोल या टेलीफोन के खर्च जैसी छोटी छोटी बातों पर छींटाकशी करके गुण्डागर्दी और स्वार्थ की लूट मचाने वाले लोग हमारी तपस्या को चुनौती देना चाहते हैं।

इसी अग्निवेशी तत्व के साथ लगे अनेकानेक असामाजिक तत्वों ने विगत ३ वर्ष के दौरान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पर ६ बार हमले करके कब्जों के प्रयास किए लेकिन यह एक ध्रुव सत्य है कि ईश्वरीय ताकत सदैव अपना आशीर्वाद ऋषि मिशन को प्रदान करती रही और यह कम्युनिस्ट मिशन मिट्टी चाटता रहा। इन मुकाबलों में कुलपति का साथ देने में शिक्षक तथा शिक्षकेत्तर सभी कार्यकर्त्ताओं ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

ऐसे व्यक्तियों से लड़ाई तो देर सवेर सिमट ही जायेगी परन्तु दुर्भाग्य तो इस बात क है कि इस व्यक्ति की चा और षडयन्त्रें को समझने वा लोग भी आपस में छोटे छो स्वार्थों के कारण गुट बाजि करके बैठे हैं। अदालत निर्णय में देरी का आज सब बड़ा कारण हमारी अन्दरू लड़ाई के कारण उभ गुटबाजी बनकर खड़ी हो ग जिसके सहारे देवरत्न आर्य प्रकाश आर्य के नाम से ए प्रार्थना पत्र दिल्ली उच न्यायालय में प्रस्तुत कर दिया।

मेरा आर्यसमाज के समर पूजनीय विद्वानों और कर्म आर्य नेताओं से निवेदन है कि अब भी समय रहते अपनी इ अन्दरूनी लड़ाई को तत्का पूर्ण विराम देकर सारे मिलक इस देशद्रोही औ आर्यसमाजद्रोही तत्व से दो–द हाथ करने के लिए कमर क लें तो मुझे पूरा विश्वास है कि राजनीतिक ताकत के सहा चलने वाले ऐसे तत्वों को मिट्टी में मिलाना बिल्कुल भी असम्भ कार्य नहीं है।

मुझे विश्वास है कि सच्च आर्यविद्वान और कार्यकत्त आज से ही अपनी संध्या औ यज्ञ में इस संकल्प सहि परमपिता परमात्मा से प्रार्थन करके अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर अपने को उप उठाने का कार्य प्रारम्भ करेंगे निराशा के बादल छटक अलौकिक उजाला आर्यसमाज को देखने को मिलेगा – वो सुबह कभी तो आयेगी।

डॉ० महावीर उत्तराखण्ड संस्कृत एकेडमी के उपाध्यक्ष नियुक्त

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुल सचिव एवं संस्कृत विभाग के अध्यक्ष एवं सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ० महावीर अग्रवाल जी को उत्तराखण्ड सरकार के अन्तर्गत सुविख्यात संस्कृत एकेडमी का उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। संस्कृत एकेडमी के अध्यक्ष उत्तराखण्ड सरकार के मुख्यमन्त्री है। श्री महावीर अग्रवाल जी की विद्वता, संस्कृत सेवा तथा गुरुकुल भक्ति के फलस्वरूप परमपिता परमात्मा ने उन्हें संस्कृत माता की सेवा का शुभ अवसर प्रदान किया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों की ओर से डॉ० महावीर अग्रवाल जी को कोटि कोटि बधाई एवं शुभकामनाए।

सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री रामफल बंसल, सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सुदर्शन शर्मा, कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार, गुरुकुल फार्मेसी के व्यवस्थापक एवं दिल्ली सभा प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव तथा हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य यशपाल आदि ने श्री महावीर अग्रवाल जी को इस नव नियुक्ति पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की शुभकामनाए व्यक्त की हैं।

श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर में विशेष समारोह

रविवार ८ जुलाई, २००७ को आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में होने वाली स्वतन्त्रता आन्दोलन स्मृति चेतना यात्रा के सम्बन्ध में प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया की अध्यक्षता में एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह से पूर्व विशेष यज्ञ हुआ जिसमें श्री ओम प्रकाश भाटिया, श्री सुरेश महाजन, श्री शशि कोमल, डॉ० ऋचा एवं श्री पुरुषोत्तम शर्मा यजमान पद पर सुशोभित हुए। यज्ञ के उपरान्त कोषाध्यक्ष डॉ० ऋचा जी ने वैदिक संध्या मंत्रों का सामूहिक पाठ [illegible] करवाया। पंडित सिकन्दर जी के भजन हुए। तत्पश्चात् क्रान्तिकारी महात्मा परम प्रेमानन्द जी ने राष्ट्रीय क्रान्ति १८५७ में आर्य समाज के योगदान पर अपने विचार प्रकट किए और नौजवानों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने पर बल दिया। केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री दर्शन कुमार जी, मन्त्री श्री राकेश मेहरा जी एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्रद्धेय श्री सत्यपाल जी पथिक इस कार्यक्रम में विशेष रूप से शामिल हुए। इस चेतना यात्रा का शुभारम्भ ६ सितम्बर २००७ को जलियांवाला बाग अमृतसर से होगा। इस कार्यक्रम [illegible] सिंह बादल तथा अमृतसर से सांसद नवजोत सिंह सिद्धू आदि नेताओं के पधारने की आशा है। इस विशेष समारोह के अंत में सभाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश भाटिया ने लोगों को आह्वान किया कि ६ सितम्बर से १६ सितम्बर २००७ तक अमृतसर से हरिद्वार तक निकाली जाने वाली प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन स्मृति चेतना यात्रा को सफल बनाने के लिए सभी आर्यजन तन–मन–धन से सहयोग करें जिससे आर्य समाज का प्रचार व प्रसार हो तथा वैदिक धर्म की सुगन्ध जन जन तक पहुंच सके।

ABSTRACTS OF SPEACHES

(Received in advance to be delivered at 17th Mahasammelan of Arya Pratinidhi Sabha America 17th to 22nd July, 2007 with introduction of speakers)

R. HARISH CHANDRA



Dr Harish Chandra obtained his B.Tech. in aeronautical engineering from IIT, India, and a Ph.D. from Princeton University, USA. He worked as an Advisor to the Engine Research Department of Volkswagen, then as Head, Basic Engine Research, in the Indian Automotive Research Institute in Pune, India and as a Visiting Scientist in the Norwegian University of Science and Technol- , Trondheim, Norway. During his world-class research career, published about 25 research papers in international journals obtained two patents on advanced engine concepts. Through Center for Inner Sciences, he brings the virtues of the classi- Indian wisdom to one and all through his lectures, talks, work- ps, books and articles.

eliefs and Principles of Santan Dharma

Hinduism is an offshoot of Sanatana Dharma – the eternal nciples that holds the mankind. Sanatana Dharma has its ncipal statements as:

Every conscious living being is a bundle of body and soul. ile the former is made of matter, the latter is void of matter, d thus, is eternal.

Creation is a perfect design of God – an infinite, formless nsciousness.

Man-made things decay if left alone for some time. Nature hibits devolution instead of evolution as is stated by the Second w of Thermodynamics. Thus, constant intervention from God kes the earth sustainable.

While the nature follows the laws of nature, the souls are ministered by the Law of Karma. Its principal corollary is life fore birth and life after death too.

The ultimate objective of the human life is to be with God ile in the human form to know Him first hand. The only way this n be achieved is through the practices of Patanjali's Yoga that ds to success in meditation.

One visible aspect of spirituality leads one to understand that are like a child of God and so are other creatures. Therefore, human being should consume meat, fish and eggs. That is ethical, unhealthy and unnecessary, and thus, vegetarianism ould be the way of life for all human beings.

Being God's child, all humans are equal. This should lead to new world order of humanism based on universal love, otherhood and peace.

While stating the above principles, the key note speech brings t key action plans that every true Aryan, particularly the youth, ould intend to achieve in true earnest.

****

R. PREM CHAND SHRIDHAR



Dr. Prem Chand Shridhar is a very energetic Vedic scholar and zealous missionary for Arya Samaj. He has been a Pracharak for Arya Samaj for nearly 35 years. He has traveled all over India, Kenya, England, Canada and U.S.A. spreading the divine knowledge of Vedas and the message of Swami Dayanand Saraswati. He holds a Ph.D. from Delhi University in Rig-Veda and several other degrees. He has published a number of articles and books on Vedas, Vedic Culture, and Arya Samaj and has presented papers at many conferences in India and abroad. He was a Visiting Professor at Hindu University of America in Florida and is a member of Hindu Writers Forum and World Association for Vedic Studies. Dr. Shridhar is excited about the challenges and opportunities the Arya Samaj Greater Houston and the Hindu community in Houston offer. He is spreading Swami Dayanand's message throughout the region and showing people how to change their lives for the better. He is especially keen to give our children Naitik Shiksha and a background to a very rich heritage and culture to which they belong

RELEVANCE OF TEN COMMANDMENTS OF ARYA SAMAJ FOR THE YOUTH

Rishi Dayananda culled out ten principles from the Vedas and promulgated them as his Ten Commandments of Arya Samaj. These constitute the foundation pillars of the entire fabric of Arya Samaj to reach its goal of "Make the Whole World Noble". They are superb formulae for attaining tranquility and assuring peace for the individual and collective happiness as well as security.

These principles are very lucid and succinct from which the followers of The Samaj draw their inspiration and strength. They are regarded as the moral tenets of The Arya Samaj to be adhered to. in words and deeds. The first two describe the attributes of the Almighty, and the third states that the Vedas are the scriptures of true knowledge. Principle 5, 8 and 10 exhort the people to be righteous and promote Vidya (spiritual and moral science) and subordinate oneself to the laws of the society. The remaining four have the universal appeal and may well form part of the code of conduct of any religion. Thus, these ten principles have all relevance for our youths, who have to shoulder the responsibility of protecting and propagating of message of Vedic culture.

****

Dr. Usha Sharma



Dr. Usha Sharma's discourses on Vedas and Upanishads draw large audiences in India and abroad. Fluent in seven languages, she is a powerful speaker with a divine voice to chant and sing the Vedic hymns and Bhajans. Retired after teaching at the Universities of Delhi and Haryana for 29 years, she is now devoting her life to spread the message of the Vedas and Upanishads. She has written several books on the Vedas and has been honored with many awards, including Ved Vidushi, Bharat Mata ki Suputri, Vedas Ushas, Arya Meera, and many overseas awards.

BACK TO THE VEDAS & FORWARD TO THE VEDAS

The third principle of Arya Samaj is "The Vedas are the scriptures of all true knowledge. It is the paramount duty of all Aryans. to read them, teach them, recite them and to hear them being read". This is a universal principle because Vedas are the earliest and true knowledge of God. Vedas are divided as mandalas, sooktas, mantras, adhyayas, prapathakas, and kandas. Rig Veda is Gyan Kaand for knowledge, Yajur Veda is Karam Kaand for action, Saam Veda is Upasna Kaanda for meditation, and Atharav Veda is full of science.

God is one, He is singular, but His names are plural. He is the creator of cosmos, none is superior to God. He is only one

>>>

lord of the universe. He is unique and almighty. From the Vedas we can learn and practice these principles for leading a noble life. So, let us get back to our roots in the Vedas and move forward with these principles to "Make the world noble".

****

Jai Maha Dev



Mr. Jai Maha Dev is established on the path of perfecting his nature, of raising his consciousness, and realizing the Truth. He has studied for the last 33 years under the guidance of his preceptor, Dr. T. R. Khanna, a Vedic scholar. His family started publishing a Vedic journal called the Light of Wisdom in 1986. The name of the journal was later changed to Gyaan Jyoti. The journal was discontinued in 2001, but the articles written by Dr. Khanna and Mr. Jai Maha Dev continue to be published in various Vedic and cultural publications in North and South America, Europe, Africa, and India. Also, whenever the occasion presents itself, he has spoken at various Arya Samajs here in the US and Canada, and continues to publish articles over the Internet through the Aditya Dham website. He started the Aditya Dham website, one of the first Vedic websites to appear on the Internet, in April of 1996. Currently he is semi-retired, living as a Vanaprasthi, spending much of his time in seclusion and contemplation.

COMMUNICATION OF VEDIC VALUES TO NEXT GENERATION

The intention is to delve into the following areas:

Essential Vedic Values.| Basis and Basics of Communication (Respect, Cooperation, Humility, Upasana). | What is worship and its role in communication? | Talking the Talk and Walking the Walk. | A picture is worth a thousand words, but a good example is worth a thousand pictures. | Being a facilitator, and not a dictator. | Seeing the 'big picture' and our place in it, and our place beyond it. | What is the Ultimate Goal of this generation, the next, and every generation to follow?

Reaching the Goal together doesn't mean reaching It at the same time; it means 'reaching for the same Goal' together (in other words, it means having the common goal of perfecting our nature).

****

ACHARYA SONERAO



Sonerao Acharya ji teaches in the DAV schools at Arya Samaj Greater Houston to enhance religious and moral education. Before coming to the United States, he was in United Kingdom for over six years as a Vedic scholar preaching the ideals of the Vedas. He obtained his degree of Shastri from G.N.D. University Amritsar, Saahityaacharya from Punjab University Chandigarh and MA Sanskrit Degree from Meerut University. After his formal education he became Acharya in a Gurukul, and then a Sanskrit lecturer for several years. He finally gave up his lectureship to become a full time Dharma Prachaarak and went to Nairobi in East Africa. After spending almost two years in East Africa he went to United Kingdom where he worked with the Arya Samaj Vedic Mission and Vishwa Hindu Parishad UK as a Minister of Hindu Religion. Acharya ji is passionate about the teachings of the Vedas. He is very learned and knowledgeable. A scholar of Sanskrit, he is fluent in several languages. He is an accomplished public speaker who can speak on various topics extempore, and sings devotional songs & hymns in a melodious voice.

HOW VEDIC VALUES CAN BE APPLIED TO MEET THE NEEDS OF THE YOUTH

As we all know if the appetite is not there, the food, no matter how delicious and tasty, will not be relished. The best way to create that appetite is by loving the children and offering your helping hand to them. They will appreciate you and later will listen to you. There should not be much importance given to the outer decoration but inner nature development. Stories play a very important role in the lives of children. Let ennobling and uplifting stories be the powerful means of communication of Vedic values to the youth. The best time to apply the Vedic values to our youth is the time before they are grown up. For that the parents must understand the importance of Vedic values first. Parents, no matter how busy they are, must find time to teach their children the Vedic values and lead by example. Remember, the education of a child begins and ends at home. So, application of the Vedic values at home by the parents and elders of youth is the most important ingredient for meeting the needs of the youth.

****

LAWRENCE W. BROWN



Mr. Lawrence Brown has been a teacher of geography and ancient history for 30 years. He enjoys the company of young people and they seem to enjoy his. He has published 5 books including a geography textbook with Addison-Wesley and a book on Hindu theology with Bharatiya Vidya Bhavan in Mumbai. He has been a speaker at both the 1999 Parliament of the World's Religions in Cape Town and the 2004 Parliament in Barcelona. Although his personal theology is Hindu, he is ordained as an interfaith minister. He is a founding member of a regional Interfaith Coalition; he has both produced and been a guest on religious television programming for over 15 years – most recently doing a 10 program series of debates defending Hinduism against an Evangelical Christian pastor.

FINDING THE BEST OF BOTH WORLDS

The talk addresses taking pride in who and what you are. Hinduism has many gifts for us and many gifts America needs that only we can bring. We will discuss those first. Next, we have to discuss ways to resist efforts to convert you to Christianity. First, we have to understand the heart of Christianity – which is rooted in their theology. For Christians, salvation comes through faith in doctrine, not through the practice of its rituals or even through being a kind and moral person. As much as time permits, we'll raise Christian objections to our faith – and offer answers in refutation. Finally, we'll discuss ways you can – as Hindus – bring your gifts to the communities where you live... ways to stand up – and speak up – and clear a space for yourselves as American Hindus.

****

JAI P. AGARWAL



Mr. Jai P Agarwal is a professional by education-turned researcher and writer on theology. Having retired from the government as Chief Engineer ten years ago, Mr. Agarwal has been devoting his full time and energy to the study of the Vedic sciences and art of Yoga Practice leading to formal study of the nature of God and the foundations of religious beliefs including development of India's spiritual philosophy from the Vedic times to Swami Dayananda Saraswati and thereafter. Both, Mr. Agarwal and his wife now live in Ann Arbor MI, USA with his son and family, and keep on visiting India. Mr. Agarwal is now fully disposed to the work of research/study and dissemination of the knowledge of the Eternal Vedas, and science & practice of Yoga in India and abroad. He is also the founder president of 'The Institute of Vedic Research & Studies' Lucknow, India. He has delivered lectures on subjects connected with the Vedic Hindu philosophy and Yoga at several places in India and the US. With an irrepressible will and unfailing determination, Mr. Jai P Agarwal is also a spiritually inclined soul, with an irrevocable faith in melody of Truth of the Eternal Vedas, which remain with him as the perpetual source of inspiration, success, happiness & nobility!

\PPLYING VEDIC VALUES TO OUT SIDE VORLD (CREATING A POSITIVE IMAGE)F VEDIC VALUES)

The collective wisdom of thousands of years of Vedic tradi-on and Value System is significant in the vast and exemplary ontribution it can make towards global harmony, development nd peace. Vedic Values or True Life Values, such as; adher-nce to the divine law of existence or Dharma of all humans cross the world as enshrined in the revealed store house of all n owledge, the Vedas; the divine Moral Code of Maharishi Patanjali; mental equipoise (sama); Seva of all deserving hun-ry fellow beings (guests-athiti); performance of regular agnihotra or purification and healing of the environment; one's duty towards umanity; and finally belief in the existence of the Supreme Power.

The Vedic Values that are so sacrosanct and inviolable should e taught in schools and colleges the world over. Such value sys-em should be made part and parcel of human life in the society or fulfillment of our dream of a Global Society. Among other alient features the most important is the human factor. Men of ntegrity, knowledge and commitment are the need of the time. Arya Samaj recognizes the value of the human factor, particu-arly the role of properly educating children and adults alike in uman life values, as the most important for achieving success.

****

ARTI KHANNA



Mrs. Arti Khanna is Director, DAV Montessori School in Houston. She has over twelve years of experience as an Early Child-hood Montessori teacher in the Houston area. She has been closely associated with the American Montessori Society's Houston center through their continuing education and certification programs. She received a BA and B. Ed from Delhi, India and a Diploma in Early Childhood from the American Montessori Society, Hous-ton. Mrs. Khanna and her whole family are ardent believers in communicating the Vedic values to our next generation and are fully committed to the application of these values in daily life.

TEACHING VEDIC VALUES AT THE MONTESSORI LEVEL

Arya Samaj Greater Houston established the DAV Montessori School in the year 2000, with a vision to provide Academic Ex-cellence and Spiritual Growth to children ages 2 to 7 years of Indian – American Heritage. This school provides a unique com-bination of Montessori education, along with an opportunity for the students to learn Vedic Mantras, Prarthana Shlokas, Bhajans, yoga and Hindi or Gujarati reading & writing. It is a well estab-lished fact that the Montessori method of education develops the child to be an independent, self disciplined and a respon-sible citizen. We believe that combining this education with im-parting our Vedic values, culture and heritage will help prepare the students to face the challenges of today's world.

****

PROFESSOR BALVIR ACHARYA



Dr. Balvir Acharya received his education (Shastri and Acharya) from Gurukul Jhajjar, Haryana and passed his Master's degree from Gurukul Kangri University, Haridwar, India. He did his Ph.D. from Garhwal Uni-versity Shrinagar (U.P.) and D.Litt. from Agra University, Agra. Apart from the fact that he has to his credit many publications, he com-bines admirably the twin qualities of an ef-fective incisive teacher and a professor. He is a learned San-skrit Scholar who is well versed in Vedic literature. He is an avid Preceptor/Preacher of Vedic Hindu Culture, Religion and Phi-losophy. He has, over a period of time, gained expertise in cur-ing chronic maladies with the help of yogic, Acupressure and Su-jok therapies. His whole-hearted interest in social activities ... Presently he is a professor in the Department of Sanskrit, Maharshi Dayanand University, Rohtak, India and is also the Chairman of Maharshi Dayanand Chair and Head of the Department of Fine Arts.

RESPONSIBILITY OF PARENTS TO LEAD BY EXAMPLE IN THE LEARNING OF VEDIC VALUES

To acquire values and their subsequent inculcation in life is most essential. The use of the mind, speech, and actions in a harmonious way dictates one's code of conduct. This is what forms the personality of a human being. A high code of conduct in one's own life is very essential. This also creates an example for making the life better and showing the proper path in life for future generations. If we are thinking one thing, saying some-thing else, and behave in an entirely different manner, such a method of conduct will never create an example for society and especially for our children. The teachings of the Vedas are im-portant in our entire life from birth to death. They lead us through the path of life. Following Vedic teachings can lead to a total development of one's personality, leading to peace, happiness, and a state of bliss (anand) in the family, society, nation, and the world as a whole. We can conclude therefore that if parents lead the life of honesty and justice and provide selfless service to the society, children are influenced the most.

****

DR. SUDHIR ANAND



Dr. Sudhir Anand professionally is a pe-diatrician and a kidney specialist for children. He is currently a Professor of Pediatrics at UCLA School of Medicine. He grew up in India for the first 23 years of his life and was raised in the Vedic traditions. Both his par-ents were active in Arya Samaj. His mother Shrimati Sushila Anand for several years was President of the Prantiya Arya Mehila Pratinidhi Sabha and his father Shri Jia Ram Anand was Presi-dent of Arya Samaj Greater Kailash Part II. His mother performed Havan every morning in their home. His interest in the Vedic religion began since he was a young child and during the col-lege years he spent time during summer vacations at Gurukul Jhajjar. He also had the good fortune of learning from several eminent Vedic scholars: Pandit Harisharan Ji Sidhantalankar, Swami Omanand Ji Saraswati and Swami Satyam Ji. He is cur-rently President of Arya Samaj of Southern California. In year 2000 he wrote a book The Essence of the Hindu Religion: with an introduction to Vedas and Yoga, which is in its third printing. The book is based on the Vedas and other Vedic Scriptures.

THE ULTIMATE GOAL AND ASPIRATION OF VEDIC VALUES

Moksha refers to the soul attaining God and experiencing infinite bliss and deep enlightenment. The absolute goal of all souls is to eventually attain moksha. According to the Vedas and Upanishads, after the death of the physical body, almost all souls are reborn as a human being or some other life form; however, a select few are liberated from the cycle of rebirth for a very pro-longed period and attain moksha. The means for attaining moksha is to live by the Vedic values i.e. perform karma accord-ing to dharma, practice meditation with faith and devotion, fur-ther one's spiritual knowledge and do selfless deeds (Nishkama Karma). Together these things constitute the path of yoga. Over time, when these practices become so intense that a person totally devotes his or her life to seeking God (Eeshwar Pranidhan) and helping others (Nishkama Karma) and not doing any deeds for personal gratification, then during his/her life, the person at-tains kaivalyam (counter part of moksha in a living person) and after the death of the physical body the person's soul is liberated i.e. moksha is attained. The talk underscores the importance of Vedic values in attaining this ultimate goal.

डॉ० कथूरिया का काव्य संकलन 'निर्माण का सत्य'

डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया के कविता संकलन – 'निर्माण का सत्य' का लोकार्पण जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ० सुधेश, 'राष्ट्र किंकर' (साप्ताहिक) के संपादक श्री विनोद बब्बर एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ० राहुल ने किया। लोकार्पण करते हुए डॉ० सुधेश ने कहा कि अब तक मैं इस भ्रम में था कि डॉ० कथूरिया एक बड़े एवं उत्कृष्ट गम्भीर समालोचक हैं तथा उनका कविरूप उनके आलोचक रूप के नीचे दब गया है, किन्तु इस संकलन की कविताओं को देख सुन कर मेरा वह भ्रम टूट गया है और मुझे लगा है कि डॉ० कथूरिया जितने बड़े आलोचक हैं, उतने ही बड़े कवि भी हैं। उनकी कविताएं [illegible], मार्मिक, दमदार, उत्कृष्ट, सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हुई एवं पाठकों की चेतना को झकझोरने वाली हैं। डॉ० कथूरिया की कविताओं को क्रांतिधर्मा बतलाते हुए डॉ० राहुल ने कहा कि सामाजिक विकृतियां हों या राजनीतिक विद्रूपताएं कथूरिया के कवि ने बड़ी कलात्मकता से उन्हें अभिव्यक्ति प्रदान की है। डॉ० कथूरिया की मानसिकता भारतीयता की सुगन्ध से सम्पृक्त है तथा इनकी कविताएं मानवीय संवेदना से सराबोर हैं। आलोचक डॉ० राजेन्द्र भारद्वाज ने डॉ० कथूरिया की कविताओं की राष्ट्रीय चेतना, मानव मूल्यों से जुड़ाव एवं सामाजिक दायित्वबोध पर विशेष प्रकाश डाला। 'निर्माण का सत्य' की छान्दस् – अछान्दस् कविताओं के सौन्दर्य को उद्घाटित करते हुए हिन्दी सेवी डॉ० श्याम लाल ने कहा कि संकलन की कविताएं व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व के निर्माण से जुड़ी हैं तथा इनकी भावभूमि अन्याय, अनाचार, शोषण, भ्रष्टाचार आदि के विरोध तथा मानव मूल्यों से जुड़ाव की है। इस अवसर पर सर्वश्री धनसिंह खोवा 'सुधाकर' देशबन्धु, प्रदीप कुमार, जगदीशचन्द्र गुलाटी, लक्ष्मीनारायण भाटिया आदि ने भी 'निर्माण का सत्य' के कवि को बधाई देते हुए अपने बहुमूल्य विचार रखे।

गंगाजल से गंगा का अर्चन करते हुए कविवर डॉ० ओमप्रकाश भाटिया 'अराज', श्रीमती शीला सक्सेना, सर्वश्री विनोद बब्बर, गंगाराम उज्जवल, राजेन्द्र नटखट, 'सुधाकर' आदि ने सरस, मार्मिक, प्रेरक कविताओं का पाठ किया। लोकार्पण के अवसर पर, बानगी के तौर पर, प्रकाशित संकलन से अपनी कुछ कविताओं का सस्वर पाठ कर डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया ने श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। अखण्डता संग्राम के खचाखच भरे सभागार के सभी श्रोताओं ने इन कविताओं का बारम्बार करतल ध्वनि से स्वागत किया। 'अखण्डता संग्राम' द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का सफल संचालन श्री सुरेन्द्र कुमार मोंगिया ने किया। श्रीमती शकुन्तला मोंगिया के सौजन्य से सरस जलपान के उपरान्त समारोह सम्पन्न हुआ।

– **सुरेन्द्र कुमार मोंगिया**

आर्य समाज विज्ञान नगर, कोटा में सघन वृक्षारोपण

दिनांक १५ जुलाई, २००७ साप्ताहिक यज्ञ एवम् सत्संग के पश्चात आर्यसमाज विज्ञान नगर के विशाल प्रांगण में सघन वृक्षारोपण का कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि हमारी संस्कृति में वृक्षों को सहानुभूति, प्रेम, आदर, सम्मान प्राप्त है। मनुष्य की तरह सुख दुख, मृत्यु–शोक, हर्ष विशाद का प्रभाव वृक्षों पर भी पड़ता है। वनोषधि के रूप में तो इनके ऋण से मनुष्य जाति उऋण नहीं हो सकती।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व पार्षद ईश्वर गंभीर ने कहा कि वर्षाकाल में वृक्षारोपण को जन आन्दोलन बनाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को एक पौधा लगाकर उसके संरक्षण की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

उपप्रधान जे०एस० दुबे ने कहा कि यज्ञ एवम् वृक्षारोपण द्वारा ही हम पर्यावरण को शुद्ध रख सकते हैं तथा योग के द्वारा मानसिक पर्यावरण को स्वच्छ रख सकते हैं। आर्य समाज गायत्री विहार के



प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि प्रत्येक आर्यसमाज में प्रांगणों में औषधीय, छायादार एवम् फलदार वृक्ष लगाने चाहिए।

आर्यसमाज रेलवे कालोनी के उपप्रधान हरिदत्त शर्मा ने कहा कि आज हमारे देश के जंगल कट रहे हैं। वर्षा के जल संरक्षण के अभाव में जल संकट गहराता जा रहा है। अब मनुष्य के चेतने का समय है नहीं तो आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी।

इस अवसर पर बड़ पीपल, नीम, आंवला, पलाश, विल्व पत्र, अशोक, कनैर, हरसिंगार, अमलताश आदि के १०१ पौधों लगाये गए। अन्त में धन्यवाद आर्यसमाज के प्रधान महेन्द्र रस्तोगी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री दिनेश शर्मा ने किया।

इस अवसर पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री कैलाश बाहेती, राकेश चड्ढा, अशोक अग्निहोत्री, डॉ० के०एल० दिवाकर, श्योराज वरिष्ठ, अनिल दुबे, श्री आर.एस. ओझा, दरियाव सिंह देशवाल, सोमेश गांधी, श्रीमती रामराजी देवी, श्रीमती गीता शर्मा आदि ने पौधारोपरण किया और पौधों को सारसम्भाल की जिम्मेदारी ली।

– **दिनेश शर्मा, मंत्री**, आर्यसमाज विज्ञान नगर, कोटा जं.

ईश्वर का स्वरूप - एक लघु दृष्टि

ईश्वर कौन है ? उसका क्या नाम है ? उसका स्वरूप क्या है ? यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में परमात्मा का वर्णन करके बतलाया गया है कि परमात्मा का नाम ओ३म् है। वह आकाशवत सर्वव्यापक है और ब्रह्म – सर्वतो महान है। 'ओ३म् खं ब्रह्म'

यजु० ४०/१७

योगीराज पतंजलि ने ईश्वर को निरतिशयं कहा है जिससे अधिक और न हो (सबसे अधिक) उसको निरतिशयं कहते हैं।

'तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम' योग० समाधिपाद २५

अर्थात् ईश्वर में इतना ज्ञान है कि उसके बराबर या उससे अधिक ज्ञान किसी में भी नहीं हो सकता। अर्थात् ईश्वर सर्वज्ञ है। जबकि जीव अल्पज्ञ और प्रकृति अज्ञ (जड) है। ईश्वर में जो निरतिशयं ज्ञान है, वह ईश्वर के (सर्वज्ञबीजम) सर्वज्ञ होने के कारण है। ईश्वर में इतना ज्ञान है कि उसके बराबर, या उससे अधिक किसी का भी नहीं हो सकता। आगे कहा है – स एष पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात।

योग० समाधिपाद २६

अर्थात् वह ईश्वर पूर्व गुरुओं (ऋषियों, महर्षियों का भी गुरु है – काल के द्वारा नष्ट न होने से ईश्वर प्रदत्त ज्ञान को प्राप्त करके ही कोई शरीरधारी व्यक्ति गुरु बनने में समर्थ होता है इसलिए यह परमेश्वर सृष्टि के आदि से लेकर अब तक जितने भी ऋषि, महर्षि, अध्यापक, उपदेशक इत्यादि गुरु हुए हैं, तथा जो आगे होंगे, उन सबका भी गुरु है। क्योंकि वह काल से कभी नष्ट नहीं होता। वह अमर है।

इसी प्रकार से वह पिछली सृष्टियों में भी सबका गुरु था और आगे, आने वाली सृष्टियों में भी सबका गुरु रहेगा।

और 'तस्य वाचकः प्रणवः'

योग० समाधिपाद २७

उस ईश्वर का वाचक बताने वाला शब्द नाम प्रणव = ओ३म् है।

योगिराज पतंजलि ने उसकी प्रणव – ओ३म् के जप का विधान करके उसके फल का निरुपण अगले दो सूत्रों में इस प्रकार किया है – 'तज्जपस्तदर्थभावनम्।'

समाधिपाद २८

उस ओ३म् शब्द का जप करना चाहिए और उसके अर्थ का अर्थात् ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव का मन में विचार करना चाहिए।

और ततः प्रत्येकचेतनाधिगमोप्यन्तरायाभावश्च

समाधिपाद २९

उस ओ३म् शब्द का जप करने तथा उसके अर्थ (ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव) का विचार करने से ईश्वर का साक्षात्कार होता है तथा योग के विघ्नों का विनाश होता है।

यजर्वेद के चालीसवें अध्याय, मंत्र ८ में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन बड़े ही सुन्दर ढंग से इस प्रकार किया गया है –

सपर्यगच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर शुद्धम पापविद्धम कविर्मनीषी परिभू स्वयंभू याथातथ्यतोर्थान व्यदधान शाश्वतीभ्यः समाभ्यः।

वह ईश्वर सर्वव्यापक है (परि आगत) जगदुत्पादक (शुक्रम्), शरीर रहित, शारीरिक विकार रहित, नाडी और नस के बन्धन से रहित, पवित्र, पाप से रहित, सूक्ष्मदर्शी, ज्ञानी, सर्वोपरि (वर्तमान), स्वयं सिद्ध, अनादि है और वह जीव के लिए, ठीक कर्म फल का विधान करता है।

ओं असतो मा सदगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय।

ओ३म् सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।

– **चित्तरंज्जन वत्स**
ई – ८५ अन्सारी नगर
नई दिल्ली – ११००२६

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मन्दिर जनकपुरी बी ब्लॉक, नई दिल्ली

प्रधान : डॉ० सुन्दर लाल कथूरिया
मंत्री : श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी
पुस्तकाध्यक्ष : श्रीमती पुष्पा खुराना

भोजन करते समय टी.वी. न देखें। भोजन से पूर्व भोजन मन्त्र अथवा सामान्यतः किसी भी भाषा में ईश्वर का धन्यवाद एवं

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP) 01/7116/2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

पृष्ठ १ का शेष

अमेरिका सभा के 17वें आर्य महासम्मेलन में...

और साथ ही मानवतावाद की व्यापक विचारधारा का सन्देश मिलता है।

भारत के कई सेवा, शिक्षा तथा धर्म प्रचार कार्यों में अमेरिका के आर्य नेताओं का सहयोग सदैव प्राप्त होता रहता है उसके लिए सभा प्रधान जी ने समूचे आर्य जगत की ओर से उनका धन्यवाद किया। विशेष रूप से हाल ही में सुनामी सहायता कार्यों में श्री देव महाजन, श्री गिरीश खोसला तथा श्री शेखर अग्रवाल, श्री अरुण कुन्द्रा आदि ने जिस प्रकार से सहायता एकत्र करके भेजी है उससे पांडिचेरी में अच्छा कार्य प्रारम्भ हो गया है।

उन्होंने कहा कि हम सार्वदेशिक सभा की ओर से यह प्रयास कर रहे हैं कि अंग्रेजी भाषा में अच्छे विद्वान भी अमेरिका तथा अन्य देशों के लिए भेजे जाए।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री देव महाजन जी ने कहा कि हमारी सभा के अत्यन्त योग्य आर्यजनों की अति सुन्दर टीम ने इस महासम्मेलन का आयोजन किया है। गत वर्ष हमने विशेष व्यवस्थाओं को सूचिबद्ध करके प्रचार कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने का प्रयास किया है।

अपने डी०ए०वी० संस्कृति विद्यालय ग्रेटर हॉस्टन के द्वारा तैयार नैतिक शिक्षा तथा हिन्दी प्रचार कार्यक्रम को अमेरिका सभा की समस्त आर्यसमाजों के माध्यम से लागू करने का संकल्प किया है। आर्यसमाज के सदस्यों में परस्पर सम्पर्क तेज करने के लिए एक मासिक समाचार पत्र भी प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया है।

श्री महाजन जी ने कहा कि अमेरिका के जन सामान्य के प्रयोग के लिए आर्यसमाज का परिचय देते हुए एक सुन्दर पुस्तिका का निर्माण भी किया जाएगा। समूचे अमेरिका में समस्त आर्यसमाजों द्वारा एक समान यज्ञ पद्धति को लागू करने के लिए भी एक पुस्तक का निर्माण किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि प्रचार का सारा दायित्व श्री केवल आहलूवालिया जी के नेतृत्व में गठित समीति कर रही है। आर्यसमाज के परिचय सम्बन्धित पुस्तिका तैयार करने के लिए डॉ० सुधीर आनन्द जी ने विशेष प्रयास किए हैं। इसके अतिरिक्त डॉ० प्रेमचन्द श्रीधर जी ने कई पुस्तकों का निर्माण किया है।

उन्होंने कहा कि अमेरिका सभा को अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के समय में सहयोग देने वाला केवल एक ही महान व्यक्तित्व हमारे बीच में है। यह कहते हुए उन्होंने तालियों की गडगडाहट से श्री गिरीश खोसला जी का समूहिक अभिनन्दन किया।

इस महासम्मेलन को देश विदेश से पधारे अनेकों वैदिक विद्वानों ने सम्बोधित किया। आध्यात्मिकता, सामाजिकता और संस्कृति के सिद्धान्तों से परिपूर्ण उन प्रवचनों से अमेरिका के आर्यजनों का विशेष मार्गदर्शन सम्भव हो पाया है। कुछ वैदिक वक्ताओं के प्रवचनों की रिपोर्ट एक पृथक लेख के रूप में इसी अंक में प्रकाशित है। □

प्रतिष्ठा में

10150 पुस्कालयाध्यक्ष (12/99)
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

नि[illegible]

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग
प्रधान : डॉ० के०के० कौशिक
मंत्री : श्री विनीत श्रीवास्तव
कोषाध्यक्ष : श्री सुजीत खरे

आर्यसमाज शिवाजी नगर, गुड़गांव
प्रधान : श्री कन्हैया लाल आर्य
मन्त्री : श्री विद्याभूषण शास्त्री
कोषाध्यक्ष : श्री महेन्द्र प्रताप

आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली
प्रधान : श्री बिशम्बर नाथ अरोड़ा
मन्त्री : श्री जगदीश राज मल्होत्रा
कोषाध्यक्ष : श्री सुभाष चोपड़ा

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, वाराणसी
प्रधान : श्री वेद प्रकाश आर्य
मन्त्री : श्री प्रमोद आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री रवि प्रकाश आर्य

आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली
प्रधान : श्री गजेन्द्र सिंह सक्सेना
मन्त्री : श्रीमती राजकुमारी शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री यशपाल

आर्य समाज भिलाई नगर, दुर्ग
प्रधान : श्रीमती सन्तोष प्रभा
मन्त्री : श्री जितेन्द्र सल्होत्रा
कोषाध्यक्ष : श्रीमती विमला श्रीवास्तव

वेदप्रचार मंडल उ०प्र० दिल्ली
प्रधान : श्री भजन प्रकाश आर्य
महामन्त्री : श्री दुर्गा प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री व्रतपाल भगत

आर्यसमाज सुदामा नगर, इन्दौर
प्रधान : श्री ओम प्रकाश आर्य
मन्त्री : श्री भंवर सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री रामशरण भल्ला

आर्यसमाज बड़ाबाजार, कलकत्ता
प्रधान : श्री अरुण गुप्ता
महामन्त्री : श्री आनन्ददेव आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री खुशहालचन्द्र आर्य

आर्यसमाज पुरानी मण्डी, जम्मू
प्रधान : श्री राजीव सेठ
महामन्त्री : श्री अरुण आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री चमन लाल बजाज

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन : 43580554) से मुदित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के लिए प्रकाशित। ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये



सार्वदेशिक

साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४६ अंक ६ २ सितम्बर से ८ सितम्बर, २००७ तक दयानन्दाब्द १८५ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ सम्वत् २०६४ भा०कृ०

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा 24 अगस्त को निर्णय घोषित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन अप्रैल, 2007 में सम्पन्न हो चुका

किसी को आपत्ति हो तो कानूनी कार्यवाही करे

देवरत्न आर्य ने अनुशासनहीन तत्वों के साथ साठ-गांठ करके संघर्ष को तार-तार करने का प्रयास किया

अग्निवेश की गैर कानूनी हरकतों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही शीघ्र

देश विदेश की आर्यसमाजों में प्रसन्नता की लहर

दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय दिनांक २४ अगस्त, २००७ से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पर मण्डराते असंवैधानिकता के बादल अब छटने लगे हैं।

दिल्ली उच्च न्यायालय के उक्त निर्णय में इस तथ्य को स्पष्ट रूप से लिखा गया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन अप्रैल २००७ में हो चुका है। विदित हो कि अप्रैल, २००७ में आर्य समाज दिवान हाल दिल्ली में सम्पन्न निर्वाचन में श्री मिठाई लाल सिंह जी को प्रधान, श्री स्वतन्त्र कुमार को मन्त्री तथा श्री अरविन्द कुमार जी को कोषाध्यक्ष तथा सम्पूर्ण अन्तरंग सभा के सदस्यों को चुना गया था।

वर्ष २००४ में अग्निवेश तथा कुछ अन्यों द्वारा असंवैधानिक रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का स्वयं को पदाधिकारी घोषित करने के उपरान्त तत्कालीन मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने दिल्ली उच्च न्यायालय में यह वाद प्रस्तुत किया था। मुकदमें की सुनवाई के दौरान २८ फरवरी, २००५ को अग्निवेश ने गुण्डागर्दी से सभा भवन में कई असामाजिक तत्वों के साथ प्रवेश करके घुसपैठ कर डाली। दिल्ली उच्च न्यायालय में लम्बी बहस के बाद एक न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री बी०एन० चतुर्वेदी ने फैसला सुरक्षित रखने के बावजूद केस किसी अन्य न्यायाधीश को स्थानान्तरित कर दिया। इसके बाद पुनः लम्बी सुनवाई का सिलसिला न्यायमूर्ति श्री ए०के० सीकरी की अदालत में चला। सुनवाईयों के इस लम्बे दौर में श्री रामफल बंसल वरिष्ठ अधिवक्ता तथा श्री विमल वधावन के तप-पूर्ण संघर्ष का परिणाम निकला कि १७ अप्रैल २००७ को श्री सीकरी ने भी फैसला सुरक्षित कर दिया।

परन्तु ४–५ दिन के बाद ही श्री देवरत्न आर्य ने संगठनात्मक अनुशासन की सीमाए तोडते हुए धर्मपाल, राजसिंह आदि के अनुशासनहीन प्रभाव में एक पत्र जारी करके अग्निवेश के साथ समझौते की इच्छा व्यक्त कर डाली और यहां तक कह दिया कि यह समझौता अग्निवेश की इच्छा से अन्तिम रूप लेगा। इस पत्र के विरुद्ध अन्तरंग सभा ने जब अपना मत देवरत्न आर्य के खिलाफ व्यक्त किया तो बोखलाए देवरत्न आर्य ने अनुशासनहीन तत्वों के साथ सांठ गाठ करके सभा में दरारे उत्पन्न करने के घिनोने प्रयास प्रारम्भ कर दिए। कभी अन्तरंग सभा द्वारा नियुक्त श्री सुदर्शन शर्मा को कार्यकारी प्रधान पद से हटाने का पत्र, कभी झारखण्ड तो कभी हिमाचल प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के समानान्तर सभाएं गठित करने के प्रयास। देवरत्न आर्य की इन अनुशासनहीनताओं के विरुद्ध सार्वदेशिक न्याय सभा द्वारा २६–६–२००६ को दिए निर्णय से मानसिक और शारीरिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति को प्रधान पद से हटा दिया गया। २–७–२००६ को अन्तरंग सभा ने प्रधान पद की रिक्तता भरते हुए श्री मिठाई लाल सिंह जी को प्रधान चुना।

इस प्रकार बार–२ बोखलाहट में देवरत्न आर्य तथा उनके साथ लगे तत्व कुछ आर्य प्रतिनिधि सभाओं को भी गुमराह करते रहे और अपनी मजबूती दिखाने के लिए अदालत में एक निराधार प्रार्थना पत्र भी लगवा दिया कि श्री विमल वधावन को मन्त्री पद से हटाकर श्री प्रकाश आर्य को मन्त्री बनवा दिया गया है। अतः मुकदमें में उन्हें पक्षकार स्वीकार कर लिया जाए। उनकी यह निराधार और गैर कानूनी प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं हुई परन्तु इसका असर अग्निवेश विरुद्ध लड़ाई पर अवश्य पड़ने लग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनि सभा का विधिवत निर्वाच तत्कालीन सभा मन्त्री श्री विम वधावन आर्य के हस्ताक्षरयु निमन्त्रण पर सार्वदेशिक न्य सभा की देखरेख में २६ अ २००७ को आर्य समाज दीव हाल में आयोजित किया गया

इस निर्वाचन आयोजन विरुद्ध भी इन्हीं अनुशासनह तत्वों ने पुनः अग्निवेश के स मिलकर अदालत को २६ अ के निर्वाचन रोकने तथा सभा निर्वाचन अग्निवेश के स मिलकर अदालत की देखरेख करवाने की प्रार्थना की।

इस नई मौखिक प्रार्थना पक्ष में अग्निवेश तथा अनुशासनहीन तत्वों के अधिव पूरा जोर अदालत में लगाते परन्तु सार्वदेशिक सभा के व अधिवक्ता तथा न्याय सभा प्र श्री रामफल बंसल एवं श्री वि वधावन आर्य की तार्किक, कान और मौलिक दलीलों के सा इनकी एक न चली।

शेष पृष्ठ २

निर्णय की मूल प्रति प्राप्त करें

अदालत के निर्णय की मूल प्रति ईमेल द्वारा प्राप्त करने के लिए हमें ईमेल पर संदेश भेजें। हमारा ईमेल पता है – **sarvadeshiksabha@yahoo.co.in**

प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री देवरत्न आर्य विमल आर्य

यज्ञ क्या है ? (4)

– डॉ० भवानी लाल भारतीय

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" - यज्ञ सब श्रेष्ठ कर्मों से भी श्रेष्ठ कर्म है

गोस्वामी तुलसीदास ने ानस' के उत्तरकाण्ड में भविष्य थन के रूप में घोषित कर दिया ा कि कलियुग में नये–नये खण्डों की प्रधानता रहेगी और न मत–सम्प्रदायों के लोग स्वयं ो सर्वश्रेष्ठ घोषित करते रहेंगे। स कथन की सत्यता तब दिखाई जब मथुरा के एक भूत (दिवंगत) र्यसनाजी श्रीराम शर्मा ने गायत्री नाम से एक नया पंथ चलाया र मूढ़–मतियों को अपना शिष्य ाकर गायत्री मंत्र की कृत्रिम र्ति निर्मित की और उसकी डशोपचार पूजा आरम्भ की। को यह भी पता नहीं कि यत्री तो एक वैदिक छंद है र इस छंद में सहस्रों मंत्र वेद हेताओं में संकलित हैं। इनमें प्रसिद्ध मंत्र भी है जिसका ता (विषय) सविता (सर्व सृष्टि सर्जक–परमात्मा) है तथा जिसे र्षि विश्वामित्र ने संसार में ारित किया है। इस प्रेरणादायी में परमपिता से उस बुद्धि को ष्कृत करने की प्रार्थना की है जो मानव को प्रशस्त पथ चलने की शक्ति देती है।

जब सम्प्रदाय का आडम्बर ता है तो नाना प्रकार के विकृत काण्ड जन्म लेते हैं। इसी क्रम ायत्री के इन मूढ़ उपासकों ने मेध यज्ञ की कल्पना की और प्राचीन श्रौत कर्म के यथार्थ प्राय को न समझकर एक म्बरपूर्ण विधि रच डाली और र नगर में अश्वमेध यज्ञ के पर पाखण्डों का प्रचार करने । वस्तुतः वैदिक श्रौत यज्ञों विधियों को बनाने का अधि र किसी टॉम, डिक और हैरी, ैरे नत्थू खैरे को नहीं होता। ब्दियों पूर्व मूल वेद संहिताओं ाये यज्ञ विषयक संदर्भों को ार बनाकर हमारे पूर्वज ियों ने नाना यज्ञों का प्रकल्पन ा था। गीता में इसी तथ्य की निम्न प्रकार की गई है –

एवं बहुविधा यज्ञा वितता गो मुखे ।४।३२।।

अर्थात् इसी प्रकार वेदों के ार पर बहुविध यज्ञों की ल्पना की गई। महर्षि ायन तथा अन्य ऋषियों ने श्रौत ग्रंथों में राजसूय, मेध, वाजपेय आदि यज्ञों का त विधान लिखा तथा इनके द्वारा राष्ट्र को समुन्नत करने के उपाय बताए। इन यज्ञों की विधियों का यथार्थ अभिप्राय ब्राह्मण ग्रंथों में स्पष्ट किया गया।



कालान्तर में अज्ञान, स्वार्थ तथा मूढ़ता से अभिशप्त पुरोहित वर्ग ने यज्ञों में पशुहिंसा प्रचलित की तो यज्ञ संध्या का विकृततम रूप प्रकट हुआ। यज्ञों के नाम पर किए जाने वाले इस हिंसा काण्ड को देखकर चार्वाक आदि नास्तिकाचार्यों ने कहा –

वृक्षं छित्वां पशून् हत्वा कृत्वा रुधिर कर्दमम्।
यद्येवं गम्यते स्वर्ग नरकं केन गम्यते।।

हरे भरे वृक्षों को काटकर यूप वनाते हो और पशुओं को मार कर उनके रुधिर से यज्ञ की वेदी को अपवित्र करते हो। ऊपर से तुर्रा यह कि यह कहने से बाज नहीं आते कि इससे हमें स्वर्ग प्राप्त होगा। अरे मूर्खो, ऐसे दुष्कृत्यों से यदि स्वर्ग मिलता है तो नरक में जाने का कौन सा मार्ग है ? जब हिंसा–प्रधान यज्ञों का बोलबाला हुआ तो महावीर, बुद्ध आदि महापुरुषों ने हिंसामय यज्ञों की निंदा की और सदाचार मूलक, वैराग्य प्रधान श्रमण धर्म का प्रवर्तन किया।

वस्तुतः वैदिक श्रौत यज्ञों का वास्तविक रहस्य ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट किया और बताया कि यज्ञों के नाम पर गौ, अश्व, मेष, अज आदि पशुओं का वध क्रूर कर्म है जबकि गोमेध वाणी का पवित्रीकरण और अश्वमेध राष्ट्र को सबल, सशक्त और प्राणवान बनाने के लिए किया प्रयुक्त होने वाले मंत्र यजुर्वेद में आते हैं और मध्यकालीन महीधर जैसे तांत्रिक भाष्यकार ने उनके सभ्यता के प्रतिकूल तथा गर्हित अर्थ कर पवित्र यज्ञ संस्था को बदनाम किया है। गायत्री परिवार वालों ने यज्ञों के रहस्य को न समझकर अश्वमेध के नाम पर एक कपोलकल्पित विधि का निर्माण किया। यहां किंचित विस्तार में जाकर हम इस 'आश्वमेधिक महायज्ञ कर्मकाण्ड' की जांच करेंगे और देखेंगे कि ब्राह्मण और सूत्र ग्रन्थों में निर्दिष्ट विधियों की उपेक्षा कर श्रीराम शर्मा के इन मतान्ध अनुयायियों ने अश्वमेध यज्ञ को किस प्रकार विद्रूपित किया है।

हमारे समक्ष गायत्री परिवार वालों द्वारा संकलित 'आश्वमेधिक महायज्ञ कर्मकाण्ड विधि' है। उसका आरंभ गुरु–ईश वंदना से हुआ है। हमें हैरानी इस बात से हुई है कि सभी धार्मिक और आध्यात्मिक ग्रंथों का आरम्भ परमात्मा की स्तुति और वंदना से होता है जबकि मिथ्या अभिमानी इन गायत्री सम्प्रदाय वालों ने श्रीराम शर्मा को श्रौत स्मार्त तथा पौराणिक महायज्ञों का विशेषज्ञ बताया है। हमें तो इसमें भी संदेह है कि उक्त शर्मा जी को सामान्य संस्कृत ज्ञान भी था। उन्होंने प्रचलित भाष्यकारों की नकल कर स्वयं को अनेक शास्त्रों के भाष्यकार होने का दावा तो किया किन्तु उनके शास्त्रज्ञान की पोल तव खुली जब पता चला कि उनके किये वेद भाष्य सायणभाष्य की अंधी नकल मात्र हैं। तब उन्हें श्रौत–स्मार्त महायज्ञों का विशेषज्ञ वताना अपने मुंह मियां मिटठू बनना मात्र है। पौराणिक यज्ञों की कल्पना तो नितांत अर्वाचीन तथा अनार्ष है, कारण कि यज्ञों और महायज्ञों की विधियां मंत्र द्रष्टा ऋषि लोग बनाते हैं, अस्मदादि सदृश सामान्य लोगों को यज्ञ विधियां बनाने का अधिकार नहीं होता।

आगे इस लेखक ने मंगल श्लोकों में 'गजाननं–भूतगणाधि सेवितं' श्लोक लिखकर गणेश वंदना की है। ध्यातव्य है कि गजानन, गणपति अथवा विनायक संज्ञक कोई देवता वैदिक देवों की पंक्ति में नहीं है। मूल रूप में विनायक या गणेश एक अनार्य देवता थे जिन्हें कालान्तर में हिन्दू देव माला में स्थान दिया गया और [illegible] इस यजुर्मन्त्र को इस अपदेव से संबद्ध कर दिया गया। इस अनार्य तथा विघ्नकर्ता देव की हकीकत जानने के लिए डॉ० सम्पूर्णानन्द रचित गणेश (ज्ञानमण्डल, काशी) ग्रंथ दृष्टव्य है। इसी प्रकार गंगाधर – महादेव तथा भद्रकाली आदि पौराणिक देव देवियों का स्वतन वेद मर्यादा के विपरीत है।

इस विधि के निर्माता ने 'अपवित्रः पवित्रो वा' आदि जड़ मूर्तियों की पूजा में प्रचलित श्लोकों को (इनसे प्रतिमाओं पर जल प्रक्षिप्त कर उन्हें स्नान कराया जाता है) वैदिक मंत्र की संज्ञा दी है जो उसका अज्ञान है क्योंकि मूर्तियों की पूजा के ये श्लोक कालांतर में उस समय निर्मित हुए जब विशुद्ध वैदिक निराकारोपासना का लोप हो गया था और बाह्याडम्बर युक्त मूर्ति पूजा प्रचलित हो गई थी। वायु पुराण के इस श्लोक को वैदिक मंत्र कहना हिमाकत के सिवाय कुछ नहीं है। इसी प्रकार शिखा बंधन में विनियुक्त वाक्य 'चिद्रूपिणी महामाये' आदि सर्वथा कपोल कल्पित तथा अवैदिक हैं।

इस अश्वमेध यज्ञ के लिए गायत्री सम्प्रदाय के इस कथित याज्ञिक ने जो संकल्प वाक्य लिखा है उसमें भूकम्प निवारण, आधि–व्याधि, जरा मृत्यु, भय–शोकादि उपद्रवों के निवारण को इस यज्ञ का लक्ष्य या प्रयोजन बताया है। यह सब कहना उपचार मात्र है क्योंकि यज्ञ का उद्देश्य तो वही है जो वैदिक ग्रंथों में उल्लिखित है। जरा मृत्यु तथा भय शोकादि का निवारण यज्ञ से संभव नहीं होता। मृत्यु तो मानव की अंतिम, अपरिहार्य अवस्था है जिस पर विजय पाना किसी के लिए भी संभव नहीं है। इसलिए इस संकल्प वाक्य में निर्दिष्ट अश्वमेध के प्रयोजनों को अतिवादिता ही कहना उचित है। इस विधि के निर्माता ने चंदन धारण निमित्त गढ़े हुए श्लोक को लौकिक मंत्र कहा है। यह भी उसका साहस मात्र है क्योंकि मंत्र तो वैदिक ही होते हैं। यों तो कहने के लिए झाड़फूंक करने वाले तथा सांप, बिच्छू के विष को उतारने का दावा करने वाले भी अपने द्वारा कथित गलत सलत वाक्यों को मंत्र कहते हैं किन्तु वास्तव में ये मंत्र कहलाने के अधिकारी नहीं हैं। श्रीराम शर्मा के इन चेलों ने रक्षा सूत्र के नाम से सूत्र का एक धागा दक्षिण हस्त पर बांधने का एक नया आडम्बर चलाया और इसके लिए अथर्ववेद का एक मंत्र उन्होंने ढूंढ़ निकाला। यह पाखण्ड के अतिरिक्त कुछ नहीं है। □

पृष्ठ १ का शेष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का ......

इस बीच श्री सोकरी ने भी मुकदमा स्थानान्तरित कर दिया। २० अगस्त को मुकदमें की सुनवाई न्यायमूर्ति श्री संजय किशन कौल ने की तथा २४ अगस्त को जारी निर्णय में हालाकि उन्होंने तीन वर्ष की समयावधि बीत जाने के कारण मुकदमें को निष्फल कह कर समाप्त कर दिया परन्तु इस निर्णय के तथ्यों में विगत अप्रेल २००७ में सम्पन्न हुए निर्वाचन को तथ्य रूप में व्यक्त करते हुए कहा कि यदि किसी को इस चुनाव में आपत्ति हो तो वह उसके निराकरण के लिए उचित कानून कार्यवाही कर सकता है।

दिल्ली उच्च न्यायालय के इस निर्णय के गम्भीर अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि श्री देवरत्न आर्य की तरफ से प्रकाश आर्य के नाम पर खड़े अधिवक्ता तथा अग्निवेश के अधिवक्ताओं की दलील का एक ही तारतम्य रहा। जबकि वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बंसल ने सदैव अदालत में संवैधानिक पक्ष को रखते हुए एक ही सुदृढ़ दलील अदालत के समक्ष रखी कि २६ अप्रैल २००७ को जब विधिवत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन सम्पन्न हो चुका है तो अदालत को अग्निवेश के साथ मिलाकर नया निर्वाचन करवाने का कोई अधिकार नही है।

दिल्ली उच्च न्यायालय के इस निर्णय से समूचे आर्य जगत में हर्ष की लहर दौड़ गई। देश विदेश के विभिन्न भागों से सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी, मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार तथा न्याय सभा प्रधान श्री रामफल बंसल एवं पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य को बधाई सन्देश प्राप्त होने प्रारम्भ हो गए।

सभा मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार ने कहा कि अग्निवेश द्वारा बैंकों से बिना अधिकार के धन निकालने तथा अन्य गैर कानूनी हरकतों के विरुद्ध भी कानूनी कार्यवाही शीघ्र की जाएगी। □

ग्राम - कसैया, घरघोडा, रायगढ़ में नए आर्य समाज का गठन

कसैया (घरघोड़ा)। आर्यसमाज कसैया घरघोड़ा का २२ जून २००७ को विधिवत गठन किया गया। जिसमें प्रधान श्री उद्धवबारीक, मंत्री श्री उद्धवप्रसाद शास्त्री तथा कोषाध्यक्ष श्री हरिशंकर भोय घोषित किए गए। अंतरंग सदस्य सर्वश्री हिरेन्द्र बारीक, सुखसिंह बन्शीधर, पवन कुमार राठिया, आनन्दराम चौहान, श्रीमती सुभाषिनी घोषित किए गए। आर्यसमाज के प्रधान श्री उद्धव बारीक ने अपनी निजी जमीन लगभग १ एकड़ छत्तीसगढ़ प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा को देने की घोषणा की। जिसे आर्य समाज कसैया ने अपने अधिकार में ले यज्ञशाला बनाने का कार्य शीघ्र प्रारम्भ करने का वचन दिया।

महात्मा चैतन्यमुनि जी साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित



सुप्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता एवं वरिष्ठ साहित्यकार महात्मा चैतन्यमुनि जी को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए विशेषरूप से उनकी कृति 'उच्ची धारा रा धूपा' के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह पुरस्कार हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्रसिंह जी के करकमलों द्वारा हिमाचल प्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा होमलैण्ड होटल शिमला के सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। मुख्यमन्त्री जी द्वारा माल्यार्पण, हिमाचली टोपी एवं शाल देकर उनका सम्मान किया तथा पुरस्कार में स्मृति चिन्ह, प्रमाण–पत्र और इक्कतिस हजार रुपए की राशि प्रदान की गई। उल्लेखनीय है कि महात्मा जी की अब तक पैंतीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा इन्हें लगभग पच्चीस राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। महात्मा जी एक अत्यधिक लोकप्रिय प्रवक्ता के रूप में जाने जाते है तथा देश विदेश में अपने वैदिक प्रवचनों द्वारा मानव मूल्यों की स्थापना करके संसार का उपकार कर रहे हैं। उन्हें साहित्य का सर्वोच्च पुरस्कार मिलना समूचे आर्यजगत् के लिए गौरव की बात है। महात्मा जी एवं उनका समूचा परिवार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मिशन के लिए पूर्णतया समर्पित एवं निस्वार्थ भाव से कार्य कर रहे हैं।

आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य सातवीं बार विदेश प्रचार यात्रा पर

२६ अगस्त २००७ को अहमदाबाद से विमान द्वारा वानप्रस्थ साधक आश्रम के प्रबन्धक न्यासी व दर्शन योग महाविद्यालय के आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी आर्य, विदेश के लिए प्रस्थान करेंगे। विभिन्न संस्थाओं के आमन्त्रण पर आप मारीशस, इंग्लैंड के साथ–साथ कई अरब देशों जैसे कुवैत, मस्कत, यु.ए.ई. के विभिन्न नगरों में प्रवचन, शिविर, यज्ञ, सत्संग आदि के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करेंगे। आप मॉरिशस में श्री मोहनलाल जी मोहित की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित समारोह में मार्गदर्शन करेंगे। इससे पूर्व आप २००१ से प्रारम्भ करके कई बार विदेशों में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ गये हैं। इन प्रचार यात्राओं में आपने वैदिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक प्रवचनों के साथ–साथ अनेक नगरों में अल्पकालीन क्रियात्मक योग शिवरों का भी आयोजन किया था। इससे लगभग २० के करीब नगरों में हजारों व्यक्तियों को वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का परिज्ञान हुआ और उन लोगों हजारों रुपये का साहित्य निःशुल्क वितरित किया गया। आचार्य जी की विदेश प्रचारयात्राओं का उद्देश्य धन, मान, प्रतिष्ठा प्राप्त करना अथवा पर्यटन आदि का नहीं होता है। सन २००४ में आपने दो स्थानों (लैस्टर तथा इल्फार्ड) में आर्य संगठनों की स्थापना की थी और भवन हेतु हजारों पौण्ड की राशि का संगृहीत करायी थी।

— ब्र० दिनेशकुमार, सचिव

स्वामी प्रसन्नानन्द जी नहीं रहे

महर्षि दयानन्द के परमभक्त एवं वैदिक सिद्धान्ती स्वामी प्रसन्नानन्दजी सरस्वती का १५ जून २००७ को महाराष्ट्र के हतनुर (तह० सेलू, जिला जालना) में अल्पसी बिमारी के कारण निधन हो गया। वे ८४ वर्ष के थे। वेदादि ग्रंथों के साथ ही स्वामीजी ज्योतिष शास्त्र एवं गणित विद्या के अभ्यासक थे। इस विषय पर उन्होंने बर्लिन (जर्मन) से पी०एच०डी० उपाधि प्राप्त की थी। स्वामी जी अपना मूल निवास स्थान अंबाला (हरियाणा) बताते थे। संन्यास लेने से पूर्व वे एक बहुत बड़े शासकीय अधिकारी थे। प्रशासनिक कार्य उन्होंने हॉलैण्ड आदि देशों में रहकर किया।

अपने गुरुदेव की इच्छा के अनुसार स्वामीजी ने महाराष्ट्र भूमि को अपना प्रचार क्षेत्र बनाया। १० वर्ष पूर्व वे सेलू के निकट हतनुर ग्राम में आये और यहां छोटा सा आश्रम बनाकर विद्याध्ययन, साधना एवं लोगों का पथप्रदर्शन करते रहे।

स्वामीजी का वैदिक पद्धति से अन्त्येष्टि संस्कार किया। अन्त्येष्टि संस्कार में सर्वश्री मोहन आर्य, डॉ० वीरेन्द्र शास्त्री, संतोष आर्य, बद्रीप्रसाद सोनी, भैय्यालाल अहिर, चंदुलाल जोगडे आदि आर्यजन सम्मिलित थे।

धर्माचार्य चाहिए

महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) स्थित आर्यसमाज टंकारा के लिए एक धर्माचार्य की आवश्यकता है। बिजली, पानी व रहने की सुविधा के साथ योग्यतानुसार दक्षिणा दी जायेगी।

पारिवारिक जिम्मेदारियों से निवृत वानप्रस्थी को प्राथमिकता दी जाएगी।

ऋषि भूमि में रहकर सेवा करने के इच्छुक अपनी फोटो व प्रतिष्ठित व्यक्ति या आर्यसमाज का सिफारिश पत्र के साथ आवेदन करें।

— हंसमुख परमार, मंत्री आर्यसमाज, टंकारा, जिला - राजकोट (गुजरात)

प्रचार कार्यक्रमों के आगामी आकर्षण

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का ४१वां स्थापना दिवस–वार्षिकोत्सव समारोह मंगलवार दिनांक २६ सितम्बर से मंगलवार २ अक्टूबर, २००७ तक किया जायेगा।

इस समारोह में निःशुल्क योग साधना व चिकित्सा शिविर का आयोजन भी किया जायेगा। इस समारोह के उपलक्ष्य में श्री स्वामी विश्वङजी के पावन सान्निध्य में ११ कुण्डीय यजुर्वेद पूर्वाद्ध वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया है जिसकी ब्रह्मा डॉ० अन्नपूर्णा जी होंगे।

समारोह में सर्व श्री नरेन्द्र वशिष्ठ, सत्यपाल मुधर, श्यामवीर आदि के भजन प्रस्तुत होंगे तथा आचार्य अखिलेश्वर, स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती तथा डॉ० मुमुक्षु आर्य अपने विचार प्रकट करेंगे।

आर्यसमाज गंगायचा अहीर बीकानेर, हरियाणा

आर्यसमाज बीकानेर – गंगायचा अहीर, जिला रेवाड़ी (हरियाणा) का ६५वां वार्षिकोत्सव दिनांक २२ वा २३ सितम्बर २००७ को मनाने का निश्चय किया गया है।

— प्रो० धर्मवीर आर्य, मन्त्री

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

१२वां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव ५ से ७ अक्तूबर तक नवलखा महल, उदयपुर में आयोजित किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में डॉ० भवानीलाल भारतीय जी के सौजन्य से सत्यार्थ प्रकाश प्रदर्शनी तथा पूज्य स्वामी (डॉ०) ओम आनन्द सरस्वती, महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती तथा स्वामी मेधानन्द जी (मुम्बई) का अभिनन्दन किया जाएगा।

— अशोक आर्य

वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न

६ अगस्त, ०७ को ग्राम कलछीना के राजकीय कन्या इण्टर कालेज में अमृत संस्था द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इससे पूर्व एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने वृक्षों की महत्ता पर व उनकी उपयोगिता पर भाषण तथा लघु नाटिका द्वारा प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में डॉ० रीता बक्शी प्राचार्या श्रीमती गिन्नी देवी स्नातकोत्तर महाविद्यालय ने विस्तार से प्रकृति में उपस्थित गैस एवं उसके ऊर्जा स्त्रोत की विस्तृत जानकारी दी तथा बताया कि धरती पर केवल मानव ही ऐसा प्राणी है जो परजीवी है अर्थात् प्रकृति में उपस्थित प्रत्येक वस्तु उसे जीवन देती है। अतः



इसको बचाना है। श्री अमानुल्ला ने कहा कि धरती की उर्वरा क्षमता इसकी वनस्पति पर निर्भर है।

इस अवसर पर डॉ० उपेन्द्र कुमार आर्य, श्रीमती सविता पंवार प्रधानाचार्या, कार्यक्रम की संचालिका डॉ० (श्रीमती) अनिला सिंह आर्या, कार्यक्रम के संयोजक श्री सुशील कुमार ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सभी अध्यापिकाएं, सर्वश्री राजकुमार, आसमुहम्मद, महापाल सिंह, उपेन्द्र, जीतेन्द्र, मास्टर ननुआ, डॉ० उमर, कामिल, मो० [illegible] आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 2-09-07 से 8-09-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 30/31-08-07

श्रावणी कार्यक्रमों की धूम

आर्यसमाज बी ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली

ईश्वरीय वाणी वेद के मर्म को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए डॉ० अरुण देव शर्मा के ब्रह्मत्व में यज्ञ श्रृंखला तथा स्वामी श्रेयोनन्द विदेह यति जी एवं डॉ० सूर्यप्रकाश स्नातक जी के द्वारा वेदोपदेश सम्पन्न किए गए। – डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया, प्रधान

आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली

२८ अगस्त से ४ सितम्बर श्रावणी सप्ताह। २ सितम्बर को हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस के अवसर पर स्वतन्त्रता सैनानियों का सम्मान किया जाएगा। इस अवसर पर दिल्ली नगर निगम के चेयरमेन श्री सुभाष आर्य मुख्य अतिथि होंगे। ४ सितम्बर को योगीराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर माननीय पं० परमानन्द जी के विशेष प्रवचन। – डॉ० रविकान्त, मन्त्री

आर्यसमाज अशोक विहार-३, दिल्ली

४ सितम्बर को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर यज्ञ के उपरान्त श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणाएं प्रदान करने के लिए श्री आर्य तपस्वी सुखदेव, डॉ० रघुवीर वेदालंकार तथा डॉ० शारदा, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित आदि विद्वानों एवं विदुषियों का प्रवचन कार्यक्रम आयोजित होगा। – अशोक आहूजा, मन्त्री

आर्यसमाज जंगपुरा, भोगल

२८ अगस्त से ४ सितम्बर तक श्रावणी सप्ताह का आयोजन तथा वेद प्रवचन, भजनोपदेश एवं महायज्ञ आयोजित किया जाएगा। – अनिल सब्बरवाल, मन्त्री

आर्यसमाज दारव्हा, मध्य विदर्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य विदर्भ के प्रधान पं० सत्यवीर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में श्रावणी सप्ताह में कई विद्वानों और विदुषियों के प्रवचन। – सतीश डागाजी

आर्यसमाज राजौरी गार्डन, दिल्ली

२० से २६ अगस्त तक डॉ० रमा शर्मा, आशा माता जी, श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, डॉ० सुनीति आर्या, डॉ० धर्मदेव, डॉ० सुषमा शर्मा, पं० गणेश विद्यालंकार आदि के द्वारा वैदिक प्रवचनों तथा श्री इन्द्रजीत महाजन, श्री सुभाष आर्य, श्रीमती शशि तलवार के सान्निध्य में श्रावणी पर्व का आयोजन किया गया। – दयानन्द मदान, मन्त्री

प्रतिष्ठा में
कुलपति निवास
गुरुकुल कांगड़ी वि०
हरिद्वार (उत्तरांचल)

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य विदर्भ के निर्देशन में हंसापुरी आर्य समाज द्वारा चिकित्सालय स्थापित

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य विदर्भ के निर्देशन में नागपुर की सर्वप्रमुख आर्य समाज हंसापुरी में 'महर्षि चेरिटेबल हस्तपाल' स्थापित कर दिया गया है।

इसमें समाज के सभी वर्गों के लिए अल्प मूल्य पर चिकित्सा व्यवस्था की गई है। लगभग ७० से १०० महानुभाव प्रतिदिन इस चिकित्सालय का लाभ उठा रहे हैं। निकट भविष्य में एलोपेथी के साथ–साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा का भी प्रबन्ध किया जाएगा।

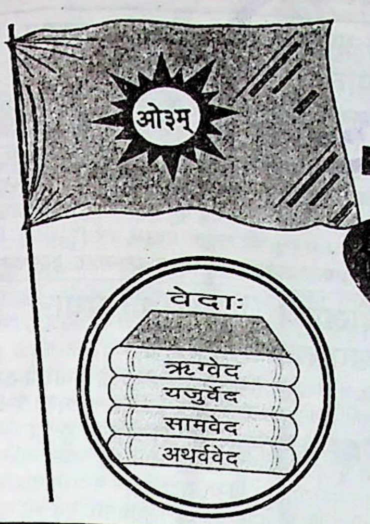
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी शीघ्र ही इस चिकित्सालय का दौरा करें। सभा की तरफ से अल्प मूल्य पर सत्यार्थ प्रकाश वितरण की व्यवस्था भी चिकित्सा लाभ प्राप्त करने वाले लोगों के लिए की गई है।

मध्य विदर्भ सभा के मन्त्री श्री अनिल शर्मा ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि सभा द्वारा परोपकारार्थ कार्यों की श्रृंखला में यह एक नई कड़ी है। सभा इन परोपकारी कार्यों के साथ–साथ वैदिक धर्म प्रचार में भी बराबर जुटी है। □

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन : 43580554) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित। ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रु



सार्वदेशिक
साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४६ अंक १० | १६ सितम्बर से २२ सितम्बर, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | भा०शु

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के महान संस्थापक, सच्चे तपोपूत सन्त
पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी के सिद्धान्त –
कष्ट, तपस्या, दार्शनिकता, देशभक्ति, समाज सेवा और स्वयं को सर्वस्व आहूत कर

अग्निवेशी गुण्डागर्दी तो सरकारी सहायता पर नाच रही है

परन्तु

देवरत्न-राजसिंह की स्वार्थ-लोभ पर आधारित गुटबाजी भी कब्जे करने के लिए आतुर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पर स्वार्थी, असामाजिक तत्व, बड़े बड़े भू-माफिया अपनी गिद्ध दृष्टि पिछले लगभग ७-८ वर्षों से लगाए बैठे हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की तपस्या, लगन और देशभक्ति का जीवन्त प्रमाण है। पूज्य स्वामी जी ने अपने जीवनकाल में ही सिद्धान्ततः सरकारी अनुदान के रूप में मिलने वाली सहायता को बड़े स्पष्ट सुदृढ परन्तु विनम्र शब्दों में ठुकरा दिया था। उस समय सरकारी सहायता का अर्थ ब्रिटिश सरकार की सहायता लेना था। सम्भवतः इसी बात को आगे चलकर आर्य नेताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द जी का सिद्धान्त समझ लिया और भारत को स्वतन्त्रता मिलने के बाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति परम आदरणीय डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी के आग्रह पर इस महान संस्था को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से सम्बन्धित करके सम्पूर्ण अनुदान अर्थात् स्वतन्त्र भारत की सरकारी सहायता स्वीकार कर ली गई। परन्तु पूज्य स्वामी जी का सिद्धान्त केवल ब्रिटिश सरकार के प्रति नफरत के कारण नही था। वे किसी भी प्रकार से मेहनत, कष्ट और तपस्या के बिना प्राप्त धन को वर्जित समझते थे। वे इस संस्था का व्यापारीकरण करने के पक्ष में नहीं थे। वे व्यापारीकरण की किसी भावना को भी इस संस्था में पनपने नही देना चाहते थे। वे चाहते थे कि सच्चा संन्यासी और सच्चा समाजसेवी वही है जिसके चेहरे को पढ़कर लोग अपना सर्वस्व आहूत करने को तैयार हो जाए। उस जमाने के गुरुकुल की व्यवस्थाओं को याद करते हुए आज भी मुंह से वाह-वाह निकलनी बन्द नही होती। उनकी एक आवाज पर उनके तप को देखते हुए हजारो लाखों रुपए जब दान में मिल जाते थे और एक-एक पैसे का सदुपयोग ऐसे होता था जेसे ईश्वर उपासना में लगा साधक एक एक क्षण ईश्वर के प्रेम में ही आनन्दित रहता है। हजारों बीघा जमीन दान में प्राप्त हो गई तो ऐसा व्यक्ति खरीद फरोख्त अर्थात् व्यापारीकरण की गतिविधियों को क्यों अच्छा समझता।

उनके जीवन काल में सम्भवतः वर्ष १९२४ में पुण्य भूमि पर संचालित प्राचीन गुरुकुल स्थली पर बाढ़ आ गई। उस समय वे पंजाब सभा के प्रधान का पद छोड़ चुके थे। पंजाब सभा की बैठक में यह प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ कि पुण्य भूमि को छोड़कर कुछ भूमि और खरीद ली जाए। स्वामी जी ने कहा कि दान में प्राप्त भूमि और खरीदी हुई भूमि में बहुत अन्तर होता है। दान के पीछे दान लेने वाले का तप और देने वाले की उदार तथा धार्मिक भावना छिपी होती है। जबकि खरीद के पीछे केवलमात्र व्यापारिक दृष्टि होती है। इसलिए इस तपपूर्ण भूमि को छोड़कर खरीदी हुई भूमि पर गुरुकुल चलाना अच्छा नही। यही नहीं, उन्होंने हाथ जोड़कर ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा कि हे गंगा माता आज के बाद आपकी बाढ़ मेरी पुण्य भूमि और मेरे ब्रह्मचारियों को कष्ट न पहुंचाए। इस प्रार्थना की आध्यात्मिक ताकत आज तक बनी हुई है। आज वर्ष २००७ तक इस पुण्य भूमि को बाढ़ ने उसके बाद कभी अपनी चपेट में नही लिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के सभी सिद्धान्तों को मजाक समझते हुए किनारे कर दिया गया। वर्तमान गुरुकुल कांगड़ी खरीदी हुई भूमि पर चल रहा है। क्रय विक्रय की भावना व्याप्त नजर आ रही है। सब कुछ बिकने के लिए तैयार और जो खरीदा गया उसमें भी धांधलेबाजियां होती रही। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अनुदान सहायता बनने के स्थान पर अहंकार बनकर गुण्डागर्दी करने लगा। सैकड़ों बीघा जमीन इसी क्रय विक्रय की सिद्धान्तहीनता के साथ कोड़ियों के भाव बेच दी गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से जब सारे देश में इसके विरुद्ध वातावरण बनाया गया, आर्यजनता ने इस करतूत का मुंहतोड़ जवाब दिया तो भूमाफिया ने उसी भूमि विक्रेता गुट को सार्वदेशिक सभा के समानान्तर एक गुट बनाकर खड़ा कर दिया और सार्वदेशिक सभा में कब्जेबाजी का कृत्य करने के लिए प्रेरित किया।

भूमाफिया और इस समानान्तर गुटबाजी से चलती लड़ाई के बीच में राजसिंह तथा देवरत्न आर्य ने मिलकर एक और गुटबाजी को जन्म दिया जो पूरी तरह से स्वार्थ के रंग में रंगी हुई थी।

देवरत्न आर्य को विदेशी धन हड़पने का स्वार्थ था और राजसिंह को अपनी शिक्षा दीक्षा देखे बिना गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय जैसी महान संस्था का कुलाधिपति बनने का लोभ था। इस स्वा[र्थ] और लोभ ने मिलकर कुछ लो[गों] को गुमराह किया और एक न[या] गुट बनाकर खड़ा करने का प्रय[त्न] किया।

अग्निवेशी गुण्डागर्दी साक्षात सरकारी सहायता के [बल] पर खड़ी नाच रही है। इससे देर सवेर निबटा जाएगा। पर फिलहाल दिल्ली उच्च न्यायाल[य] तथा हरिद्वार न्यायालय के प्र[ति] आभार व्यक्त करना एक नैति[क] जिम्मेदारी है जिनके निर्णयों [ने] विगत माह देवरत्न आर्य-राजसि[ंह] के स्वार्थ-लोभ गुट को निश्चि[त] रूप से ठण्डा कर दिया।

दिल्ली उच्च न्यायालय निर्णय दिनांक २४ अगस्त, २०[०७] का उल्लेख पिछले अंक में कि[या] जा चुका है, जिसके द्वारा अप्रै[ल] २००७ में सम्पन्न हुए सार्वदेशि[क] सभा के निर्वाचन का उल्ले[ख] न्यायालय ने कर दिया है। इ[स] स्वार्थ लोभ गुट ने इस निर्णय [से] आहत होकर तुरन्त अपील [भी] दिल्ली उच्च न्यायालय के [दो] न्यायाधीशों के समक्ष प्रस्तुत क[र] दी है। इस निराधार अपील [का] निर्णय भी शीघ्र ही सम्भावित है।

३० अगस्त, २००७ को हरिद्वा[र] की सिविल जज नीतू जोशी [ने] अपने निर्णय के द्वारा राजसिंह [के] कुलाधिपति लोभ को भी मिट्टी [में] मिला दिया।

शेष पृष्ठ २ पर

राजसिंह के कुलाधिपति मोह का किला ध्वस्त
हरिद्वार न्यायालय की मूल प्रति ईमेल द्वारा प्राप्त करें

हरिद्वार की दीवानी अदालत द्वारा दिनांक ३० अगस्त २००७ को दिए गए निर्णय ईमेल द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए अपना ईमेल नम्बर अपनी प्रार्थना सहित हमें ईमेल पर भेजे या टेलीफोन द्वारा स्पष्ट रूप से नोट करवा दें।

सम्पर्क : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in, कार्यालय प्रबन्धक – 9250200310

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपमन्त्री श्री देवराज आर्य तथा गुरुकुल के सम्पदा अधिकारी श्री करतार सिंह पर कातिलाना हमला असफल

भूल सुधार

समस्त आर्यजनता को सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक साप्ताहिक के अंक ८, दिनांक १६ अगस्त से २५ अगस्त के अंक में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से सम्बन्धित प्रथम पृष्ठ पर एक समाचार **'न्यायमूर्ति श्री शैलेन्द्र सक्सेना प्रशासक एवं निर्वाचन अधिकारी नियुक्त'** छपा है। जिसमें भूलवश नीचे अरविन्द कुमार आर्य कोषाध्यक्ष उ०प्र० सभा छप गया है। आर्यजनता से निवेदन है कि इस समाचार में **अरविन्द कुमार आर्य कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** पढ़ा जाए। इस भूल के लिए सम्पादक मण्डल को खेद है।

– सम्पादक

प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री

देवराज आर्य

बाद सत्याग्रह विजय दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

सितम्बर, ०७। आर्यसमाज वर्तमान आर्य समाज दीवान चांदनी चौक दिल्ली में आज बाद सत्याग्रह विजय दिवस के अवसर पर भव्य समारोह आयोजित गया जिसमें हैदराबाद मुक्ति आंदोलन सत्याग्रहियों का सम्मान किया गया हीद स्वतंत्रता सेनानियों को भावभीनी जलि दी गई। हैदराबाद सत्याग्रह के स्वाधीनता आन्दोलन का एक पूर्ण अध्याय है जिसे आर्यसमाज का आर्यसमाज से किसी न किसी रूप में संबंध रहा है। निःस्वार्थ भाव से देश सेवा और राष्ट्र के उत्थान के लिए इस देश के लोगों को आर्यसमाज ने जिस प्रकार प्रेरित किया है उसके लिए हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऋणी हैं। आर्यसमाज दीवान हाल के मंत्री डॉ० रविकान्त ने कहा कि हैदराबाद सत्याग्रह भारत वर्ष के स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण अंग है। समान समारोह में श्री राजसिंह भल्ला,



धर्मनिरपेक्ष रूप से संचालित किया था।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री नगर निगम में सदन के नेता सुभाष आर्य ने शहीदों को अपनी भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कि आर्यसमाज का देश के न्त्रता आंदोलन में विशेष योगदान है। अधिसंख्या स्वतन्त्रता सेनानियों सार्वदेशिक सभा के पूर्व मन्त्री डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री, सार्वदेशिक सभा के उप-मन्त्री श्री जगदीश आर्य एव चौ० लक्ष्मीचन्द, प्रिं० चन्द्रदेव, दिल्ली सभा के प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव, श्री आदित्य आर्य सहित अनेक आर्य नेताओं तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं आर्यसमाजों के सदस्य व अधिकारी गणों ने भाग लिया।

पृष्ठ १ का शेष

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ...

राजसिंह ने गत वर्ष फरवरी माह से अपने आपको स्वयंभू कुलाधिपति रूप में प्रचारित करना शुरू कर दिया था और आए दिन निराधार पत्र ख लिखकर कभी यू०जी०सी० को तो कभी राज्य प्रशासन को कब्जा लाने के लिए दबाव डाला जाता रहा। इस गुट के तार भी भूमाफिया के थ जुड गए प्रतीत हो रहे थे। राजसिंह ने अपने आपको ब्रह्मचारी कहते स्वयंभू कुलाधिपति के रूप में एक मुकदमा हरिद्वार की दीवानी अदालत वास्तविक कुलाधिपति श्री सुदर्शन शर्मा, वास्तविक कुलपति श्री स्वतन्त्र मार तथा कुलसचिव के विरुद्ध प्रस्तुत करते हुए यह निवेदन किया था कि न अधिकारियों को काम करने से रोका जाए और राजसिंह को कुलाधिपति कार्य करने दिया जाए। दीवानी अदालत ने अपने निर्णय दिनांक ३० गस्त, २००७ के द्वारा राजसिंह की इस प्रार्थना को पूर्णरूपेण अस्वीकार कर या है।

इतना सब कुछ होने के बाद भी दिल्ली और हरियाणा के कुछ सिरफिरे ोग १ सितम्बर को पुनः वहां कब्जा करने की नीयत से पहुंच गए और सारा न तपोपूत कहलाने वाले आचार्य बलदेव जी को आगे करके जोर ाजमायश करते रहे। इस कब्जा करो आन्दोलन में दिल्ली का अकेला आर्य नय भी शामिल था। यहां तक कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ पमन्त्री श्री देवराज आर्य तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सम्पदा धिकारी प्रबन्धक श्री करतार सिंह पर कातिलाना हमला भी किया परन्तु नके उद्देश्य असफल रहे। इस पर भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के धान श्री मिठाई लाल सिंह तथा सभा मन्त्री एवं कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार आचार्य बलदेव जी को देखते हुए इस मामले को पुलिस में देना उचित ही समझा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वैद्य इन्द्रदेव तथा हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य यशपाल जी ने भी हरिद्वार के समाचार पत्रों को जारी वक्तव्य में यह स्पष्ट किया कि आचार्य बलदेव के नेतृत्व में कुछ गेने चुने लोगों को किसी आर्यसमाज या प्रतिनिधि सभा के नाम पर अधिकृत पदाधिकारी न समझा जाए।

परन्तु मूल में भूल का सुधार वर्तमान पदाधिकारियों को ही करना पड़ेगा। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रांगण में जब तक स्वामी श्रद्धानन्द जी की तपस्या, कष्ट, दार्शनिकता, देशप्रेम, समाजसेवा और स्वयं को सर्वस्व आहूत करने की भावनाएं व्याप्त नही होंगी तब तक ये खतरे मण्डराते रहेंगे। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि स्वार्थ लोभ की गुटबाजी करने वाले उन कथित आर्यों को सद्बुद्धि प्राप्त हो जो भूमाफियाओं के साथ सांठ गांठ करने से भी परहेज नहीं करते।

योग शिविर एवं यौगिक यज्ञ

पातंजल योग धाम आर्यनगर ज्वालापुर, हरिद्वार के तत्वावधान में १५ अक्टूबर से २१ अक्टूबर २००७ तक ७१वें ध्यान योग शिविर एवं यौगिक यज्ञ का आयोजन किया जायेगा।

आयोजन में आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान का प्रशिक्षण तथा यम नियमादि का पालन भी कराया जाएगा।

इस अवसर पर १७ अक्टूबर को शोक साधना में कितना साधक ... अक्टूबर को साधिका

कब्जा करने वालों से सावधान ! आर्यसमाज शिवगंज की सम्पत्ति कब्जाधारियों से मुक्त

शिवगंज ८ जुलाई। आर्यसमाज शिवगंज की करोड़ो रुपयों की संपति को हथियारों के बलबूते पर अवैध रूप से हड़पने के मामले में न्यायालय ने १४ व्यक्तियों के विरुद्ध ४३१३२ रुपये की डिक्री एवं स्थाई निषेधाज्ञा के दिए आदेश।

शिवगंज नगर में महर्षि दयानन्द की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए, मनुष्य के जीवन को व्यवस्थित रूप से सत्य के मार्ग पर चलाने के लिए आर्य समाजियों द्वारा सन् १९४१ में शिवगंज आर्य समाज की स्थापना की गई थी। आर्य समाज जनता के हितार्थ सामाजिक, मानसिक व धार्मिक कार्य करने का कार्य कर रहा था। उक्त संस्था के मंत्री बाबूलाल आर्य व अन्य कार्यकारिणी सदस्य संस्था को व्यवस्थित रूप से चला रहे थे। जहां दिनांक ६–११–२००० को कथिक राजनेताओं ने षडयंत्र रच संस्था की करोड़ों रुपये की सम्पति अवैध रूप से हड़पने के लिए जितेन्द्र सिंह, हरदेव सूथार, देवदत्त आर्य, अमृत माली, शेषाराम घांची, दिलीप सिंधी, ललित हिंडोनिया, दलपत हिरागर, बनवारी लाल अग्रवाल, घनश्याम संधी, गोविन्द सूआरा, सोहल माली, लक्ष्मण सिंधी व हरदेव सोनी सहित अन्य सामाजिक तत्वों में कथित रूप से आर्यसमाज भवन केशरपूरा रोड़ पर हथियारों से लैंस होकर लाठी, सरियों इत्यादि के बलबुते पर भवन पर हमला कर आर्यसमाज के पदाधिकारियों एवं घटना स्थल के फोटो खीचने आए फोटोग्राफर किशोर आर्य पर भी हमला किया था। उस समय के प्रधान भेराराम आर्य जो कि इन अभियुक्तों में से एक अभियुक्त देवदत्त के पिता थे से मिलकर समाज की करोड़ों रुपयों की संपत्ति पर कब्जा कर लिया था। उक्त अवैध रूप से कब्जा करने पर आर्य समाज के मंत्री बाबूलाल आर्य ने पुनः कब्जा प्राप्त करने हेतु न्यायालय में वाद दायर किया जिस पर माननीय अपर जिला न्यायालय सिरोही (फास्ट ट्रेक) के न्यायाधीश श्री ओम कुमार व्यास ने पुनः कब्जा आर्यसमाज शिवगंज के पदाधिकारियों को देने का निर्णय दिया। न्यायाधीश ने दिए फैसले में अभियुक्तों के विरुद्ध ४३१३२ रुपये की डिक्री एवं वादी संस्था को तीन माह में सुपुर्द करने के आदेश दे स्थायी निषेधाज्ञा प्रदान की।

बहनो के योग शिविर की पूर्णाहुति

आर्यसमाज राजकोट द्वारा बहनों के लिए योग शिविर का आयोजन सरदार नगर कम्यूनिटी हाल में किया गया।

इस शिविर का संचालन जूनागढ़ आर्यसमाज गांधी ग्राम की डॉ० सदगुणा बेन तथा भावना बेन द्वारा किया गया। इस बहनों के योग शिविर में यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि का महत्व, निरोग रहने के उपाय, जीवन का महत्व तथा परमात्मा की सच्ची उपासना पद्धति के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया। इस शिविर में लगभग ११० बहनों ने भाग लिया तथा शिविर को सफल बनाने में श्रीमती मालती बेन, अल्का बेन आदि ने अपना पूर्ण सहयोग दिया।

पूर्णाहुति के समय गुजरात राज्य के एक मंत्री श्री वजुसिंह वाणा और दर्शनयोग महाविद्यालय से आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने अपने आशीर्वचन दिए। मंत्री श्री रणजीत सिंह परमार ने आर्यसमाज की प्रवृत्तियों की जानकारी

आर्यसमाज खेड़ा अफगान (उ०प्र०) के उपप्रधान श्री सतपाल गुप्ता का निधन

आर्यसमाज खेड़ा अफगान जनपद सहारनपुर के उपप्रधान श्री सतपाल गुप्ता का ७५ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है। वे बड़े ईमानदार कर्मठ कार्यकर्ता थे। उनकी कमी से हमारी आर्यसमाज को ही नहीं अपितू सम्पूर्ण आर्य जगत की भी अपूर्णीय क्षति है। वे अपने पीछें हरा भरा परिवार दो लड़के लड़कियां, पोते, पोती, दोहते, दोहती छोड़ गए हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

– आदित्य आर्य, प्रधान आर्यसमाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर

आर्यसमाज शेखपुरा (बिहार) के प्रधान श्री उमाशंकर दिवंगत

आर्यसमाज चेवारा, जिला शेखपुरा (बिहार) के प्रधान श्री उमाशंकर प्र० जी आर्य ६ अगस्त दिन गुरुवार को सन्ध्या के बाद दिवंगत हो गए। इनकी अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से १० अगस्त को सम्पन्न हुआ।

२१ अगस्त को सन्ध्या ५ बजे श्रीमती यशोदा देवी को सर्वसम्मति से आर्यसमाज चेवारा के प्रधान पर चयनित किया गया। शेष पद पूर्ववत रहे। स्व० प्रधान जी के सुपुत्र श्री सुनील कुमार, श्री अनिल कुमार एवं श्री पवन कुमार उर्फ रिंकु जी ने अपने पूज्य पिता की स्मृति में एक उपासना गृह बनवाने के लिए इक्यावन हजार रुपये देने का संकल्प किया।

– मंत्री, आर्यसमाज चेवारा, शेखपुरा, बिहार

पौड़ी गढ़वाल उत्तराखण्ड में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

गढ़वाल आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिनांक २५ व २६ अगस्त २००७ को ग्राम बमोली चोलीसैण–पौड़ी गढ़वाल में नए आर्यसमाज का गठन किया गया। प्रधान आर्य उपप्रतिनिध सभा गढ़वाल श्री सुरेन्द्रलाल आर्य जी अध्यक्षता में दो दिन का बृहद सत्संग यज्ञ–भजन–उपदेश व आर्य सम्मेलन हुआ।

मुख्य अतिथि डॉ० मगल मोहन ध्यानी पू० चिकित्सा अधिकारी व जडी बूटी सलाहकार उत्तराखण्ड सरकार थे।

इस अवसर पर पं० उम्मेदसिंह विशारद वैदिक प्रचारक उत्तराखण्ड जी के ओजस्वी प्रेरणादायक प्रवचन हुए तथा बच्चीराम आर्य व सतीशबन्धु के भजन हुए व अनेक वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

ग्राम बमोली के नवनिर्मित आर्यसमाज के चुनाव में प्रधान श्री मनोहरलाल विश्वकर्मा मंत्री राजेन्द्र सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष कोमलचन्द आर्य व चन्द्रमोहन, प्रकाशचन्द, सोहनलाल धनवीर सिंह, जवाहरसिंह, सुनीता देवी, सीता देवी चुने गए।

इस अवसर पर सर्वश्री वामदेव शाह, अम्बाराम, चन्द्रप्रकाश, वीरेन्द्र सिंह, वासुदेव विमल, बलवीर सिंह आर्य, हरीस कुमार व हजारों श्रद्धालु उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री गंगा प्रसाद सोम्य मंत्री उप-प्रतिनिधि सभा गढ़वाल ने किया।

आचार्य ज्ञानेश्वर जी के विचार इग्लैण्ड प्रचार यात्रा से

समादरणीय श्रीयुत विमल जी
सादर नमस्ते

ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

यह मेरी सातवीं प्रचार यात्रा है। यथा बुद्धि, साधन, अवसर प्राप्त करके वैदिक जीवन शैली, सिद्धान्त, परम्पराओं का परिज्ञान, चर्चा, प्रेरणा, शंका समाधान आदि कार्य कर रहा हूं। साथ–साथ लेखनादि का भी कार्य चल रहा है।

अनेक प्रकार की चित्र विचित्र, आश्चर्य जनक घटनाओं, व्यवहारों, मान्यताओं तथा स्थितियों को प्रत्यक्ष देखने, पढ़ने, सुनने का अवसर मिला है, खट्ठे मीठे अनुभव भी हुए हैं। जहां जिज्ञासुओं को सत्य, आदर्श, श्रेष्ठ, अनुकरणीय बातों की जानकारी दी, वहां स्वयं को भी अनेक उत्तम बातों की जानकारी मिली।

हमारे (Asians) विषय में इस देश के अधिकांश व्यक्तियों की यह मान्यता बनी हुई है कि ये लोग निर्धन, निर्बल, रोगी, अन्धविश्वासी, पाखण्डी, गपोड़पंथी, अपने ही देशवासियों का दमन–शोषण करने वाले, द्वेषी, ईर्ष्यालु, छद्मी, आलसी, प्रमादी, लापरवाह, अनुशासनहीन, अविश्सनीय, रिश्वतखोर हैं। अपने से अधिक धनी, बलवानों की चापलूसी करने वाले हैं। मोक्ष, पुनर्जन्म, समाधि, ध्यान, आत्मा की अमरता, जप–तप, साधना, संयम इत्यादि अनेक प्रकार की मिथ्या धारणाओं को मानने वाले हैं और इनके लिए अपना समय शक्ति, धन आदि को व्यर्थ नष्ट करते हैं।

इसके विपरीत इन हरिवर्ष आदि देशों (Europian) में रहने वाले पाश्चात्य लोगों के विषय में हम भारतीयों की धारणा यह बनी हुई है ... आधी रात में किसी भी पुरुष की स्त्री, बहन, पुत्री को बाहों में लेकर नाचते हैं और अनुकूलता होने पर किसी के भी साथ व्यभिचार कर लेते हैं। किसी भी पशु पक्षी जीव को मार कर खा जाते हैं। पांच इन्द्रियों के विषयों को भोगना ही इनके जीवन का लक्ष्य है। देह पूजन, देह प्रदर्शन, देह पोषण, देह श्रृंगार और देहाभिमान से युक्त सर्वस्व देह के लिए ही समर्पित किए होते हैं। छल, भय, बल, चालाकी आदि के माध्यम से अन्यों का धन, सम्पत्ति, अधिकार, स्वतंत्रता का हरण करने अति चतुर हैं। इनको जीवन के अन्तिम लक्ष्य, मार्ग, साधन तथा शैली के विषय में किंञ्चित भी ज्ञान नहीं है।

यद्यपि दोनों पक्षों की धारणाओं में सर्वांश सत्य नहीं है पुनरपि बहुत सी बातों में वे यथार्थ ही बताते हैं। एक तरफ मात्र क्षणिक-अनित्य–दुःख युक्त इन्द्रियों का विषय सुख प्रदान कराने वाला भोगवाद है तो दूसरी तरफ अनेक अंशों में अप्रामाणिक, काल्पनिक मिथ्या धारणा वाला स्वर्गवाद। दोनों ही अपूर्ण एकांगी, हेय है, इनमें से कोई भी मनुष्य जाति को पूर्ण सुख, शान्ति, सन्तोष, निर्भीकता, स्वतंत्रता प्रदान करने में असमर्थ हैं।

शेष पृष्ठ ३ पर

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज के लिए विद्वान पुरोहित की आवश्यकता है। योग्यता अनुसार दक्षिणा तथा रहने की व्यवस्था, बिजली आदि निःशुल्क। सन्यासी–वानप्रस्थी को प्राथमिकता।

सम्पर्क :
प्रधान, सोहनलाल सेतिया
२, न्यू सूरज नगरी, अबोहर, पंजाब, फोन : २०५१८, २३५१८

यज्ञ क्या है ? (5)

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" - यज्ञ सब श्रेष्ठ कर्मों से भी श्रेष्ठ कर्म है

– डॉ० भवानी लाल भारतीय

देवों के आवाहन का औचित्य

मूर्तिपूजा के प्रचलन के साथ–साथ मन्दिरों में पूजा अर्चना के आरम्भ में विभिन्न देवों के आह्वान का एक कृत्रिम आडम्बर प्रचलित हुआ और नवग्रहों, षोडष मातृका, वास्तुदेवता, गणपति आदि देवों का आह्वान किया जाने लगा।

सत्य तो यह है कि कपोलकल्पित मंत्रों के बोलने से न तो कोई देवता इस पुरोहित की पुकार पर आता है और न विसर्जन के वाक्य बोलने से कोई देवता जाता है। यह स्वार्थी मूर्तिपूजकों की पाखण्ड लीला है। इसी प्रकार कलश स्थापना का पाखण्ड और कलश में आम्र पल्लव रखते समय अश्वत्थे वो निषदनं (यजु. १२/७९) आदि मंत्र बोलना भी इस मंत्र का मिथ्या विनियोग है। यहां कलश प्रार्थना के नाम पर कलशस्य मुखे विष्णुः आदि कपोलकल्पित श्लोकों को यजुः ६ के पते पर बताया है, वह नितांत मिथ्या तथा धूर्तता है क्योंकि यजुर्वेद में 'नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय. जलधिनाथाय नमो नमस्ते' आदि उक्ति कहीं नही है। यह इस विधि का दुस्साहस तथा वंचना मात्र है। इसी प्रकार गायत्री पूजन के विधान में 'आयातु वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि' आदि वाक्य भी कपोल कल्पित हैं।

गणेश पूजन की अवैदिकता

गणेश की वैदिकता को तो डॉ० संपूर्णानन्द ने अपने शोध से वर्षों पहले नकार दिया था। गणेश के नाम पर बताई गई गायत्री 'एकदन्ताय विद्–महे लम्बोदराय धीमहि तन्नों दंती प्रचोदयात्' भी अवान्तर कालीन है। इस प्रकार की काल्पनिक गायत्रियां विष्णु, शिव, स्कन्द आदि पौराणिक देवों के नाम से मध्य युग में बनाई गई थीं। इनकी अवैदिकता तथा अप्रमाणिकता बताते हुए स्वामी दयानन्द ने पौराणिकों को स्व रचित निम्न गर्दभ गायत्री सुनाई थी जिससे श्रोताओं का पर्याप्त मनोरंजन हुआ था 'लम्बाकर्णाय विद्महे शीतलावाहनाय



धीमहि तन्नो गर्दभ प्रचोदयात्।'

यह स्थिति गौरी पूजन तथा गौरी गायत्री की है। देवताओं का यह कथित आह्वान नितांत हास्यास्पद तथा मूर्खतापूर्ण है क्योंकि सर्वव्यापक आकाश के लिए यह गायत्री उपासक कहता है – ओम् आकाशय नमः आवहयामि स्थापयामि ध्यायामि। इस जड़ बुद्धि से कोई पूछे, आकाश का आह्वान कैसे होगा ? उसे चौकी पर स्थापित कैसे किया जाएगा ? यही बात नवग्रह स्थापना पर लागू होती है। ऋषि दयानन्द ने पहले ही काल्पनिक नवग्रह पूजा का खण्डन कर दिया है।

यहां प्रारम्भ में ही यह स्पष्ट किया जाना चाहिए कि प्रचलित नवग्रह–पूजन में जिन वेद मंत्रों का उच्चारण (विनियोग) किया जाता है, उनका इन भौतिक ग्रहों (प्लेनेटस) से कोई संबंध नहीं है। शन्नो देवी (यजु. ३६/१२) मंत्र में आया 'शंनो' शनैश्चर नामक ग्रह का वाचक नही है और उद्बुध्य स्वाग्ने मंत्र (यजु. १५/५४) का बुध नक्षत्र से कोई लेना देना नहीं है। इसी प्रकार राहू और केतु के साथ नश्चित्र (यजु. २७/३९) तथा केतुं कृण्वन्न (यजु. २९/३७) संबंध जोड़ना धींगामस्ती के सिवाय कुछ नहीं है। इस कलियुगी अश्वमेध के प्रस्तोता ने गणपति वेदी के पूजन में सर्वथा नवीन गाणपत्यथर्वशीर्ष उपनिषद् का प्रमाण दिया है तथा सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः आदि लौकिक स्तुति वाक्य लिखे हैं। ध्यान रहे कि गणपत्य–थर्वशीर्ष उपनिषद् की सर्वमान्य ग्यारह उपनिषदों में गणना नहीं है और रामतापनी गोपाल तापनी आदि साम्प्रदायिक उपनिषदों की भांति यह उपनिषद् भी अनार्ष तथा अर्वाचीन है। हम पहले ही कह चुके हैं कि आधुनिक देवमाला में प्रथम पूज्य ठहराये गये गणेश को वैदिक देवमाला (अग्नि, वायु आदित्य, इन्द्र, वरुण आदि) में कभी स्थान नहीं मिला। वे अनार्यों के विघ्नोत्पादक अपदेव थे जिन्हें हिन्दू देव श्रेणी में पीछे से प्रवेश (बैक डोर एंट्री) मिली है। (क्रमशः)

पृष्ठ २ का शेष

आचार्य ज्ञानेश्वर जी के विचार...

हम आर्यों की यह मान्यता है कि सृष्टि के आदि में ब्रह्माण्ड के रचयिता ईश्वर ने मनुष्यों को ज्ञान दिया जिसे वेद कहते हैं। उन वेदों में मनुष्यों को अपने जीवन को कैसे चलाना है इन सब बातों का निर्देश किया है। वेद में बताये गए नियमों विधि विधानों, अनुशासनों, सिद्धान्तों, कर्त्तव्यों के परिपालन से ही समस्त मनुष्य समाज की सब प्रकार की लौकिक और आध्यात्मिक सर्वांगीण उन्नति संभव है। क्योंकि वेद में बताये गए सिद्धान्त सार्वभौमिक, सर्वकालिक, सर्वजनित, सर्वज्ञानमय शाश्वत सत्य है वे नियम तर्क, युक्ति, प्रमाणों से सिद्ध किए जा सकते हैं। क्योंकि वे सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, निराकार, दयालु सर्वहितैषी प्रभु का विधान है। उनमें किसी भी प्रकार की अपूर्णता, न्यूनता, विसंगति, विरोध नहीं है। इसी ज्ञान विज्ञान के प्रचार प्रसार में विश्व के व्यक्तियों का जीवन सुखी, शान्त, निर्भय, सन्तुष्ट, स्वतंत्र हो सकता है अन्य कोई उपाय नहीं है।

यह कार्य हमें करना है, हम आर्यों को करना है, ऋषि दयानन्द के शिष्यों को करना है। यदि हम स्वार्थी बनकर मात्र अपने अपने परिवार की उन्नति तक ही सीमित रहे, तो ईश्वर की ओर से दण्ड मिलेगा। समाज राष्ट्र विश्व की इस विकट परिस्थिति को देखकर भी अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो जायेंगे – उपेक्षावृत्ति अपनायेंगे तो निश्चित है मानव समाज के कल्याणकारी कर्त्तव्यों का पालन न करने के कारण ईश्वर की दृष्टि से अवश्य ही अपराधी बनेंगे। आने वाली पीढ़ी बुद्धिमान व्यक्ति हमारी अकर्मण्यता को जानकर हमें कोसेंगे।

यह सत्य है कि परिस्थितियां अत्यन्त प्रतिकूल हैं, समाज, राष्ट्र, संविधान, यहां तक कि बुद्धिमानों की भी धारणा विपरीत बनी हुई है। पदे पदे खतरा है, पदे पदे स्वार्थी, अज्ञानी, विरोधी व्यक्ति, षडयन्त्र रचकर, भीषण योजनायें बनाकर अफवाहें फैलाने, सामान्य जनों को भड़काने, हेतु समुद्युत हैं। वे शत्रुओं के समान प्रखर प्रहार करने में समर्थ हैं। और भी चाहे जो कुछ हो, यदि हम परमपिता परमात्मा को अपना मित्र बना लेंगे, उसको अपना साथी बना लेंगे तो हमें परम उत्साह, बल, पराक्रम, साहस, धैर्य, चातुर्य प्राप्त होगा। मार्ग में आने वाले अभावों, कष्टों, विरोधों, प्रतिकूलताओं, असफलताओं से घबरायेंगे नहीं, हताश निराश नहीं होंगे, अपितु प्रबल आत्मविश्वास आशा के साथ अग्रसर होते ही रहेंगे।

यद्यपि कार्य महत्तम पुरुषार्थ, त्याग, तप, परिश्रम, कष्ट साध्य है, किन्तु यह अनिवार्य है, अविकल्प है, अपरिहार्य है। मेरा ऐसा विश्वास है कि थोड़े से भी सन्निष्ठ, समर्पित, सर्वस्वत्यागी, युवा, वैदिक ज्ञान युक्त व्यक्ति, ईश्वरीय शक्ति, साहस, बल, ज्ञान, पराक्रम के साथ मैदान में उतर जायें तो कार्य सम्पन्न होने में देर नहीं लगेगी, निश्चित ही कार्य संभव है। ईश्वर को कृपा होगी इसी आशा विश्वास के साथ –

आपका ज्ञानेश्वरार्यः

घर में बच्चों से अपनी मातृभाषा में ही बात कीजिए।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116/2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 16-09-07 से 22-09-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 93/2006-08 in NDPS on 13/14-09-07

आर्यसमाज का स्वर्ण युग

कोलकाता के हमारे माननीय श्री प्रो० उमाकान्त जी ने फोन पर बातचीत की। वह हमसे बहुत स्नेह करते हैं। उनको अब पता चल गया है कि अग्निवेश सबका गुरु बनना चाहता है। उसने किसी का शिष्य बनना नहीं सीखा। आपका भ्रम–भञ्जन हो गया है। वह अग्निवेश से सजग हो गए हैं। आपका कहना है जब सभाएं नहीं थी, जब सार्वदेशिक नहीं थी, एक एक आर्यसमाज मिशनरी थी। धर्मरक्षक था। वह आर्यसमाज का स्वर्ण युग था हम सब मिल कर अपनी लगन व धुन से वह स्वर्ण युग, प्रचार युग पुनः ला सकते हैं।

अग्निवेश

अग्निवेश का वह फर्मान कहां गया ? एक समय था अग्निवेश जी कंस व रावण की पंक्ति में जवाहरलाल नेहरू को खड़ा करते थे। उनका ऐसा लेख हमने भी पढ़ा है। आज नेहरू परिवार की वन्दना कर रहे हैं। सोनिया जी की तो बाते ही छोड़े श्रीमान् जी तो सोनिया जी के उपासकों के भी सजदे करते फिरते हैं। इनके आर्य राष्ट्र की सीमाएं पेशावर से उस पार तक और हिन्दुकुश से हिन्द महासागर तक यह बताते थे अब कादियाण जी को लेकर कोई लेख कोई वक्तव्य अपने साम्राज्य की सीमा के बारे में देते ही नहीं। हरियाणा से ही भाग खड़े हुए। कश्मीर व हिन्दुकुश पेशावर की सुधी क्या लें ? कभी अकालियों को कोढ़ के कीड़े बताते हुए डी०एम०के० को राष्ट्रद्रोही घोषित करते थे अब अकालियों की भक्ति करके निहाल हो रहे हैं। करुणानिधि जी को माला डालकर उनका अभिनन्दन करना पड़े तो चुकेंगे नहीं। गांधी को विश्वासघाती बताते थे और जवाहर लाल को कायर घोषित किया। बड़े बड़े नेता नपुंसक थे और वेश बदलकर १६७४ ई० मु लुकने छिपने वाला यह गिरगिट पंथी सूरमा बनता है। अग्निवेश के इन सब लिखित फरमानों पर कादियाण को व वेशपंथी कवि जी को लेखमाला व कविताएं लिखनी चाहिए। चौधरी चरणसिंह को कोसते कोसते वेशपंथी उसके चरणों में जा बैठे। चौधरी चरणसिंह तो बहुत बड़े थे एक वेश तो अजीत की छत्रछाया में मौज मार रहा है। किस ग्रन्थ पर वेशों की कितनी श्रद्धा है यह भी फिर से कादियाण की लेखनी से जनता को बता दो पुराना फरमान तो लगता है कि एक 'मन्सूख आयत' बन चुका है। 'दरिन्दों की लपलपाती तृष्णा' और पाकिस्तान को दिए गए पचपन करोड़ रुपये का इतिहास अब सर्वथा भूल गए। 'कम्यूनिस्ट दरिन्दे' यह आप ही का फर्मान है। यह मन्त्र कभी टी०वी० पर सुनाया करो ताकि देश को आपके वास्तविक स्वरूप का कुछ तो बोध हो। अग्निवेश जी आपका फर्मान हमें याद है, किसी भी अनार्य राजनीतिक दल से सम्बन्धित व्यक्ति अथवा निर्दलीय एम०एल०ए० या एम०पी० को आर्यसमाज के स्थानीय, प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक सभाओं का अधिकारी या अन्तरंग सदस्य नहीं बनने दिया जाएगा।

श्री अग्निवेश सहित कितने वेशों ने कितनी पार्टियों के लेवल लगाए व झगड़े उठाये व उठा रखे हैं। यह हम वेश पंथियों से ही जानना चाहेंगे। कादियाण जी के पास वेश द्वय से लेकर उ०प्र० के भूतपूर्व वेश मन्त्री तक सबकी लिस्ट होगी यह सूची वेशपंथियों को छपवानी चाहिए।

– प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु,
परोपकारी मई, ०७

सामयिक विषयों पर लेख

सार्वदेशिक साप्ताहिक के विद्वान लेखकों तथा सभाओं और आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि विशेष उत्सवों आदि की सूचना प्रकाशनार्थ कम से कम १५ दिन पूर्व अवश्य भेज दिया करें। इसी प्रकार विद्वान लेखक विशेष उत्सवों, दिवसों आदि से सम्बन्धित लेख भी न्यूनतम १५ दिन पूर्व अवश्य भेजें। अधिकाधिक सामयिक विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रियाएं भी भेजें। 'सार्वदेशिक' के सम्बन्ध में लेख, सूचनाएं तथा अन्य पत्र निम्न पते पर भेजें –

सार्वदेशिक सभा, 1488, पटौदी हाउस (नजदीक आर्य अनाथालय)
दरियागंज, नई दिल्ली-2, फोन : 43580554
E-mail : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in
– प्रो० स्वतन्त्र कुमार, प्रबन्ध सम्पादक एवं सभा मन्त्री, मो० 09719004451

प्रतिष्ठा में
[?] कुलपति निवास
गुरुकुल कांगड़ी वि० वि०
हरिद्वार (उत्तरांचल)

गुरुकुल प्रणाली से प्रभावित हुए इटलीवासी

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, २० अगस्त २००७। गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग की ब्रह्मचर्याश्रम स्थित यज्ञशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत और इटली के संयुक्त तत्वावधान में इटली के २६ सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार का भ्रमण किया तथा ब्रह्मचारियों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम का आनन्द लिया। इटली से आए समस्त प्रतिनिधि ब्रह्मचारियों के संस्कृत गीत, भजन एवं योग को देखकर आश्चर्य चकित रह गए।

इटली से आये प्रतिनिधि मण्डल की अनुवादक तथा इटली शाखा की निदेशक डॉ० सद्भावना ने बताया कि सभी प्रतिनिधि गुरुकुल में आकर अत्यन्त प्रसन्न एवं उत्साहित हैं, वे ऐसा अनुभव कर रहे है कि हम आज हवा में उड़ रहे हों। गुरुकुल में आकर जितना आनन्द हमें आया, शायद ही कभी जीवन में महसूस किया हो।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने इटली से आए प्रतिनिधि मण्डल का हृदय से स्वागत करते हुए कहा कि हम सब ईश्वर की सन्तान हैं, इसलिए सभी में आपस में भाईचारे का सम्बन्ध है। उन्होंने प्रतिनिधि मण्डल को गुरुकुल का साहित्य भी सप्रेम भेंट किया।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के आचार्य आर्य तपस्वी सुखदेव जी एवं सहायक मुख्याधिष्ठाता पं० महेन्द्र कुमार ने सभी प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया। इस अवसर पर योग विभाग के अध्यक्ष प्रो० ईश्वर भारद्वाज, CSRAM के निदेशक डॉ० आर्य भूषण भारद्वाज, AIMA इटली के निदेशक डॉ० रिकार्डो मेन्तास्ती, डॉ० कपिल, डॉ० सद्भावना, डॉ० लुका, डॉ० राघवन केरल तथा विद्यालय विभाग से समस्त अध्यापक, अधिष्ठाता एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुख्याध्यापक डॉ० योगेश शास्त्री ने किया।

– *सहायक मुख्याधिष्ठाता,*
गु०का०, हरिद्वार

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज कलकत्ता
प्रधान : श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
मंत्री : श्री मनीराम आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री छोटेलाल सेठ

आर्यसमाज राजौरी गार्डन, दिल्ली
प्रधान : श्री जगदीश आर्य
मंत्री : श्री दयानन्द मदान
कोषाध्यक्ष : श्री ओ०पी० भाटिया

स्त्री आर्यसमाज राजौरी गार्डन
प्रधाना : श्रीमती राजपाण्डे
मन्त्रिणी : श्रीमती वेद मदान

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन : 43580554) से मुदित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित। ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
मूल्य : २ रुपये

ओ३म्

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४६ अंक ११ | ७ अक्टूबर से १३ अक्टूबर, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | आ०कृ०१२
भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

राम सेतु को तोड़ने का विचार अर्थात समुद्र में आग लगाने का विचार

भारत और लंका के बीच वर्तमान काल में समुद्र तल से लगभग १० फुट मात्र नीचे आज भी वह सेतु विद्यमान है जिसका निर्माण श्रीरामचन्द्र महाराज ने लंका पर चढ़ाई के लिए किया था।

व्यापारीकरण अपने आपमें आत्मा की एक गिरावट है। उस पर भी भ्रष्टाचार तो ऐसे है जैसे करेला और नीमचढ़ा। आज के इस व्यापारीकरण युग में हर व्यापारी का लक्ष्य है अपने व्यापारिक कार्यों की लागत को घटाना और लाभ को बढ़ाना।

भारत के पश्चिमी समुद्री तट जैसे मुम्बई, केरल आदि से पूर्वी तटों जैसे चैन्नई आदि की ओर आने और जाने वाले पानी के जहाज भारत और श्रीलंका के बीच में से नहीं निकल पाते क्योंकि यह राम सेतु जो समुद्र तल से १० फुट नीचे की गहराई पर है। वह जहाजों के निकलने में स्वाभाविक रूप से बाधक है। ऐसे में जहाजों को श्रीलंका के ऊपर से चक्कर काटकर आना पड़ता है। इस चक्कर की लागत को घटाने के लिए जहाज कम्पनियों के दबाव पर भारत सरकार ने यह योजना बना डाली की राम सेतु को तोड़ दिया जाए। हजारों करोड़ रुपए का बजट इस तोड़ फोड़ के लिए निर्धारित कर दिया गया है। भ्रष्टाचार का एक और कार्यक्षेत्र मिल गया। जितना पैसा खर्चो उससे दुगना खाओ। इस नीति के वशीभूत राजनीतिक नेताओं ने इस योजना को लागू भी कर दिया है। अन्ततः बात पहुंची सर्वोच्च न्यायालय में तो वहां जल्दबाजी में केन्द्र सरकार की ओर से यह शपथ पत्र दाखिल किया गया कि इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि इस राम सेतु को श्री रामचन्द्र तथा उनकी सेना ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए बनाया था। अनावश्यक रूप से शपथ पत्र में यह भी लिख दिया गया कि रामचन्द्र तथा उनसे सम्बन्धित घटनाओं का इतिहास में कोई प्रमाण नहीं मिलता। यह सीधा सा वैदिक धर्म के सृष्टि से लेकर आज तक के इतिहास पर सरकारी कुठाराघात था। होता भी क्यों नही, क्योंकि सरकार केवल कांग्रेस तो नहीं चला रही सरकार को चलाने वाली या यूं कहें कि नचाने वाली ताकत कम्युनिस्ट हैं। यह सब कम्युनिस्टों का खेल था। कांग्रेस सरकार ने तो बिना समय गवांये शपथ पत्र को वापिस लेकर तथा कई कांग्रेसी नेताओं से सुलझे हुए बयान दिलवाकर अपना पल्ला झाड़ने का प्रयास किया। परन्तु कम्युनिस्ड ताकतों ने अब अपने पेरोकारों को आगे कर दिया है। एक टी०वी० कार्यक्रम में ऐसे ही एक कम्युनिस्ट पेरोकार अग्निवेश ने भी श्री रामचन्द्र जी के इतिहास को चुनौति देने में कसर नही छोड़ी। इस टी०वी० कार्यक्रम से सारे देश में अग्निवेश के नाम पर थू-थू हुई। आर्यसमाज में अपनी जगह बनाने के लिए गुण्डागर्दी अभियान पर निकले अग्निवेश को इस कार्यक्रम के अन्दर ही अन्य वक्ताओं और जनता का विरोध देखने को मिल गया।

राम सेतु के बारे में यदि कानूनी दृष्टिकोणों को भी सूत्रबद्ध करने का प्रयास करें तो सबसे **प्रथम दृष्टिकोण** यह है कि यह वही राम सेतु है जिसको सारे विश्व का हिन्दू समुदाय श्रीरामचन्द्र जी की सेना द्वारा निर्मित मानता है। इस राम सेतु के साथ कोटि-कोटि जनता की भावनाएं जुड़ी हुई हैं। राम सेतु को तोड़ने की वकालत करने वाले लोगों को यह याद रखना चाहिए कि राम सेतु तोड़ने का अर्थ है शान्त समुद्र में आग लगाना।

दूसरा दृष्टिकोण – राम सेतु के निर्माण का ऐतिहासिक प्रमाण ढूंढने वाले लोग नादान हैं, मूर्ख हैं और इस विशेष घटनाचक्र में यह स्पष्ट है कि ये लोग केवल कम्युनिस्ट हैं। ये कम्युनिस्ट (अपने मुंह से स्वीकार करें या न करें कि ये कम्युनिस्ट हैं) क्या इस बात का प्रमाण दे सकते हैं कि जिस पिता के वीर्य और जिस मां के गर्भ से ये पैदा होने का दावा करते हैं ये वास्तव में उसी माता और पिता की सन्तान हैं। प्रमाण के चक्कर में यदि पड़ें तो ये कम्युनिस्ट खुद ही नाजायज सन्तान साबित होंगे।

तीसरा दृष्टिकोण – श्रीरामचन्द्र जी का इतिहास और प्रमाण से छूट का दावा भी यदि एक तरफ रख दिया जाए तो यह तो मानना ही पड़ेगा कि परमपिता परमात्मा द्वारा निर्मित कई पर्वत, नदिया, समुद्र आदि लोगों की श्रद्धा का केन्द्र बन जाते हैं। ऐसे श्रद्धा के केन्द्रों को नष्ट करना किसी सरकार के बस की बात नही। यदि कोई ऐसा करने का प्रयास करेगा तो उसे अपना राजनीतिक विनाश भी साथ ही देखना पड़ेगा।

चौथा दृष्टिकोण – इन सबके अतिरिक्त सरकार किसी भी प्राकृतिक या मानव निर्मित प्राचीन धरोहरों को नष्ट करने का अधिकार नही रखती। सरकार को चाहिए कि ऐसी समस्त प्राकृतिक या मानव निर्मित सम्पदाओं को राष्ट्रीय धरोहर घोषित करके उन्हें सुरक्षित करने के लिए सहयोगी बने। □

सरदार भगत सिंह के जन्म ग्राम में ....

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में सरदार भगत सिंह का जन्म ग्राम को ११ अक्टूबर के दिन आर्यसमाज के प्रचार प्रसार से ओत-प्रोत करने की तैयारी जोर शोर से चल रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक विशाल वेद प्रचार कार्यक्रम निर्धारित किया है। इस कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी, कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के मन्त्री श्री अरुण अब्रोल सहित कई अन्य आर्य नेताओं के भाग लेने की सम्भावना है। श्री मिठाई लाल सिंह जी १० अक्तूबर को मुम्बई से विमान द्वारा चण्डीगढ़ पहुंचेंगे। चण्डीगढ़ से वे सरदार भगत सिंह के ग्राम के लिए रवाना होंगे।

दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव

इस वर्ष दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव १२ व १३ अक्तूबर को एक भव्य सम्मेलन के रूप में आयोजित किया जा रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह तथा मुम्बई सभा के मन्त्री श्री अरूण अब्रोल भी इस वार्षिकोत्सव में भाग ले रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक १४ अक्टूबर, २००७ को

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आगामी अन्तरंग बैठक १४ अक्टूबर, २००७ (रविवार) को प्रातः ११ बजे आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल में आहूत की गई है। समस्त अन्तरंग सदस्यों को बैठक के आमन्त्रण भेज दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त विद्वानों तथा विशिष्ट आर्य नेताओं को विशेष आमन्त्रित रुप में इस बैठक में आमन्त्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त यदि कोई महानुभाव इस बैठक में भाग लेकर आर्यसमाज की वर्तमान परस्थितियों पर मार्गदर्शन करना चाहें तो वे सभा प्रधान अथवा सभा मन्त्री की पूर्व अनुमति से बैठक में पधार सकते हैं।

मिठाई लाल सिंह
सभा प्रधान
09892117977

स्वतन्त्र कुमार
सभा मन्त्री
09719004451

को वेदानुद्धरिष्यति ? 1

(वेदों का उद्धार कौन करेगा ?)

वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने वेद में विज्ञान तथा समस्त वैदिक मान्यताओं को विश्व में प्रचारित करने के उद्देश्य से महान संकल्प शिरोधार्य किया है। जिस प्रकार वेद मार्ग में कई विधर्मी ताकतें और विशेष रूप से कम्युनिष्ट विचारधारा और कम्युनिष्टों का सरगना अथवा पिट्ठू अग्निवेश वैदिक और राष्ट्रवादी विचारों पर कुठाराघात करने में लगे हैं, उससे भी अधिक लक्ष्यबद्ध होकर ये सब ताकतें उन वैदिक विद्वानों की दुश्मन बन जाती हैं जो वेद प्रचार को अपने जीवन का एकमात्र और सम्पूर्ण लक्ष्य घोषित कर देते हैं। शायद इसी कारण ये ताकतें पूरे आर्यसमाज में भी घुसपैठ आर्यसमाज के उद्धार के लिए नहीं अपितु वैदिक विचारों को नष्ट करने के उद्देश्य से करती जा रही हैं। ये ताकतें भूल गयीं कि इनके जीवन तो नष्ट हो सकते हैं लेकिन वैदिक विचारधारा को सारी दुनिया मिलकर भी नष्ट नहीं कर सकेगी। इसी प्रकार की कुछ कथा–व्यथा आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी की लेखनी में झलक रही है जो उन्होंने लेखबद्ध करके पुस्तिका के रूप में प्रकाशित की है। इस पुस्तिका को हम यहां श्रृंखलाबद्ध रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तिका की प्रस्तावना वेद मन्दिर मथुरा के आचार्य स्वदेश जी ने बहुत सटीक ढंग से लिखी है। पाठकवृन्द इस श्रृंखलाबद्ध सामग्री को एकत्र करके रखें और यदि कोई कर्मठ आर्य नेता इसे पुनः प्रकाशित करना चाहे तो आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी से इस पते पर सम्पर्क करके मंगवा लें – श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर, (वैदिक एव आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान), भागल–भीम, वाया – भीनमाल, जिला – जालोर (राज०), फोन – ०२९६९–२२०५७६, मो० ०९४१४१८२१७३, ०९८२९१४८४०० । आशा है इस सम्पूर्ण व्यथा–कथा को पढ़कर आर्यजनों में वेद प्रचार का नया उत्साह पैदा होगा और इस पवित्र कार्य के मार्ग में आने वाली बाधाओं से भी आप साक्षात् हो पाएंगे।

– विमल वधावन आर्य

विनम्र निवेदन : 'को वेदानुद्धरिष्यति' नामक इस लेख में समादरणीय श्री आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक ने समस्त आर्य जगत को विघटनकारी तत्वों के प्रति सचेत किया है। वस्तुतः आज आर्यसमाज में एक अभूतपूर्व वैचारिक संकट उत्पन्न हो गया है। कुछ विधर्मी तत्वों को लगा कि आर्य जाति की वैचारिक व सैद्धान्तिक सुदृढ़ता का मूल आधार वेद तथा आर्ष ग्रन्थ हैं। इसके कारण ही यह सनातन वैदिक संस्कृति अनेकों विदेशी आक्रमणों को सहन करती हुई आज भी जीवित है। इसीलिए इसे नष्ट कर देना चाहिए। ऋषि दयानन्द जी महाराज के आगमन पूर्व लगा था कि यह अपने ही वेद भाष्यकारों वा अज्ञानी लोगों द्वारा ऐसे कुरूप को प्राप्त हो गई है, जिससे उबरना सम्भव नहीं है तो ऋषि दयानन्द जी की कृपा से फिर इसमें नव प्राणों का संचार हुआ, परन्तु उसके पश्चात् भारत का दुर्भाग्य व अपने ही देश के कर्णधारों की स्वार्थ परता व हमारी दुर्बलतावश विदेशी वेद भाष्यकारों के योजनाबद्ध प्रहारों से यह पुनः मृत जैसी हो गयी है। हमारे प्रयास इस कारण सफल नहीं हो पा रहे हैं कि देश को स्वतंत्र कराने में सर्वाधिक अग्रणी रहते हुए भी आर्य समाज सत्ता से दूर रहा तथा अपने ही हिन्दू कहाने वाले नादान भाइयों ने इस स्तर तक जाकर कभी सोचा ही नहीं। वे ऋषि दयानन्द को अपना शत्रु मानते रहे हैं।

अब एक भयंकर यह स्थिति आ गयी है कि अग्निवेश और उनके कुछ अन्य भक्तों ने एक साथ वह बीड़ा उठाया है, जो कभी नास्तिक देशीय व विदेशी शक्तियों ने उठाया था। स्वाध्याय की कमी से कई आर्य जन इनके समाज सुधार के थोथे भाषणों से प्रभावित होकर उनके अन्ध भक्त बनकर आर्यसमाज को खण्ड खण्ड कर रहे हैं। वेद व सत्यार्थ प्रकाश पर आक्रमण आर्यसमाज के अन्दर घुस कर करने की यह महाविपत्ति सर्वप्रथम आयी है। इस विपत्ति को श्री नैष्ठिकजी ने गहराई से भांप कर आर्य विद्वानों, नेताओं व जनता को सचेत करने हेतु यह महत्वपूर्ण लेख अपनी वेदना के स्वरों से लिखा है। पाठकों से निवेदन है कि वे इस लेख को ध्यान व निष्पक्षता से पढ़कर मनन करें तथा अत्युच्च स्तरीय विद्वान्, आर्य नेताओं, संन्यासियों से भी प्रार्थना है कि वे इस लेख की उपेक्षा न करें क्योंकि यह विपत्ति हम सबके प्राण प्रिय आर्यसमाज व भारत को नष्ट कर सकती है इसलिए हम सबको संगठित व समन्वित प्रयास करके वेद व आर्ष परम्परा की रक्षा हित किसी भी बलिदान हेतु तैयार रहना है। इसके साथ ही निवेदन है कि श्री नैष्ठिक जी जिस अभूत पूर्व संकल्प को लेकर चले हैं, उस दिशा में समस्त वेद भक्त समाज विशेषकर आर्य जगत् को गम्भीरता से विचार करना चाहिए। इनकी प्रतिभा, वैज्ञानिक चिन्तन, अविचल ध्येयनिष्ठा, तप, त्याग व सत्यनिष्ठा से मैं वर्षों से परिचित हूं। निश्चित ही इन्हें ऐसा भयंकर व्रत नहीं लेना था परन्तु अब हम आर्यों का क्या कर्त्तव्य है, यह हमें सोचना है। मुझे विश्वास है कि यदि इन्हें आर्थिक कठिनाईयों से मुक्त कर सर्व साधन सुलभ कराये जायें। प्रेम, सहयोग, सहकार का स्वस्थ वातावरण मिले तथा सुयोग्य आर्य नेता दूरदर्शिनी योजना व नीति बनाकर इन्हें हर सम्भव सहयोग देवें। छल कपट व सम्भावित बाधाओं से सचेत रहने हेतु समय समय पर हमारा परस्पर संवाद सम्मेलन होता रहे। सभायें व समर्थ सज्जन उच्च स्तर तक सम्बन्ध बनाने का मार्ग बनाते जायें, तो ये अवश्य ही विश्व वैज्ञानिक मण्डली में वेद की प्रमाणिकता सिद्ध कर सकते हैं और इसका श्रेय आर्यसमाज को होगा, यह हमारे लिए गौरव की बात होगी, समस्त वेद भक्तों का, देश का गौरव बढ़ेगा। आशा है आप इस विषय में खुले व उदार हृदय से सहयोग हेतु तत्पर रहेंगे साथ ही अधिकाधिक पौराणिक वेद भक्तों को भी इस दिशा में प्रेरित करेंगे।

इसी आशा व प्रार्थना के साथ

– आचार्य स्वदेश,

Book-Review

Orison Swett Marden
(His life and Ideas)

Author : Sh. I.J. Bhatia

Available at : Govindram Hasanand, 4408, Nai Sarak, Delhi - 6, Ph : 65360255, 23977216
e-mail : ajayarya@vsnl.com, **Price : Rs. 300/-**

Orison Swett Marden was a great humanist and a spiritual reformer of America. He has written about 50 inspirational books on self-reformation.

The author, an Arya Samajist, was attracted towards this personality. To satisfy his academic thirst he was inspired to undertake extensive research into life and ideas of this great soul. Since 1994, he studied most of his books and took notes of various thought provoking ideas.

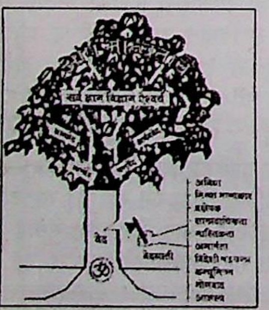
Orison became an orphan at seven. He began his life as a 'hired boy'. Initially he was not allowed to pursue pursue studies. But with his hard work during holidays as a waiter in a hotel, he could pursue only informal education at house or at the feet of one or the other learned man. One of the academicians boosted Orisan in these words :

"I have noticed that you are having a struggle to get an education. The day will come when the boys in the institute, sent here by wealthy persons, will look up to you instead of down upon you."

First, He entered into Hotel business and became proprietor of several Hotels in America but sooner he realised that money making was not his goal. He was made a man to benefit the mankind. This became his motive of life. As regards spirituality he viewed that everyone should love God with one's heart and one's neighbour as oneself. The universe God has created is governed by immutable laws and whoever breaks any of these laws suffers the consequences.

The author, Shri I.J. Bhatia, has endeavoured to collect as many of his ideas as he could in his book of 232 pages. For this act of a nice research, he deserves commendations.

— Vimal Wadhawan Arya



को वेदानुद्धरिष्यति ?

सम्मान्य आर्य महानुभाव ! इस भूमण्डल में मानव सृष्टि से लेकर लगभग महाभारत युद्ध तक वेदोक्त धर्म व मानव संविधान का शासन रहा। महाभारत युद्ध के उपरान्त इस देश व विश्व में धीरे–धीरे वैदिक धर्म व ज्ञान विज्ञान का पतन होता गया जो आज अत्यन्त अधःपतितावस्था को प्राप्त हो चुका है। भले ही पदार्थ विज्ञान व तकनीक का भारी विकास पश्चिम में हो गया हो और उसी से आज भारत में आ गया हो वा आ रहा हो परन्तु धर्म जिसका अर्थ ही अध्यात्म विज्ञान तथा पदार्थ विज्ञान दोनों का योग व सामन्जस्य है, का पतन अभूतपूर्वरुपेण हो चुका है। जो लोग धर्म को केवल सम्प्रदाय अर्थ में ग्रहण करते हैं, वे धर्म के मर्म को अल्पांश में भी नहीं समझते चाहे वे किसी भी उच्च पद मत है कि जो महानुभाव आध्यात्मिकता व मानवीयतादि गुणों को ही धर्म समझते हैं, वे भी धर्म व मानवता दोनों का मर्म पूर्णरुपेण नहीं समझते। मैं ऐसे महानुभावों को धर्म धुरन्धर महर्षि देव दयानन्द जी महाराज के ग्रन्थों को सावधानी पूर्वक पढ़ने का परामर्श दूंगा और जो श्रीमद् महर्षि दयानन्द जी में ही श्रद्धा नहीं रखते उन्हें मानव मात्र के महान हितैषी अमितौजा भगवान मनु महर्षि जी महाराज, अखण्ड ब्रह्मचारी भीष्मजी महाराज के उपदेश पढ़ने तथा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्री राम एवं महान् वैदिक विज्ञानी योगेश्वर श्री कृष्णजी महाराज का जीवन पढ़ने का निवेदन करुंगा। महाभारत में ही भगवान् शिव, भगवान् ब्रह्मा, भगवान विष्णु, भगवती उमा देवी, देवराज इन्द्र एवं अनेकों महर्षि महानुभावों के उपदेश भी पढ़े जायें तब कहीं धर्म का सही मर्म जाना जा सकता है। इस सब धर्म का मूल आधार था, वेद जिसे मानव जाति लगभग महाभारत काल तक ईश्वरीय व सर्वज्ञानमय मानती रही है। दुर्भाग्यवश पिछले लगभग ५ हजार वर्षों में विश्व पटल पर गाढ़ अज्ञान, पापादि का अन्धकार इस प्रकार छा गया है जैसे प्रलय काल में भौतिक प्रकाश का सर्वथाभाव होकर गाढ़ अन्धकार छा जाता है। कोई भी लक्षण सृष्टि का रहता नहीं। उसी प्रकार आज विश्वभर में वेद के आदर्श [illegible] विलीन से हो गये हैं। कहीं कोई आशा व प्रकाश की किरण दिखायी नहीं दे रही। यद्यपि अब से लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व भगवान दयानन्द महर्षि महाराज ने वेद की मशाल जलाकर विश्व में शंखनाद किया था और अपनी उत्तराधिकारिणी संस्था आर्यसमाज को यह कार्य सौंपा था। प्रारम्भ में आर्यसमाज के विद्वानों ने एतदर्थ भारी उद्योग भी किया था और कुछ प्रयास आज भी इस संस्था द्वारा हो रहा है परन्तु विश्व के ७ अरब मानवों की तुलना में यह प्रयास नगण्य सा रह गया है। राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक प्रवचनों तक ही प्रायः हमारी दृष्टि रह गयी है। वेद के वेदत्व पर जो आक्रमण होते रहे हैं, हो रहे हैं, उस पर ध्यान देने वाले कुछ ही वृद्ध विद्वान बचे हैं। युवाओं में इस ओर जागरण नहीं है। नयी पीढ़ी के युवा कुछ पढ़कर प्रचारादि से यथा तथा जीवन यापन के जुगाड़ में रहते हैं। उनका दोष भी नहीं है, क्योंकि विद्या साधक विद्वानों को इस समाज से कुछ विशेष मिलता भी नही है। घोर अर्थाभाव में उपदेशकों, भजनोपदेशकों के बच्चे जी रहे हैं, इसलिए आने वाली पीढ़ी इस दिशा से दूर जा रही है। पश्चिम की उपभोक्तावादी सभ्यता ने सबको पागल बना रखा है। आर्ष–पाठ–विधि, आर्ष–संस्कृति, [illegible] कार्यकर्त्ता व विद्वानों को भी बौनापन दिखाई दे रहा है और वे घबराये हुए पश्चिमी ज्ञान विज्ञान की ओर भाग रहे हैं। गुरुकुलों के पाठ्यक्रम बदल रहे हैं। ब्रह्मचारियों के आदर्श बदल रहे हैं तो अनेक स्नातक योगासनों व प्राणायाम के सहारे कुछ काम चलाऊ तो कुछ अच्छे व्यापारी बन रहे हैं। श्रद्धेय श्री स्वामी रामदेव जी महाराज ने यह रोजगार अवश्य अनेक निराशों को दे दिया है। परन्तु क्या रोजगार ही लक्ष्य होना चाहिए ? आज हर युवा स्वामी रामदेव जी ही बनने का स्वप्न देख रहा है। इस समय आस्था चैनल के माध्यम से स्वामीजी महाराज ने वैदिक विद्वानों के प्रवचनों की जो धूम विश्व में मचाई है, वह ऐतिहासिक है, यह कार्य कोई नहीं कर सकता था। एतदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं। आज हमारी आवश्यकताएं, प्राथमिकताए बदल गयी हैं, आदर्श बदल गये हैं, ऋषि, महर्षि शब्दों के अर्थ बदल गये हैं, शैलियां बदल रही हैं, सोच बदल रहे हैं कि कहीं संसार की भागमभाग में हम पीछे न रह जायें। भारी विज्ञापनों का जोर है, शोर है। विज्ञापन से खट्टा सेब मीठा हो जाता है, पीतल भी सोना कहकर बिकता है, विष भी अमृत कहकर लूटा जाता है। कभी कभी मैं सोचता हूं कि इस भागदौड़ का अन्त क्या होगा ? कब तक क्षणिक सफलता, लौकेषणा व वित्तोषणा को आदर्श माना जायेगा ? दुनिया में अनेक विचार, सभ्यता आये व नष्ट हो गये आज जिनके चिन्ह भी शेष नहीं है। वैसे ये भी मिट जायेंगे। ईश्वरीय नियम, ईश्वरीय ज्ञान कभी न तो बदले और न बदलने की आशंका है, तब क्यों हम ईश्वरीयता की ओर उन्मुख नहीं हो रहे है ? शायद इससे हमें लगेगा कि हम पीछे हो रहे हैं, तो होने दो। क्या सूर्य ने कभी किसी की अंधी प्रतिस्पर्धा की ? क्या पृथ्वी ने कभी अपनी मर्यादा लांघी है ? क्या पशु पक्षी अपनी सनातनी परम्परा का निर्वहन नहीं कर रहे हैं ? तब हम मानवों को ही क्यों भय सता रहा है, क्यों दूसरों को देख व दिखाकर जीना चाहते हैं ? क्यों हमें आत्मबोध नहीं कि कैसे व क्यों जीना चाहिए ? नकल की विनाशिनी प्रवृत्ति ने मानव की बुद्धि को आहत कर रखा है। बुद्धि विनाशगामिनी बन गयी है। जल्दी.... जल्दी.... जल्दी परिणाम चाहिए। परिणाम क्षणिक होगा वा नित्य, यह कौन सोचता है, इसलिए मैं कह रहा हूं कि 'तमसापगूढम्' की दशा तो आज बन गयी है। कुछ ऋषिभक्त, वेदभक्त आज भी अपनी लेखनी व वाणी से पुरुषार्थ कर रहे हैं। वे मूल से अलग न होते हुए भटकतों को दिशा देने का काम कर रहे हैं। सौभाग्य ऐसे विद्वान आर्य समाज में ही हैं परन्तु आर्यसमाज के नेतृत्व का पतन दशकों से जारी है। इस समय तो साम्यवादियों ने दयानन्द वा वेद वादियों को धक्का देकर उनके घर पर अधिकार कर रखा है परन्तु दुर्भाग्य कि उनका साथ भी अनेक दयानन्दियों ने ही दिया है व दे रहे हैं। तो कोई साम्यवादियों की दयानन्द वादियों से वार्ता कराकर इस मरे आर्यसमाज को जिलाने की मृगमरीचिका में भटक व भटका रहे हैं। निश्चित ही उन महानुभावों की भावनायें शुद्ध होंगी, वे समाज हित में ऐसाी करते व सोचते होंगे कि घर के विवाद घर में ही मिल बैठकर सुलझा लिया जायें परन्तु वे समझने में भूल कर रहे हैं। इस सम्पूर्ण लेख को पढ़ने पर उन्हें निश्चित ही इसका बोध हो सकेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। जब सिक्खों को प्रसन्न करने हेतु सत्यार्थ प्रकाश में संशोधन की बात हुई तब भी कामरेडों के अन्धभक्त आर्यसमाजी भाई नहीं चेते। जब समलैंगिगकता जैसे घृणित पाप का समर्थन दयानन्द भवन से अग्निवेश ने किया तब भी इन दीन हीन आर्यों में घृणा, मन्यु का उदय नहीं हुआ। चलाकी भरे उनके एक स्पष्टीकरण से फूल गये।

(क्रमशः)

यज्ञ क्या है ? (6)

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" - यज्ञ सब श्रेष्ठ कर्मों से भी श्रेष्ठ कर्म है

– डॉ० भवानी लाल भारतीय

पौराणिक पूजाओं का आडम्बर इस अश्वमेध विधि के निर्माता को भी स्वीकार्य है। इसीलिए उसने षोडश मातृका, वास्तु देवी, त्रिदेव पूजन आदि की कल्पित विधियों का यहां विधान किया। यज्ञदेव आह्वान तथा ज्योतिपुरुष आह्वान आदि के कृत्य इनके मनोविलास मात्र हैं। वेदों में सप्त ऋषियों का विचार (सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे) मंत्र में आता है किन्तु ये सप्त ऋषि शरीरस्थ इन्द्रियों आदि के प्रतीक हैं। कश्यप, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, वसिष्ठ तथा अत्रि, इन सात ऋषियों का हमारे धर्मग्रंथों तथा पुरातन इतिहास में वर्णन मिलता है किन्तु इन्हें किसी वेदी पर प्रतीक रूप में स्थापित करना तथा उनकी षोडशोपचार विधि से पूजा करना पौराणिक कृत्य है। इसी प्रकार इस पूजा विधि में इन ऋषियों के साथ जिन वेद मंत्रों का संबंध बताया गया है वह भी काल्पनिक हैं क्योंकि वेदों में किन्हीं लौकिक ऋषियों, राजाओं आदि का इतिहास नहीं है। यही बात अरुन्धती के लिए कही जा सकती है। अरुन्धती आकाशस्थ एक तारा है। विगत में इस नाम की कोई नारी अत्रि ऋषि की धर्मपत्नी थी। अब इन्हें पूजने का कोई औचित्य नहीं है। हां, इनके सद्गुणों को ग्रहण किया जाना चाहिए।

इस कलियुगी अश्वमेध विधि के निर्माता ने अपने इस ग्रंथ में वैदिक, पौराणिक तथा तांत्रिक विचारों का एक विचित्र घालमेल कर दिया है। भारतीय धर्म परम्परा के अध्येताओं से यह तथ्य अविदित नहीं है कि वैदिक और पौराणिक विधि विधान सर्वथा पृथक हैं जो सर्वथा पृथक दो छोरों पर खडे हैं। जिन्हें वेदों का विधान ग्राह्य है उनके लिये तांत्रिक तथा पौराणिक विधियां सर्वथा हेय, त्याज्य तथा उपेक्षणीय हैं, किन्तु जनसामान्य की भावनाओं को शास्त्रों की उपेक्षा कर मान्यता देने वाला यह गायत्री सम्प्रदायाचार्य ६४ योगिनी, क्षेत्रपाल आदि तंत्रों में मान्य देवी देवताओं की पूजा का विधान करता है और चरित्रनाशक वाममार्गी तंत्राचार का समर्थन करता है। ६४ योगिनियों की यह कल्पना कितनी भ्रष्ट तथा ग्राम्य है यह इन योगिनियों के विचित्र, जुगुप्सा जनक तथा गर्हित उन नामों से स्पष्ट हो जायेगी जो इन तंत्र ग्रंथों में आये हैं।

उदाहरणार्थ – कुछ योगिनयों के विचित्र नामों को देखें – गजानना (हाथी से मुख वाली), सिंहमुखी (शेर के मुखवाली), गृध्रास्या (गीध के मुख वाली) काकतुण्डिका (कौओे की सी चोंच वाली), उष्ट्रग्रीवा (ऊंट सी गर्दन वाली), हयग्रीवा (घोड़े की गर्दन वाली), वाराही (सूअर की शक्ल वाली), उलूकिका (उल्लू की शक्ल वाली), शिवारावा (गीदड़ी की भांति आवाज करने वाली), मयूरी (मोर की आकृति वाली), कुब्जा (कुबड़ी), विकट–लोचना (भयंकर नेत्र वाली), शुष्कोदरी (सूखे पेट वाली), ललजिह्वा (लाल जीभ वाली), श्वदंष्ट्रा (कुत्ते के से दांत वाली), वानर (बंदर से मुंह वाली), बृहत्तुण्डा (बड़े पेट वाली), सुराप्रिया (शराब से प्रेम रखने वाली), कपाल–हस्ता (मानव खोपड़ी हाथ में रखने वाली), रक्ताक्षी (लाल आंखों वाली), पाशहस्ता (हाथ में पाश लिए), दण्डहस्ता (हाथ में दण्ड लिए), प्रचण्डा, चण्ड विक्रमा (प्रचण्ड पराक्रम वाली), शिशुघ्नी (बच्चों को मार डालने वाली, डायन या राक्षसी), काली, रुधिर पायिनी (खून पीने वाली), गर्भभक्षा (गर्भ के भ्रूण को खाने वाली), शवहस्तान्त्रमालिनी (मुर्दे के हाथों तथा आंतों की माला पहनने वाली), स्थूलकेशी (बिखरे मोटे बालों वाली), बृहतकुक्षि (स्थूल योनि वाली), सर्पास्या (सांप के मुख वाली), प्रेतवाहना (मुर्दे पर सवारी करने वाली), मृगशीर्षा (हरिण के सिर वाली), वृषानना (बैल के से मुख वाली), स्थूलनासिका (मोटी नाक वाली), मार्जारी (बिल्ली के समान), अट्टहासा (जोर से हंसने वाली) आदि। इन और ऐसे ही भ्रष्ट, वीभत्स तथा घृणोत्पादक नामों वाली ७४ योगिनयां जिस वर्ग ले लोगों की पूज्या, उपास्या तथा आराध्या देवियां हों वे सभ्य समाज में मुख दिखाने लायक भी नहीं है। ऐसी देवियों की पूजा करने वाले इन्य मत वालों द्वारा उपहास तथा निंदा के पात्र बनाये जाते रहे हैं। विधर्मी ईसाई पादरियों को हिन्दू देवताओं का मजाक उड़ाने का मौका ऐसे तांत्रिक देवी–देवताओं से ही मिलता है। ध्यान रहे कि शीतला, भैरव, क्षेत्रपाल, गणेश आदि हिन्दुओं के वे अपदेव हैं जिनकी पूजा निम्न स्तर के लोग करते हैं। सामान्य पौराणिक धर्म में भी इन अपदेवों का कोई स्थान नहीं दिया गया है।

इस अश्वमेध विधि के स्वयंभू निर्माता ने भी सर्वतोभद्र मण्डल पूजा, गणपति आह्वान, वैनायकी आह्वान जैसे कल्पित कृत्यों की प्रकल्पना की है। साथ ही ब्रह्मा–ब्रह्माणी, इन्द्र–ऐन्द्री, दुर्गा, सोम, स्वधा, विष्णु–वैषणवी, यम, अग्नि, वरुण, वायु, अष्ट वसु, सप्त यज्ञ, एकादस रुद्र, द्वादश आदित्य, अश्विनी कुमार, विश्वदेवा, स्कन्द, कौमारी, दक्षादि सप्तगण, महाकाल, माहेश्वरी, मरुत्त, मेरु, पृथ्वी, सप्त सागर, गंगादि नदियां, ततपश्चात् सर्वदेवों का आह्वान तथा उन्हें नमस्कार का विधान किया है। ध्यान रहे कि इन देवों की मण्डली में वैदिक, पौराणिक तथा लोक प्रचलित सभी देवी देवताओं का अजीब सा घालमेल कर दिया गया है। *(क्रमशः)*

पूना (महाराष्ट्र) में वेद प्रचार

श्रावणी पर्व के शुभ अवसर पर पूना के आर्यसमाजों में उत्साह पूर्वक वेद प्रचार मास मनाया गया। सार्वदेशिक सभा के माननीय अन्तरंग सदस्य तथा जिला आर्य सभा गाजियाबाद के मंत्री श्री माया प्रकाश त्यागी ने तीन सप्ताह (१३ अगस्त से ८ सितम्बर, २००७ तक) वहां रहकर इस वेद प्रचार के कार्यक्रम को प्रभावी बनाने में अहम भूमिका निभायी। जिन विभिन्न आर्य समाजों व आर्य परिवारों में इनके प्रवचन हुए वह निम्न प्रकार है – आर्य समाज मन्दिर पंपरी, आर्यसमाज मन्दिर नानापेठ, आर्यसमाज मन्दिर वारजे मालवाड़ी प्रधान लखन सिंह आर्य का गृहनिवास, मंत्री आर्यसमाज मालवाडी का गृहनिवास, यशोदीप बिल्डिंग चेतन सोसायटी वारजे, अम्बीक सोसायटी वारजे, विश्वशान्ति गुरूकुल लोणी, श्रीमती नीलम छावड़िया सरस्वती विहार नानापेठ, गिरीजा शंकर बिहार कर्वेनगर।

आर्यसमाज मोगा में हिन्दी दिवस पालन

स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर गली नं० २, न्यू टाऊन में प्रातः ७ बजे दैनिक हवन यज्ञ के पश्चात् हिन्दी दिवस पर विद्वानों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये, जिसमें विद्वान प्रो० श्री जगदीश चन्द्र जी मेहता ने हिन्दी पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि भारत की राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त होने पर भी राजकीय काम काज एवं आमजनों के द्वारा रोजमर्रा के काम में हिन्दी महती उपेक्षा होती रही है। इसलिए शासक वर्ग एवं आमजनों को विश्व के उन समृद्ध देशों को देखना चाहिए जिन देशों ने अपनी भाषा के उन तमाम विषयों को जोड़कर समृद्धि के उच्च शिखर पर पहुंचे है। चीन, जापान आदि देश इसके ज्वलन्त उदाहरण है। प्रो० मेहता ने कहा कि जब तक अपनी भाषा व संस्कृति के प्रति हमारी निष्ठा जागृत नहीं होगी तब तक उसे वह स्थान प्राप्त नहीं हो पायेगा अतः हमारी समृद्धशाली भाषा हिन्दी जिसकी कवियों, लेखकों, साहित्यकारों ने गरिमा का गुणगान किया है। उसे अपनाकर आदर्श भारतीय नागरिक होने का परिचय देते हुए अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। इसके पश्चात् प्रधन श्री जगचन्द्रपुरी व उपप्रधान श्री प्रियतमदेव एवं वैदिक प्रवक्ता पं० दिवाकर भारतीय ने भी सम्बोधित किया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 7-10-07 से 13-10-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइ[illegible] नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 4/5-10-07

उत्तर प्रदेश के जिला बागपत में
आर्यसमाज स्थापना सम्मेलन

विगत १६ अगस्त को जिला बागपत के ढ़िकौली गांव में सार्वदेशिक सभा के पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य ने यज्ञोपरान्त श्री विनोद आर्य को उनकी इच्छा को बल प्रदान करते हुए यह संकल्प करवाया कि अब इस गांव में यज्ञ की ज्योति सदैव जलती रहे। अर्थात् निरन्तर यह यज्ञ गांव के समस्त प्रोणियों को वैदिक दर्शन प्रदान करता रहे। श्री विनोद आर्य ने इस संकल्प का पूर्णतः पालन किया और तब से निरन्तर दैनिक यज्ञ ढ़िकौली गांव में अपने घेर (अतिरिक्त भूमि) में ही प्रारम्भ कर दिया। प्रतिदिन दर्जनों बाल, वृद्ध, युवक इस यज्ञ में सामिल होकर वैदिक धर्म के प्रति आस्थावान् बनते जा रहे हैं। इस कार्य का विधिवत शुभारम्भ प्रदर्शित करने के लिए २, ३ और ४ नवम्बर की तिथियों में आर्यसमाज सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

इस आयोजन में आर्यजगत् की महान् विभूतियों को आमन्त्रित किया गया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी तथा मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार सहित कई गणमान्य महानुभावों के इस सम्मेलन में पहुंचने की स्वीकृति है। □

३२ वर्षों से अथक वेद प्रचार

दिल्ली के त्रिनगर क्षेत्र के निवासी श्री कृष्णचन्द्र जी विगत लगभग ३२ वर्षों से पारिवारिक सत्संगों के रूप में यज्ञ का प्रचार दिल्ली के विभिन्न हिस्सों में घूम–घूम कर करते रहे हैं। मूलतः आर्यसमाजी संस्कारों से ओत–प्रोत श्री कृष्ण चन्द्र जी अग्रवाल समाज से भी जुड़े हुए हैं। अग्रवाल समाज के तत्वावधान में ही उन्होंने प्रति सप्ताह पारिवारिक यज्ञ करवाने की नीति और रीति को लागू करवाया है। उनका कहना है कि विगत ३२ वर्ष के समय में सम्भवतः किसी एक रविवार भी मैंने इस श्रृंखला में विराम नहीं लगने दिया। अथक यज्ञ प्रचार के इस कार्यक्रम में लगभग तीन हजार से अधिक परिवारों में वे यज्ञ करवा चुके हैं। इस सारे कार्यो का विवरण उन्होंने रजिस्टर पर बड़े सुन्दर तरीके से सम्भाल कर रखा है। यजमानों के नाम और पते भावी कार्यक्रमों के लिए प्रयोग किए गए। इस प्रचार कार्य में अग्रवाल समाज का नाम तो बेशक प्रयोग किया जाता है परन्तु उन्होंने इसमें जाति बन्धन को कभी ध्यान में नही रखा। यज्ञ प्रचार के इस कार्यक्रम से परिवारों को जोड़ने के दौरान मांसाहार और शराब को घर में न घुसने की प्रेरणा देते हुए इसे शर्त सहित संकल्प के रूप में लक्ष्य बनाया गया है। प्रत्येक रविवार किसी न किसी परिवार में प्रातः ७.३० से ८.३० बजे के दौरान यज्ञ और प्रवचन के कार्य में लारेन्स रोड के विद्वान कार्यकर्त्ता श्री रमेश चन्द्र वर्मा श्री कृष्णचन्द्र जी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करते हैं।

आर्यसमाज भीमगंज मण्डी कोटा जं० का वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज, भीमगंज मण्डी, कोटा जं० का वेद प्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक ५ सितम्बर से १२ सितम्बर, २००७ तक सम्पन्न हुआ। संयोजक श्री राजेन्द्र आर्य ने बताया कि वेद शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय के वेद प्रवचन तथा बिजनौर के भजनोपदेशक श्री राकेश आर्य के भजनोपदेश प्रतिदिन हुए। श्री राकेश जी के मधुर व स्वनिर्मित भजनों से श्रोता आत्म विभोर होते रहे वही 'श्रोत्रिय' जी ने आठ दिनों तक वेद की गंगा ही बहा दी। जहां उन्होंने बताया कि 'सत्संग ही मनुष्य का परम सहायक मित्र है वहीं ऋषि दयानन्द के विषय में भाव विभोर होकर घोषणा की कि 'महर्षि दयानन्द योगी ही नहीं परम ईश्वर भक्त थे।' परन्तु जो मनुष्य अपने कर्तव्य से भागता है उसे कभी भी ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती वरन वह भगोड़ा कहलाता है।



'न तस्य प्रतिमा अस्ति' की चर्चा करते हुए उन्होंने प्रतिमा के अर्थ बताये – प्रतिकृति, परिमाप, परिभाण, प्रतिमान आदि। ईश्वर अनुपम है।

कार्यक्रम के दौरान श्री आनन्द स्वरूप जी यादव की धर्म पत्नी का सम्मान किया गया तथा प्रधान राम कुमार नागल व मन्त्री प्रेम नाथ कौशल के धन्यवाद से सप्ताह का समापन हुआ।

– राजेन्द्र कुमार आर्य, संयोजक

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज कीर्तिनगर दिल्ली

प्रधान : श्री ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री : श्री सतीश चड्ढा
कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्रपाल आर्य

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन : 43580554) से मुदित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित। ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
मूल्य : २ रुपये

ओ३म्

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक
साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४६ अंक १२ | १४ अक्तूबर से २० अक्तूबर, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | आ०शु०३
भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

पुलिस की मदद् से हुई अग्निवेशी गुण्डागर्दी (२८ फरवरी, २००५) प्रकरण

मेट्रोपोलिटन मेजिस्ट्रेट द्वारा पुलिस जांच अनुचित घोषित

गम्भीर छानबीन के लिए वर्तमान जांच अधिकारी को बदल कर किसी अन्य योग्य जांच अधिकारी की नियुक्ति का निर्देश

नई दिल्ली। समूचा आर्यजगत २८ फरवरी, २००५ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य कार्यालय ३/५, दयानन्द भवन में कार्यरत तत्कालीन सभा मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य पर अग्निवेश तथा उसके साथियों कैलाशनाथ सिंह, सत्यव्रत सामवेदी तथा इन्द्रवेश (अब दिवंगत) द्वारा लगभग १०० व्यक्तियों के साथ किए गए हमले से पूरी तरह अवगत है। इस हमले के बाद तुरन्त श्री विमल वधावन आर्य ने पुलिस स्टेशन दरियागंज में इस घटना की शिकायत दर्ज करवायी थी। यह शिकायत एफ०आई०आर० १७६/२००५ उसी दिन धारा ४४८/३४ के तहत दर्ज कर ली गई। कुछ ही दिन के बाद श्री विमल वधावन ने एक अन्य विस्तृत रिपोर्ट दिनांक १२–३–२००५ को पुलिस स्टेशन तथा पुलिस आयुक्त कार्यालय में भिजवायी। पहले तो पुलिस इस छानबीन को टालती रही और कुछ समय बाद पुलिस ने मेट्रोपोलिटन मेजिस्ट्रेट की अदालत में औपचारिकता पूर्ण करने के लिए अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस मामले में आरोपी व्यक्तियों को गिरफ्तार नहीं किया जा सका। गिरफ्तारी न करने के पीछे यह कारण दिया गया कि दिल्ली उच्च न्यायालय में दोनों पक्षों का विवाद सभा के चुनाव तथा पदाधिकारी होने को लेकर विचाराधीन है। इस पुलिस रिपोर्ट के विरुद्ध श्री विमल वधावन आर्य ने एक विरोध याचिका मेट्रोपोलिटन मेजिस्ट्रेट की अदालत में प्रस्तुत की।

शेष पृष्ठ ३ पर

गुरुकुल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ० भारतभूषण जी की माता
स्वतन्त्रता सैनानी भागीरथी देवी नहीं रही

६४ वर्ष की अवस्था में श्रीमती भागीरथी देवी का देहावसान समूचे हरिद्वार जनपद में उनके जीवन इतिहास पर चर्चा का पुनः कारण बन गया। श्रीमती भागीरथी देवी का शुभ विवाह कट्टर आर्य विचारों से ओत प्रोत श्री तुन्गल सिंह जी के साथ हुआ तो स्वयं पति देव ने वधु के ग्रह प्रवेश के समय घूंघट खीच कर हटा दिया। भविष्य में घूंघट न करने की प्रेरणा भी दी। यह पहला कदम ससुराल में आर्य विचारों का बिगुल था। दूसरा कदम यह था कि स्वतन्त्रता आंदोलन के कार्यों में पति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलना। पतिदेव श्री तुन्गल सिंह जी की गिरफ्तारी पर ५००/– रुपए की घोषणा थी। अतः उनके निर्देशों का क्रियान्वयन श्रीमती भागीरथी देवी को करना पड़ता था। विवाह के कुछ समय बाद ही पति–पत्नी दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। पति फतेहगढ़ जेल में और पत्नी बरेली जेल में सरोजनी नायडू तथा विजय लक्ष्मी पण्डित के साथ। जेल में ही एक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। सरोजनी नायडू के आग्रह पर उस पुत्र का नाम भारत भूषण रखा गया। गुरुकुल में शिक्षा लेकर यह पुत्र डॉ० भारत भूषण, वेद विभाग के अध्यक्ष बने। जेल में जन्म होने के कारण डॉ० भारत भूषण भी स्वतन्त्रता सैनानी बनने के हकदार बन गए। श्रीमती भागीरथी देवी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हरिद्वार जिला प्रशासन द्वारा प्रदत्त राजकीय सम्मान से सम्पन्न हुआ।

उनकी स्मृति सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार, उपकुलपति श्री वेद प्रकाश शास्त्री, वैदिक विद्वान श्री सत्यव्रत राजेश, श्री विमल वधावन आर्य सहित कई वैदिक विद्वानों, विदूषियों तथा आर्य कार्यकर्त्ताओं, नेताओं एवं स्वतन्त्रता सैनानियों ने श्रीमती भागीरथी देवी को भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर उनके पति श्री तुन्गल सिंह जी ६६ वर्ष की अवस्था में उनहें मूक श्रद्धासुमन अर्पित करके गौरवान्वित हो रहे थे। अन्त में डॉ० भारत भूषण ने अत्यन्त भावुक अवस्था में अपनी माता के संस्मरण सुनाए जिन्हें श्रद्धा से लोग भारत माता कहते थे। स्मृति सभा का संचालन वैदिक विद्वान श्री दिनेश चन्द्र शास्त्री ने किया।

डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी जी नहीं रहे

सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता, इग्लैण्ड के पूर्व राजदूत, पूर्व सांसद तथा हिन्दी और संस्कृत के परम भक्त विद्वान् डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी का अचानक अस्वस्थ हो जाने पर दुःखद देहावसान हो गया। देहावसान से एक दिन पूर्व ही उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी से दूरभाष पर बातचीत की। वे विगत दो वर्षों से आर्यसमाज में अग्निवेशी गुण्डागर्दी तथा उसके कारण आर्यसमाज की दुर्गति से काफी चिन्तित थे।

सभा मन्त्री प्रो० स्वतन्त्र कुमार तथा श्री विमल वधावन एडवोकेट डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी के अचानक निधन पर दुःख व्यक्त करने के लिए उनके निवास पर गए और उनको धर्मपत्नी श्रीमती डॉ० कमला सिंघवी तथा सुपुत्र श्री मनु अभिषेक सिंघवी से भेंट करके दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की।

डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी जी की पुण्य स्मृति में शोक सभा का पारिवारिक आयोजन नीतिबाग क्लब में किया गया। शोक सभा के प्रारम्भ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने श्री विमल वधावन के साथ उपस्थित होकर ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना मन्त्रों का उच्चारण किया तथा सभा के अन्त में शांति पाठ प्रस्तुत किया। श्रद्धांजलि सभा को श्री ललित मानसिंह (अमेरिका में पूर्व राजदूत) श्री आर०एस० लाहोटी (सर्वोच्च न्यायालय पूर्व मुख्य न्यायाधीश), श्री सोली सोहराब जी, श्री नारीमन (वरिष्ठ अधिवक्ता), श्री प्रभाष जोशी (साहित्यकार) आदि महानुभावों ने सम्बोधित किया।

डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी जी की शिक्षा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में सम्पन्न हुई थी। उन्हें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा भी कुछ वर्ष पूर्व दीक्षान्त समारोह के अवसर पर विद्या मार्तण्ड की उपाधि से अलंकृत किया गया था। वे स्वर्गीय श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी के घनिष्ठ मित्रों में से थे। सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव के साथ भी उनके पारिवारिक स्तर पर घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। डॉ० सिंघवी ने भारतीय संस्कृति तथा संस्कृत भाषा की रक्षा के लिए अनेकों बार सफल योगदान दिया।

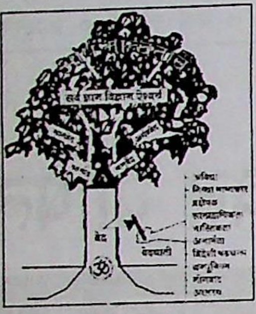
प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री
प्रबन्ध सम्पादक (09719004451)
देवराज आर्य
विमल आर्य

को वेदानुद्धरिष्यति ? 2

(वेदों का उद्धार कौन करेगा ?)

वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने वेद में विज्ञान तथा समस्त वैदिक मान्यताओं को विश्व में प्रचारित करने के उद्देश्य से महान संकल्प शिरोधार्य किया है। जिस प्रकार वेद मार्ग में कई विधर्मी ताकतें और विशेष रूप से कम्युनिष्ट विचारधारा और कम्युनिष्टों का सरगना अथवा पिट्ठू अग्निवेश वैदिक और राष्ट्रवादी विचारों पर कुठाराघात करने में लगे हैं, उससे भी अधिक लक्ष्यबद्ध होकर ये सब ताकतें उन वैदिक विद्वानों की दुश्मन बन जाती हैं जो वेद प्रचार को अपने जीवन का एकमात्र और सम्पूर्ण लक्ष्य घोषित कर देते हैं। शायद इसी कारण ये ताकतें पूरे आर्यसमाज में भी घुसपैंठ आर्यसमाज के उद्धार के लिए नहीं अपितु वैदिक विचारों को नष्ट करने के उद्देश्य से करती जा रही हैं। ये ताकतें भूल गयीं कि इनके जीवन तो नष्ट हो सकते हैं लेकिन वैदिक विचारधारा को सारी दुनिया मिलकर भी नष्ट नहीं कर सकेगी। इसी प्रकार की कुछ कथा–व्यथा आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी की लेखनी में झलक रही है जो उन्होंने लेखबद्ध करके पुस्तिका के रूप में प्रकाशित की है। इस पुस्तिका को हम यहां श्रृंखलाबद्ध रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तिका की प्रस्तावना वेद मन्दिर मथुरा के आचार्य स्वदेश जी ने बहुत सटीक ढंग से लिखी है। पाठकवृन्द इस श्रृखलाबद्ध सामग्री को एकत्र करके रखें और यदि कोई कर्मठ आर्य नेता इसे पुनः प्रकाशित करना चाहे तो आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी से इस पते पर सम्पर्क करके मगवा लें – श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर, (वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान), भागल–भीम, वाया – भीनमाल, जिला – जालोर (राज०), फोन – ०२६६६–२२०५७६, मो० ०६४१४१८२१७३, ०६८२६१४८४०० । आशा है इस सम्पूर्ण व्यथा–कथा को पढ़कर आर्यजनों में वेद प्रचार का नया उत्साह पैदा होगा और इस पवित्र कार्य के मार्ग में आने वाली बाधाओं से भी आप साक्षात् हो पाएंगे।

– विमल वधावन आर्य



मेरे भाईयो ! मेरा समस्त आर्यसमाजी कहाने वालों से गहन रिश्ता है, वह यह है कि मैं भी ऋषि दयानन्द का भक्त हूं और आप भी, इस कारण अपने घर में आग लगी देखकर मेरा हृदय रो रहा है।

मात आर्यसमाज का

हर अंग छलनी हो गया।
क्या कर जब मर्ज ही,
इसकी दवा समझी गयी।
विश्व देता है चुनौती,
खतरे अपनों से न कम।
कैसे बच पाओगे सोचो,
ईर्ष्या कटुता बढ़ रही।।
हे प्रभो ! अब तो बचा लो,
नैया डूबी जा रही .....

मुझे तो ठीक से जानकारी नहीं कि प्रो० श्यामराव जी कब आर्यसमाजी बने और स्वामी अग्निवेश नाम से प्रसिद्ध हुए परन्तु सुना है जब से बने हैं तब से अपनी वाक् पटुता, दिखावटी नम्रता, मृदुता से आर्यों को छल रहे हैं। उधर एक भोपाली वेददूषक तथाकथित पं० उपेन्द्ररावजी को भी छद्म आर्यसमाजी बनाकर वेद पर लेखनी का हमला करने को शायद किसी विधर्मी ने भी भेज रखा है। कहते हैं पं० राव पिछले १६ वर्ष से वेद पर शोध कर रहे हैं। मैं पं० राव जी से जानना चाहूंगा कि क्या उन्होंने १६ वर्षों में वेद में कुछ अच्छी बाते भी देखी है, यदि हां, तो कया उनका प्रचार किया है ? क्या किसी मंत्र पर गहन चिन्तन कभी करके देखा है अथवा जैसे कौए को घाव ही दिखायी देता है, वैसे ही उन्हें वेदों में दोष ही दोष दिखायी देते हैं। जैसे कौआ बिना घाव के भी दुर्बल पशु को चोंच मार–मार कर घावों से युक्त कर पीड़ित करता है, वैसे ही आर्यों की अकर्मण्यता, मूर्खता वा पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष में फंसे रहते उनके आधार वेद पर उपेन्द्र जी काकवत् हमला कर रहे हैं। आर्यो ! चेतो वरना वेद की हानि होगी। वैसे सत्य कभी मरता तो नहीं है परन्तु आज आप लोगों की हतबुद्धि पर रो अवश्य रहा है। हम सुनते हैं कि लार्ड मैकाले ने जर्मन संस्कृतज्ञ मैक्समूलर को धन लोभ देकर भारत के ईसाईकरण व अंग्रेजों के अखण्ड राज्य के लिए भ्रष्ट वेदार्थ हेतु प्रवृत्त किया था और उस मैक्समूलर ने भी लगभग १३ वर्ष पुरुषार्थ करके भारत के इतिहास, धर्म, समाज को दूषित, उस तथाकथित वेदसाधना द्वारा करने की नींव रख दी थी। तब हमारे देश के अनेक विद्वान् कहाने वाले चाटुकारों ने मैक्समूलर आदि पाश्चात्यों के अनेक गुणानुवाद किए और कई तो आज भी करते हैं और उन्हें ही प्रमाण मानकर भारतीय इतिहास रचा जा रहा है। ठीक उसी प्रकार मेरा अनुमान है कि श्री राव को वेदसाधक, अनुसंधानकर्त्ता प्रचारित कर मैक्समूलर के पथ पर चलाकर वेद विरोधियों के सपनों को साकार करने का दायित्व सौंपा है। कुछ वर्ष पूर्व तो वे नागपुर से आर्यसेवक नामक पत्र के माध्यम से अपने शिष्य आदित्यमुनि जी के माध्यम से व स्वयं भी वेदों पर आक्रमण करते रहे जब श्री विमल वधावन जी ने उन्हें सभा से बाहर निकाल दिया तो वे आर्यसमाज प्रहरी नामक पत्रिका के माध्यम से वेद पर विषवमन करने लगे जो आज तक जारी है। जब मैं इस पत्रिका में पाठकों के पत्रों में इस पत्रिका की प्रशंसा पढ़ता हूं तो सोचता हूं ओह ! आर्यसमाज तेरा भी क्या दुर्भाग्य है कि वेद तथा ऋषियों को अनेक गाली प्रदान करने वालों की जय जयकार हो रही है और आर्यसमाजी कहाने वाले ही कर रहे हैं। ये कथित वेदवेत्ता अपनी गालियों को प्रश्न मान रहे हैं और सभी विद्वानों को चुनौती दे रहे हैं कि है कोई माई का लाल जो इन प्रश्नों का उत्तर देवे ? मैंने भी इनके उत्तर में लगभग २ वर्ष पूर्व एक लेख लिखा था। मान्य डॉ० जयदत्त जी उप्रेती, श्रद्धेय डॉ० कृष्णलालजी, दिल्ली मान्य डॉ० रघुवीरजी वेदालंकार आदि ने भी उत्तर दिये थे। पूज्यपाद आचार्य विषुद्धानन्द मिश्र महाराज ने भी समझाने का प्रयास किया था परन्तु ये कामरेड, ईसाई, इस्लामी वा चार्वाक आदि में से किन्हीं के भक्त अथवा स्वभावतः विधर्मी इन बातों को कब मानने वाले हैं। श्री आदित्यमुनि जी को सम्भवतः २ माह पूर्व मैंने एक खुला पत्र लिखा जिसे 'दयानन्द सन्देश' के जुलाई ०७ तथा सुधारक के अगस्त ०७ अंक में प्रकाशित भी कर दिया। मैंने यह भी लिखा था कि इसका उत्तर मुझे नहीं चाहिए क्योंकि शरारती तत्वों से पत्र व्यवहार में मैं अपना समय नष्ट नहीं करूंगा। पुनरपि इन्होंने मेरे नाम पत्र 'आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक के प्रति खुला पत्र', नाम से 'दयानन्द सन्देश' में प्रकाशनार्थ दिल्ली भेजा है, मुझे भी उस पत्र की प्रति भेजी है, इस कारण मैं यह लेख लिखने को विवश हुआ कि ये मेरे विचारों को ही अन्यथा रूप में प्रचारित करने की धृष्टता कर रहे हैं। मैंने 'दयानन्द सन्देश' के कार्यालय व्यवस्थापक श्री दिनेश जी शास्त्री को फोन द्वारा निवेदन किया है कि वे उनके पत्र को प्रकाशित करें, मुझे कोई आपत्ति नही है।

श्री आदित्यमुनि उस पत्र में लिखते हैं – 'आप वेदों की वैज्ञानिकता के आधार पर उन्हें अपौरुषेय सिद्ध करने में जुटे हुए हैं। इसके लिए आपने यहां तक प्रतिज्ञा कर रखी है कि यदि आप ऐसा आगामी ६ वर्षों में भी नहीं कर पाये तो आप आत्महत्या ही कर लेंगे। सो मुझे लगता है कि आपको आत्महत्या ही करनी पड़ेगी। क्योंकि यदि वेदों में वर्तमान विज्ञान के गूढ़ रहस्य छिपे होते तो १६६ व १६७ करोड़ वर्षों से वेदाध्ययन में रत भारत वर्ष का ही कोई पुरुष चुन्द्रमा पर पहले पहुंच जाता ...... यदि वेद में सृष्टि विद्या का भी कोई गूढ़ ज्ञान छिपा होता तो पिछले १६६ वा १६७ करोड़ वर्षों में हुए अनेक ऋषि मुनियों जो आपसे निशचित रूप से ही अधिक योग्य थे इसे अब तक खोजकर संसार के सामने रख दिया होता .... सृष्टि कैसे बनी, इसका पता शायद परमात्मा को भी नहीं था इसीलिए वह वेदों के नासदीय सूक्त में पहेलियां सी ही बुझाता प्रतीत होता है। साफ साफ नहीं बता देता कि वह ऐसे बनी हैं।'

पाठकों की जानकारी के लिए निवेदन कर दूं, कि वि० संवत् २०६२ तदुनुसार २६ फरवरी सन् २००६ की शिवरात्रि को मैंने प्रतिज्ञा की थी, कि आगामी १२ वर्षों में अमेरिका, कनाड़ा, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड आदि विकसित देशों के वैज्ञानिकों के समक्ष मैं वेद की अपौरूषेयता तथा सर्वज्ञानमयता को सिद्ध कर दूंगा अन्यथा अपना शरीर त्याग दूंगा।'

इन १२ वर्षों में लगभग आज २६ जुलाई को १ वर्ष ५ माह व्यतीत हो गए हैं। इस प्रकार १० वर्ष ७ माह लगभग शेष हैं। १२ वर्ष वा १० वर्ष ७ माह को ६ वर्ष लिखना आदित्यमुनि जी के मिथ्या चरित्र को प्रमाणित करता है। मेरी पुस्तक में शब्द है कि १० वर्ष तक सिद्ध न कर पाया तो २ वर्षों तक भारत भर के वैदिक विद्वानों से इस विषय में संवाद करूंगा और उनसे भी समाधन नहीं हुआ और मुझे भी समाधान नहीं सूझा तो मैं शरीर त्याग दूंगा। इस प्रकार कुल १२ वर्ष का समय लिया था। लगता है आदित्यमुनि जी मुझे तीन वर्ष पूर्व ही मारना चाहते हैं अथवा आर्य जनता को गुमराह करना चाहते हैं। वेद दूषकों में सत्य वचन का सामर्थ्य कहां हो सकता है ? श्री आदित्यमुनि मुझे कितनी अच्छी शुभकामना दे रहे हैं, यह पाठके देखें। मैं पाठकों से यह भी निवेदन करूंगा कि आदित्यमुनि जी की भाषा देखकर कोई अन्धा, पागल, बहरा व्यक्ति भी क्या यह मानने की भूल करेगा कि श्री आदित्यमुनि जी आर्यसमाजी हैं ? **क्या एक आर्यसमाजी की यह भाषा होनी चाहिए कि ईश्वर भी नहीं जानता कि सृष्टि कैसे बनी?** ऋष्यिों के प्रति ये शब्द कोई नादान से नादान पौराणिक भी नहीं कर सकता फिर समझदार पौराणिक और आर्यसमाजी तो कभी भी नहीं कहेगा। हॉ कम्युनिस्ट, ईसाई, चार्वाक, मुसलमान आदि वेद विरोधी अवश्य कहेगा और कहते भी रहते और रहे हैं।

मेरे प्यारे पाठक गण ! आप निष्पक्ष होकर वेद पर प्रश्न खड़े कर सकते हो, यह बुरी बात नहीं है परन्तु प्रश्नकर्ता की भाषा बतला देती है कि प्रश्नकर्ता की मानसिकता क्या है ? दुष्ट के प्रश्न का उत्तर देना ही मूर्खता है। अब मैं प्रश्नकर्त्ता, वेद अनुसधानकर्ता उपेन्द्रराव जी के प्रश्नों की झलक प्रस्तुत करता हूं। उन्होंने मुझे १०० प्रश्नों की एक लिस्ट (पुस्तिका) भिजवाई है। यह पुस्तिका वेद प्रचारिणी सभा, नागपुर ने प्रकाशित की है जिसके सचिव श्री उमेश जी राठी से फोन पर मैंने कहा, पत्र भी लिखा कि आप नाम भले ही छुपायें, मैं जानता हूं कि ये प्रश्नकर्ता राव हैं जिनके भक्त श्री आदित्यमुनि जी हैं। इस पर उन्होंने सच सत्य बता ही दिया। इन पं० वा मुनिजी ने अपने लेख पर श्री राठी के हस्ताक्षर करा लिये, यह एक और मिथ्याचार का प्रमाण है। उस पुस्तिका में दिए प्रश्नों में से कुछ प्रश्न निम्नानुसार हैं जिनकी भाषा पर आप ध्यान विशेषतया देना ......

- ❑ ऋग्वेद के साथ अथर्ववेद का विश्वासघात क्यों ?
- ❑ क्या मंत्रदृष्टा नारायण ऋषि को दृष्टिोष था ?
- ❑ क्या यह मंत्र कुरानी शासन के 'काफिर वाजिबुल कत्ल' का प्रेरक नहीं ?
- ❑ ऋषि लोग व्यर्थ की स्तुति प्रार्थना क्यों करते हैं ?
- ❑ पुरश्चरण के लिए द्वेष सम्बन्धी दुष्ट मंत्रों की रचना किसने की ?
- ❑ क्या ऋग्वैदिक याचक इतना लोभी, दुराशावान् होता है ?
- ❑ बहुमुखी अथर्ववेद का एक मुख दागदार और अनुज्ज्वल है ?
- ❑ ऐसे पूंछ चिपकाकर मंत्र बिगाड़ने के लिए कौन जिम्मेदार है ?
- ❑ क्या वैदिक स्वर्ग (?) पुराणी, कुरानी स्वर्गों का प्रेरक नहीं?
- ❑ क्या याज्ञिक वैदिक लोग इतने डरपोक व लाचार होते थे ?
- ❑ क्या वेदकालीन पत्नियां अपनी सौतों से इतनी आतंकित थीं?
- ❑ क्या वेदकालीन आर्यसमाज में हिजड़े लोग नाचा करते थे?
- ❑ अथर्ववेद ऐसे घटिया मंत्रों को क्यों प्रस्तुत करता है ?
- ❑ क्या अथर्ववेद ने सूर्या (द्रोपदी) के लिए बहुपतित्व का विधान नहीं किया ?
- ❑ शत्रुओं को मारकर सम्पत्ति लूटकर बांट लेने की (मुस्लिम) कबाइली व्यवस्था का मूल क्या वेद में नहीं ?
- ❑ यमराज के दूत ये दोनों कुत्ते गरुड़ पुराण से निकलकर वेदों में कैसे आ गये ? आदि ....

(क्रमशः)

पुस्तक समीक्षा

आर्यसमाज - परिचय और प्रासंगिकता

प्रकाशक : आर्यसमाज कलकत्ता, १६ विधान सरणी, कलकत्ता - ०६

मूल्य : १५/- सैकड़ा ६००/- (न्यूनतम १० प्रतियां)

पृष्ठ : ५७, लेखक : प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

प्रस्तुत लघु ग्रन्थ में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्रो० उमाकान्त उपाध्याय जी के द्वारा आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का संक्षिप्त जीवन परिचय, आर्यसमाज का परिचय तथा आर्यसमाज की प्रासंगिकता नामक तीन अध्याय समाहित किए गए हैं। सत्य तो यह है कि आर्यसमाज के समूचे विश्व व्यापी कार्यों को तथा महर्षि दयानन्द जी के जीवन परिचय को ५७ पृष्ठों में समाहित करना असम्भव सा कार्य है परन्तु प्रो० उपाध्याय जी ने अपनी साहित्य सृजन कला का परिचय देते हुए एक बहुत बड़े युग को सारबद्ध करने का सफल प्रयास किया है। वास्तव में यह पुस्तक आर्यसमाज का परिचय प्रस्तुत करने के लिए एक उपयोगी भेंट है।

– विमल वधावन आर्य

पृष्ठ १ का शेष

मेट्रोपोलिटन मेजिस्ट्रेट द्वारा पुलिस जांच अनुचित घोषित

इस याचिका पर लम्बी सुनवाई के उपरान्त न्यायाधीश महोदय ने पुलिस के द्वारा रिपोर्ट में लिखित कारणों को अस्वीकार करते हुए २७ सितम्बर, २००७ को अपना विस्तृत आदेश पारित किया। मुख्य रूप से पुलिस की दलील पर मेट्रोपोलिटन मेजिस्ट्रेट के निर्णय का सारांश लगभग अनुवाद रूप में इस प्रकार है –

पुलिस रिपोर्ट – अग्निवेश तथा उसके साथियों को गिरफ्तार नही किया जा सका क्योंकि दोनों पक्षों का विवाद दिल्ली उच्च न्यायालय में चल रहा है।

मेट्रोपोलिटन मेजिस्ट्रेट – "मैंने शिकायतकर्ता के अधिवक्ता को सुना और पुलिस रिपोर्ट के विरुद्ध प्रस्तुत याचिका के तथ्यों तथा रिकार्ड को सावधानीपूर्वक देखा है। शिकायतकर्ता का आरोप विशेषरूप से २८–२–२००५ की घटना के बारे में है। पुलिस द्वारा की गई जांच तथा पुलिस द्वारा निकाला गया निष्कर्ष केवल दो पक्षों के बीच के चल रहे विरोध के इर्द गिर्द घूम रहा है। रिकार्ड से यह स्पष्ट है कि शिकायतकर्ता की शिकायत में शामिल स्पष्ट आरोपों की स्पष्ट जांच पूरी तरह से लुप्त है। अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा लगभग १०० व्यक्तियों के साथ जबर्दस्ती प्रवेश का आरोप, शिकायतकर्ता को जबर्दस्ती कब्जे से हटाने का आरोप, शारीरिक रूप से शिकायतकर्ता पर हमला, शिकायतकर्ता से उनका सामान और वस्तुएं छीनना तथा भवन को ताला लगाकर रखना आदि तथ्यों पर पूरी तरह से छानबीन नहीं की गई। प्रस्तुत रिकार्ड से यह स्पष्ट है कि दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत मामला पक्षों के बीच में सभा के चुनावों तथा पदाधिकारियों को लेकर है परन्तु यह आरोपी व्यक्तियों के विरुद्ध अपराधी आरोपों की छानबीन को किसी रूप में बाधित नहीं करता। जांच अधिकारी द्वारा की गई जांच स्पष्टरूप से आंखों का धोखा है। मामले की गहराई तक जाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। शिकायतकर्ता या उनके गवाहों से पूछताछ किए बिना केवल आरोपी व्यक्तियों के वक्तव्यों को ही जांच अधिकारी/एस०एच०ओ० द्वारा स्वीकार कर लिया गया जिसके कारण केवल वही जानते हैं। यह प्रदर्शित करता है कि एफ०आई०आर० उचित धराओं के अन्तर्गत दर्ज नहीं की गई, उसे केवल भारतीय दण्ड संहिता की धारा ४४८/३४ के तहत ही दर्ज किया गया है जबकि इसके अतिरिक्त भी हमला, समान छीनने जैसे आरोप भी शिकायत में शामिल हैं। १०० से अधिक व्यक्तियों के द्वारा हमले की बात भी शिकायतकर्ता द्वारा कही गई है जिसमें स्पष्टत: धारा १४६ भी प्रथमदृष्ट्या आकृष्ट होती है। इस तथ्य की ओर भी जांच अधिकारी ने कोई न्यायसंगतता नहीं दिखाई। जांच अधिकारी ने ऐसे तथ्यों को भी छानबीन के दायरे में नहीं लिया जिनकी जांच आसानी से की जा सकती थी, जैसे – शिकायतकर्ता से मोबाईल फोन का छीनना। यदि सभा के चुनावों या पदाधिकारियों को लेकर कोई विवाद हो तब भी शिकायतकर्ता द्वारा लगाए गए आरोपों की जांच कानूनी मान्यताओं के अनुरूप उचित तरीके से की जानी चाहिए। दीवानी मुकद्दमें का चलना आरोपी व्यक्तियों को उनके उन अपराधी कृत्यों से मुक्त नहीं कर सकता जो शिकायतकर्ता ने उनके विरुद्ध लगाए हैं।

इस चर्चा के दृष्टिकोण से मेरा निश्चत विचार है कि एस०एच०ओ० द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट न्याय संगत नहीं मानी जा सकती। शिकायतकर्ता द्वारा पुलिस के समक्ष प्रस्तुत शिकायत के तथ्यों के आलोक में अभी और अधिक तथा गम्भीर छानबीन की आवश्यकता है। अत: एस०एच०ओ० थाना दरियागंज को यह निर्देश दिया जाता है कि उपरोक्त चर्चा के दृष्टिगत वर्तमान जांच अधिकारी के अतिरिक्त किसी योग्य जांच अधिकारी के माध्यम से मामले की जांच करवायी जाए तथा अन्तिम रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए।"

\+ + + +

२७ सितम्बर, २००७ के उक्त निर्णय पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक १४ अक्तूबर में विस्तृत विचार विमर्श करने के उपरान्त भावी मार्ग निर्धारित किया जाएगा।

इस निर्णय से यह स्पष्ट हो गया है कि अग्निवेश तथा उसके साथियों द्वारा की गई गुण्डागर्दी में पुलिस और प्रशासन का वरदहस्त रहा है। बकरे की अम्मा कब तक खैर मनायेगी। पुनर्जन्म को मानने वाले सच्चे आर्य धैर्यपूर्वक अपने कार्यों को जीवन लक्ष्य मानकर पूर्ण शुचिता के साथ और कर्मठता के साथ जुटें रहे तो एक जन्म क्या कई जन्मों तक भी अग्निवेशी गुण्डागर्दी का पीछा छोड़ने वाले नहीं हैं। परन्तु दु:ख तो उन स्वार्थी तत्वों पर आ रहा है जो आर्यसमाज पर आई इस घोर तथा पहाड़ जैसी विपत्ति के समय भी "सम्मेलन करो – धन कमाओ" के लक्ष्य को लेकर सारे आर्यजगत को गुमराह कर रहे हैं, उनमें इस अग्निवेशी गुण्डागर्दी के विरुद्ध मोर्चा बांधने का न तो साहस है और न समझ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह तथा मन्त्री प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने इस विषय पर सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बंसल (वरिष्ठ अधिवक्ता) से विस्तृत विचार विमर्श किया है। अब अग्निवेश तथा उसके साथियों को सबक सिखाने के लिए नए उत्साह के साथ कार्यवाही की तैयारी की गई है।

इन आर्य नेताओं ने आह्वान किया है कि अब भी समय है कि परस्पर भेदभाव छोड़कर किसी भी प्रकार से समूचे आर्यजगत को एकता के सूत्र में बंधना चाहिए। सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने तो यहां तक कह दिया है कि यदि किसी निष्पक्ष महानुभाव की छत्रछाया में समूचा आर्यजगत एक हो सके तो वे अपने पद से भी हटने के लिए तैयार हैं।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने अप्रैल २००७ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्पन्न हुए चुनावों के दृष्टिगत ही मुकद्दमा समाप्त किया था और साथ ही प्रतिवादियों को यह निर्देश भी दिया गया कि यदि उन्हें कोई आपत्ति हो तो वे अप्रैल २००७ के इस चुनाव को अदालत में चुनौती दें सकते हैं। इस स्पष्ट निर्देश के बावजूद भी यदि कोई भी व्यक्ति या व्यक्तियों का गुट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर निर्वाचन करने का प्रयास करता है तो वह पूरी तरह से गैरकानूनी और असंवैधानिक होगा। परन्तु दिग्भ्रमित कुछ आर्य बन्धु इस निर्देश को समझने का प्रयास नहीं कर रहे। अग्निवेश के विरुद्ध आज केवल एक ही वैधानिकता विद्यमान है जिसे दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्णय दिनांक २४ अगस्त २००७ के निष्पक्ष अध्ययन से समझा जा सकता है।

सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने समूचे आर्य जगत की प्रतिनिधि सभाओं तथा उनके अधिकारियों को विवेकपूर्ण चर्चा के लिए आमन्त्रित करने का निर्णय भी लिया है जिससे आर्यजगत की दुर्दशा को समाप्त करने का कोई ठोस उपाय ढूंढा जा सके।

प्रान्तीय सभाओं तथा आर्य समाजों के लिए योग प्रचार योजना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में योग के प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम तैयार किया है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने समूचे विश्व की आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्यसमाजों को इस योग प्रचार कार्यक्रम से लाभ उठाने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि विश्व के किसी भी कोने में स्थापित जो आर्यसमाजें योग के प्रचार में रूचि रखती हों वे पत्र, दूरभाष या ई–मेल द्वारा सम्पर्क करें जिससे उनके कार्यक्रम को जनोपयोगी बनाने के लिए योग के प्रचारक भेजे जा सकें। उल्लेखनीय है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा योग में प्रमाण पत्र, डिपलोमा, एम०ए० तथा पी०एच०डी० तक की शिक्षा प्रदान की जा रही है जिसके कारण योग के क्षेत्र में विश्वविद्यालय की ख्याति समूचे विश्व में फैल रही है। इस निमित्त निम्न पतों पर सम्पर्क किया जा सकता है –

प्रो० स्वतन्त्र कुमार – ०९७१९००४४५१
पत्र व्यवहार – कुलपति निवास, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

ई–मेल :
btech.sulakshay@gmail.com
swatatanter15@gmail.com
sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

संस्कृत में जीवित है भारतीय संस्कृति

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने कहा कि संस्कृत से ही भारतीय संस्कृति जीवित है।

सोमवार को संस्कृत दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय में आयोजित समारोह में उन्होंने कहा कि आने वाला समय भारतीयता का है। जिसमें हर क्षेत्र में संस्कृत भाषा का बोलबाला रहेगा। यह कार्य केवल नारों से नहीं, बल्कि हमें स्वयं योगदान से करना होगा। तभी भारतीय संस्कृति अपने उच्च स्थान पर आसीन होगी।

उन्होंने कहा कि देश को आज गुरूकुल शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है। यह एकमात्र पद्धति है जिस पर भारतीय संस्कृति कि छाप नजर आती है। उन्होंने कहा कि संस्कृत साहित्य में देशभक्ति, ईश्वर भक्ति है। इस अवसर पर जयपुर से आए सारस्वत अतिथि **डॉ० सुभाष विद्यालंकार** ने कहा कि संस्कृत ही केवल पूर्ण भाषा है। अंग्रेजी संसार में प्रचलित जरूर है, लेकिन अंग्रेजी में कोई नियम नहीं है। संस्कृत नियमबद्ध है। संस्कृत में जो कहा जाता है वही लिखा जाता है। अंग्रेजी में ऐसा नही है। चंडीगढ़ से आए **डॉ० नरेश बत्रा** ने कहा कि राजा भोज के समय में संस्कृत लोक भाषा होती थी। संस्कृति का जन्म नहीं हुआ अपितु देवताओं ने इसका प्रादुर्भाव किया। डॉ० महावीर अग्रवाल ने कहा कि राज्य में संस्कृत को जल्द ही दूसरी भाषा का दर्जा दे दिया जाएगा। कार्यक्रम में वेद मूर्ति डॉ० रामनाथ वेदालंकार, प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री, डॉ० डी सुब्रमन्यम आदि ने संबोधन किया। इस समारोह में श्री विमल वधावन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ० शोम देव शतांशु एवं डॉ० ब्रह्मदेव ने किया।

आर्यसमाज अशोक विहार फेस-३ में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव सम्पन्न

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, ४ सितम्बर (मंगलवार) को "योगीराज श्रीकृष्ण चन्द्र जी के जीवन से प्रेरणाएं" विषय पर आर्यसमाज अशोक विहार फेस–३, दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कई विद्वान विक्ताओं और विदूषियों के प्रेरणादायक प्रवचन प्रस्तुत हुए। **श्रीमती शकुन्तला दीक्षित** ने कहा कि श्रीकृष्ण के बारे में भ्रांतियां दूर करते हुए आलौकिक पक्ष को उजागर करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। **डॉ० रघुवीर वेदालंकार** ने कहा कि आडम्बरपूर्ण रीतियों से आजकल श्रीकृष्ण का जन्मदिवस बनाया जाता है। आर्यसमाज इन रीतियों को समाज विरोधी बताता है इसलिए आर्यसमाज को राम और कृष्ण विरोधी मान लिया जाता है, जबकि वास्तव में हम आर्य लोग राम और कृष्ण के सच्चे अनुयायी हैं। क्योंकि हम उनके चरित्र की पूजा करते हुए उन्हें धारण करते हैं। श्रीकृष्ण जी ने योग और अध्यात्मवाद का प्रयोग युद्धकाल में भी किया। उन्होंने पुराणों के निषेध का भी सन्देश अपने प्रवचन में व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वेद ही सर्वोच्च प्रमाण हैं। गीता में भी मूल रूप से ७२ श्लोक थे जबकि आज मिलावट करके उसमें सैकड़ों बाते अवैदिक मिला दी गई हैं। **श्री आर्य तपस्वी सुखदेव** जी ने कहा कि रजोगुण, तमोगुण और सत्वगुण का संघर्ष प्रत्येक काल में प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर चलता रहा है। हमारी विजय इसी बात में है कि हम सर्वप्रथम अपने अन्दर सत्वगुण को प्रभावशाली अवस्था में रखने का प्रयास करें। हम सूक्ष्मता को प्राप्त करके पापों का नाश कर सकते हैं। **श्री के०बी० राय** तथा **श्री राजसिंह भल्ला** ने ईश्वर की सर्वविद्यमानता के सम्बन्ध में आर्यजनों का मार्गदर्शन किया। समारोह में **श्री विजय भूषण आर्य** ने मधुर भजन प्रस्तुत किए। **श्रीमती प्रेम सबरवाल** तथा **श्री वेदमित्र अग्रवाल** जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मंच का संचालन **श्री विमल वधावन आर्य** ने किया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 14-10-07 से 20-10-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 93/2006-08 in NDPS on 11/12-10-07

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (17 अक्टूबर, 1994)

तथा

पूर्व सभा मन्त्री श्री सूर्यदेव (16 अक्टूबर 2000)

की पुण्य स्मृति में

समस्त आर्यजनों की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित।

वैद्य इन्द्रदेव
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

नरेन्द्र आर्य 'सुमन'
सभामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में

10150 पुस्तकालयाध्यक्ष (12/99)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

प्रखर वैदिक क्रान्तिकारी वीर जयानन्द भारतीय की १२६वीं जयन्त पर श्रद्धांजलि

उत्तराखण्ड के ज्वाजल्यमान नक्षत्र, वैदिक धर्मावलम्बी, ऋषिभक्त, वतन्त्रता सैनानी, क्रन्तिकारी देशभक्त उत्तराखण्ड के आर्यसमाजों के संस्थापक, समाज सुधारक कर्मवीर जयानन्द भारतीय की दिनांक १७ अक्टूबर २००७ को १२६वीं जयन्ती पर भावभीनी श्रद्धांजलि। आर्यसमाज के सार्वभौमिक आन्दोलन को उत्तराखण्ड के कोने कोने तक पहुंचाने में तथा भारतीय जी ने गढ़वाल में सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक आडम्बरों, अन्धविश्वासों एवं अस्पृर्शता जैसे विषमताओं का जिस प्रकार से सामाना किया वह हमारे देश में प्रेरणादायक ही नही बल्कि चिरस्मरणीय है। प्यारे राष्ट्र को परतन्त्रता की कठोर बेडियों में जकड़ा हुआ देखकर जयानन्द क्रान्ति का एक दहलका अंगारा बना और वे कांग्रेस में शामिल होकर राजनीति में कूदे और अंग्रेजों के सिरदर्द बने। सन् १६३२ में पौढ़ी की अमन सभा में मालकमहेली की बेक जैसे गगन भेदी नारों की गूंज सुनकर परदेश के तत्कालीन गर्वनर सर विलयन मालकमहेली का भाषण थम गया था। अमृत्व का आलिंगन करने वाला यह मानव अपनी मिशाल स्वयं आप ही था।

जंजीरों से जकड़ स्वदेश को राह दिखाई थी तूने।
जिनको न काल भी बुझा सका वह समां जलाई थी तून।।
फिर घनघोर तिमिर के आंगन में तू बीज ऊषा के बोता था।
आवाज लगाई थी तूने जब सारा उत्तराखण्ड सोता था।

— आचार्य धर्मसिंह शास्त्री

टिब्बी में आर्यसमाज की स्थापना

आर्यसमाज हनुमानगढ़ टाउन के तत्वाधान में दिनांक २३ जुलाई से २८ जुलाई, ०७ तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध भजनोपदेशक भूपेन्द्र सिंह आर्य, लेखराज शर्मा व पुरोहित रामनिवास गुण ग्राहक ने इस कार्यक्रम में भजनों व व्याख्यान के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों व अन्धविश्वासों पर व्यंग्यात्मक ढंग से प्रहार कर जाग्रति का कार्य किया। हनुमानगढ़ जं० में गांधी नगर, सेक्टर ६, महर्षि सेवाश्रम सुरेसिया में लोगों ने इसका लाभ उठाया हनुमानगढ़ टाउन में नई आबादी, किरयाना भवन वार्ड १८, दमकल विभाग के पास, डी०ए०वी० स्कूल, राम मनोहरलोहिया स्कूल, पालस चिन्ड्रन अकेडमी अरोड़ वंश सभा भ्वन, कथूरिया निवास आदि स्थानों पर वेद प्रचार कार्यक्रम किया गया। प्रधान चानण राम चौधरी ने इस कार्यक्रम की सफलता पर कार्यकारिणी व नागरिकों का धन्यवाद किया। इस अभियान के दौरान आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के साथ–साथ नारी शिक्षा, भ्रूण हत्या, छुआछूत आदि पर लोगों को जानकारी दी गई। आर्यसमाज के मंत्री जगदीश राय सिद्धप ने इस प्रकार के आयोजन को समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण बताते हुए आगे भी इसके आयोजन हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में अभियान शुरू करने की जानकारी दी।

हनुमानगढ़ जिले में आर्यसमाजों की कडी में एक कड़ी और जुड़ गई है। जिला आर्यसमाज हनुमानगढ़ के कार्यकारी प्रधान चानण राम चौधरी व मंत्री आनन्द मोहन शर्मा की उपस्थिति में दिनांक ७–७–०७ को तहसील मुख्यालय टिब्बी में आर्यसमाज की स्थापना की गई जिसके प्रधान श्री मनीराम चाहर, मन्त्री श्री सुरेन्द्र सिंह तथा कोषाध्यक्ष श्री कुलदीप सिंह को घोषित किया गया। □

पत्र व्यवहार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' से पत्र व्यवहार के लिए केवल निम्न पते का प्रयोग करें –
सार्वदेशिक सभा, 1488, पटौदी हाउस (नजदीक आर्य अनाथालय) **दरियागंज, नई दिल्ली-2, फोन : 43580554**
E-mail : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*
– प्रो० स्वतन्त्र कुमार, प्रबन्ध सम्पादक एवं सभा मन्त्री, मो० 09719004451

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन : 43580554) से मुद्रित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित। ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

मूल्य : २ रुपये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४६ अंक १३ ४ नवम्बर से १० नवम्बर, २००७ तक दयानन्दाब्द १८५ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ सं० २०६४ का०कृ०१०

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर



आर्य संस्कारों के कारण ही भगत सिंह ने फांसी के फंदें को चूम लिया - मिठाई लाल सिंह

शहीद भगत सिंह के जीवन पर आर्यसमाज का गहरा प्रभाव था। आर्यसमाज की शिक्षाओं से ही प्रभावित होकर शहीदे आजम भगत सिंह ने जंग–ए–आजादी में संघर्ष करते हुए फांसी के फंदे को चूम लिया। वस्तुतः भारत के समूचे स्वतंत्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान रहा है। भगत सिंह के पैतृक गांव खटकडकला में उनकी जन्मशताब्दी समारोह के सम्बन्ध में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने इन विचारों का उल्लेख किया।

कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार, मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री अरूण अब्रोल, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री प्रेम भारद्वाज, उपप्रधान श्री विरेन्द्र सरीन तथा कई अन्य गणमान्य आर्यजनों, अध्यापक-अध्यापिकाओं तथा छात्र–छात्राओं ने भाग लिया।

प्रो० स्वतन्त्र कुमार ने कहा कि सरदार भगत सिंह के दादा श्री अर्जुन सिंह नवांशहर आर्यसमाज में नियमित रूप से आते थे। अपने शिक्षण काल में ही सरदार भगत सिंह को आर्य संस्कार प्राप्त हो चुके थे। अंग्रेज पुलिस द्वारा भगत सिंह के आवासों पर छापे मारे जाने के बाद जो साहित्य मिला उसमें अधिकांश आर्यसमाज से सम्बन्धित ग्रन्थ थे।

श्री अरूण अब्रोल ने कहा कि नौजवानों में नशे के प्रति बढ़ते रूझान को देखते हुए खास तौर से पंजाब जैसे प्रान्त में नशे की आदतों के विरुद्ध एक विशेष अभियान चलाया जाना चाहिए। जिसे जागृति अभियान के तहत आर्य शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से चलाया जाए। बच्चों को स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं और भगत सिंह जैसे अन्य सभी बलिदानियों के जीवन और विचारों से अवगत कराया जाना चाहिए।

श्री प्रेम भारद्वाज ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी पथ भ्रष्ट होकर सामाजिक कुरीतियों का शिकार हो रही है। जिसका प्रमुख कारण है कि आज युवा पीढ़ी के सामने आदर्श रूप में कोई राष्ट्रभक्त नायक नही है। युवाओं को शहीद भगत सिंह जैसे वीर यौद्धाओं को अपने जीवन का आदर्श बनाकर अपने जीवन कार्यों को करना चाहिए।

आर्यसमाज के समस्त पदाधिकारियों तथा सैकड़ों अन्य महानुभावों ने भगत सिंह के म्यूजियम तथा उनके पैतृक आवास का दौरा करके वैदिक मन्त्रोंच्चार के साथ अमर शहीद को श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर सर्वश्री अमित, सुरिंदर, श्याम लाल सुरिंदर मोहन तेजपाल, प्रिंसिपल आशा शर्मा, प्रिंसिपल जे.के. दत्ता कुलवंत राय, अशोक कुमार प्रिंसिपल सतपाल उम्मट व अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। □



सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने आर्यसमाज गुरुकुल रानीबाग का दौरा किया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह, सभा मन्त्री प्रो० स्वतन्त्र कुमार, उपमन्त्री श्री देवराज आर्य तथा मुम्बई सभा के मन्त्री श्री अरूण अब्रोल ने आर्यसमाज रानीबाग में संचालित गुरुकुल का निरीक्षण किया। सार्वदेशिक सभा के पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य एवं माता प्रेमलता शास्त्री जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। माता जी ने आगन्तुक सभाधिकारियों को गुरुकुल तथा दयानन्द सेवाश्रम संघ की गतिविधियों से अवगत कराते हुए एक और कन्या गुरुकुल की स्थापना की आवश्यकता प्रकट की। श्री मिठाई लाल सिंह जी ने कहा कि देश को बांटने के प्रयास खतरनाक हैं। आसाम जैसे क्षेत्रों से ये सब ब्रह्मचारी यहां से दीक्षा लेकर राष्ट्ररक्षा के लिए समर्पित होंगे। सभामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार ने कहा कि वैदिक धर्म की ध्वजा आसाम में आपको ही फहरानी है। उन्होंने कहा कि यहां से १२वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद जो ब्रह्मचारी गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में शिक्षा ग्रहण करना चाहेंगे उनके लिए हम हर सहायता उपलब्ध कराएंगे। श्री अरूण अब्रोल ने कहा कि मुझे आर्यसमाज के प्रांगण में इस प्रकार के गुरुकुल का संचालन होता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई है। इन कार्यों को समूचे आर्यजगत का सहयोग प्राप्त होना चाहिए। सभा के उपमन्त्री श्री देवराज ने कहा कि गुरुकुल का जीवन होता ही देश और समाज के लिए है। आपको भी इस गुरुकुलीय परम्परा को निभाना होगा। □

श्री ज्ञान प्रकाश चौपड़ा की धर्मपत्नी श्रीमती सरला चौपड़ा का निधन

आर्य प्रादेशिक सभा नई दिल्ली तथा डी०ए०वी० प्रबन्धक समिति के प्रधान श्री ज्ञान प्रकाश चौपड़ा की धर्मपत्नी श्रीमती सरला चौपड़ा का ८१ वर्ष की अवस्था में आकस्मिक निधन हो गया। उनका पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आर्यसमाज संचालित निगम बोध घाट पर किया गया।

उनकी स्मृति में शांति यज्ञ का विशाल आयोजन डी०ए०वी० बसंत विहार के प्रांगण में किया गया। यज्ञ के उपरान्त श्रद्धांजलि सभा को यति मण्डल एवं हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने मुख्य रूप से सम्बोधित किया। इसके अतिरिक्त डी०ए०वी० तथा प्रादेशिक सभा के प्रमुख अधिकारियों ने श्रीमती सरला चौपड़ा के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की। □

जीवन प्रभात गांधीधाम को ६० लाख रुपये का सहयोग प्राप्त

आर्यसमाज गांधीधाम द्वारा संचालित जीवन प्रभात की ख्याति दिनोदिन विश्व की सब दिशाओं में फैलती जा रही है। अमेरिका के आर्यजनों का विशेष सहयोग जीवन प्रभात आश्रम को पहले ही प्राप्त होता रहा है। गत वर्ष इग्लैण्ड की एक रेडियो कम्पनी (रेडियो एक्सल) के मालिक बजाज परिवार का सम्पर्क जीवन प्रभात के अधिकारियों श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल तथा श्री वाचोनिधि आर्य से हुआ। रेडियो प्रसारण के माध्यम से इस समूह ने गुजरात भूकम्प में अनाथ हुए बच्चों के लिए कुछ धनराशियां एकत्र की थीं। लगभग ६० लाख रुपए की यह एकत्रित राशि गत सप्ताह रेडियो एक्सल समूह की तरफ से आर्यसमाज गांधीधाम को समर्पित कर दी गयी। समूचे आर्यजगत की ओर से तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से रेडियो एक्सल समूह तथा बजाज परिवार का हार्दिक धन्यवाद करते हुए सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने भी इस सहयोग के लिए इस परिवार के प्रति शुभकामनाएं देते हुए अपार प्रसन्नता व्यक्त की है। □

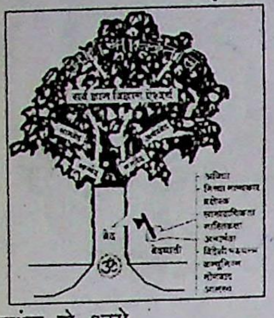
प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री
प्रधान सम्पादक (09719004451)

देवराज आर्य
सह सम्पादक (09997070789)

विमल आर्य
सम्पादक (9968357171)

को वेदानुद्धरिष्यति ? ३

(वेदों का उद्धार कौन करेगा ?)



गतांक से आगे

मेरे प्यारे आर्यसमाजियों एवं वेद भक्त पौराणिक भाइयो ! जरा सोचो कि ये प्रश्न हैं वा कटाक्ष व आक्रमण ? यह भाषा किसी आर्य समाजी की तो, क्या किसी हिन्दू की भी हो सकती है क्या ? कोई पापी आक्रमण करे तो करे परन्तु स्वयं को आर्यसमाजी, वेद भक्त कह कर वेद प्रचारिणी सभा वा आर्य समाज प्रहरी नामक पत्रिका के माध्यम से यह आक्रमण होवे तो उसके पाप की कोई सीमा भी है ? या तो खुला होकर ये अपने को वेद विरोधी पापी घोषित कर दें, तब ठीक है। चार्वाक कामरेड, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान आदि ये आक्रमण करें तो, क्षम्य है परन्तु मेरे दयानन्द के अनुयायी व ऋषि महर्षियों के नाम पर गर्व करने वाले वेदभक्तो ! आप ऐसे वेद विरोधियों से क्यों सावधान नहीं होते ? इन वेद विरोधियों ने आर्यसमाज के नाम से ही इस पापाचार का बीड़ा उठाया है, यह उनके छल, विश्वासघात के पाप की कोई सीमा भी है ? अब तो चेत जाओ, ये लोग व अग्निवेश आदि के चरित्रों को अब तो जान लो, अन्यथा वेद व आर्य समाज का नाम लेने वाला भी भूमण्डल में नहीं रहेगा। अभी भी कुछ सांसें इस धरती पर आर्य समाज में शेष है। हम सब घोर अपराधी हैं, जिनके देखते देखते यह दुर्दशा हो रही है। जो तटस्थ है वे भी अपराध से बच नहीं सकते। आर्यो! सोचो आप क्या पं० राव जी के आर्य समाजी हिजड़ों में सम्मिलित होओगे ? क्या उपेन्द्र जी आर्य समाजी हिजड़े हैं वा अनार्य समाजी? मैंने यह अभद्र शब्द क्यों लिखा, क्योंकि पं० राव जी को वैदिक आर्य समाज में हिजड़े ही नाचते दिखाई देते हैं। शोक ! महाशोक!! इतना पतन ? मैं इनका सम्बन्ध अग्निवेश से क्यों जोड़ रहा हूं क्योंकि ये प्रायः अपनी पत्रिका में उनके ही गुणगान करते हैं। अग्निवेश से आदित्य मुनि जी का गहरा संबंध इस बात से भी सिद्ध होता है कि वैदिक सार्वदेशिक पत्र भी सत्यार्थ प्रकाश पर इसी प्रकार के हमले करवा रहा है। गुरुकुल झज्झर के मुख पत्र 'सुधारक' के आषाढ़ ६४ अंक में अभी पढ़ा कि वैदिक सार्वदेशिक ने देहरादून के किसी ईश्वरदयालु आर्य नामक असभ्य व्यक्ति का लेख छापा है। सुधारक के सम्पादकीय को पढ़कर घंटों तक नेत्रों से अश्रुपात होता रहा। यह सोचता रहा, हे ऋषि ! आपके बलिदान को हम लोगों ने कैसा भुला दिया है ! हे ऋषि ! इस

श्री आर्य (नकली) का लेख मुझे भी स्वयं उन्होंने कुछ माह पूर्व भेजा था जिसमें सूर्यादि लोक में प्रजा रहने के विषय में समस्त आर्य जगत् को शास्त्रार्थ को चुनौती दी थी। उस व्यक्ति की भाषा निम्न प्रकार थी – 'विजय मेरी ही होगी। प्रतिपक्ष की तो पराजय ही होनी है। तथापि मान लीजिए मेरी ही पराजय हो जाती है तो मैं एतद्वारा घोषणा करता हूं कि दण्डस्वरूप सर्वप्रथम तो मैं समस्त उपस्थित जन समूह के समक्ष ही अपनी टांगों के नीचे की ओर से अपना हाथ आगे लाकर अपने कान पकड़कर उकड़ू बैठकर (अर्थात मुर्गा बनकर) अपनी पराजय स्वीकार करूंगा, फिर भूमि पर अपनी नाक रगड़ूगा और उसके तुरन्त बाद प्रतिपक्ष के सदस्यों ने से प्रत्येक की (अधिकतम १५० की) टांगों के नीचे से निकलूंगा ...... (आदि अन्य भी दण्ड लूंगा) प्रतिपक्ष के सदस्यगण अपनी ओर से किस दण्ड को स्वीकार करना चाहेंगे, यह पहिले ही बतला दें .....।'

सम्मान्य पाठक ! इस भाषा को देखकर सहज सिद्ध होता है कि यह व्यक्ति आर्य समाजी नहीं बल्कि घोर असभ्य घुसपैठिया है। इस व्यक्ति को मुर्गा बनने का भी पूर्ण अभ्यास है, इसलिए स्पष्ट लिख दिया है कि कोई न जानता हो तो इनसे सीख ले। सत्यार्थ प्रकाश का यह प्रकरण सत्य है वा असत्य, यह निर्णय सहज नहीं है। ऋषि का अभिप्राय भी विचारणीय है। वर्तमान विज्ञान भी अभी तक सूर्यादि की तो क्या कहें, पृथ्वी की रचना को भी पूर्णतः नहीं जान सका है। अधिकाश बातें सम्भावना में व्यक्त करता है। फिर यह कोई ऐसा सिद्धान्त भी नहीं है जिस पर आर्य समाज की नींव ही टिकी हो जिसके हिलने से आर्यसमाज का महल ढ़ह जाएगा और न ऐसा विषय है जो सतत आर्य समाज के मंचों व लेखों में चल रहा है, फिर इस मुद्दे पर इतना तीखा विरोध क्यों ? क्या देश व समाज में और कुछ शास्त्रार्थ योग्य मुद्दा ही नहीं है? यदि यह व्यक्ति सभ्य होता तो मैं इस व्यक्ति से अवश्य पूछता कि वह सूर्य के विज्ञान को कितना जानता है, क्योंकि यह विज्ञान मेरे लक्ष्य के अनुरूप ही है, परन्तु इस व्यक्ति की भाषा ही बता रही है कि यह मानसिक विक्षिप्त है वा गंवार घुसपैठिया है, इस कारण महत्व देने योग्य नहीं। बुद्धिमान सभ्य विरोधियों ने कभी ऐसी भाषा शास्त्रार्थों में प्रयुक्त नहीं की। इस असभ्य वृद्ध अनार्य ने इसी सन्दर्भ में एक लेख दैनिक पत्र हिन्दुस्तान के २५ मई १९७३ अंक में प्रकाशित करवाया था जिसकी जानकारी आर्य मर्यादा साप्ताहिक १७–६–७३ के अंक से होती है। जरा सोचें कि क्या कोई आर्य समाजी इस प्रकार का प्रश्न दैनिक पत्रों में लिखकर ऋषि दयानन्द से खुला विद्रोह सार्वजनिक रूप से करेगा ? इन सब बातों से प्रमाणित हो रहा है कि प्रो० श्यामराव नामक कामरेड व्यक्ति अग्निवेश नाम से जब प्रविष्ट करा दिया। तभी से वे अपना अभियान चला रहे हैं। स्वामी अग्निवेश के गुण्डागर्दी से सत्तासीन होते ही वे सभी एक साथ तीव्रतर आक्रमण कर रहे हैं। वेद व दयानन्द के नाम से एकत्र की गई सम्पत्ति से चल रही पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से ये लोग वेद व दयानन्द के आत्मा पर कुल्हाड़ी चला रहे हैं और कुछ आत्म सम्मान विहीन चाटुकार व स्वार्थी अन्धभक्त पता नहीं क्यों, इन पापी जनों के साथ अपने हाथ ऋषि के यशस्तनु के खून से रंग रहे हैं। क्यों अनेक मृतस्वाभिमान, अविवेकी आर्य विद्वान् अपने अपने लेखों वा कर्मों के माध्यम से तीनों सभाओं की एकता के अनर्थक पयास कर रहे हैं ? वे क्यों नहीं सोचते कि वेद व ऋषि के हत्यारों से समझौता करना घोर पाप का भागी बनना है। क्या हो गया है, इन प्रज्ञावानों को ? भगवान सुबुद्धि दें। क्षमा करें, मुझे तो ऐसे विद्वानों चाहे वे कितने ही प्रतिष्ठित एवं विद्या के धनी क्यों न हों, को विद्वान कहने में लज्जा आती है। इन्हें जब ऋषि के आदर्शों के हत्यारों के स्पष्ट घातक षड्यन्त्र ही दिखायी नहीं देते अथवा किसी लोभवश इन्हें अब भी अपना नेता वा विद्वान् मानते हैं, तब विद्या का प्रयोजन ही क्या रहा ? सामान्य आर्य जनता क्यों इन पापों को सुनकर चुप है, यही भी बड़े शोक का विषय है। ऋषिभक्त आर्य महानुभावों से यह निवेदन है कि वे समस्त ऋषि व वेद विरोधी तत्वों से आर्यसमाज को मुक्त करने हेतु पूर्ण शक्ति लगायें फिर इन विधर्मियों को उत्तर दिया जाये। वह भी आक्रामक ढ़ंग से न कि बचाव की मुद्रा में।

मेरे सामान्य पाठकगण ! मुझे दुःख है कि मेरे विचारों को ये लोग मेरे नाम लिखे खुले पत्र में अपने समान बताकर प्रचारित कर रहे हैं। मैंने इन्हें पत्र में लिखा था कि मैं अपना समय शरारती तत्वों से विवाद संवाद में नष्ट करना नहीं चाहता परन्तु जब मेरे विचारों को ही अन्यथा ढंग से प्रचारित करने लगे तो मुझे श्रद्धेय आचार्य स्वदेशजी के आग्रह पर अनिच्छया यह लेख लिखना पड़ा। हां, अब अग्निवेश अथवा ये स्वयम्भू पण्डित कुछ भी करें, मैं अपने लक्ष्य पर ध्यान दूंगा, न कि इनके किसी लेख का उत्तर देकर समय नष्ट करूंगा, ऐसा मेरा इस समय मानस है। इस लेख पर भी पाठकों की किसी भी प्रतिक्रिया चाहे अनुकूल हो वा प्रतिकूल, का उत्तर देनें का मेरे पास समय नहीं है। मैं सहृदय पाठकों से क्षमा ही चाहूंगा। वे मेरी विवशता समझ कर क्षमा करेंगे ही, यह पूर्ण विश्वास है।

हमारे न्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'आचार्य श्री का भीष्म संकल्प' में मैंने लेख 'अन्तर्वेदना ! भीष्म संकल्प' में एक दो स्थान पर लिखा है – 'मैंने कुछ वेदवक्ताओं, वेदगोष्ठी में पत्रवाचन करने वालों से एकान्त में पूछकर देखा तो किसी ने कहा कि वेद ईश्वरीय है तथा सर्वज्ञानमय है, ऐसा हृदय व मस्तिष्क से विश्वास नहीं होता, हां, दयानन्द ने कहा तो मान लेते हैं – (पृष्ठ ३३) यदि मैं किसी विद्वान् से वेद की अपौरुषेयता एवं प्रामाणिकता पूछता हूं तो वे तत्काल वेद की अन्तः साक्षी तथा आर्ष ग्रन्थों के प्रमाण देने लगते हैं। मैं ऐसे विद्वानों से विनम्रता पूर्वक निवेदन करता हूं कि ये प्रमाण देते देते हमें वर्षों व्यतीत हो गये। ये प्रमाण उस समय में सार्थक थे जब इन प्रमाणों की प्रमाणिकता सर्वमान्या थी, परन्तु आज इनकी प्रथम आवश्यकता नहीं है। अब पहले तो इन स्वतः प्रमाणों को प्रमाणित करने की आवश्यकता है। उसके पश्चात ऋषियों के ग्रन्थों को प्रामाणिक सिद्ध करने की अनिवार्यता होगी .... मेरे विद्वान मित्रो ! मैं आपसे पूछता हूं यदि आपको किसी मुसलमान, ईसाई, नास्तिक या वैज्ञानिक से वेद की अपौरुषेयता वा प्रामाणिकता पर शास्त्रार्थ करना पड़े तो क्या आप उसे वेद वा आर्ष ग्रन्थों के प्रमाण देंगे, यदि हां तो क्या उसके साथ न्याय होगा और क्या वह इसे मानेगा। (पृष्ठ ३८ – ३९)

(क्रमशः)

दयानन्द मठ का वार्षिकोत्सव एवं एक और शरद यज्ञ सम्पन्न

दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव तथा धुन के धनी परम तपस्वी कर्मयोगी यज्ञों के लिए समर्पित यज्ञमय जीवन वाले पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के द्वारा निष्ठापूर्वक किया जाने वाला ऋग्वेद में वर्णित महान महिमावान शारदयज्ञ भव्य रूप से सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी तथा मुम्बई सभा के मन्त्री श्री अरूण अब्रोल मुख्य अतिथि थे।

समस्त जड व चेतन देवों की संतुष्टि व तृप्ति के लिए संसार के कल्याण के लिए प्राणीमात्र के सुख की कामना से ही यह आयोजन किया गया था। अतः परमपिता परमात्मा की अनुकम्पा से देवों के वरद हस्त व पितरों के आशीर्वाद से सिद्धि स्वतः ही प्राप्त हो गई। यज्ञ में अनवरत रूप से प्रचुर मात्रा में दी जाने वाली हव्य व घृत की आहुतियों से जहां वातावरण का शोधन हुआ, चारों दिशाएं सुगन्धि से आपूरित हो गई। एक ही रात्रि व दिवस के इस यज्ञ में साढ़े दस टीन घृत के लगे। [illegible] सारे कार्यक्रम में प्रभु कृपा से सब कुछ अनुकूल रहा। शोभायात्रा की भव्यता दर्शनीय थी। नवयुवकों का ठाठें मारता जोश माताओं व बुजुर्गों का झूम झूम कर गाए जा रहे गीतों ने तो शोभायात्रा में चार चांद लगा दिए। ओ३म् का झंडा लिए मालाओं को पहनें शोभायात्रा



सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी तथा मुम्बई सभा के महामन्त्री श्री अरूण अब्रोल दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान, श्री जगत वर्मा भजन प्रस्तुत करते हुए। यज्ञ की पूर्णाहुति में उत्साहपूर्वक आहूति अर्पित करते हुए श्रद्धालु नर नारियां।

के आगे आगे चल रहे सन्यासियों की मण्डली से शोभायात्रा की शोभा दुगनी हो रही थी। आह ! इतनी आनन्ददायक मनमोहक थी यह शोभायात्रा कि लेखनी से इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जिसने इस शोभायात्रा को देखा वही इसके आनन्द की अनुभूति कर सकता है अथवा जिसने इस दर्शनीय भव्य शोभायात्रा का दर्शन करना हो वह कैमरे द्वारा कैद की गई सीडी में संकलित चलचित्र के द्वारा इसका आनन्द ले सकता है। यजुर्वेद में पुरुष सूक्त में सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन करते हुए वेद भगवान कहते हैं कि 'यज्ञेन यज्ञं अयजन्त देवाः' अर्थात परमपिता परमात्मा के मन में जब सृष्टि बनानें का संकल्प उपजा तो उस समय सभी देवों ने आत्मसमर्पण रूपी यज्ञ से सृष्टि रूपी यज्ञ को आरम्भ किया [illegible] अहर्निश निरन्तर चल रहा है। इसी प्रकार ऋग्वेद के अन्दर वर्णित शरद यज्ञ को भी अहर्निश करने का विधान है। जो लोग इसका विरोध करते हैं अथवा वेद के भाष्यकार के भाष्य को ही अमान्य मानते हैं यह उनकी हठधर्मिता है। अहः अक्तु यज्ञं – मंत्र के इस भाग का अर्थ क्या है इसी को वो बतला दें। अस्तु यज्ञों में अगाध निष्ठा व आस्था रखने वालों, वेदानुकूल व्यवहार करनें वालों की इसमें संशय व अनास्था नहीं हो सकती। वितंडावादियों के मतानुसार रात्रि निशाचरों के लिए होती है। निशाचरों से अभिप्राय भूत प्रेत।

शेष पृष्ठ ३ पर

पृष्ठ २ का शेष

दयानन्द मठ का वार्षिकोत्सव एवं एक और शरद यज्ञ सम्पन्न

प्रथम तो आर्यसमाज भूत प्रेतों को ही नहीं मानता। दूसरा यदि निशाचरों का अर्थ वे चोर डकैत आदि भी कर लें तो क्या रात्रि को जल वायु अग्नि गति नहीं करते ? गीता में जो लिखा है – 'या निशा सर्वभूतानां तस्यां जाग्रति संयमि' क्या यह गलत है। यदि नहीं तो लगातार किये जाने वाले यज्ञ को रात्रि में से गुजरना पडे तो इसमें क्या हानि है ? खैर यह हमारे विषय नहीं है। कर्तव्य कर्म को सामनें रख कर महान उद्देश्य को लक्ष्य बना कर चलनें वाले धीर पुरुषों के लिए ही भतृहरि जी महाराज नें लिखा है –

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

जिन भावनाओं को लेकर जिन महान उद्देश्यों को सामने रख कर यह शारद यज्ञ किया जाता है उसी उद्देश्य को लक्ष्य बना कर उन्हीं भावनाओं में आकण्ठ डूब कर पूज्य स्वामी जी महाराज निन्दा स्तुति इन दोनों का ही आस्वादन करते हुए इस यज्ञ को करते चले आ रहे हैं। किसी के निन्दा व स्तुति से इनके कदम नहीं लडखड़ा रहे हैं। इन्होंने वेद का स्वाध्याय किया इस यज्ञ के महत्व को जाना और कार्यरूप में परिणित करके इससे होने वाले लाभों का भी रसास्वादन किया। इससे क्या लाभ हुआ किस फल की प्राप्ति हुई यह बताने की जरूरत नहीं है। साधक को साधना से क्या लाभ हुआ यह उसका अपना विषय है। हां श्रद्धाभाव से पूछे जाने पर अपनें भक्तो, अपने शिष्यों के कल्याणार्थ उपदेश रूप में इसका वर्णन किया जा सकता है, वितंडावादियों के वितंडा के भ्रमर में भ्रमित होनें के लिए नहीं। इस यज्ञ में जिन श्रद्धालुओं ने इसका आनन्द लूटा, इस आनन्द की सरिता में डुबकियां लगाई वे इसके महत्व को समझ गए होंगें। क्योंकि गुड की मिठास तो गुड खानें वाला व्यक्ति ही अनुभव कर सकता है। उस मिठास का अनुभव वह कैसे कर सकता है जिसने कभी गुड खाया ही न हो। पूज्य स्वामी जी महाराज यज्ञों की प्राचीन संस्कृति व प्राचीन परम्पराओं को पुनः लौटाना चाहते हैं जिनके कारण हमारा देश जगत्गुरू के ताज को पहनें हुए था। जिनके कारण इस भारत देश का सम्पूर्ण विश्व के अंदर चक्रवर्ती साम्राज्य था। जिसके विषय में मनु जी महाराज ने मुक्त कण्ठ से उद्घोषणा की थी।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रम् शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवः।।

इसका अनुभव आश्रमों में आने वाले श्रद्धालु स्वतः ही कर सकते हैं।

भारतीय संस्कृति सभ्यता की अनुपम छटा इसका अनुभव आश्रमों में आने वाले श्रद्धालुओं को होनें लगती है जिनके विषय में कवि कालीदास दुष्यन्त के मुख से कहलाते हैं – भिन्नोरागः किशलयरूचांमाज्यधूमोद्गमेन' अर्थात् हे सारथिन ! इस उपवन में किये जानें वाले यज्ञों के धुएं सुन्दर नव पल्लवों का रंग भी भूरा हो गया है। इतने बड़े बडे यज्ञ इस देश में इसके आश्रमों में हुआ करते थे। आज स्वामी जी महाराज उसी अपनें प्राचीन यज्ञों के गौरव को अपने आश्रम के माध्यम से लौटाना चाहते हैं संसार के अंदर उसका प्रचार एवं प्रसार करना चाहते हैं। लोगों को इस और मोड़ना चाहते हैं। इसीलिए तो दुर्गम पहाडी प्रदेश में जहां साधनों की नितांत कमी है बड़े बड़े व्यय साध्य श्रमसाध्य यज्ञों का अनुष्ठान इन्होंने किया है और कर रहे हैं। क्योंकि यह इनको पूर्ण विश्वास हो गया है कि इन्हीं यज्ञों से संसार की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान हो सकता है। संसार के अंदर सुख और शांति की धाराएं प्रवाहित हो सकती है। अज्ञान का अंधकार दूर हो सकता है। निर्भयता का साम्राज्य स्थापित हो सकता है। वेद के वाक्य में नान्य पंथा विद्यतेऽनाय सुख और शांति का इससे अलावा और कोई मार्ग हो ही नहीं सकता। बधाई के पात्र हैं वे लोग जिन्होंने इन यज्ञों में भाग लिया, बधाई के पात्र हैं वे लोग जिन्होंने इन यज्ञों में सहयोग दे कर अपनी कमाई को सार्थक किया। पूज्य स्वामी जी महाराज का यह भी महान उपकार है कि वह लोगों को यज्ञ में अपनी आहुति देनें के लिए प्रेरणा करते हैं। पूज्य स्वामी जी महाराज के प्रेरणा से प्रेरित हो कर अथवा अन्य मनस्कता से यज्ञों में आहुति के रूप में समर्पित दानदाताओं का धन दानदाताओं का महान कल्याण करनें वाला हो जाता है। क्योंकि शास्त्र में कहा है कि यज्ञों वै श्रेष्ठतमं कर्म संसार में सर्वश्रेष्ठ कर्म कोई है तो वह यज्ञ है। वही कर्म करनें योग्य है वही कर्म किया जाना चाहिए और यदि वह आपके द्वारा अंजाने में भी, अनचाहे में भी हो जाता है तो इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है ? इसी के विषय में शाकुन्तल नाटक में कण्वं ऋषि अपनी पुत्री शकुन्तला को कहते हैं कि हे पुत्री ! भाग्यवश धुएं से अवरूद्ध दृष्टि वाले यजमान की आहुति ठीक अग्नि के मुख में ही पड़ी है इसी प्रकार जिन लोगों ने येन केन प्रकारेण अपनी आहुतियां इस यज्ञ में डाली हैं वह आहुतियां उनके सुख और सौभाग्यों को बढ़ाने वाली हो गई है। इसके लिए वे सब बधाई के पात्र हैं। स्वामी जी महाराज तो वो तपस्वी हैं जो वि जन कल्याण की भावना से राष्ट्रोत्थान की कामना से धूनी रमाए हुए बैठे हैं, अहर्निश तप तप रहे हैं। उनकी भावना पवित्र है उनका उद्देश्य महान है जो लोग इनका साथ देंगे इनके साथ सहयोग देंगे वह अपना ही कल्याण करेंगे। ईश्वर सबकों सुमति दे ताकि पूज्य स्वामी जी के इन महान कार्यों में तन मन धन से सहयोग करके अपने सौभाग्यों की निधि का संचय कर सकें। अन्त में यह प्रार्थना है कि – सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।।

– आचार्य महावीर सिंह
साहित्याचार्य, एम०ए०
आयुर्वेदरत्न, साहित्यरत्न

निवार्चन समाचार

आर्यसमाज मंदिर, गिरिहिण्डा, ...र

प्रधान : श्री शांति प्रकाश ...र्य
मन्त्री : श्री गंगा प्रसाद अ...
कोषाध्यक्ष : श्री रामचन्द्र आर्य

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116/2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 4-11-07 से 10-11-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 1/2-11-07

प्रतिष्ठा में

10150 पुस्तकालयाध्यक्ष (12/99)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

आसाम में दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रमुख कार्यकर्ता श्री लीला बोरा को स्वस्थ लाभ

आर्यसमाज रानी बाग में नागरिक अभिनन्दन

विगत लगभग ४० वर्षों से आर्यसमाज तथा दयानन्द सेवाश्रम संघ के माध्यम से आसाम, नागालैण्ड आदि क्षेत्रों में कार्यरत श्री लीला बोरा विगत लगभग ३ माह से अस्वस्थ चल रहे थे। उनके मस्तिष्क की नसों में कोई विकार उत्पन्न होने के कारण उन्हें नींद न आने का रोग लग गया और यह रोग लगातार बढ़ता जा रहा था। माता प्रेमलता शास्त्री जी के आग्रह पर श्री लीला बोरा को उपचार के लिए दिल्ली बुलाया गया। अपोलो अस्पताल तथा अखिल भारतीय चिकित्सा संस्थान में उपचार के लिए भागदौड करने तथा अन्ततः श्री धर्मपाल गुप्ता जी के एक जानकार चिकित्सक की सहायता से श्री लीला बोरा को स्वस्थ लाभ प्रारम्भ हो गया है।

२८ अक्टूबर (रविवार) को श्री लीला बोरा का आर्यसमाज रानी बाग में अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता श्री वेदव्रत मेहता ने की।

सार्वदेशिक सभा के पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन ने कहा कि कर्मठ कार्यकर्ताओं की समस्त व्यक्तिगत परेशानियां ईश्वर स्वतः ही दूर कर देता है। श्री लीला बोरा जी एक संत की तरंह उग्रवाद ग्रस्त क्षेत्र में वैदिक धर्म की ध्वजा को हाथ में लेकर ईश्वरीय कार्यों में जुटे हुए हैं। इन्हें कई बार आसाम उग्रवादियों का सामना करना पड़ा है। परन्तु निःस्वार्थ भाव से किए गए सेवा कार्यों का अपना एक तप होता है जिसके प्रभाव से पत्थर दिल भी पिघल जाते हैं। इसी सिद्धान्त के कारण श्री लीला बोरा तथा आर्यसमाज के कार्य आसाम में निरन्तर चल रहे हैं। आज आसाम में हिन्दी भाषा के विरुद्ध पनप रहे उग्रवाद को समाप्त करने के लिए केवल आर्यसमाज के इन कार्यों से ही सहायता मिल सकती है। उन्होंने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी के उस संकल्प को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने माता प्रेमलता जी को आर्यसमाज रानीबाग गुरुकुल की तरह पूर्वी प्रान्त की कन्याओं के लिए एक कन्या गुरुकुल खोलने में भी समूचित सहायता देने का आश्वासन दिया है।



अभिनन्दन समारोह में छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दयासागर, आर्यसमाज के मंत्री श्री योगेन्दर खट्टर, श्री वेदव्रत मेहता तथा श्री धर्मपाल गुप्ता ने भी सम्बोधित किया।

माता प्रेमलता शास्त्री जी ने श्री लीला बोरा को अपार आशीर्वाद देते हुए उन्हें 'जीवेम शरदः शतम्' से दीर्घायु की कामनाएं प्रदान कीं। आर्यसमाज के गणमान्य व्यक्तियों ने श्री लीला बोरा का शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया।

श्री लीला बोरा के साथ दिल्ली में चिकित्सा कराने के लिए दयानन्द सेवाश्रम संघ के कार्यकर्ता श्री सन्तोष तथा उनके दामाद भी पधारे थे। इस समारोह में उनका भी अभिनन्दन किया गया। □

रामसेतु पर सरकारी शपथ-पत्र का विरोध

उच्चतम न्यायालय में भारत की केन्द्रीय सरकार ने हलफनामा दाखिल कर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का जो अपमान किया, यह सभा इस दुष्कृत की भर्त्सना करती है। साथ ही भारत की महामहिम राष्ट्रपति से यह निवेदन करती है कि भविष्य में वैदिक आर्य संस्कृति के स्तम्भ, भगवान नाम, योगेश्वर कृष्ण व महर्षि दयानन्द जैसे महान पुरुषों के प्रति इस प्रकार का अनर्गल आक्षेप न लग पाये, इसकी समुचि व्यवस्था की जाये।

– **माया प्रकाश** , मन्त्री, आर्य उप–प्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद

पत्र व्यवहार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' से पत्र व्यवहार के लिए केवल निम्न पते का प्रयोग करें –
सार्वदेशिक सभा, 1488, पटौदी हाउस (नजदीक आर्य अनाथालय)
दरियागंज, नई दिल्ली-2, फोन : 43580554
E-mail : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in
– **प्रो० स्वतन्त्र कुमार,** प्रबन्ध सम्पादक एवं सभा मन्त्री, मो० 09719004451

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन : 43580554) से मुदित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित। ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

मूल्य : २ रुपये

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक
साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४६ अंक १४ | २५ नवम्बर से १ दिसम्बर, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | भा०कृ०१

भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में घटित सी०डी० प्रकरण में शामिल कर्मचारियों की सेवाएं समाप्त

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में लगभग दो माह पूर्व घटित सी०डी० प्रकरण के कारण विश्वविद्यालय की छवि को छब्बा लगा परन्तु विश्वविद्यालय के अधिकारियों द्वारा सम्पन्न त्वरित कार्यवाही से सारे विश्व के समाचार पत्रों एवं मीडिया में यह संदेश प्रचारित हुआ कि आर्यसमाज के दायरे में रह कर किसी भी व्यक्ति को चरित्रहीनता या सिद्धान्त विरोधी कार्यों की अनुमति नहीं दी जा सकती।

अगस्त २००७ में घटित इस घटना चक्र के कारण आर्य समाज द्वारा चरित्र स्थापना के प्रचार पर प्रश्न चिन्ह सा लग रहा था। विश्वविद्यालय के कुछ शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों द्वारा किसी महिला शिक्षिका के चित्र में से उसके चेहरे का दुरुपयोग करते हुए एक या डेढ़ मिनट की अश्लील सी०डी० तैयार की गई थी। इस घटना की जानकारी जैसे ही कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार को प्राप्त हुई, उन्होंने त्वरित कार्यवाही करके एक तदर्थ शिक्षक की सेवाएं तत्काल प्रभाव से समाप्त कर दी तथा दो अन्य शिक्षको तथा एक कर्मचारी को निलंबित कर दिया था।

इस मामले की छानबीन करने के लिए श्रीमती दमयन्ती कपूर, आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून की अध्यक्षता में चार सदस्यीय जांच समिति का गठन किया गया जिसमें डॉ० भारतभूषण तथा डॉ० संगीता विद्यालंकार के साथ सार्वदशिक सभा के पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन भी सदस्य थे। इस छानबीन समीति ने लगातार अल्प अन्तराल में बैठकें आयोजित करके लगभग दो माह के समय में अपनी विस्तृत जांच रिपोर्ट विश्वविद्यालय को सौप दी तथा समस्त संलिप्त कर्मचारियों के विरुद्ध सेवाएं समाप्त करने की कार्यवाही की संस्तुति कर दी।

इस जांच रिपोर्ट पर कार्यवाही करते हुए विश्वविद्यालय से शेष तीनों कर्मचारियों की सेवाएं भी समाप्त कर दी गई है। विश्वविद्यालय तथा आर्य जगत में सर्वत्र इस त्वरित कार्यवाही का स्वागत किया गया है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली) के अवसर पर राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटील को शुभकामनाएं प्रदान करते हुए सभा का शिष्ट मण्डल



राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील के साथ सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह, न्याय सभा के प्रधान श्री रामफल बंसल, सभा के उपप्रधान डॉ० तुलसीराम बांगिया, श्री माया प्रकाश त्यागी तथा सभा के पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य। (अन्य चित्र पृष्ठ ४ पर)

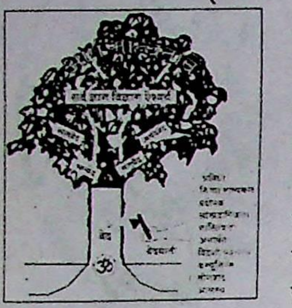
प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री
प्रबन्ध सम्पादक (09719004451)

देवराज आर्य
सह सम्पादक (0999[illegible])

विमल आर्य
सम्पादक (9968357171)

को वेदानुद्धरिष्यति ? 4

(वेदों का उद्धार कौन करेगा ?)



मेरे इन विचारों से वे ऐसा सिद्ध कर रहे हैं कि मैं स्वयं आर्ष ग्रन्थों के प्रमाण नहीं मानता। पाठकगण ! आप जरा सोचें कि यदि मैं वेद को प्रमाण नहीं मानता तो मुझे पागल कुत्ते ने काटा है जो कि वेदों की प्रामाणिकता वैज्ञानिक जगत् में सिद्ध करने का संकल्प लिया ? और इसके लिए प्राण तक की आहुति की घोषणा कर दी। क्या यह संकल्प अभूतपूर्व व अश्रुतूपर्व नहीं ? जब मेरे लिए वेद प्रमाण नहीं उसकी रक्षा करने व न कर सकने पर शरीर त्याग देने घोषणा क्यों की है ? आइये, वेदरक्षको ! जरा देखो, ऐसी प्रतीक्षा करके। जरा सोचो हर प्राणी को प्राण ही सबसे प्रिय होता है वह प्राण भी अब मेरा अपना नहीं रहा, उस पर भी वेद साधना का अधिकार हो गया, फिर भी मेरे विचारों पर शंका करते हैं। जैसे मरना सबको भयंकर लगता है वैसे मुझे भी लगता है परन्तु मैं दृढ़ हूं कि वेद सर्वज्ञानमय है व ईश्वरीय है इसीलिए जीवन दांव पर लगाया है, जो मिथ्या है उस पर कोई क्यों जीवन दांव पर लगायेगा ?

मैं वेद को हृदय से ईश्वरीय व सर्वज्ञानमय इस समय क्यों मानता हूं जबकि इस समय मैं ऐसा सिद्ध करने की क्षमता नहीं रखता, इसके उत्तर में इतना निवेदन है कि मैं यह जानता हूं कि प्राचीन ऋषियों के अन्तिम काल में जन्मे भगवत्पाद महर्षि पाणिनिजी महाराज की अष्टाध्यायी का लोहा सारा विश्व मानता है। आदित्यमुनि जी के आदर्श विदेशी संस्कृतज्ञों में मोनियर विलियम्स के मत में .... "अष्टाध्यायी ग्रन्थ मानव मस्तिष्क के सामने आया"। हण्टार के मत में ...... "मानव मस्तिष्क का अतीव महत्वपूर्ण आविष्कार यह अष्टाध्यायी सर्वश्रेष्ठ रचना है"। स्वयम्भू पं० उपेन्द्र जी व आदित्यमुनि जी ! इन आपके आदर्श माने जाने वाले देशों में उत्पन्न विद्वान अष्टाध्यायी को सर्वोत्तम आविष्कार मान रहे है और आप ऋषियों को अज्ञानी व मूर्खता रहे हैं। अब सोचें जो पाणिनि इनकी दृष्टि में विश्व के सर्वोत्तम विद्वान् व आविष्कारक बने हैं वे पाणिनि जी महाराज जिन ऋषियों के शब्द प्रयोगों को साधु मानकर उनपर कोई टिप्पणी तक न कर सके, वे महान् विद्यासागर ऋषि–मुनि क्या विज्ञान नहीं जानते थे ? जिन पाणिनि जी की बुद्धिमत्ता से विश्व भर के विद्वान् दांतों तले अंगुली दबा रहे हैं, उन महाप्राज्ञ भगवत्पाद पाणिनि जी के भी आदर्श ऋषि–मुनि मूर्ख थे ? और उन ऋषियों ने भी सनातन से जिस वेद को सर्वज्ञान–विज्ञानमय व अपौरूषेय माना, वह वेद आप जैसे (ऋषियों के समक्ष) क्षुद्र कीटों के लिए दोषों व अज्ञान का पिटारा बन गया ? हा ! शोक !! आप जैसे क्षुद्राशयों को पाणिनि जी का व्याकरण लट्ठमार दिखायी देता है जो समस्त विश्व के भाषा जगत को चतुर्दिक् अपने दिव्यलोक से आलोकित कर रहा है। अहा ! पण्डित लोगो ! आपको जन्म देकर यह धरा कैसी महिमामयी बनी है ? कुछ तो लज्जा करो ....। अन्धा दोपहर के तेज प्रकाश में भी न देखकर सूर्य को तमस का आलय बताये तो मार्तण्ड भला क्या करेगा ? अन्धा भले ही रोता रहे। अरे अज्ञानियो ! जान लो कि यदि हम नहीं समझ पा रहे हैं, तो हमारी अपनी न्यूनता है। उसे दूर करने के लिए पवित्र हृदय से श्रद्धापूर्वक यत्न करो अन्यथा परलोक में भी नेत्र बंद ही रहेंगे। रामायण व महाभारत के अस्त्र शस्त्रों को अज्ञानी मूर्खों की रचना कहा जायेगा ? यह बात सत्य है कि उस समय टैक्नोलॉजी का प्रयोग इसलिए कम था क्योंकि ऋषि अर्न्तमुखी विशेष हुआ करते थे। अध्यात्म–मार्ग मुख्य था, भौतिक सुख गौण था। वैज्ञानिक थे परन्तु विज्ञान का टैक्नोलॉजी में परिवर्तन कम करते थे। आप जैसे पण्डित लोग अष्टाध्यायी के सूत्रों जैसा एक भी सूत्र बनाकर देखें तब पता चलेगा कि ऋषि मूर्ख थे वा विद्वान ? मैं ऐसे महाप्राज्ञ ऋषियों पर विश्वास करके और कुछ संकेत स्वयं भी पाकर आगे बढ़ रहा हूं। अभी आर्ष ग्रन्थ समझने की ही योग्यता नहीं, तब वेद पर अभी कुछ कहना सुनना में उचित नहीं समझता हूं। इतना अब भी कह रहा हूँ कि इस अथाह सागर में मोतियों के भण्डार प्रतीत हो रहे हैं। हां, वहां तक जाना महाकठिन है और उसी कठिन पथ का पथिक बन गया हूं।

मेरे उपर्युक्त विचारों का तात्पर्य यह है कि हम वेद की प्रामाणिकता हृदय से मानते हुए भी उसके विज्ञान को गहराई से समझने का प्रयास करें। आज संसार सबसे अधिक प्रभावित है, तो भौतिक विज्ञान की चकाचौंध से। इस कारण भौतिक विज्ञान का भी मूल कारण वेद में सिद्ध करके ही हम वेद को प्रामाणिक सिद्ध कर सकते हैं। तब ईसाई, मुसलमान, कम्युनिस्ट, चार्वाक आदि कोई भी विरोध नहीं कर सकेगा। इन वेद विरोधियों को वेद शास्त्रों के प्रमाण इस समय देना उचित नहीं। जो जिस भाषा को समझता है। उसे उसी भाषा में ही समझाएं। विज्ञान की भाषा में समझने वाले व इसी में पगलाये युग को इसी भाषा में ही समझाना है। इसलिए वेद के विज्ञान को आधुनिक विज्ञान से आगे ले जाकर उन्हें कहना है कि आओ, विज्ञान के प्रेमियो ! हम इस भाषा में भी तुम्हे समझाना जानते हैं। उसके बाद वेद की वैज्ञानिकता व ईश्वरीयता समझ आ जावे तब उन्हें वेद की अन्य बातों पर भी श्रद्धा होगी और फिर उन्हें हर बात आप्त प्रमाण पूर्वक ही कहना उचित रहेगा। जो पौराणिक भाई वेद व ऋषियों पर श्रद्धा रखते हैं उन्हें आर्ष प्रमाण आज भी देना उचित है। कहो, उपेन्द्र जी एवं आदित्य मुनि जी ! आप यदि वेद की प्रामाणिकता सिद्ध करने हेतु ही प्रश्न करते हैं और अपने को वेदसाधक कहते हैं तो मैं आप तथा आपके आकाओं को चुनोती देता हूं कि मेरे संकल्प में सहभागी बनें वे भी अपने जीवन को दांव पर लगाये, फिर हम सब मिलकर शोध व अध्ययन करें। अन्यथा यह खुली घोषणा कर दें कि आपकी शोध का उद्देश्य वेद को नीचा दिखाना है। उपेन्द्र जी ! बहुत सारे ग्रन्थों के पठन मात्र से विद्या नहीं आती है, जब तक कि अपने पास विमल हृदय व तीक्ष्ण बुद्धि नहीं हो। संकलन का नाम शोध नहीं है। सारे शास्त्र देखें परन्तु एक शब्द पर भी गूढ चिन्तन न हुआ तो पढ़ने का क्या परिणाम ? इसलिए हजारों मंत्रों में मत जाओ। एक पर ही शुद्ध व गम्भीर चिन्तन तो कर लो अन्यथा यों ही चले जाओगे। दूसरी बात यह है कि मैं वेद में वैज्ञानिकता को सिद्ध करने के लिए आर्ष पद्धति का ही अनुयायी हूं। अंग्रेजी का कोई ग्रन्थ समझना हो तो अंग्रेजी का व्याकरण जानना आवश्यक है। कुरआन का मर्म समझना है तो अरबी व्याकरण आवश्यक है इसी प्रकार वेद समझना है तो वेद का व्याकरण अर्थात पाणिनीय व्याकरण, निरुक्त, ब्राह्मण ग्रन्थ, दर्शन, उपनिषद, प्रातिशाख्यादि ग्रन्थ, स्वर–छन्द–शास्त्र सबका ज्ञान आवश्यक है। आप इनको जाने वा जानने की इच्छा बिना उछल कूद कर रहे हो। आपके प्रश्नों में दिये वेद मंत्रों के अर्थों को क्या आप अंशतः भी जानते हैं? आपने कहीं स्वर भी नहीं दर्शाये हैं। क्या बिना स्वर ज्ञान के वेदार्थ संभव है ? जिस अल्प ज्ञान से अर्थ करते हो, वह अल्पज्ञान भी पाणिनि महाराज के व्याकरण से लिया है। फिर पाणिनि जी के व्याकरण को क्यों वेदार्थ से दूर करने की शर्त रखते हो ? हे पण्डित भाइयो ! जिस अल्प व्याकरण ज्ञान के सहारे वेदार्थ करते हो, उस व्याकरण शास्त्र पर ही आर्य विद्वानों से शास्त्रार्थ कर लें, उसी विषय पर कुछ प्रश्न पूछ लो। सीधे वेद पर पहुंचे और गन्दी असभ्य भाषा का प्रयोग कर रहे हो। क्या अपने को आर्यसमाजी कहने और लिखने में आपकी आत्मा आपको धिक्कारता नहीं ? क्यों आत्महनन का पाप कर रहे हैं ? श्री आदित्य मुनि ने मुझे अपने पत्र के साथ वेदों पर आक्षेपों का समाधान पर टिप्पणियां नामक ३–५–०५ को लिखा पं० उपेन्द्रराव जी के १२ पृष्ठ के लेख की छाया प्रति भी भेजी है जिसमें मेरे भेजे 'वेदों पर हो रहे आक्रमण का उत्तर' जो सम्भवतः दो वा ढाई वर्ष पूर्व 'दयानन्द संदेश' तथा 'तपोभूमि' में छपा था तथा मान्य डॉ० कृष्णलाल जी, डॉ० रघुवीर जी वेदालंकार, डॉ० जयदत्त जी उप्रेती, आचार्य धर्मेश जी भारद्वाज इन सभी के लेखों का उत्तर मात्र १२ पृष्ठों में दे दिया। मेरा ही लेख शायद १५ पृष्ठ का था और आपने मात्र १२ पृष्ठ में सबको धराशायी कर दिया और स्वय ही प्रफुल्लित हो रहे हैं। मुझे पहिले भी ज्ञात हुआ था कि मेरे लेख का उत्तर दिया गया है और दयानन्द सन्देश के सम्पादक महोदय ने वचन देकर फिर छापा नहीं तब मैंने सोचा था कि लेख बड़ा सारगर्भित होगा परन्तु जब अब देखा तो हंसी आई के वे इसे ही रामबाण समझ रहे थे। सारी पण्डिताई इस लेख में और नग्न हो गई, जिस पर दम्भ था। वास्तव में ये लोग घोर नादान, हठी व विधर्मी है, यह और स्पष्ट अधिक हो गया। मैं मुनिजी से पूछता हूं कि आपने वा आपके गुरुदेव पं० उपेन्द्रजी ने मेरे लेख को समझा भी था वा नहीं, क्या आपकी भांति ही उत्तर दिया जाता है ? आपने मुझ पर कुछ टिप्पणियां की हैं, जैसे –

१. इसमें विशेषता यह कि शांस्त्रार्थों में प्रयुक्त सभी हथकंडों को अपनाया गया है।

२. शास्त्रार्थ का प्रसंग न होते हुए भी शास्त्रार्थ के हथकडों से लैस हो करके बात करना चाहे उनसे कौन बुद्धिमान बात करना चाहेगा ?

३. श्री आदित्यमुनि जी एक इंजीनियर है, अध्यापक नहीं। एक इंजीनियर की प्रवृत्ति आर्य समाज के चौथे नियम के अनुकूल ही बैठती है।

४. श्री अग्निव्रत जी द्वारा लिखी गई सब बाते अनावश्यक हैं।

५. हमने किसी वेद मंत्र के अर्थ करने का प्रयास नहीं किया। यह हमारा उद्देश्य भी नहीं है। जहां अत्यन्त आवश्यकता हो, वहीं सरल अभिप्राय व्यक्त किया। मंत्रार्थ पर न हमारा कोई दावा है, और न हम किसी के दावे को स्वीकारते हैं। (क्रमशः)

पत्र व्यवहार

सार्वदेशिक साप्ताहिक के विद्वान लेखकों तथा सभाओं और आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि विशेष उत्सवों आदि की सूचना प्रकाशनार्थ कम से कम १५ दिन पूर्व अवश्य भेज दिया करें। इसी प्रकार विद्वान लेखक विशेष उत्सवों, दिवसों आदि से सम्बन्धित लेख भी न्यूनतम १५ दिन पूर्व अवश्य भेजें। अधिकाधिक सामयिक विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रियाएं भी भेजें। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ पत्र व्यवहार अथवा "सार्वदेशिक साप्ताहिक" के सम्बन्ध में लेख, सूचनाएं तथा अन्य पत्र निम्न पते पर भेजे –

सार्वदेशिक सभा, 1488, पटौदी हाउस (नजदीक आर्य अनाथालय)
दरियागंज, नई दिल्ली-2, फोन : 43580554
E-mail : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in
प्रो० स्वतन्त्र कुमार, प्रबन्ध सम्पादक एवं सभा मन्त्री, मो० 09719004451

गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित एतिहासिक ग्रन्थ "महात्मा गांधी और गुरुकुल" पर विशिष्ट महानुभावों की सम्मतियां

Archana Datta (Mukhopadhyay)

दिनांक : 13 अक्तूबर 2007

प्रिय प्रो. स्वतंत्र कुमार,

भारत की राष्ट्रपति जी को प्रेषित आपका पत्र तथा गुरुकुल द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 'महात्मा गांधी और गुरुकुल' प्राप्त हुआ [illegible]

सादर

भवदीया
(अर्चना दत्ता)

प्रो. स्वतंत्र कुमार
कुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार 249404

---

9 अक्तूबर, 2007

प्रिय प्रो. स्वतंत्र कुमार जी,

आपका 4 अक्तूबर, 2007 का पत्र तथा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में गुरुकुल द्वारा प्रकाशित पठनीय व संग्रहणीय ग्रंथ "महात्मा गांधी और गुरुकुल" प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

इस उपयोगी ग्रंथ के प्रकाशन के लिए मेरे हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

सधन्यवाद,

आपका,
(मो. हामिद अंसारी)

प्रो. स्वतंत्र कुमार,
कुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार - 249 404

B. V. R. Subrahmanyam
Private Secretary to the Prime Minister
Tel. 23018939
Fax 23015857

प्रधान मंत्री कार्यालय
नई दिल्ली 110 011
Prime Minister's Office
New Delhi 110 011

3 अक्तूबर, 2007

प्रिय प्रो. स्वतन्त्र कुमार,

प्रधान मंत्री जी आपके द्वारा भेजे गए ग्रन्थ 'महात्मा गांधी और गुरुकुल' के लिए आपको अपना धन्यवाद भेजते हैं।

[illegible] महात्मा गांधी के विचारों को [illegible] नागरिक बन और देश का [illegible]

गुरुकुल द्वारा प्रकाशित इस [illegible] के लिए प्रधान मंत्री आपको बधाई देते हैं।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय
(बी. वी. आर. सुब्रह्मण्यम)

प्रो. स्वतन्त्र कुमार
कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार 249404

स.पी. - - /एच.एम.पी./07

शिवराज पाटील
SHIVRAJ V. PATIL
गृह मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

12 अक्तूबर, 2007

प्रिय प्रो. स्वतंत्र कुमार,

आपका दिनांक 4 अक्तूबर, 2007 का पत्र राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ महात्मा गांधी और गुरुकुल' की प्रति सहित प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

शुभकामनाओं सहित,

आपका,
(शिवराज वि.पाटील)

प्रो. स्वतंत्र कुमार,
कुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार - 249 404,
उत्तराखंड

मीरा कुमार
MEIRA KUMAR

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री
भारत सरकार
शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001
MINISTER OF SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA
SHASTRI BHAWAN, NEW DELHI-110001

अक्तूबर 2007

[illegible]

महात्मा गांधी जी के सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में गुरुकुल द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 'महात्मा गांधी और गुरुकुल' प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

गुरुकुल द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ महात्मा गांधी के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन, विचार तथा कर्मों से सीख लेने की प्रेरणा देता है। आज भी उनकी विचारधारा में सार्थकता है। मैं आशा करती हूँ कि यह ग्रन्थ महात्मा गांधी जी की यादगारों को मूर्त रूप देने में सहायक सिद्ध होगा।

शुभेच्छु,

मीरा कुमार (श्रीमती)

प्रो० स्वतंत्र कुमार
कुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार 249 404

गंगा मेला गढ़मुक्तेश्वर सन्तर नं० ७ में
आर्य समाज का वेद प्रचार शिविर
कार्तिक शुक्ल 11 से
कार्तिक शुक्ल 15 सम्वत् 2064
21 नवम्बर से 24 नवम्बर 2007 तक

आर्य सम्मेलन, गौ संवर्धन सम्मेलन, मद्य निषेध सम्मेलन, भारतीय संस्कृति सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

निवेदक
नरेन्द्र कुमार आर्य (प्रधान)
माया प्रकाश (मन्त्री)
राजेन्द्र सिंह आर्य (कोषाध्यक्ष)
आर्य उप प्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद

पं० चन्द्रकिरण शर्मा को पत्नीशोक



आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के पूर्व मन्त्री श्री पं० चन्द्रकिरण शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती शान्ति देवी का ८५ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। श्रीमती शान्तिदेवी ने लगभग ७० वर्ष श्री चन्द्रकिरण शर्मा जी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर हर सुख–दुख में समभाव अपना कर्तव्य निर्वहन किया। अपने इस जीवन में श्रीमती शान्ति देवी ने चार सुपुत्रों को जन्म देकर उन्हें संस्कारवान एवं सुखी गृहस्थी बनने की प्रेरणा दी। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से मोदीनगर स्थित नंगली गांव में किया गया।

दिवंगत आत्मा की सदगति एवं उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ का आयोजन नगली गांव में ही किया गया, जिसमें सार्वदेशिक सभा के पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य, मन्त्री श्री जयनारायण अरुण, श्रीमती डा० आशारानी राय, सभा कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द आर्य, श्री आर्य तपस्वी सुखदेव, श्री माया प्रकाश त्यागी, श्री श्रद्धानन्द शर्मा जी ने भाग लेकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

माता शिवराजवती जी एवं श्री सुनील मानकतलाजी द्वारा जीवनप्रभात गांधीधाम का दौरा

माता शिवराजवती ओंकारनाथ चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई की अध्यक्षा माता शिवराजवती जी एवं ट्रस्टी श्री सुनील मानकतलाजी ने दिनांक ६ अक्तूबर २००७ को आर्यसमाज गांधीधाम संचालित जीवनप्रभात की एक दिवसीय भ्रमण किया। माता शिवराजवती जी एवं श्री सुनील मानकतलाजी की जीवनप्रभात की यह प्रथम मुलाकात थी। दोनों का स्वागत जीवन प्रभात के बच्चों ने वैदिक परम्परा अनुसार तिलक लगाकर व पुष्प माला पहनाकर किया। अमेरिका से पधारे श्री गिरीश खोसला जी ने तथा आर्यसमाज गांधीधाम के महामंत्री श्री वाचोनिधि आर्य ने भी दोनों का सत्कार किया एवं गांधीधाम में फैले चारो प्रकल्पों का परिचय करवाया। माता शिवराजवती जी ने जीवनप्रभात प्रकल्प के



सुचारू संचालन एवं बच्चों के भविष्य के निर्माण हेतु किए जा रहे कार्यों के लिए आर्यसमाज गांधीधाम के युवा पदाधिकारियों को बधाई एवं आशीर्वाद दिए। श्री सुनील मानकतलाजी ने जीवनप्रभात के बच्चों को संस्कारी, स्वाभिमानी एवं राष्ट्रभक्त बनाने के लिए किए जा रहे ठोस प्रयत्नों की सराहना करते हुए कहा कि ये बच्चे जरूर जीवन प्रभात का नाम रोशन करेंगे। उन्होंने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जीवनप्रभात के सुन्दर माहौल का पूरा लाभ उठाकर अपने जीवन को उन्नत बनाएं और श्रेष्ठ नागरिक बनकर दिखाएं। उनके सम्मान में बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जिसमें माता शिवराजवती जी ने भजन भी गाए। आर्यसमाज गांधीधाम के महामंत्री श्री वाचोनिधि आर्य ने भूकम्प के समय और बाद में जीवनप्रभात के बच्चों के लिए गए बाबू ओंकारनाथ जी के सहयोग को याद करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया और भविष्य में सहयोग मिलता रहे ऐसी आशा व्यक्त की।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 25-11-07 से 1-12-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 22/23-11-07

प्रतिष्ठा में
20845 श्री रामनरेश शर्मा (5/05)
प्रशासन लेखा ...
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तरांचल)



राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील को साहित्य भेंट करते हुए सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री यशपाल आचार्य तथा डॉ० बांगिया, अपने भजनो की सी०डी० भेट करते हुए दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य, चौ० लक्ष्मी चन्द्र आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान वैद्य इन्द्रदेव, डॉ० रविकान्त तथा उनके सुपुत्र शौर्य।

स्व० जगदीश चन्द्र जी (मास्टर जी) की जन्म शताब्दी पर वैदिक सत्संग का आयोजन

१ नवम्बर २००७ को रमेश नगर आर्य समाज मन्दिर में स्व० जगदीश चन्द्र जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। स्व० जगदीश चन्द्र जी धर्मनिष्ठ, परोपकारी, प्रसिद्ध शिक्षाविद, समाज सेवा आदि कार्यों में सर्वात्मना समर्पित रहे। स्व० जगदीश चन्द्र जी के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र तथा दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य सुमन ने यज्ञ का आयोजन किया। वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री जी ने यज्ञ करवाया तथा श्रीमती सुमन सरीन ने भजन प्रस्तुत किए। इस शताब्दी वर्ष के आयोजन में क्षेत्रीय विधायक श्री सुभाष सचदेवा तथा आर्यसमाज के नेता श्री विमल वधावन, दिल्ली सभा के प्रधान श्री इन्द्रदेव, श्री हीरा लाल चावला, प्रिं० चन्द्र देव, श्री जगदीश आर्य, श्री भजन प्रकाश आर्य तथा श्री अनिल आर्य भी उपस्थित थे। इस अवसर पर स्व० जगदीश चन्द्र जी के शिष्यों को भी आमंत्रित किया गया था।

इस अवसर पर श्री विमल वधावन ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि असली श्राद्ध यही है जो श्री नरेन्द्र सुमन ने आज किया है। श्री वधावन ने श्री नरेन्द्र सुमन द्वारा अपने पिता जी के १००वें जन्म दिन पर आप सबको आमंत्रित करने की प्रशंसा करते हुए कहा कि श्री जगदीश चन्द्र जी के परोपकारी कार्यों और उन संस्कारों के फलस्वरूप ही नरेन्द्र जी भी समाज सेवा में संलग्न हैं।

डॉ० महावीर जी का स्वागत

हरिद्वार, ८ अक्टूबर। आर्यसमाज ज्वालापुर में गुरुकुल कांगड़ी विश्विविद्यालय के प्राच्य विद्या संकाय के अध्यक्ष प्रो० महावीर का उत्तरांचल संस्कृत अकादमी का उपाध्यक्ष बनने पर अभिनन्दन किया गया।

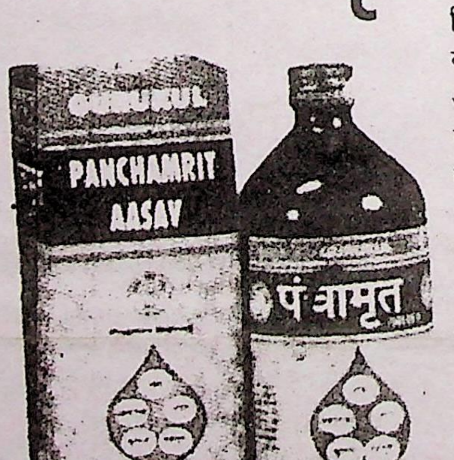
समाज में आयोजित समारोह में गिरधारीलाल चन्द्रवानी और राममूर्ति गुप्त ने प्रो० महावीर को शॉल ओढ़ाकर तथा आर्य विदुषी सरोज आर्या ने पुस्तकें प्रदान कर उनका सम्मान किया। जीवन परिचय डॉ० दिनेश चन्द्र शास्त्री ने दिया।

इससे पूर्व प्रो० महावीर के ब्रह्मत्व में वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। इसके यजमान सर्वश्री ओ०पी० बत्रा, राममूर्ति गुप्त, विजयपाल सिंह, बलवीर तलवाड़, अशोक माणिकटाला, मुनीश राठी, अमरनाथ, सूर्य प्रकाश, डॉ० वीना अग्रवाल, सरोज आर्या आदि थे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपमंत्री देवराज आर्य ने वैदिक एवं संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में प्रो० महावीर के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि वह वैदिक संस्कृति के प्रखर प्रवक्ता हैं। उन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत के प्रचार प्रसार में महती कार्य किया है। वह निष्काम भावना से अनेक राष्ट्रप्रेमी समाजसेवी और धार्मिक संस्थाओं से अनवरत जुड़ें हुए हैं। इन्हीं सद्‌गुणों, योग्यता और समर्पण के कारण उन्हें उत्तराखण्ड सरकार ने इस पद पर प्रतिष्ठित किया है। कार्यक्रम का संचालन राममूर्ति गुप्त और विजयपाल सिंह ने किया।







प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन : 43580554) से मुदित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के लिए प्रकाशित। ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र



वर्ष ४६ अंक १५ | २ दिसम्बर से ८ दिसम्बर, २००७ तक | दयानन्दाब्द १८५ | सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ | सम्वत् २०६४ | भा०कृ०६
भारत में वार्षिक १०० रुपये (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की वैधानिक स्थिति

हरिद्वार जिला न्यायालय द्वारा राजसिंह की अपील निरस्त

राजसिंह के कुलाधिपति बनने के सपने धूमिल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की करोड़ों रुपए की भूमि को बेचने और उसमें करोड़ों रूपये के घोटाले में शामिल तत्वों ने अग्निवेश को अपना नेता बनाकर सार्वदेशिक सभा पर कब्जा करने की योजना बनाई और कम्युनिस्ट प्रभाव तथा सरकारी तन्त्र की मदद से कब्जेबाजी की गुण्डागर्दी प्रारम्भ कर दी। इसमें इस सारे घटनाचक्र में हरियाणा के तथाकथित आर्यसमाजियों का एक विशेष गुट और उनके समर्थन में दिल्ली में भी उन्हीं के कुटुम्बी (जातिवादी) कुछ तत्वों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कलियुग में स्वार्थी और धनलोभी व्यक्तियों का गुट बहुत जल्दी बनकर तैयार हो जाता है और दिनोदिन ऐसे गुटों को मजबूती भी मिलती रहती है। यहां तक कि दिल्ली के ही धर्मपाल आर्य तथा राजसिंह आदि लोगों ने अग्निवेश को कब्जा करने के लिए उकसाया परन्तु आर्य जनता का रूख देखकर और उससे भी अधिक अपने पदों पर खतरा मण्डराता देखकर इन लोगों ने अग्निवेश का दिखावटी विरोध करना शुरू कर दिया। इधर 'सार्वदेशिक' सभा के वैद्य पक्ष (जिसमें श्री विमल वधावन आर्य मन्त्री थे) में भी इन लोगों ने अन्दरुनी गुटबाजी बढ़ानी शुरू कर दी। कै० देवरत्न को भी अपने स्वार्थी मिशन में शामिल करना इनके लिए सहज हो गया, क्योंकि उनका अपना सारा जीवन अपने छोटे–छोटे स्वार्थों की पूर्ति आर्यसमाज से करते-करते ही बीता था। मॉरिशस का पचास लाख, सूरत होटल में वैश्यावृत्ति का अड्डा और अन्य कई छोटे-छोटे असंख्य हितसाधन उनकी दिनचर्या के लक्षण हैं।

आज तक किसी व्यक्ति ने अप्रैल २००७ के चुनाव को चुनौती नहीं दी। इस चुनाव में श्री मिठाई लाल सिंह प्रधान, प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी मन्त्री तथा श्री अरिविन्द कुमार आर्य कोषाध्यक्ष निर्वाचित किए गए। आज कानूनी दृष्टि से केवल यही निर्वाचन वैध और मान्यता प्राप्त है।

देवरत्न, राजसिंह, धर्मपाल और आचार्य बलदेव के कारण ही अग्निवेशी गुण्डागर्दी के मार्ग प्रशस्त हुए

इधर राजसिंह की मित्र-मण्डली जो खूब प्रचार करो के आवरण में खूब धन कमाओ का लक्ष्य लेकर दिन दूनी रात चौगनी उन्नति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाये घूम रही थी। ऐसे स्वार्थी तत्वों की सांठ गांठ इस अराजकता के माहौल में फलनी फूलनी शुरु हो गई। दूसरी तरफ अग्निवेश की ईसाइयत और इस्लामी राजनीति, अखबारों और मीडिया की सस्ती लोकप्रियता और आर्यसमाज के सिद्धान्तों को उखाड़-उखाड कर खोखे सेकुलरवाद और अमरीकी मानवतावाद के नाम पर आतंक खड़ा करने का मिशन आर्यसमाज में अपना रस्ता बनाने में लगा हुआ है। इस वातावरण के बीच आज भी वैद्यता और संविधानिकता का पक्ष लगातार एक चट्टान की तरह इन बाधाओं, स्वार्थों और देशद्रोही मिशनों से लडने के लिए दिन–रात जूझ रहा है। जिसमें सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री रामफल बंसल, पूर्व मन्त्री श्री विमल वधावन आर्य तथा इस वैधानिक पक्ष के वर्तमान प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह पूरी मजबूती के साथ सार्वदेशिक सभा की वैद्यता, संवैधानिकता, मर्यादा और सबसे सर्वोपरि वैदिक धर्म की रक्षा के लिए 'अहर्निशं सेवा महे' के मार्ग पर चलते चले जा रहे हैं।

अग्निवेशी गुण्डागर्दी द्वारा उत्पन्न स्थिति का नाजायज लाभ उठाते हुए राजसिंह ने अपने आपको गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति घोषित करने की भी हिम्मत जुटा ली। यह व्यक्ति स्वयं पथविहीन था, इसे धर्मपाल आर्य जैसे पथ भ्रष्ट करने वाले सलाहकारों ने लगातार इस जंजाल में फंसाने के लिए कोई कसर नही छोड़ी। राजसिंह के नाम से एक मुकद्दमा हरिद्वार की सिविल अदालत में प्रस्तुत किया गया जिसमें यह प्रार्थना की गई कि उसे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद पर कार्य करने के लिए अनुमति दी जाए और श्री सुदर्शन शर्मा को कुलाधिपति तथा अन्य पदाधिकारियों को कार्य करने से रोका जाए। इस मुकदमे की पैरवी पूर्ण कलयुगी उत्साह के साथ और घमंडमय चेहरे के साथ कभी धर्मपाल आर्य करते रहे तो कभी कभी आचार्य बलदेव जी को भी दल-बल सहित इस दलदल में घसीटते रहे। आचार्य बलदेव जी भी इस सारे प्रकरण में अपने प्रांतवाद के विमोह से ऊपर कभी नही उठ सके। सिविल जज की अदालत ने ३० अगस्त २००७ को दिए अपने निर्णय के द्वारा राजसिंह की प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया।

शेष पृष्ठ २ पर

रानीबाग आर्य गुरुकुल की परम्परा पर और भी गुरुकुल बनेंगे

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में विगत लगभग ४० वर्षों से पूर्वोत्तर राज्यों तथा आदिवासी क्षेत्रों में धर्मान्तरण निरोधक मिशन को लेकर किए जा रहे कार्यों में एक ऐतिहासिक मोड़ विगत लगभग ४ वर्ष पूर्व तब आया जब दिल्ली में आर्यसमाज रानीबाग के अन्तर्गत एक गुरुकुल की स्थापना करके कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। यह परिक्षण पूरी तरह से सफल रहा और दिनो दिन समाज में इसकी छवि सुदृढ होती गई। आसाम और नागालैण्ड में चल रहे आश्रमों में बच्चों को दाखिल करने की सीमितता का समाधान करने के उद्देश्य से यह गुरुकुल स्थापित किया गया था। माता प्रेमलता जी की यह हार्दिक इच्छा है कि इसी प्रकार का एक गुरुकुल कन्याओं के लिए भी दिल्ली में स्थापित किया जाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी के सामने जब यह प्रस्ताव माता जी ने प्रस्तुत किया तो उन्होंने सहर्ष इस प्रस्ताव पर हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया।

कन्या गुरुकुल की स्थापना के लिए एक अलग भवन किराए पर लेने का सम्पूर्ण व्यय वहन करने का आश्वासन सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने दिया है। मुम्बई के आर्यजनों के सहयोग से गुरुकुल स्थापना की इस दूसरी कडी को निकट भविष्य में स्थापित करने की पूरी तैयारी है।

सार्वदेशिक सभा ने यह भी निर्णय लिया है कि आगामी वर्ष के भीतर एक और गुरुकुल पूर्वोत्तर राज्यों और आदिवासी क्षेत्रों के बच्चो के लिए दिल्ली में ही प्रारम्भ करने का प्रयास किया जाएगा।

हरिद्वार जिला न्यायाधीश श्री आर०पी० पांडे के आदेश दिनांक १६-११-२००७ की प्रतिलिपि ई-मेल से मंगवाने के लिए कृपया सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के ई-मेल पर निवेदन प्रेक्षित करें।
– प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभामन्त्री, sarvadeshiksabha@yahoo.co.in

प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री
प्रबन्ध सम्पादक (09719004451)

देवराज आर्य
सह सम्पादक (09997070789)

विमल आर्य
सम्पादक (9968357171)

पृष्ठ १ का शेष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की वस्तु स्थिति

पथभ्रष्टता, घमण्ड और स्वार्थ की लड़ाई यहां भी बन्द नहीं हुई। इन सलाहकारों ने हरिद्वार के जिला न्यायालय में एक अपील याचिका प्रस्तुत की। जिला न्यायालय ने अपने आदेश दिनांक **१६ नवम्बर, २००७** के द्वारा पुनः इस धूर्त मुकदमेबाजी को धूल चटाने का काम कर दिया है।

माननीय जिला न्यायालय ने अपने आदेश में यह स्पष्ट कहा है कि १५–६–२००६ के आदेश के द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान राजसिंह के स्थान पर वैद्य श्री इन्द्रदेव को नियुक्त कर दिया गया था। इसी प्रकार हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य बलदेव नहीं रहे। अतः यह वाद प्रस्तुत करते समय राजसिंह दिल्ली सभा के प्रधान नहीं हैं। इस स्थिति में राजसिंह के प्रार्थना पत्र को सिविल जज द्वारा अस्वीकार किया जाना त्रुटिपूर्ण नहीं माना जा सकता। माननीय जिला न्यायालय ने राजसिंह की इस अपील को बलहीन मानते हुए निरस्त करने का आदेश दिया है।

राजसिंह आर्य न तो दिल्ली सभा का वैधानिक प्रधान है और न ही गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति, फिर भी दिल्ली की भोली भाली आर्य जनता इनके जाल को अभी तक पूरी तरह समझ नही पाई।

दूसरी तरफ सार्वदेशिक सभा के नाम पर भी अब यही गुटबाज पुनः अग्निवेश के साथ हाथ मिलाने के लिए आतुर हो रहे हैं। इसका कारण भी अब धीरे धीरे स्पष्ट होता जा रहा है। अग्निवेश को कब्जेबाजी के लिए उकसाने में भी इसी धर्मपाल आर्य का नाम बार–बार उछलता रहा, उस तथ्य को भी अब झुटलाना मुश्किल है।

श्री रामफल बंसल ने दिल्ली उच्च न्यायालय के दोनों माननीय न्यायाधीशों को बड़ी विनम्रतापूर्वक सार्वदेशिक सभा की वैधानिक स्थिति तथा इस पर की गई गुण्डागर्दी से काफी हद तक अवगत करा दिया है। सभा के वैधानिक पक्ष का अड़िग दृष्टिकोण निम्न शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है –

वर्ष २००४ में १८ जुलाई को सम्पन्न हुए, निर्वाचन पूर्णतः विधिवत और संवैधानिक थे जिसमें यह भूल अवश्य थी कि कैo देवरत्न को शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता के बावजूद केवल इंसानियत के नाते प्रधान पद पर निर्वाचित किया गया था उस समय साधारण सभा के समस्त प्रतिनिधियों ने श्री विमल वधावन आर्य के विश्वास पर ना चाहते हुए भी निर्विरोध इस [illegible] को सम्पन्न किया था।

वर्ष २००५ की [illegible] फरवरी को अग्निवेशी गुण्डागर्दी के बाद श्री विमल वधावन आर्य सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री रामफल बंसल जी के संरक्षण और नेतृत्व में इस गुण्डागर्दी के विरुद्ध संघर्षरत रहे। इसी संघर्ष की अवधि में देवरत्न ने राजसिंह, धर्मपाल और आचार्य बलदेव की मण्डली के अनैतिक प्रभाव में अग्निवेश के विरुद्ध संघर्ष में भी बाधाएं उत्पन्न करनी शुरू कर दीं। उन बाधाओं की चरम सीमा तब आ गयी जब १७ अप्रैल, २००६ को दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा निर्णय सुरक्षित करने के बाद २२ अप्रैल को ही देवरत्न ने अग्निवेश के साथ हुए गुपचुप समझौते को उजाकर करते हुए एक पत्र जारी कर दिया। श्री विमल वधावन आर्य के प्रस्ताव पर अन्तरंग सभा ने एक स्वर से इस पत्र का विरोध किया और उसे निरस्त किया। इससे बौखलाए देवरत्न आर्य ने एक तरफ हिमाचल और झारखण्ड प्रतिनिधि सभाओं में छेड़छाड शुरू कर दी, दूसरी तरफ कार्यकारी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा के विरुद्ध षड्यन्त्र रचे और तीसरा अपनी धनलोभी मानसिकता के कारण राजसिंह को सम्मेलन के लिए खुली छूट दे दी। बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ और बहुत बड़े बड़े स्वार्थ सिद्ध हुए।

कैo देवरत्न की समस्त अनियमितताओं को आधार बनाकर जब एक याचिका न्याय सभा के समक्ष प्रस्तुत हुई तो बाकायता न्याय सभा के ५ सदस्यों की न्याय समिति इस याचिका पर निर्णय देने के लिए निर्धारित की गई। नियमावली में न्याय सभा को पूर्ण अधिकार है कि न्याय सभा द्वारा नियुक्त न्याय समिति सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियों और सदस्यों के मध्य किसी भी विवाद पर अपना निर्णय दे परिणामतः सार्वदेशिक न्याय सभा की ५ सदस्यीय खण्डपीठ को इन सारी अनियमितताओं के दृष्टिगत कैo देवरत्न को प्रधान पर से हटाने का निर्णय देना पड़ा।

इस स्वार्थी गुट ने अब नियमावली को भी आर्यजनों के मध्य पथभ्रष्टता उत्पन्न करने के लिए यह कहना शुरू कर दिया कि सार्वदेशिक न्याय सभा सार्वदेशिक सभा के प्रधान को कैसे हटा सकती है जबकि नियमावली में यह स्पष्ट है कि सार्वदेशिक न्याय सभा सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों के किसी भी विवाद पर अपना निर्णय दे सकती है।

इसके बावजूद भी कैo देवरत्न आर्य के पत्र पर न्याय सभा ने पुर्नविचार करने का निर्णय किया। इसके लिए समय निर्धारित किया गया परन्तु कैo देवरत्न ने न्याय सभा को शून्य मानते हुए खण्डपीठ के समक्ष उपस्थित होने से ही स्पष्ट इन्कार कर दिया। न्याय सभा के निर्णय को किसी अदालत में भी चुनौती नहीं दी गई। अतः यह निर्णय पूरी तरह से वैध बनकर लागू हो गया।

इसके उपरान्त २ जुलाई २००६ को अन्तरंग सभा की बैठक में कैo देवरत्न के स्थान पर श्री मिठाई लाल सिंह जी को सभा का प्रधान चुना गया। अतः वही सभा वैध रूप में कार्य करने लगी।

२३ दिसम्बर, २००६ को हरिद्वार में सम्पन्न हुई साधारण सभा बैठक में यह निर्णय लिया गया कि सभा का आगामी निर्वाचन यथाशीघ्र सम्पन्न करवा दिया जाए। परिणामतः सार्वदेशिक न्याय सभा द्वारा निर्वाचन कराए जाने की परम्परा के तहत २६ अप्रैल, २००७ को सार्वदेशिक सभा के वैधानिक निर्वाचन घोषित कर दिए गए। इस आशय का आमन्त्रण समस्त साधारण सभा सदस्यों को यू०पी०सी० डाक से भेज दिया गया इसकी सूचना सार्वदेशिक साप्ताहिक में विधिवत कर दी गई। इस निर्वाचन से पहले अवैधानिक रूप से घूमते फिरते कुछ लोगों ने निर्वाचन को रूकवाने के लिए एडी चोटी का जोर लगाया। सभा के अधिकारियों पर इस बात के लिए दबाव बनाया गया कि यह निर्वाचन न किया जाए। यहां तक कि दिल्ली उच्च न्यायालय में भी निर्णय सुरक्षित पड़े मुकद्दमें में फिर से सुनवाई शुरू करवाने का प्रयास भी इसी उद्देश्य को लेकर किया गया कि दिल्ली उच्च न्यायालय इस चुनाव पर रोक लगा दे। परन्तु वैधानिक पक्ष को कोई कार्य से रोकने का कोई औचित दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष भी नही था। इन परिस्थितियों में २६ अप्रैल, २००७ को सार्वदेशिक सभा के विधिवत निर्वाचन सम्पन्न करवा दिए गए।

इस अन्दरुनी गुटबाजी का असर दिल्ली उच्च न्यायालय के मुकद्दमें पर सीधा जा पड़ा। परिणामतः मुकद्दमा बेशक रद्द कर दिया गया परन्तु एक विशेष तथ्य को मान्यता देना अदालत की भी मजबूरी थी क्योंकि वैधानिकता को चाहकर भी समूल नष्ट नहीं किया जा सकता। उच्च न्यायालय के आदेश में यह स्पष्ट कहा गया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव अप्रैल, २००७ में सम्पन्न हो चुके हैं। यदि किसी महानुभाव को इस पर आपत्ति हो तो वह इसे चुनौती दे सकता है। आज तक किसी व्यक्ति ने अप्रैल २००७ के चुनाव को चुनौती नहीं दी। इस चुनाव में श्री मिठाई लाल सिंह प्रधान तथा प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी मन्त्री तथा श्री अरविन्द कुमार आर्य कोषाध्यक्ष निर्वाचित किए गए। आज कानूनी दृष्टि से केवल यही निर्वाचन वैध और मान्यता प्राप्त है।

इसके बावजूद भी कानून की परवाह नं करने वाले लोग एक अपील लेकर दिल्ली उच्च न्यायालय की खण्डपीठ के समक्ष खड़े हो गए। वास्तव में यह अपील पूर्णतः निराधार है। जो व्यक्ति मूल वाद में पक्ष ही न हो वह व्यक्ति अपील कैसे कर सकता है।

सार्वदेशिक सभा की वैधता जिसमें श्री मिठाई लाल सिंह प्रधान और श्री स्वतन्त्र कुमार मन्त्री हैं तथा सम्पूर्ण घटनाचक्र के दृष्टिगत दिल्ली उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों की खण्डपीठ ने गतमाह २५ अक्तूबर के अपने दैनिक आदेश में देवरत्न आर्य और अग्निवेश द्वारा अलग अलग दूसरा और तीसरा चुनाव करने की घोषणा को भी विवाद को उलझाने के योग्य मानते हुए उन्हें रोकना उचित समझा। यही वैधानिक पक्ष था और वास्तविकता भी यह थी कि जब वैधानिक पक्ष और वैधानिक अधिकार से निर्वाचन सम्पन्न हो चुका तो फिर दूसरा और तीसरा निर्वाचन किस बात का।

न्यायालय के समक्ष अब इन चुनावों को रोकने के बाद दो विकल्प थे कि अपील का विधिवत निर्णय किया जाए या तीनों पक्षों को मिलाकर कोर्ट निरीक्षण में पुनः निर्वाचन करवाया जाए। अदालत ने तीनों उपस्थित पक्षों से इन दोनों विकल्पों पर विचार मांगा।

देवरत्न आर्य पक्ष की ओर से यह निराधार अपील प्रस्तुत की गई थी इसलिए उन्होंने अपील के विधिवत निर्णय के विकल्प को न छूते हुए तीनों पक्षों के मिले जुले चुनाव की राय व्यक्त की। इसी प्रकार अग्निवेश ने भी यही राय व्यक्त की।

श्री विमल वधावन आर्य पक्ष की ओर से श्री रामफल बंसल ने माननीय न्यायाधीशों के समक्ष यह स्पष्ट कहा कि अदालत के निर्देशानुसार मैंने अप्रैल, २००७ के चुनाव का सम्पूर्ण विवरण तथा दस्तावेज अदालत में प्रस्तुत कर दिए हैं। अदालत यदि अपील का विधिवत अर्थात् सत्य–असत्य और वैधानिक दृष्टि से निर्णय करती है तो मुझे इसकी प्रसन्नता होगी। क्योंकि विधिवत चल रही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक ही चुनाव हो सकता है और वह अप्रैल २००७ में सम्पन्न हो चुका है। इसके लिए समस्त सदस्यों को विधिवत सूचना दे दी गई थी, इसकी घोषणा सार्वदेशिक साप्ताहिक में भी कर दी गई थी। जिन लोगों ने इस निर्वाचन में भाग लिया उनके साथ निर्वाचन की प्रक्रिया सम्पन्न हो चुकी है जो लोग किसी भी कारणवश इस निर्वाचन में भाग नहीं ले सके केवल उस कारण से विधिवत सम्पन्न हुए निर्वाचन को अवैध नहीं माना जा सकता। अतः किसी दूसरे, तीसरे निर्वाचन की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती।

श्री रामफल बंसल ने सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान के नाते भी यह विचार व्यक्त किया है कि जो सभाएं किसी कारण वश इस चुनाव में भाग नहीं ले सकीं उन्हें भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ मिलकर सहयोग करते हुए इस अग्निवेशी गुण्डागर्दी के विरुद्ध संघर्ष में शामिल रहना चाहिए।

श्री रामफल बंसल का विचार है कि सभा के कार्यालय पर कब्जा और सभा के कोष से लाखो रुपए की लूट तथा अन्य अनियमितताओं की पाई पाई का हिसाब अग्निवेश और उसके साथियों से वसूल किया जाएगा। इसके लिए सारे देश के आर्यजनों को एकजुट होकर वैधानिक स्थिति को समझते हुए हर सम्भव सहयोग करना चाहिए।

दिल्ली उच्च न्यायालय की खण्डपीठ ने चैम्बर में सुनवाई का निर्णय लिया जिसके लिए पहले २७ नवम्बर, २००७ और अब १३ दिसम्बर, २००७ को समय निर्धारित किया गया है। दिल्ली उच्च न्यायालय भी किसी पथ भ्रष्ट मार्गदर्शन को महत्व नहीं देगी अपितु विधिवत सत्य–असत्य और वैधानिक दृष्टि से ही समस्त प्रकरण पर निर्णय होगा।

इसके बावजूद भी अग्निवेश और देवरत्न आदि की ओर से अपने-अपने तरीके से भ्रामक स्थिति पैदा की जा रही है।

श्री प्रकाश आर्य ने तो दिल्ली उच्च न्यायालय के २५ अक्टूबर के दैनिक आदेश को यह कहकर सारे देश में डाक से भेजना प्रारम्भ कर दिया है कि अदालत ने निर्वाचन की प्रक्रिया प्रारम्भ करने का निर्णय दे दिया है। जबकि उस आदेश में कहीं भी अदालत के ऐसे किसी निर्णय का उल्लेख नहीं है।

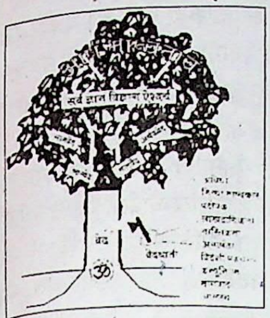
आर्य जनता को वैधानिक स्थिति से अवगत कराने के लिए यह तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं ताकि अलग-अलग और मनगढ़न्त वक्तव्यों से स्वयं पथ भ्रष्ट लोगों को पथ भ्रष्टता का वातावरण बनाने से रोका जा सके। □

जो सभाएं किसी कारण वश इस चुनाव में भाग नहीं ले सकीं उन्हें भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ मिलकर सहयोग करते हुए इस अग्निवेशी गुण्डागर्दी के विरूद्ध संघर्ष में शामिल रहना चाहिए।

को वेदानुद्धरिष्यति ? 5

(वेदों का उद्धार कौन करेगा ?)

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
भागल भीम, वाया - भीनमाल, जिला - जालोर (राज0)
फोन : 02969 - 220579 मो0 09414182173, 09829148400



पाठकगण ! विचारें कि इस वेदज्ञ को शास्त्रार्थ से इतना भय क्यों ? शास्त्रार्थ नाम से ही आपको इतनी चिढ है कि हमसे बात ही न करना अच्छा मानते हैं, तब क्या निर्णय होगा ? आपके प्रश्न इतने बेहूदे, असभ्य व अश्लील हैं, फिर भी उन्हें बुद्धिमानी का प्रतीक मानते हैं। हमारा आपसे बात न करना तो उचित भी है परन्तु हमने आपके प्रश्नों का चुन–चुन कर विस्तृत शास्त्रोक्त व तर्कसम्मत समाधान दिया था, उसे हथकंडा बता रहे हैं। आपका उत्तर देना क्या हठी, दुराग्रही व मूर्खता का परिचायक नहीं जो उपरिवर्णित ४ बिन्दु में लिखी एक पंक्ति कि 'अग्निव्रत जी की लिखी सब बातें अनावश्यक है यह भी उत्तर होता है क्या ? क्या अनावश्यक हैं, यह भी बताने की बुद्धि रखते हो वा नहीं ? इसी शैली को सत्यासत्य विवेक की इच्छा की परिचायक बताते हैं, धिक्कार है, इस पापिनी हठ व अहमन्यता पर। जब आप को मंत्रार्थ आता ही नहीं और न आप इसकी आवश्यकता अनुभव करते हैं; तब बताइये कि आपको मंत्रों में दिवसंगति, व्याकरण की त्रुटियां, अश्लीलता, हिंसा, पाप आदि कैसे दिखायी देता है ? क्या बिना अर्थज्ञान के ही आपको सारे दोष दिख गये ? कैसे दिखे? यह बुद्धिमान पाठक देखें कि कैसे यह व्यक्ति आप सबको मूर्ख बनाना चाहता है ? कहता है कि अर्थ हमें नहीं आता और यह भी कहता है कि वेद में अमुक–अमुक असभ्य बातें भरी हैं। यह इन्होंने तो अपनी पोल स्वयं ही खोल दी। हमें कहने की आवश्यकता ही क्या रही ? धन्य हो। सचमुच आपने सत्य कह दिया। आर्यो ! सोचो इतनी धृष्टता कौन करेगा, कि कहे, **'न तो अर्थ मैं जानता हूं और न किसी का अर्थ मानता हूं फिर भी कमियां सारी जानता हूं। है कोई विद्वान् तो उत्तर दो।'** आदित्य मुनि जी ! यह क्या हुआ आपके महापण्डित जी तो खुले मैदान नग्न खडे हो गये। स्वयं ही मूर्ख घोषित हो रहे हैं साथ में हठी भी कि न तो कपड़े पहिनना जानता हूं और कोई पहिनाये तो पहिनूंगा नही, फिरं भी चैलेंज !! हे स्वयंभू पण्डित जी! आप बतायें कि क्या बिना मंत्रार्थ जाने कभी सरलार्थ वा भावार्थ हो सकता है? यदि आप मंत्रार्थ नहीं जानते, तब सरलार्थ कैसे जाना ? किसी भाष्यकार के पदार्थ को दृष्टि में रखकर सरलार्थ किया तो यह क्यों कहा कि हम किसी का मंत्रार्थ मानते नहीं। कहो कि किसका अर्थ मानकर सरलार्थ किया ? सायण, मैक्समूलर वा अन्य ? कहो, ऋषि के अर्थ से तो यह सरलार्थ होगा नहीं जिसके आधार पर वेद पर ऐसे आक्रमण कर सके। तब कहो, आप किसके एजेण्ट हो ? आर्य समाजी के खोल को अब उतार कर वास्तविक रूप में खडे हो जाओ, अन्य कोई बहाना चलने वाला नहीं है। रही आदित्यमुनि जी को इंजिनियर बताने की बात तो शायद आप भी इजिनियर हैं। दोनों मौसेरे भाई हैं। मुझे इंजिनियरी का भय मत दिखाओ। मैं उन संस्थानों में जाता हूं जिनके शोधरत वैज्ञानिकों की कुछ बहुत पुरानी खोजों को आप पुस्तकों में पढे होंगे। मुझे इस वेद विरोधी इंजिनियरी से कोई भय कभी नहीं होता। पुराने इंजिनियरों को कितनी फिजिक्स् आती है, यह मैं सब जानता हूं। आपकी दृष्टि में अध्यापक सत्यासत्य नही जान सकता। महोदय ! अध्यापक ही इंजिनयर, डॉक्टर, वैज्ञानिक पैदा करता है। बड़े–बड़े वैज्ञानिक जो सत्यासत्य हेतु जीवन खपा देते हैं, वे भी अध्यापक ही होते हैं अथवा अध्यापकों के शिष्य रहे होते हैं। आपको न इंजिनयरिग का विशेष ज्ञान है और न शास्त्रीय गहराई को जानते हैं। शब्दों में पहुंचे हैं तब इसी का शोध कहते हो, तो कहते रहें। आपने २१–४–६८ का लिखा हुआ श्रद्धेय श्री आचार्य विजयपाल जी महाराज, पाणिनि महाविद्यालय, रेवली। (तत्कालीन बहालगढ़) के पत्र की छाया प्रति भी मुझे भेजी है। यद्यपि मैं उस समय के आपके प्रश्नों से अवगत नहीं हूं इसलिए उनके पत्र पर कोई टिप्पणी नहीं करूंगा। मैं उनके प्रति श्रद्धानवत् भी हूं। परन्तु इतना स्पष्ट कर दूं कि यदि अनका वाचिक विद्वान् भी आपके समर्थक हो जायें और अपने को ऋषि विरोधी वा वेद विरोधी एक स्वर से घोषित कर दें तब भी अग्निव्रत अपने व्रत से विचलित नहीं होगा। मुझे पता है कि अनेक विद्वान् आधुनिक विज्ञान से भयभीत हो जाते हैं। वे शब्दजाल में ही सीमित रहते हैं, उनके वाच्यार्थ की वैज्ञानिकता पर उनका चिन्तन नहीं होता। इस कारण वे भी वेद में आधुनिक विज्ञान का अस्तित्व नहीं मानते तथा कहीं–कहीं उन्हें मंत्र अनर्थक प्रतीत होते हैं। मैं ऋषि दयानन्द जी की ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का भक्त हू और अभी भी आधुनिक विज्ञान से सर्वथा निर्भय रहते हुए उसी नासदीय सूक्त जिसमें आदित्य मुनि जी पहेलियां देखते हैं, के कुछ शब्दों से ही विश्व प्रसिद्ध बिग बैंग थ्योरी की बचकानी बातों तथा उससे उत्पन्न समस्याओं का निराकरण करने का (वैज्ञानिकों के बीच में ही) साहस भी रखता हू। श्री आदित्य मुनि जी ने मेरे नाम खुले पत्र में यह भी लिखा है आपने 'किं कर्तव्यं क्व गन्तव्यम्' नामक लेख जो 'वैदिक गर्जना' पत्रिका में प्रकाशित (कुछ वर्ष पूर्व) हुआ था, में जो लिखा है, क्या उसके के लिए अग्निवेश जिम्मेदार हैं ..... क्यों अपने नाम राशि वाले अग्निवेश के प्रति इतना विष वमन करते हो ...... हमारे लेख (प्रश्न) १६६६७–६८ में लिखे गये थे तब अग्निवेश आर्यसमाज के किसी शीर्ष पद पर नहीं थे.... ।'

श्री मुनि जी मेरे हर लेख का दुरुपयोग करके आर्य जनता को भ्रमित करने का प्रयास कर रहे हैं। मैं 'किम् कर्तव्यं ....' लेख से आज भी सहमत हूं, हां, आज उसे लिखता तो सबसे पूर्व आप लोगों के षड़यंत्र को लिखता ..... तब तो मैं आपको (केवल आपको) अच्छा ईमानदार आर्य मानता था। अब भी कभी कभी मेरा हृदय आपको छल व अज्ञान का शिकार मानता है और आपसे विनती भी करूंगा कि आप जैसे ईमानदार आर्य को यह क्या वायरस लग गया है, इससे बचें। उस लेख मे संगठन की दुर्दशा से उत्पन्न पींड़ा का ही वर्णन है न कि मैंने आर्य समाज के सिद्धान्त पर किसी के द्वारा हो रही चोट पर पीड़ा व्यक्त की थी। एक व्यक्ति आचरण का बुरा हो, उसे सुधारा भी जा सकता है परन्तु जो सिद्धान्त रूपी बीज को ही जला रहा हो, उसकी धूर्तता को कैसे दूर किया जा सकता है ? आपका एक पुत्र यदि आपकी सेवा न करके, आपकी आज्ञा न मानकर आपको दुःखी करता हो, उसे सुधार की बात करें, तो ठीक है, वह आपको पिता तो मानता ही है। यदि दूसरा पुत्र आपको पिता ही न मानता हो और आपको और अपनी मां को गालियां भी बकता हो और अपने दादा–दादी आदि को भी असभ्य, मूर्ख, कामी आदि भूषणों से सुभूषित करता हो, (जैसे उपेन्द्र जी वेद व आर्ष ग्रन्थों को करते हैं) तब बतायें, क्या उसकी धूर्तता की तुलना पहले पुत्र की मूर्खता से कर सकते हैं ? यही भेद अग्निवेश, उनके सैनिक आप लोगों तथा मैंने जिनके कामों पर आंसू बहाये, उनके बीच है। जरा बुद्धि व सत्यदृष्टि से काम लें। निरा छल–कपट युक्त व्यवहार नहीं करें। परमात्मा (जो आपकी दृष्टि में मूर्ख है) से कुछ तो डरें परन्तु आप कैसे डरेंगे ? आप मुझे अग्निवेश की नाम राशि की दुहाई देकर निकटता लाने की प्रेरणा परोक्ष रुप से दे रहे हैं परन्तु जिस प्रकार भगवान राम एव रावण की राशि एक थी परन्तु दोनों में महान् भेद था वही दशा यहां है। (यदि राशि ही मानें तो।)।

कहें आदित्य मुनि जी! आप अग्निवेश से तो पूछ लेते कि वे राशि फल भी मानते हैं क्या ? सारा जीवन हिन्दुओं को गाली देते–देते हो गया, अब राशि फल मानने लगे हैं, क्या ? अथवा आपने इंजिनियरिंग में कोई फलित ज्योतिष भी पढ़ा था ? रही बात १६६७–६८ में अग्निवेश के किसी आर्य संस्था के शीर्ष पद पर नं होने की बात तो, महामना ! मैक्समूलर किसी भारीय वैदिक संस्था का पदाधिकारी नहीं था परन्तु इंग्लैण्ड में बैठा अपने मूर्खता व धूर्तता पूर्ण वेद भाष्य के द्वारा वेद व आर्यों के इतिहास को दूषित करता रहा और भारतीय विद्वानों व भारतीय राजनेताओं ने ध्यान ही नहीं दिया। इसके विपरीत व मैक्समूलर आदि के भक्त और बन गये। अरे ! मैक्समूलर को तो जीवन की अन्तिम वेला में कुछ बुद्धि आयी थी, क्या आपको नहीं आयेगी ? उस मैक्समूलर की डोर भी अंग्रेज शासकों के हाथ थी। वे भी किसी वैदिक संस्था से जुडे नहीं थे। इसी प्रकार उसी शैली में षडयंत्र अग्निवेश आर्यसमाज में प्रविष्ट होने से लेकर आज तक चला रहे हैं। उन्होंने सम्भवतः प्रवेश भी इसीलिए लिया था। उनके गुरूदेव उपेन्द्र जी, मैक्समूलर का कार्य कर रहे हैं, तो कहीं बौद्धों, वाममार्गियों, व चार्वाकों के रूप में भी खड़े दिखाई देते हैं और अनाड़ी आर्यसमाजी आपका स्वागत कर रहे हैं।

मेरे प्यारे पाठकगण ! मैं वर्षों से आर्य सिद्धान्तों की रक्षार्थ को लिखकर अनेक विद्वानों व साधारण पाठकों का प्रिय बना रहा परन्तु अब इस भीषण संकल्प के कारण लेख लिखना, ऐस वेद दूषकों के आक्रमण का उत्तर देना, प्रवचन करना आदि भूल गया हूं। वेद विज्ञान पर भी पत्र वाचन व प्रवचनों में रूचि नहीं क्योंकि मुझे समय सीमा दिखाई देती है। केवल अध्ययन ही लक्ष्य है। लक्ष्य प्राप्ति के बाद प्रचार ही करना है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। लगभग एक वर्ष छः माह बीत गया। लगभग दस वर्ष छः माह पश्चात् या तो वेद की प्रमाणिकता सिद्ध करूंगा या अग्निव्रत इस संसार को त्याग देगा, इसमें किसी को संदेह नहीं करना चाहिए। इसलिए कांटों से दूर रहूं, ऐसी इच्छा है। मेरे स्नेही, श्रद्धेय जनों ने मेरे संकल्प के दूसरे भाग अर्थात् शरीर त्याग पर कड़ी आपत्ति अपने पत्रों में व्यक्त की है परन्तु मैं अब इस विषय में कोई पुनर्विचार नहीं करूंगा, न कोई तर्क ही दूंगा व न सुनूंगा। कुछ लोग व्यंग भी कर सकते हैं कि धन लूटने के लिये यह प्रचार मात्र है, उनसे मैं क्या कहूं जो मुझे निकट से जानते हैं, वे ही इसका उत्तर भी जानते हैं। फिर सही उत्तर तो समय ही देगा।

(क्रमशः)

पत्र व्यवहार

सार्वदेशिक साप्ताहिक के विद्वान लेखकों तथा सभाओं और आर्यसमाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि विशेष उत्सवों आदि की सूचना प्रकाशनार्थ कम से कम १५ दिन पूर्व अवश्य भेज दिया करें। इसी प्रकार विद्वान लेखक विशेष उत्सवों दिवसों आदि से सम्बन्धित लेख भी न्यूनतम १५ दिन पूर्व अवश्य भेजें। अधिकाधिक सामयिक विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रियाएं भी भेजें। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ पत्र व्यवहार अथवा 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' के सम्बन्ध मे लेख, सूचनाएं तथा अन्य पत्र निम्न पते पर भेजें –

सार्वदेशिक सभा, 1488, पटौदी हाउस (नजदीक आर्य अनाथालय)
दरियागंज, नई दिल्ली-2, फोन : 43580554
E-mail : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in
– प्रो० स्वतन्त्र कुमार, प्रबन्ध सम्पादक एवं सभा मन्त्री, मो० 09719004451

आर्यसमाज हंसापुरी, नागपुर (महाराष्ट्र) का 'वेद प्रचार एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह' सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के सौजन्य से आर्यसमाज हंसापुरी सैन्ट्रल एवेन्यू रोड नागपुर द्वारा आयोजित वेद प्रचार एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह दिनांक १, २, ३ सितम्बर तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर चतुर्वेद शतकम् के पवित्र वैदिक मन्त्रों द्वारा यज्ञ आर्य समाज के विद्वान प्रधान पं० श्री शिवपूजन मिश्र एवं श्री कृष्ण कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रख्यात् वैदिक विद्वान आचार्य भगवानदेव वेदालंकार जी ने 'वैदिक मन्त्रों की व्याख्या' मानवोचित व्यवहारिक जीवन से संगति करते हुए प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि मानव जीवन का उद्देश्य अत्यन्त दुःखों से छूट जाना है। अपने जीवन को सुख, शांति तथा आन्दोल्लास की ओर आगे बढ़ाना है। पशु-पक्षियों के दुर्गुणों से हटकर श्रेष्ठ आर्योचित व्यवहार को अपनाना है। तभी हमारा कल्याण सम्भव है।

आर्यसमाज की आवश्यकता पर सारगर्भित भजन प्रस्तुत किए।

समापन समारोह ३ सितम्बर, २००७ को सम्पन्न हुआ। जिसका निर्देशन धर्मवीर आर्य नेता श्री संतोष गुप्ता जी ने किया तथा संयोजन प्रसिद्ध समाज सेवी कर्मठ कार्यकर्ता श्री अशोक यादव जी ने किया। उन्होंने आर्य जनता के सामने आर्यसमाज की गतिविधि लक्ष्य और मन्तव्यों को विस्तार से प्रस्तुत किया। आर्यसमाज के कर्मठ तथा सहयोगी आर्य नेता प्रोफेसर श्री अनिल शर्मा जी ने आर्य समाज को एक आन्दोलन बताया। इस आन्दोलन ने समाज में व्याप्त बुराइयों, दुर्व्यसनों, अन्धविश्वासों तथा कुरीतियों के कूड़ा कर्कट को साफ किया। वेदरूपी ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

समापन समारोह के अवसर पर आर्यसमाज हंसापुरी नागपुर से समाज सेवी अधिकारियों में विशेष उपलब्धियों के लिए श्री सन्तोष गुप्ता जी, श्री अशोक यादव जी, प्रो० अनिल शर्मा जी, पं० श्री शिवपूजन मिश्र, पं० श्रीकृष्ण



कुमार, श्री महिपाल आर्य, संगीता यादव, प्रसिद्ध गायक श्री जगत वर्मा आदि के साथ-साथ वैदिक विद्वान् आचार्य भगवानदेव जी वेदालंकार को भेंट स्वरूप नगद राशि तथा वस्त्र देकर सम्मानित किया गया।

योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज के सम्बन्ध में उनका कहना था कि श्रीकृष्ण जी ने जीवन भर दूसरों का हित किया। दुष्टों का नाश किया। अपने चरित्र को सर्वदा उज्जवल रखा। दूसरों के सामन अपना मानवोचित उच्चादर्श ही प्रस्तुत किया।

पंजाब से पधारे प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री जगत वर्मा जी ने अपने एल्क्ट्रोनिक जापान निर्मित म्यूजिक यन्त्र से प्रेरणापद भजनों के माध्यम से ईश्वर-भक्ति, सत्संग की महिमा, देश-भक्ति तथा

इस अवसर पर नागपुर शहर के कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, नगर सेवक, स्टील इन्डस्ट्री के चयेरमैन तथा विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारी, सदस्य तथा सत्संग प्रेमी महिलाए बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

आर्यसमाज रायपुर, धीरपुर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज रायपुर, धीरपुर का वार्षिकोत्सव १६, १७, १८ सितम्बर को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मनन्द वेदभिक्षु तथा पं० यो[illegible] दत्त आर्य भजनोपदेशक का जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। समारोह की अध्यक्षता श्री हरिदेव मुनि वानप्रस्थी तथा संचालन श्री नरसिंह आर्य कविरत्न ने किया, आयोजन श्री ऋषिपाल आर्य थे।

समाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नति के लिए वेदों की ओर लौटना आवश्यक

आर्यसमाज, बी ब्लॉक, जनकपुरी में सम्पन्न हुए चार दिवसीय श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार समारोह में प्रवचन करते हुए स्वामी श्रेयान्द विदेह यति जी ने व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति के लिए वेदों की ओर लौटना आवश्यक बताया। किसी भी राष्ट्र को बलवान और ऊर्जावान बनाने के लिए ऋषित्व की साधना आवश्यक है और ऋषि वह होता है जो सबका कल्याण चाहता है। ऋषित्व की साधना के लिए तप और दीक्षा आवश्यक है, दुर्गुणों का परित्याग कर, सांप और भेड़िये जैसी पशु प्रवृत्तियो का परित्याग कर सच्चे अर्थों में मनुष्य बनना आवश्यक है। मानव जीवन की सार्थकता प्रभु भक्ति और मोक्ष की प्राप्ति में है और इसके लिए भक्त का सौम्य, पराक्रमी, विपत्तियों का सामना करने वाला, प्रातः सायं ईशभक्ति में तल्लीन रहने वाला तथा पारस्परिक प्रेम से एक दूसरे को आगे बढ़ाने वाला होना आवश्यक है। सुसंगठित होकर ही हम सामाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नति की ओर अग्रसर हो सकते हैं। वैयक्तिक एवं पारिवारिक समुन्नति का दिव्य संदेश वेद के अनेक मत्रों में है। इस अवसर पर होने वाले प्रातःकालीन सामवेदीय ब्रह्मपारायण यज्ञ आचार्य डॉ० अरुणदेव जी शर्मा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें उन्होंने बताया कि 'ओ३म्' का स्तुति गान और साक्षात्कार ही साम है। यज्ञोपरान्त भी स्वामी जी के सुमधुर प्रवचनों का लाभ धर्मप्रेमी भाई बहिनों ने उठाया।

समाप्ति के दिन ध्वजारोहरण श्री हीरालाल चावला जी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री बलदेवराज सेठ उपस्थित थे। आर्यसमाज के प्रधान प्रो० (डॉ०) सुन्दरलाल कथूरिया ने दानशीलता, धर्माचरण, मानवीय गुणों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए स्वामी जी एवं अन्य अभ्यागतों के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री पं० जगमाल जी, श्रीमती राज मेहन, श्रीमती विमला मलिक, श्रीमती सुनीता सहदेव, कु० ऋतम्बरा, कु० मेधा आदि के सुमधुर भजनों-गीतों ने समा बाध दिया। सर्वश्री रामजी लाल गोयल, रामकृष्ण सतीजा, शिव कुमार मदान, आदि की उपस्थिति गरिमापूर्ण रही। अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का सफल संयोजन-संचालन आर्यसमाज के मंत्री श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी ने किया।

ध्यान योग शिविर सम्पन्न

खेड़ा अफगान २२ अक्टूबर। ध्यान योग शिविर के समापन पर ब्रह्मचारी गौतम ने कहा कि व्यक्ति पातन्जल योग सीखकर स्वार्थ को त्यागते हुए परमार्थी बन सकता है। आर्यसमाज मन्दिर में आयोजित ध्यान योग शिविर के समापन के अवसर पर साधको को सम्बोधित करते हुए श्री गौतम ने कहा कि जो व्यक्ति सासारिक सुख दुःख को ही सच्चा समझता है वह जन्म मरण के बन्धन से नही छूट सकता है। इस शरीर का उद्देश्य परोपकार एव त्यागपूर्वक भोग करते हुए मुक्ति की ओर बढ़ना है। समाज में उत्पन्न विषम परिस्थितियों पर प्रहार करते हुए कहा कि विपरीत परिस्थितियों के बनने में धार्मिक व्यक्तियों की निष्क्रियता इसका कारण हैं अपनी मानसिकता में बदलाव लाना पड़ेगा। उनहोंने कहा कि विदेशी कम्पनियां आज भी अप्रत्यक्ष ढंग से हमारे जीवन प्रणाली में प्रवेश कर हमें गुलामी की ओर धकेल रही है। राम चन्द्र जी महाराज के पीछे महर्षि वाल्मीकि तथा शिवाजी के पीछे समर्थ गुरू रामदास की आध्यात्मिक शक्ति थी। अध्यात्म की मूल विद्या को जानने वाला आजादी के महत्व को जान सकता है। उन्होंने साधको से गुरू दक्षिणा के रूप में मांग की कि जो उन्होंने योग सीखा है उसे अन्य लोगों को अवश्य सिखाए।

महाशय वेगराज आर्य अभिनन्दन समारोह

आर्य जगत के राष्ट्रवादी ओजस्वी भजनोपदेशक महाशय वेगराज आर्य लगभग ६ दशक से आज ८१ वर्ष की उम्र में भी अपने उसी ओजस्वी स्वरूप में प्रचार प्रसार में रत हैं। आज भी उनकी वाणी और शब्दों में गरिमामय आकर्षण है। श्री वेगराज जी आर्य जगत की अमूल्य निधि है। उनके इस महान योगदान के लिए आर्य जगत एवं अन्य समाज सेवी संस्थाओं ने उनका राष्ट्रीय स्तर पर अभिनन्दन करने का निर्णय किया है। इस अवसर पर आर्य विचारधारा के प्रचार को और तीव्र गति से चलाने के लिए आधुनिक साधनों से सुसज्जित एक प्रचार वाहन एवं एक सम्माननीय राशि भी भेंट करने की योजना है, परन्तु यह महान कार्य आप जेसे समाज के प्रबुद्ध व सामर्थ्यवान लोगों के सहयोग से ही संभव है। आपका महाशय वेगराज जी से निकट का संबंध रहा है। अतः इस महान कार्य में आप अपना योगदान देकर इस संकल्प को पूरा कराने में भागीदार होंगे, ऐशी आशा है।

महाशय वेगराज आर्य अभिनन्दन समारोह समिति द्वारा इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रंथ भी प्रकाशित करने की योजना है। अतः आप श्री वेगराज जी से संबंधित अपने संस्मरण, फोटो व सहयोग राशि, संयोजक, महाशय वेगराज आर्य अभिनन्दन समारोह समिति, **आर्य समाज, सेक्टर १६, फरीदाबाद (हरियाणा)** के पते पर प्रेषित कर इस कार्यक्रम को सफल बनाए।

— [illegible] आर्य, संयोजक

विश्वविजयी शांति मिशन

मोदीनगर, विश्व विजयी शान्ति मिशन ने रविवार को पी०बी०ए०एस० इण्टर कॉलिज में भाषण प्रतियोगिता एवं गोष्ठी का आयोजन किया।

इसमें विनाशकारी शस्त्रों की होड़ में गांधी एक उपाय तथा विश्व शांति एवं मानवता के लिए शस्त्र और सेनाओं से मुक्ति क्यों और कैसे विषयों पर छात्र-छात्राओं ने तथा आगंतुकों ने विचार रखे।

अतिथि श्री रमेशचन्द शर्मा ने कहा कि आज मनुष्य को मानव बनने की जरूरत है। विश्वबन्धुत्व की भावना फैलाने के लिए शस्त्रों पर रोक लगाकर शांति का वातावरण बनाना है। शस्त्रों की होड़ से भय फैलता है।

संस्था के अध्यक्ष ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद करते हुए कहा कि भारत का सिद्धान्त वासुधैव कुटुम्बकम को पुनः स्थापित करना है ताकि आतंक हिंसा से त्रस्त दुनिया शांति प्राप्त कर सके।

— डॉ० अनिला सिंह आर्य

आध्यात्मिक प्रवचन एवं शंका समाधान

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग हाथीखाना राजकोट में दिनांक ३–१०–०७ बुधवार की रात्रि ६ बजे से १०.३० तक एक आध्यात्मिक प्रवचन जाहेर जनता के गोल्डन पार्क में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसके मुख्य वक्ता स्वामी विवेकानन्द जी थे। स्वामी जी अपने प्रवचन में बताया कि मोक्ष के लिए जीवात्मा को कैसी तैयारी और मोक्ष की सीमा ३१ नील, १० खरब होती है तथा पूर्व जन्म के सकाम कर्म को भोगने के लिए जीवात्मा को पुनः जन्म लेना होता है। कर्मानुसार पुनर्जन्म मिलता है। मोक्ष के लिए प्रयत्न करना, पुरुषार्थ ही जीवात्मा का लक्ष्य है।

शंका – जब जीव मोक्ष से वापस आता है तो जाये ही क्यों?

उत्तर – जैसे नौकरी करने वाला व्यक्ति जानता है कि सुबह जा रहा हूं और सायं घर आना है। तो क्या नौकरी करने (आफिस) नहीं जाये। आप जानते है कि नौकरी से पैसा मिलता है अन्य सुख सुविधाओं के साथ लाभ होगा। उसी प्रकार मोक्ष में जो सुख लम्बे समय के लिए जीवात्मा भोगता है, कारण कि सीमित कर्म का सीमित फल देना ईश्वर की न्याय व्यवस्था है।

शंका – अन्तिम में अवसान (मृत्यु) होने पर जीवात्मा कहां जाता है ?

उत्तर – स्वामी ने कहा मृत्यु के बाद जीवात्मा बेहोश हो जाता है और ईश्वर उसको अपने साथ ले जाता है, जीवात्मा शून्य हो जाता है, उसको जन्म कहां देना है यह निर्णय ईश्वर कर्म के आधार पर करता है।

अहं ब्रह्मस्मि – अहं ब्रह्मस्मि का अर्थ स्वामी जी ने वैदिक ढंग से सभी श्रोताओं को सरल भाषा और तर्क से समझाया कि आत्मा ब्रह्म जैसा नही हो सकता। मान लो धन कमाकर व्यक्ति धनी हो जायेगा लेकिन व्यक्तित्व धनी नही हो सकता – धनवान और धन अलग–२ है। उसी तरह जीव और ब्रह्म अलग–अलग सत्ता है।

अन्त में मंत्री श्री रणजीत सिंह परमार ने सभी श्रोताओं को आर्यसमाज के सिद्धान्तों की जानकारी दी।

आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा निन्दा प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर की यह सभा केन्द्र की यू०पी०ए० सरकार के रामसेतु परियोजना के सन्दर्भ में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के सम्बन्ध में उच्चतम न्यायालय में दिए गए मिथ्या शपथ पत्र की कड़े शब्दों में निन्दा करती है। राम भारत के एक आदर्श पुरुष रहे हैं जिन्होंने एक पुत्र, एक भाई, एक पति, एक पिता व एक राजा के रूप में अनुकरणीय मर्यादाएं स्थापित की हैं जो उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में एक महामानव बनाती है। श्रीराम भारत की आत्मा हैं और भारत में ही नहीं इण्डोनेशिया जैसे मुस्लिम राष्ट्र में आज भी आदर्श व पूजनीय है। रामकथा रामायण के रूप में जनमानस को आज भी प्रेरणा दे रही है। रामायण और महाभारत इतिहासग्रंथ हैं जिन्हें धर्मग्रंथों की तरह आदर प्राप्त है।

महात्मा गांधी के नाम से सत्ता सुख भोगने वाले महात्मा गांधी के रामराज्य को कैसे भूल गए ? महात्मा गांधी के अन्तिम शब्द थे 'हे राम !'।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

प्रसिद्ध संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान और आर्य जगत के सुप्रसिद्ध प्रचारक विद्वान पद्म श्री डॉ० कपिल देव द्विवेदी के आवास शान्ति निकेतन ज्ञानपुर में यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन दिनांक १४ से २० अक्टूबर २००७ तक किया गया। यज्ञ का संचालन डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री ने किया। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या डॉ० सूर्यादेवी चतुर्वेदा तथा आचार्या श्रुतिकीर्ति वेदरत्न थीं।

यज्ञ की पूर्णाहुति पर सम्बोधित करते हुए डॉ० कपिल देव द्विवेदी ने कहा कि वेद भारत की बहुमूल्य धरोहर हैं। आदिकाल में वेद जितने महत्वपूर्ण थे आज के सन्दर्भ में भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। वेदपाठियों की परम्परा ने इनके मौलिक स्वरूप को सुरक्षित रखा है। सैद्धान्तिक मतभेद के मिटाने में प्रमाणरूप में वेदों को ही माना जाता है। अतः वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, कहा गया है। इस अवसर पर डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि वेदविश्व को आध्यात्मिकता के साथ मानसिक शान्ति प्रदान करने में समर्थ है। मनोनिग्रह द्वारा आतंकवाद पर भी अंकुश लगाया जा सकता है। आचार्या डॉ० सूर्यादेवी चतुर्वेदा ने कहा कि वेद अध्यात्म मार्ग के साथ कर्ममार्ग को भी प्रधानता देते हैं। अध्यात्म और कर्म दोनों का महत्वपूर्ण सामंजस्य इसमें प्राप्त होता है। आचार्या श्रुति कीर्ति ने कहा कि वेद विश्व में मानवता के प्रति सहिष्णुता, सद्भाव, मानवीय दृष्टिकोण और परस्पर अनुराग का सन्देश देते हैं।

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति समारोह

आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के १३८ वें वार्षिक स्मृति के अवसर पर त्रिदिवसीय वृहद वैदिक समारोह दिनांक २२ से २४ नवम्बर तक शास्त्रार्थ स्थल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड वाराणसी में आयोजित किया गया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव मनाया गया

आर्यसमाज पश्चिम विहार नई दिल्ली के तत्वावधान में १२५वां महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव १५ से १८ नवम्बर की तिथियों में आयोजित किया गया, जिसमें कई वैदिक विद्वानों के प्रवचन आयोजित किए गए।

– राजेन्द्र लाम्बा

आर्य समाज दिलशाद गार्डन मन्दिर निर्माण दान हेतु अपील

वैदिक विचारधारा का प्रत्येक नर–नारी अपने आप में आर्यसमाज की एक इकाई है। व्यक्तिगत तौर पर अपने आचरण एवं क्रिया कलापों एवं व्यवहार आदि के द्वारा सही अर्थों में आर्यसमाज का प्रचार प्रसार ही करता है। स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज के प्रचार प्रसार हेतु विधिवत आर्यसमाज दिलशाद गार्डन की स्थापना सन् १९६१ में की गई। तत्काल ही समाज कापंजीकरण दिल्ली सरकार से करवाया गया।

सभी सदायें के अथक प्रयास से सन् १९६८ में दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा दिलशाद गार्डन के ब्लाक सी स्थित प्लाट संख्या आर ६ (लगभग ४००.२० वर्ग मीटर की भूमि) आर्यसमाज दिलशाद गार्डन को मन्दिर निर्माण हेतु आवंटित की गई।

उपरोक्त भूमि पर श्री हरवंश लाल शर्मा जी के द्वारा शिलान्यास करने के बाद सत्संग हाल व पुरोहित आवास का निर्माण कर दिया गया। समाज की सभी गतिविधियों का संचालन यहीं से किया जाने लगा।

जैसा कि पहले भी भूमि आवंटन के समय भुगतान करकने पर आप सभी का सहयोग मिला उसी प्रकार अब भी आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि इस बार भी आपके सहयोग से प्राप्त ध नराशि से मन्दिर निर्माण समय पर अवश्य ही पूरा कर लेंगे।

अतः आप सभी से पुनः निवेदन है कि मन्दिर निर्माण हेतु अधिक से अधिक राशि का दान देकर पुण्य के भागी बनें व ऋषि ऋण से उऋण होवें। नकद अथवा चैक द्वारा आर्य समाज दिलशाद गार्डन के नाम दान राशि समाज को दी जा सकती है जिसकी रसीद आर्यसमाज दिलशाद गार्डन के अधिकृत व्यक्ति के द्वारा तत्काल ही आपको दी जायेगी।

निवेदक – **राणा पी० सेठ** (प्रधान),
रामचन्द्र (मंत्री),
सरोज भाटिया (प्रधाना),
अरुणा मुखी (मंत्री)

आर्यसमाज रामनगर रूड़की का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज रामनगर, रुडकी का वार्षिक उत्सव दिनांक २९, ३०, ३१ अक्टूबर, २००७ को सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य प्रवचनकर्ता आचार्य आर्य नरेश वैदिक गवेषक, उद्गीथ साधना स्थली हिमाचल रहे। साथ में श्री बलवीर सिंह आर्य द्वारा मधुर गीत भी प्रस्तुत किए गए। आचार्य आर्य नरेश के विचारों से अनेक महानुभावों ने लाभ उठाया। आचार्य जी ने कहा कि वह सुनाने नही चलाने आये हैं। आप लोग अपने जीवन में यज्ञ अपनाये। यूं तो अनेक यज्ञ हैं पर पांच महायज्ञों में अग्निहोत्र सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि मनुष्य समाज में शरीर से अनेक प्रकार की गंदगी तो करना है पर शुद्धि नहीं करता, गंदगी को शुद्ध करने का एकमात्र उपाय सदैव यज्ञ, अग्निहोत्र ही है। आज के युग में कल कारखानों की भरमार है जो पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं उसे भी अग्निहोत्र द्वारा ही प्रदूषण रहित किया जाता है। गीता में भी कहा है जो बिना यज्ञ किए भोजन करता है वह पाप करता है। आर्य नरेश जी ने यजमानों की दैनिक यज्ञ करने की शपथ दिलाई।

दशहरा मेला मे वैदिक धर्म प्रचार, हजारों नवयुवकों द्वारा माता पिता की सेवा का संकल्प

बिहार के ऐतिहासिक पश्चिम चम्पारण जिला के मुख्यालय में स्थित आर्य समाज, बेतिया द्वारा स्थानीय दशहरा मेला में पांच दिवसीय वैदिक धर्म प्रचार शिविर का आयोजन २४ से २८ अक्टूबर तक किया गया।

इस शिविर में वैदिक धर्मोपदेशक के रूप में स्वामी अग्निव्रत (नालंदा), राष्ट्रीय कवि पं० सियाराम निर्भय (आरा), साध्वी यशोदा आर्या (बदायूं, उ०प्र०), पं० रामचन्द्र सिंह क्रांतिकारी (नेपाल) तथा भजन गायक सर्वेश कुमार आर्य ने प्रतिदिन हजारों श्रोताओं को वैदिक धर्म का उपदेश दिया। कई घर में वैदिक पुरोहितों ने संस्कार का आयोजन भी किया, जिससे भावी पीढ़ी के संस्कारयुक्त निर्माण एवं उससे राष्ट्रनिर्माण की महत्ता पुनः स्थापित हुई। आर्य पर्वों के यथार्थ स्वरूप को समझकर इस शिविर में कई पौराणिक बन्धुओं ने वैदिक सिद्धान्तों को स्वीकार करते हुए आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की।

दस हजार से अधिक लघु पुस्तक तथा प्रचार पत्रकों का निःशुल्क वितरण किया गया, जिनमें मृतक श्राद्ध, मूर्तिपूजा, पशु हत्या, ईश्वर उपासना, मांसाहार आदि विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया है। माता पिता, गुरु, मातृभूमि एवं गोमाता के प्रति कर्त्तव्यों की विस्तृत चर्चा करते हुए इनकी पूजा को ही साक्षात् देवपूजा बताया गया, जिससे प्रभावित होकर सैकड़ों नवयुवकों–नवयुवतियों ने अपने माता पिता की सेवा का संकल्प लिया। इस शिविर के आयोजन में आर्यसमाज बेतिया के प्रधान रघुनाथ आर्य चतुर्वेदी, उपप्रधान गणेश प्रसाद आर्य, लक्ष्मण साह आर्य, रुद्रदेव प्रसाद आर्य, मंत्री कृष्ण मोहन प्रसाद, कोषाध्यक्ष नन्दनाल आर्य सहित दर्जनों कार्यकर्ता प्राणपण जुटे रहे।

परमात्मा के साक्षात वाङ्मय स्वरूप - वेद

वेद कोई पुस्तक नहीं है, किताब नहीं है, ग्रन्थ नहीं है और किस्से कहानियां नहीं है। वेद परमात्मा की साक्षात वाणी है, परमात्मा का सत्य ज्ञान है, सन्देश है। सत्य सदैव नित्य, अनादि है। इस संसार में हर दिखाने वाला पदार्थ, द्रव्य, वस्तु, चीज अनित्य है, आदि है, जड़ है व नाशवान है। दुनियां का महान से महान वैज्ञानिक बेशक दावा करें कि फलां वस्तु का निर्माण मैंने किया है, स्वीकार किया जा सकता है। उस वस्तु की खोज या निर्माण उसने अपनी बुद्धि के बल पर किया होगा। क्या बुद्धि की खोज या निर्माण कोई कर सकता है ? दूसर प्रश्न – इस ब्रह्माण्ड में जिन पदार्थों की खोज या निर्माण कोई भी-नहीं कर सकता और हम सभी उनको प्रतिदिन देखते भी हैं और उनका प्रयोग भी करते हैं। यह सर्वविदित है और वैज्ञानिक सत्य भी है कि कोई भी पदार्थ अपने आप नहीं बन जाता, उसे चेतन शक्ति ही बना सकती है।

एक अरब छियानवें करोड़ आठ लाख तरेपन हजार एक सौ सात वर्ष पूर्व इस सृष्टि पर अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा अवतरित हुए। बिना गुरु के संसार को चार वेद – ऋग्, यर्जु, साम तथा अथर्व दे दिए। इससे प्रमाणित होता है कि सदैव परमात्मा नित्य अनादि है और उनका ज्ञान भी नित्य अनादि है। उनका नाश नहीं होता। योगी लोग योग द्वारा ज्ञान को आत्मा पर धारण करते हुए संसार में बांटने का पुरुषार्थ करते हैं और ऋषियों, देवताओं की श्रेणी में आ जाते हैं। इससे प्रमाणित होता है कि वेद साक्षात अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनायक भगवान के वाङ्मय स्वरूप हैं।

वेद सनातन धर्म के मानव मात्र के और भारत के प्राण हैं। यदि भारत के पास वेद नहीं हैं तो फिर इस देश की कोई कीमत नहीं है। वेद की एकमात्र अद्भुत विशेषता यह है कि वेद के अनुसार चलने और वेद की आज्ञा का पालन करने और उसे शिरोधार्य करने के कारण ही भारत आज तक जगद्गुरु माना जाता रहा है। वेदों के कारण ही हिन्दु जाति मानव जाति के नाम से सर्वश्रेष्ठ मानी जाती रही है।

वेद के कारण ही सत्य सनातन धर्म सारे विश्व का सच्चा ईश्वरीय धर्म और सिरमौर माना जाता रहा है। जो भी देश अथवा जाति वेद की आज्ञा पर नहीं चले, वे परमात्मा की कृपा से वंचित होकर उन्नति नहीं कर सके। वे देश व जाति या तो सदा–सदा के लिए लुप्त हो गए या वे जंगलियों की जाति में जाकर सभ्य होने से वंचित होकर सभ्यता धारण नहीं कर सके। वे कभी भी उन्नति नहीं कर सके।

वेद की महिमा में ब्रह्मा-विष्णु-महेश, शंकर, शेष ऋषि व शारदा भी कहने और लिखने में असमर्थ हैं। हम और आप जैसे तुच्छ प्राणीयों की गिनती कहीं पर भी दिखाई नहीं देती। विश्व का उच्च कोटि का सन्त हो, ऋषि हो, विद्वान हो या चक्रवृति राजा, वेद के विरुद्ध न तो कुछ कह पाते हैं और न ही वेद विरुद्ध बात को स्वीकार करते हैं। सम्पूर्ण दुनियां ने महात्मा बुद्ध को उच्च कोटि का अवतार माना किन्तु उनके द्वारा वेद विरुद्ध बात को स्वीकार नहीं किया।

सभी सन्तों, धर्माचार्यों ने वेद के आगे अपने आप को नतमस्तक किया। बौद्धमत को स्वीकार नहीं किया। वेदों की आज्ञा का पालन करते हुए वेद ज्ञान को श्रवण, मनन, आत्मसाक्षात्कार करते हुए आत्मा में संचित किया, वाणी में धरण किया, आचरण में लाए और वेदानुसार कर्म करते हुए वेद ज्ञान के प्रकाश को सम्पूर्ण विश्व में प्रकाशित व सुगन्धित किया।

वेद साक्षात ब्रह्म स्वरूप हैं। राम और कृष्ण भी वेद की आज्ञा का पालन करते रहे। योगीराज कृष्ण वेदों का पठन पाठन करते रहे। वेद अध्ययन करते समय संसार की एषणाएं भूल जाते थे। सदैव वेदों के गूढ़ विषयों में संलग्न हो जाते थे। वेदों का स्वाध्याय करते समय सदा प्रसन्न रहते और किसी चीज की इच्छा नहीं करते थे। वेदों की छत्र छाया में उनका जीवन परिपक्व रहता था। वेदों के अध्ययन से ही उन्होंने ऐसे महान यन्त्रों की खोज की कि कहा जाता है कि आज तक उन यन्त्रों को केवल दो महान आत्माओं ने ही जाना है। त्रेताकाल में महाराजा राम के भाई लक्ष्मण जी ने और द्वापर युग में योगीराज कृष्ण ने। महाभारत युद्ध का मैदान चारों ओर एक यांत्रिक रेखा द्वारा प्रयोग किया गया। जिसका परिणाम युद्ध में भाग लेने वाले शत्रुओं पर ही पड़ा और उनका नाश हुआ।

जैसे परमात्मा अनन्त है, उनके गुण व ज्ञान अनन्त हैं, वैसे ही महान व्यक्तियों के कार्य भी गुणकारी, लाभकारी व आनन्दमयी होते हैं। महान कार्यो द्वारा ही पृथ्वी पर पाप का अधर्म का, अत्याचार का कृष्ण द्वारा कंस का और राम द्वारा रावण का नाश व अन्त हुआ।

सम्पूर्ण विश्व का कल्याण का मार्ग केवल और केवल वेद में ही निहित है, अन्य किसी में भी नहीं। इसका ज्वलन्त उदाहरण आज के समय में रूस जैसा नास्तिक देश वेदों और यज्ञों द्वारा अपने देश में शान्ति, पवित्रता, शुद्धता की अनुभूति कर रहा है।

हे भारत भूमि ! तू धन्य है, सचमुच तू आदर के योग्य है। तुझ में ही ईश्वर ने सत्य ज्ञान का प्रकाश किया। इस धरती पर सन्तों, ऋषियों, तपस्वियों, संन्यासियों और आप्त पुरुषों ने तप, साधना, भक्ति, लेखनों, चरित्र व आचरण द्वारा सत्य ज्ञान को धारण किया, आचरण में लाए, कर्मो में लाए। सम्पूर्ण संसार में रहने वाली जातियों को एक माला में पिरोने का पुरुषार्थ किया। संसार का गुरु कहलाया। वेद ज्ञान को सभी की आत्मा में सुगन्धित किया।

पृथ्वी पर रहने वाली सभी जातियों को सर्वशक्तिमान ईश्वर ने ज्ञान व उपदेश दिया कि वेद ज्ञान को जीवन में, आचरण में, कर्मो में लाना ही परम कर्तव्य है। इसी में ही जीवन का लक्ष्य मुक्ति का मार्ग निहित है।

मनुष्य अल्पज है और मानव का ज्ञान भी बहुत सीमित है। वह दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाली बातें घर परिवार व सहकारियों से सीखता है। सृष्टि के प्रारम्भ आदिकाल में मानवों ने ज्ञान किससे सीखा होगा। ईश्वरकृत पुस्तकों द्वारा निश्चित ही ज्ञात होता है। 'स एष पूर्वेषामपि गुरु' अर्थात् पृथ्वी पर मानव जाति के अवतरित होने पर उनके मार्गदर्शन हेतु जीवन व्यवहार की सभी बातें गुरुओं के गुरु परमगुरु परमात्मा द्वारा ही यह वेद ज्ञान चार ऋषियों – अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा द्वारा अन्य ऋषियों आदि तक पहुंचाया गया। इस वाङमय ज्ञान का नाम ही वेद है। वेद के द्वारा ही ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान के रहस्य को जाना जा सकता है। वेद, हिंसा और फूट से दूर करता है। प्रीतिपूर्वक मिलजुलकर रहने, कार्य करने व लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। प्रभु की रचना से हम सभी को लाभ उठाना चाहिए।

– आर्य तपस्वी सुखदेव,
आचार्य, गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार

ज्वाला प्रसाद आर्य का अभिनन्दन

आर्यसमाज एक सम्प्रदाय नहीं, अपितु सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण का एक आन्दोलन है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रयास से ही भारत की स्वतंत्रता का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और समाज की कई कुरीतियों के विरुद्ध लोग सजग हुए। आज आर्य समाज को और सशक्त करने तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार की पहले से अधिक आवश्यकता है। ये विचार बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं विधान परिषद् में सत्ता पक्ष के नेता **गंगा प्रसाद आर्य** ने आर्य समाज, बेतिया में आयोजित ज्वाला प्रसाद आर्य अभिनन्दन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए। इस अवसर पर सम्पूर्ण उत्तर बिहार से आये आर्य सभासदों एवं कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए श्री प्रसाद ने कहा कि ज्वाला प्रसाद आर्य चम्पारण में आर्य समाज के आधार स्तम्भ रहे हैं, जिनके सौ वर्ष की अवस्था पूर्ण करने पर आर्य समाज, बेतिया द्वारा उनका अभिनन्दन किया जाना अनुकरणीय है। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री **रमेश गुप्ता आर्य** ने कहा कि बेतिया में आर्य समाज के कार्यकर्त्ता वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में जुटे हुए हैं, जिनके प्रेरणा स्रोत श्री ज्वालाप्रसाद आर्य जैसे कर्मठ और जुझारू व्यक्तित्व हैं। अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता करते हुए पूर्व सांसद एवं आर्यसमाज, बेतिया के सदस्य डॉ० मदन प्रसाद जायसवाल ने कहा कि ज्वाला जी ने तीन पीढ़ियों के आर्यो का नेतृत्व किया है। स्वतन्त्रता संग्राम के क्रम में १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में इन्हें छः मास की काल कोठरी की सजा हुई थी, जिससे जुर्माना देकर और तीन दिनों की काल कोठरी झेलकर ये मुक्त हुए थे। हैदराबाद के निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह में इनकी सक्रिय भागीदारी रही है। लेकिन इसके लिए सरकार से कोई सुविधा प्राप्त करना ये अपने सिद्धान्तों के विरुद्ध मानते थे। बेतिया में आर्य समाज की स्थापना एवं कई सामाजिक अभियानों की सफलता में श्री ज्वाला प्रसाद आर्य का योगदान रहा है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए आर्य समाज, बेतिया के मंत्री कृष्ण मोहन प्रसाद ने ज्वाला प्रसाद आर्य को एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में अभिनन्दित किया।



पर्यावरण प्रदूषण को समाप्त करने का उपाय यज्ञ

इस समय पर्यावरण प्रदूषण रूपी महा भयंकर भस्मासुर ने मात्र हवा ही नहीं अपितु पानी, पृथ्वी, ध्वनि, प्रकाश, आदि समस्त महत्वपूर्ण संसाधनों को अपने चंगुल में फंसा लिया है। दूषित भौतिक पदार्थों से उत्पन्न जहरीली गैसों ने अन्य वनस्पति, शाक, कन्दमूल, फल, फूल, औषध आदि खाद्य पदार्थ दूषित हो गए हैं। इन दूषित खाद्यान्नों के उपयोग से मनुष्य के शरीर में बनने वाली रस रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य, रज आदि धातुएं भी अशुद्ध निकृष्ट तथा निर्बल बन चुकी हैं।

ओजोन की परत में भी छेद हो जाना अत्यन्त चिन्तनीय है। आज समय की मांग है कि इन समस्त बुराईयों के मूल कारण पर्यावरण प्रदूषण रूपी महाराक्षस को नष्ट करने वाले अमोघ अस्त्र यज्ञ (हवन) को हम अपने दैनिक साप्ताहिक जीवन का मार्ग बनायें।

यह विचार हरिश्चन्द्र आर्य अधिष्ठाता उपदेश विभाग ने आर्यसमाज रामपुर सफेद (जमना क्षेत्र) में आयोजित उत्सव कार्यक्रम पर व्यक्त किए।

इस अवसर पर रणजीत सिंह, प्रेम मोहन, जीवन सिंह, रामकुमार सिंह, [illegible] सिंह, रोहताश सिंह, प्रदीप, मोहन लाल, डालचन्द, समर पाल आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

समस्त ग्रामवासी नर नारियों ने यज्ञ देव को शाकल्य आहुतियां प्रदान कीं।

कार्यक्रम का संचालन मंगू सिंह आर्य ने किया।

रानीबाग आर्यसमाज गुरुकुल की अपील

आधुनिक भारत के महान क्रान्तदर्शी वेदोद्धारक युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा समाज की तीन प्रकार की उन्नति हेतु स्थापित आर्य समाज ने अपने शैशव काल से ही तीव्र गति से महान कार्य किए हैं। तब से लेकर आज तक हजारों विद्या मन्दिर, गुरूकुल, डी०ए०वी० संस्थाए, आश्रम आदि खोलकर जन सेवा का कार्यक्रम आर्यसमाज करता आ रहा है।

इसी कड़ी में आदिवासी जनजाति पर्वतीय, क्षेत्रों में समाजिक व्यवस्था शिक्षा, संस्कार एवं जागरण का अभाव देखकर भारत के पूर्व प्रधान मन्त्री स्व० लाल बहादुर शास्त्री जी के निर्देशन पर आर्य समाज के तत्कालीन अधिकारियों एव विद्वानों ने 'कामये दु:ख तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्' अर्थात् निर्धनों एवं पीडितों के दु:खों को दूर करना ही, प्रभु की उपासना है। इस संकल्प को हाथ में लेकर असम, नागालैण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उडीसा, उ०प्र०, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उत्तरांचल आदि प्रान्तों में शिक्षा एव सेवा हेतु अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अनेक केन्द्र खोले गए। भिन्न–भिन्न आदिवासी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में एकल विद्यालय, बालबाड़ी, विद्यालय, छात्रावास, लघु उद्योग प्रशिक्षण केन्द्र एवं गुरूकुल आदि के माध्यम से अनुसूचित जाति एव जनजाति तथा आदिवासी बच्चों की सेवा में पिछले ४० वर्षो से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ कार्यरत हैं। इसी अभियान की पूर्ति के लिए आर्य समाज ने आदिवासी, वनवासी एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए दिल्ली में विशेष गुरूकुल खोलकर अतयाधुनिक शिक्षा एव आदर्श वैदिक शिक्षा की व्यवस्था की है। दिल्ली के रानी बाग आर्य समाज में आर्य गुरूकुल वनवासी छात्रों के लिए खोला गया है।

वर्तमान आर्य गुरूकुल रानी बाग में ५५ छात्र नि:शुल्क आवासीय व्यवस्था के साथ विद्या ग्रहण कर रहे ह, जिसमें वैदिक शिक्षा तथा आधुनिक शिक्षा (N.C.E.R.T.) भी S.M. Arya Public School पंजाबी बाग में प्राप्त कर रहे हैं। आर्य समाज के भवन को ही गुरूकुल हेतु आवासीय रूप दिया गया है। अभी भवन में स्थान कम होने के कारण तथा बच्चों की संख्या भविष्य में एक सौ तक करने की योजना लेकर भवन निर्माण कार्य शुरू कर दिया है जिनमें निर्माण योजना निम्न हैं –

१. 40 x 60 वर्ग फुट का बृहद हॉल, २. बिजली व्यवस्था करना, ३. संगमरमर लगाना, ४. शौचालय एवं स्नानागार निर्माण, ५. कम्प्यूटर कक्ष निर्माण, ६. बक्से एवं पुस्तक रखने हेतु अलमारियां, ७. दरवाजे खिड़की लगाना तथा ८. पलंग एवं बिस्तर आदि आदि की व्यवस्था।

इस प्रकार से भवन निर्माण की योजना है। जिसमें आनुमानिक १७–१८ लाख रुपये खर्च होने की सम्भावना है। अभी लगभग तीन लाख रुपये खर्च करके छत एव दीवार खड़ी करने का कार्य पूर्ण हो चुका है। आगे का सारा कार्य धन अभाव में अब बाधित है।

पाठकवृन्द ! आप से नम्र निवेदन है कि सेवा कार्य के इस विशाल योजना मे आप आकर एक बार गुरूकुल का निरीक्षण कर अपना सहयोग हमें प्रदान करें। हमें आशा है शीघ्र ही इस सेवा प्रकल्प को पूर्ण करने में आप अपना सहयोग यथाशीघ्र प्रदान करेंगे। धन्यवाद।

निवेदक

चिमन लाल महिन्दरू	**माता प्रेमलता शास्त्री**	**जोगेन्द्र खट्टर**
प्रधान	संचालिका	महामंत्री
आर्यसमाज मन्दिर	आर्य गुरूकुल रानी बाग	आर्य समाज मन्दिर
६८१०८६३५४५	६३१३६७२३४४, २५४३२८४४	६८१००४०६८२, ६३१००४०६८२

वेद कामधेनु विश्व विजय यज्ञ

अखिल भारती राजार्य सभा के तत्वावधान में वेद कामधेनु विश्व विजय यज्ञ का आयोजन ६ दिसम्बर (रविवार), २००७ से १६ दिसम्बर (रविवार), २००७ की तिथियों में आर्यसमाज दीवानहाल चांदनी चौक दिल्ली में आयोजित किया गया है। आठ दिवसीय इस सम्मेलन में प्रतिदिन तीन सत्रों का आयोजन होगा – प्रात: ६.३० बजे से १२ बजे तक, दोपहर १.३० बजे से ४.३० बजे तक तथा रात्रि ८ से ६ बजे तक। इन सत्रों में अत्यन्त महत्वपूर्ण विषयों पर प्रवचन आयोजित होंगे जो क्रमश: इस प्रकार हैं – ईश्वर के सौ नामों की विवेचना, सन्तानों को शिक्षित एवं आज्ञाकारी बनाना, ब्रह्मचर्य और उससे लाभ, विवाह एवं गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम, चार्वाक, बौद्ध, जैन नास्तिक मतों पर विचार, ईश्वर का अस्तित्व, जगत की उत्पत्ति, विद्या अविद्या, आचरण में क्या करें क्या न करें, सम्प्रदायों की हानियां, वैदिक राज्य व्यवस्था, ईसाई मत, मुसलमानी मत आदि। प्रतिदिन रात्रि सभा में खुला समीक्षा सम्मेलन आयोजित होगा। इस सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए श्री महेन्द्र सिंह आर्य ने सैकड़ों किलोमीटर की यात्राएं करके आर्यजनों को सम्मेलन में भाग लेने हेतु प्रेरित किया है।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन व डी०एल० (IP)01/7116//2006-08
Licence No. U(C) 93/2006-08
Licensed to Post Without Pre-payment

R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 2-12-07 से 8-12-07 तक अग्रिम भुगतान किए विना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 93/2006-08 in NDPS on 29/30-11-07

आर्य सांसद प्रो० रासासिंह रावत जी की असत्य पर विजय

अजमेर २० सितम्बर। आर्यसमाज अजमेर से निष्कासित सांसद प्रो० रासासिंह रावत को सिविल न्यायाधीश बालकृष्ण गोयल ने अस्थायी निषेधाज्ञा का प्रार्थना पत्र स्वीकार कर उनके आर्यसमाज से निष्कासन सम्बन्धी आदेश पर रोक लगा दी। न्यायाधीश का मनना है कि सांसद रावत के विरुद्ध २१.२.०७ को पारित किया गया आदेश प्राकृतिक न्याय के सिद्धान्त की पालना को किए बगैर व दुर्भावना व वैमनस्य का हेतु रखते हुए प्रो० रासासिंह रावत के विरुद्ध पारित किया गया है।

माननीय न्यायाधीश महोदय ने अपने ५० पृष्ठ के निर्णय में इस बात को पूर्ण रूप से स्वीकार किया है कि सांसद रावत विगत ४० वर्षो से आर्यसमाज के नियमित सदस्य रहे है और विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे है व उनकी समाज में एक प्रतिष्ठा है, समाज द्वारा उन्हें चुनकर संसद में बतौर सांसद भेजा गया है व उनके द्वारा न केवल समाज के समस्त व्यक्तियों का बल्कि आर्य समाज व अन्य कई सदस्यों के दायित्वों का भी प्रभार अपने जीवन में पूर्ण संतोषप्रद तरीके से निभाया है। आज यदि उनके निष्कासन के आदेश को नहीं रोका जाता है तो निश्चित रूप से उनको ऐसी क्षति होगी जिसकी भरपाई नहीं की जा सकती है क्योंकि आर्यसमाज के सदस्य के बतौर रासासिंह रावत को नित्य प्रतिदिन सिविल अधिकार प्राप्त होते है व आर्यसमाज के नियमों के अनुसार सत्संग आदि में भाग लेने तथा समाज की गतिविधियों में भाग लेने का उनका परम अधिकार है जिससे रासासिंह रावत को वंचित नहीं किया जा सकता है।

– चिरंजीलाल शर्मा,
उपमन्त्री, आर्यसमाज अजमेर

सुश्री पदमावती गायकवाड़ दिवंगत

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य विदर्भ के पूर्व प्रधान श्री जयसिंह गायकवाड़ जी की ज्येष्ठ बहन सुश्री पदमावती गायकवाड़ का अल्प बीमारी के उपरान्त २ नवम्बर को निधन हो गया। वे अपने जीवन काल में अत्यन्त सक्रिय रहीं और अनेकों सामाजिक, धार्मिक कार्यो को सम्पन्न करती रहीं। उन्होंने कई अनेकों लघु पुस्तिकाएं तथा ट्रेक्ट आदि की रचना भी की। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। श्रद्धांजलि सभा आर्यसमाज मन्दिर में सम्पन्न हुई।

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर का नया कार्यालय

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर का मुख्य कार्यालय अब आर्यसमाज बलिदान भवन, बख्शी नगर, जम्मू - १८०००१ में स्थानान्तरित कर दिया गया है। भविष्य में सभा के साथ पत्र व्यवहार इसी पते पर किया जाए।

- प्रो० प्रभुसूर आर्य, सभा मन्त्री, दूरभाष : ०६४१६१८४६०५

10150 पुस्तकालयाध्यक्ष (12/99)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल)

श्री महाराजेश्वर सहाय जी नहीं रहे

आर्यसमाज जनकपुरी तथा उत्तम नगर क्षेत्र से सामाजिक एवं धार्मिक सक्रिय कार्यकर्त्ता एवं अधिकारी श्री राकेश जी भटनागर (वकील) हरीनगर, नई दिल्ली के पिता श्री महाराजेश्वर जी सहाय का निधन दिनांक १८–११–२००७ (रविवार) को अस्वस्था के कारण ८५ वर्ष की आयु में निधन हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

आर्यसमाज कोटद्वार के पूर्व प्रधान श्री राजपाल बत्रा का देहावसान

आर्यसमाज कोटद्वार के पूर्व प्रधान श्री राजपाल बत्रा का २७ अक्टूबर को लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। श्री बत्रा एक कर्मठ कार्यकर्ता तथा दानी प्रवृति के व्यक्ति थे। दीन दुखियों की सेवा के लिए उन्होंने अपना पारिवारिक ट्रस्ट भी स्थापित किया हुआ था। श्री बत्रा का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

महिला आचार्या की आवश्यकता

आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के लिए एक सुयोग्य महिला आचार्य की आवश्यकता है। जो उच्च शिक्षा प्राप्त हो तथा संस्कृत भाषा का विशेष ज्ञान रखती हो। आवास व्यवस्था गुरुकुल में ही होगी।

निवेदक : श्रीमती राजपाण्डे, (मन्त्री), आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर जी– १६/८, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली, दूरभाष : ०११ – २५४५८७४८

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा **सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2** (फोन : 43580554) से मुदित, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–२ के लिए प्रकाशित। ई-मेल : *sarvadeshiksabha@yahoo.co.in*

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
मूल्य : २ रुपये

सार्वदेशिक
साप्ताहिक



वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वर्ष ४६ अंक १६ — २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर, २००७ तक — दयानन्दाब्द १८५ — सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ — सम्वत् २०६४ — मा०कृ०१४

भारत में वार्षिक १०० रुपये — (विदेश में) हवाई डाक से ५ वर्ष के १२५ डालर, समुद्री डाक से ७ वर्ष के १०० डालर

आर्यसमाज राजौरी गार्डन का ५३वां वार्षिकोत्सव

पं० सत्यपाल पथिक जी का अभिनन्दन सम्पन्न



आर्यसमाज राजौरी गार्डन के यशस्वी प्रधान श्री जगदीश आर्य, मन्त्री श्री दयानन्द मदान, संरक्षक श्री जगदीश कपूर तथा कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश भाटिया जी तथा उनके साथ समस्त कर्मठ आर्य बन्धुओं के सुहृदय सहयोग से आर्यसमाज राजौरी गार्डन का ५३वां वार्षिकोत्सव कई ऐतिहासिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ।

सर्वोपरि महत्वपूर्ण आयोजन के रूप में आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक परम आदरणीय श्री सत्यपाल पथिक जी का भव्य अभिनन्दन समारोह आर्यजगत के विशिष्ट विद्वानों, पदाधिकारियों तथा राजनीतिक नेताओं के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। श्री पथिक जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार तथा ईश्वर भक्ति तथा दयानन्द भक्ति के स्वरचित भजनों को सुनाकर जन–जन में धार्मिकता का प्रचार करने का कार्य किया है। इस अभिनन्दन समारोह में दिल्ली नगर निगम के सर्वोच्च नेता श्री सुभाष आर्य मुख्य अतिथि थे।

इस समारोह में आर्यसमाज राजौरी गार्डन की ओर से श्री सत्यपाल पथिक जी को २१०००/– प्रदान करके उनका अभिनन्दन किया गया।

वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम निरन्तर ५ दिसम्बर से ९ दिसम्बर तक चलता रहा जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य ऊर्ध्वबुद्ध जी तथा ऋत्विक आचार्य सुरेन्द्र कुमार शास्त्री थे। भजन प्रस्तुति श्री कुलदीप आर्य द्वारा की गई। इस सम्मेलन के बीच आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन भी स्त्री आर्यसमाज राजौरी गार्डन की प्रधाना श्रीमती राजपांडे तथा मंत्रिणी श्रीमती वेद मदान तथा अन्य महिला सदस्यों के कर्मठ सहयोग से सम्पन्न हुआ।

इस सम्मेलन में 'ओ३म्' शब्द की व्याख्या श्रीमती कुशल भाटिया ने प्रस्तुत की। डॉ० राज बुद्धिराजा, श्रीमती शकुन्तला आर्या एवं श्रीमती शकुन्तला दीक्षित सहित कई अन्य विदूषी देवियों ने अपने विचार व्यक्त किए। ❐

आर्य कवि श्री ब्रह्मानन्द जिज्ञासु अस्वस्थ

वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज की सेवा में आजीवन अपना सर्वस्व आहूत करने के उपरान्त वृद्धावस्था में श्री आर्य कवि ब्रह्मानन्द जिज्ञासु जी की शारीरिक दशा पिछले काफी लम्बे समय से चिन्तनीय बनी हुई है। ऐसी अवस्था में समूचे आर्यजगत का यह पुनीत कर्तव्य है कि ऐसी आत्माओं के संरक्षण के लिए कुछ न कुछ राशि अवश्य आहूत करें। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आर्य कवि श्री ब्रह्मानन्द जी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो। उनके इस शारीरिक कष्ट में जो आर्य महानुभाव कुछ सहयोग प्रदान करना चाहे वे उन्हें निम्न पते पर मनीआर्डर या ड्राफ्ट द्वारा भिजवा दें –

– ब्रह्मानन्द जिज्ञासु, सेक्टर ४ बी २८३ डुप्लेक्स, वृन्दावन योजना-२, दुर्गा मन्दिर के पीछे, रायबरेली रोड, लखनऊ, पिन-२२६०२५ (उ०प्र०)

हार्दिक निमंत्रण

श्री गिरीश खोसला का वानप्रस्थ प्रवेश

।। ओ३म् ।।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।। *यजु० अ० 19 मं० 30*

माननीय श्री

सादर नमस्ते

जीवनप्रभात के 'कुलपिता' **श्री गिरीश खोसला जी** वर्षों से भारत की अत्यंत गतिशील 'आर्यसमाज गांधीधाम' के प्रकल्पों के साथ जुडे हुए हैं। वे प्रति वर्ष दो महीने इन बच्चों के साथ गुजारते हैं और उनको अपने प्रेम से तृप्त कर देते हैं। श्री गिरीश खोसला जी सतत अमेरिका के लोगों को बच्चों हेतु सहयोग करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। अब तक उन्होंने लाखों रुपये की सहायता की एवं करवायी है।



वे 6 जनवरी 2008 को अपने जीवन के 60 वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। सौभाग्य से इस अवसर पर वे मकरसंक्रांति के दिन अपने परोपकारी जीवन को और सार्थक करने के लिए वानप्रस्थ दीक्षा ग्रहण कर रहे हैं जो कि आर्यसमाज गांधीधाम के इतिहास की विरल घटना होगी। हम परम प्रभु से उनकी दीर्घायु व स्वास्थ्य की कामना करते हैं व शेष जीवन में वे आर्यसमाज के माध्यम से परोपकार के अद्वितीय व ऐतिहासिक कार्य कर सके ऐसी शक्ति देने की प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

आप इस ऐतिहासिक घटना के साक्षी बनने के लिएं सपरिवार उपस्थित हों ऐसी विनम्र प्रार्थना है।

स्थल : जीवनप्रभात, दयानन्द नगर (सेक्टर-7), गांधीधाम (कच्छ)
दिनांक : 14 जनवरी 2008, **समय :** सायं 4 बजे से
प्रीति भोज : रात्रि 8.30 बजे से

-: निमंत्रक :-

पुरूषोत्तमभाई पटेल — प्रधान (मो. 09825229879)

वाचोनिधि आर्य — महामंत्री (मो. 09428006232)

एवं सभी पदाधिकारी/सदस्यगण तथा जीवनप्रभात परिवार

संपर्क सूत्र : आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, झंडा चौक के पास, गांधीधाम (कच्छ) 370201

E-mail : aryagan@aryagan.org Visit us at aryagan.org

नोट : सभी मेहमानों के निवास व भोजन की व्यवस्था जीवनप्रभात परिसर में ही की गयी है।

प्रो० स्वतन्त्र कुमार, सभा मन्त्री
प्रबन्ध सम्पादक (09719004451)

देवराज आर्य
सह सम्पादक (09897070789)

विमल आर्य
सम्पादक (9968357171)

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति समारोह का १३८वां वार्षिक स्मृति समारोह भव्य रूप से सम्पन्न

आर्य उप प्रतिनिधि सभा वाराणसी के तत्वावधान में काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल आनन्दबाग दुर्गाकुण्ड में महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के १३८वें वार्षिक स्मृति में आयोजित त्रिदिवसीय वैदिक समारोह बड़े धूमधाम से पूर्वी उ०प्र० के सैकड़ों कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि वाराणसी के महापौर माननीय कौशलेन्द्र सिंह जी थे। इन्होंने महर्षि दयानन्द के कार्यों का जिक्र करते हुए ऋषि दयानन्द को हिन्दु धर्म का महान रक्षक बताया। महापौर जी ने आश्वासन दिया कि महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल को महर्षि के गरिमानुकूल स्वरूप देने में मेरे स्तर से जो भी सम्भव हो सकेगा, मैं करूंगा तथा आवश्यकता पड़ी तो अपने स्तर से उपर का भी प्रयास करूंगा।

समारोह के प्रमुख वैदिक प्रवक्ता के रूप में मनुस्मृति के अभूतपूर्व गवेषक डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी ने अपने तीनों दिन के गम्भीर व्याख्यान में तमाम उद्धवरणों को प्रस्तुत करते हुए मनुस्मृति को वेदानुकूल सिद्ध करते हुए कहा कि मनुस्मृति में वर्ण व्यवस्था की बात कही गयी है न कि तथाकथित जाति–पाति की वर्तमान व्यवस्था तथा जन्म आधारित भेद भाव एवं ऊंच नीच की बात। महर्षि मनु के गुण, कार्य, स्वभाव तथा योग्यता के आधार पर वर्ण व्यवसथा निर्धारित किया है न कि जन्म के आधार पर। आज जो मनुस्मृति के प्रति जो कुछ लोगों का आक्रोश है वह अपने स्वार्थ व संकीर्णता के वशीभूत तथाकथित ब्राह्मणों द्वारा मनुस्मृति में मिलावट कर दिये जाने के कारण है। बुलन्दशहर से पधारे प्रखर क्रान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता स्वामी शिवानन्द सरस्वती ने अपने व्याख्यान में अपना उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आज मेरा सौभाग्य है कि मैं आज इस ऐतिहासिक स्थल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड में व्याख्यान दे रहा हूं जहां महर्षि दयानन्द जी ने विश्व प्रसिद्ध शास्त्रार्थ किया तथा यहीं से वे भारत ही नहीं विश्वभर में प्रसिद्ध हुए। उन्होंने जोरदार शास्त्रीय, तार्किक एवं ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर मूर्ति पूजा का खण्डन किया। उन्होंने कहा कि आज देश मुस्लिम तुष्टीकरण तथा तथाकथित ब्राह्मणों के कारण अपने पुरातन विश्व गुरू की प्रतिष्ठा से धूमिल हुआ है तथा तमाम प्रकार की गम्भीर समस्याओं से जूझ रहा है। इसलिए उन्होंने महात्मा गांधी को काफी हद तक दोषी ठहराया।

वेद विदूषी डॉ० आशा रानी राय ने ऋग्वेद के एक मंत्र का उद्धरण देते हुए परिवार को संस्कार वान बनाने की प्रेरणा दी जिससे परिवार अपने में मधुर सुगंधी समेटे हुए समाज को सुवासित कर सकें। आज उचित संस्कार न मिलने के कारण समाज में भय का वातावरण व्याप्त है। जिसमें युवकों की बहुत बड़ी भूमिका है। इसलिए माताओं की विशेष जिम्मेदारी है कि शिशु अवस्था में बच्चों के प्रति इस पहलू पर विशेष ध्यान दें जिससे उनका बच्चा बड़ा होकर समाज में दहशतगर्दी न फैला सके। वाराणसी के वैदिक प्रवक्ता ने कहा कि मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम एवं योगीराज श्री कृष्ण को ऐतिहासिक व्यक्ति थे न कि पौराणिक व्यक्ति। आज इस आर्य महापुरुषों पर जो प्रश्न चिन्ह लगाये जा रहे हैं वे इन्हीं पुराणों के कारण लग रहे हैं। अन्य वक्ताओं में डॉ० अशर्फी लाल शास्त्री इलाहाबाद, श्री यजदेव आचार्य (हरिद्वार), महात्मा महेन्द्र मुनि (आजमगढ़) श्री विद्या सागर आर्य, डॉ० राजेन्द्र आर्य (आजमगढ़) तथा डॉ० शम्भूनाथ शास्त्री ने आर्य सिद्धान्तों को अपने प्रवचन में रखा। पं० शिवपाल आर्य (एटा) ने अपने सुमधुर भजन के माध्यम से लोगों का ज्ञानवर्धन किया। यज्ञ का सम्पादन पाणिनि विद्यालय की ब्रह्मचारिणियों ने किया।

समारोह के अन्तिम दिन पूर्वी उ०प्र० के विभिन्न जिलों के कर्मठ कार्यकर्ताओं की बैठक हुई जिसमें ब्र० नरेन्द्र जी के इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया गया कि इस स्थल व कार्यक्रम की महत्ता को देखते हुए एक केन्द्रीय समिति या ट्रस्ट गठन किया जाना चाहिए। श्री मोहनलाल कुश्वाहा तथा श्री अशोक गोगलानी ने समारोह में आये समस्त लोगों का स्वागत किया। अध्यक्षता प्रधान वेद प्रकाश आर्य एवं आभार उपप्रधान डॉ० नरेन्द्र कपूर ने किया तथा मंच का संचालन मंत्री प्रमोद आर्य तथा ब्र० नरेन्द्र जी ने किया।

वेद-संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित द्वितीय वेद-अध्ययन-कार्यशाला

फोन : 25102316 ई-मेल vedic_science@yahoo.co.in
वेबसाइट : veda-sansthan.org

पाठ्य विषय : ऋग्वेद-संहिता 1.97 (8 मंत्र)
अध्ययन-माध्यम : हिन्दी
निदेशक : डॉ0 उभयदेव शर्मा, डॉ0 मृदुला अग्रवाल, डॉ0 देवकृष्ण दाश
अतिथि-वक्ता : डॉ0 मनोहरलाल गुप्त (भरतपुर, राजस्थान)
तारीखें : बुधवार 26, दिसम्बर से शुक्रवार 28 दिसम्बर, 2007
समय : पूर्वाह्न 9.30 से 12.00 (संस्कृतज्ञों के लिए)
: अपराह्न 3.00 से 5.00 बजे (हिन्दीज्ञाताओं के लिए)
स्थल : वेद-संस्थान, सी 22, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-27 (भारत)
पंजीकरणार्थ अंतिम तारीख : 19 दिसम्बर, 2007
पंजीकरण-राशि : रु0 125/- केवल (अध्ययन-सामग्री सहित)
विशेष : दिल्ली से बाहर के अध्येताओं को अपने निवास-भोजन की व्यवस्था स्वयं करनी है।

प्राचीन भारत में विज्ञान अपनी चरम सीमा पर था

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में नवलखा महल स्थित माता लीलावन्ती वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण केन्द्र के भव्य सभागार में होने वाली प्रथम विचार सम्प्रेषण सभा में अपने घोषित उद्देश्य के अनुरूप ही भारत के गौरवमयी इतिहास को झुठलाने के प्रयासों की तीव्र निन्दा करते हुए अपनी गौरवमयी उपलब्धियों की चर्चा की गई। आज अत्यन्त खेदजनक स्थिति हमारे समक्ष बनी है। जहां एक तरफ विद्यार्थियों को उनकी पाठय पुस्तकों के माध्यम से आर्य गौमांस खाते थे, लुटेरे थे, जुआरी थे, मद्यपान करते थे, आक्रमणकारी थे, भारत के मूल निवासी नहीं थे, आदि आदि मिथ्या तथ्यों का अध्ययन कराया जाता है। वहीं इसकी चरम परिणिति तब हुई है जब मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व श्रीकृष्ण के अस्तित्व को ही नकारा जाता है। ऐसी स्थिति भारतीयों के लिए अत्यन्त चिन्ता का विषय है। अतः सभी संस्कृति प्रेमियों को एक जुट होकर भारतीय इतिहास को विकृत करने के प्रयासों का पुरजोर विरोध करना चाहिए। जहां अनेक तथ्यों व उदाहरणों के माध्यम से इस बात को खचाखच भरे सभागार में न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने निरूपित किया वहीं स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय प्रवक्ता भगवती प्रसाद शर्मा ने वेदों के निवर्चन की ऋषि दयानन्द प्रणीत भाष्यशैली का अनुकरण करते हुए यौगिक अर्थ व प्रकरणानुकूल निवर्चन का आग्रह करते हुए अनेक उदाहरणों से इस सत्य को स्थापित किया कि वेदों में आधुनिक विज्ञान के तथ्य न केवल मिलते है बल्कि ऐसे सिद्धान्त भी मिले हैं जहां तक अभी आधुनिक विज्ञान पहुंच भी नहीं पाया है।

इस अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २००७ के अवसर पर कार्यक्रम की सफलता प्रदान करने में सहयोगी बने सभी कार्यकर्ताओं का सम्मान न्यासी श्री भवानी दास जी आर्य की अध्यक्षता में किया गया। जयपुर के श्री ओ०पी० वर्मा विशिष्ठ अतिथि थे। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्य कन्या गुरुकुल का वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस समारोहपूर्वक सम्पन्न

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा संचालित आर्य कन्या गुरुकुल का वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस बड़ी धूम–धाम से आर्य कन्या गुरुकुल के प्रांगण में मनाया गया। यज्ञ की ब्रह्मा श्रीमती सरोज अग्निहोत्री थी। माननीय श्री धर्मपाल जी (एम०डी०एच०) ने इस समारोह की अध्यक्षता की। संयोजिका श्रीमती शशि प्रभा आर्या थी। मुख्य अतिथि श्री सुभाष आर्य (चेयरमैन, दिल्ली नगर निगम) थे। मुख्य प्रवक्ता वैदिक विद्वान श्री महेश विद्यालंकार एवं वेद विदूषी वक्ता डॉ० सुषमा शर्मा थी। इन दोनों ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि आज गुरुकुलों की विशेष आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द का विशेष प्रयास रहा कि गुरुकुलों से ही बच्चों का चरित्र निर्माण एवं स्वास्थ्य विकास हो सकता है। दोनों ने ही अपने विचारों से जनता एवं छात्राओं को प्रभावित किया। गुरुकुल के बच्चे निरन्तर प्रगति करें व वैदिक संस्कृति को समझे व जाने यही उनका उद्देश्य था। गुरुकुल की छात्राओं ने सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसकी सब उपस्थित जनों ने सराहना की। इसमें अध्यापिकाओं का अधिक योगदान था।

भारतीय संस्कृति व सभ्यता के आधार पर स्त्री जाति को सुशिक्षित करना, सच्चरित्र देवियों का निर्माण करना, संस्कृत की उच्च शिक्षा द्वारा स्त्री जाति को सुसंस्कृत बनाना इस गुरुकुल का उद्देश्य है। गुरुकुल का विस्तृत प्रगति विवरण श्रीमती शकुन्तला दीक्षित (प्रधाना) प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा दिया गया। इस अवसर पर आए महानुभाव श्री मूलचन्द चावला (पार्षद, दिल्ली नगर निगम) [illegible] प्राप्त किया।

आर्यसमाज जामनगर द्वारा आयोजित प्रवचन समारोह सम्पन्न

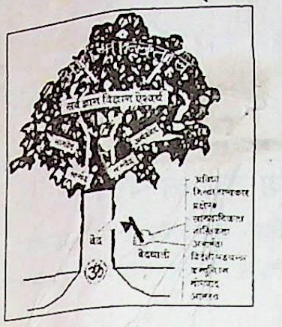


आर्यसमाज जामनगर द्वारा दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन (रोजड) से पधारे हुए स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक (दर्शनाचार्य) जो विशेष विषय **"मन का नियंत्रण"** पर प्रवचन में आर्यसमाज के प्रमुख श्री धर्मवीर खन्ना अतिथि विशेष के रूप में उपस्थित थे एवं श्री अरूणभाई धनकी (एस्सार), डॉ० जे०जे० ओझा, डॉ० अरुण भाई खत्री, श्री बिपिन भाई झवेरी, डॉ० भरत भाई डाभी, डॉ० जोगीनभाई, श्रीमती भानुबहन, आर्यसमाज के मंत्री श्री सत्याल जी आर्य, विद्या आर्य सभा के मंत्री श्री डॉ० अविनाश भाई भट्ट, श्रीमद्दयानन्द कन्या विद्यालय के प्राथमिक व माध्यमिक विभाग के आचार्या श्रीमती प्रमिला बहन पित्रोडा व श्रीमती हर्षा बहन शाह तथा आर्यसमाज के सदस्य और जामनगर के ज्ञान पिपासुओं ने उपस्थित रहकर प्रवचन की अमृतवाणी का लाभ लिया।

को वेदानुद्धरिष्यति ? 6

(वेदों का उद्धार कौन करेगा ?)

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
भागल भीम, वाया - भीनमाल, जिला - जालोर (राज0)
फोन : 02969 - 220579 मो0 09414182173, 09829148400



मेरे मान्यवर ! अब मैं एक और गहरी पीड़ा आप लोगों के समक्ष व्यक्त कर रहा हूं कि मेरे कुछ विद्वान् भ्राता जिनमें सब मेरे परिचित भी हैं मेरे विरुद्ध प्रचार जैसा कर रहे हैं तो कोई व्यंग जैसा कर रहे हैं। ये लोग अग्निवेश के समर्थक नहीं बल्कि मेरी भांति ही प्रबल विरोधी भी हैं। कोई कहता है '....... व्याकरण भी पूरा पढ़ा नहीं ..... विज्ञान भी कुछ पढ़ा नहीं क्या कर लेंगे .... अपनी संस्था बना ली, कुछ नहीं होगा,' मैं इन सब बातों से बहुत दुःखी अवश्य हूं परन्तु विचलित कदापि नहीं। यद्यपि आलोचक मित्रों का कथन बहुलांश में सत्य है पुनरपि मैं तो इन मित्र जनों से निवेदन कर रहा हूं कि अगस्त २००४ में बंगलौर के वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ वैदिक सायंसेज में विश्व के ७ देशों के वेद वक्ताओं व वैज्ञानिकों में विश्वप्रसिद्ध बिग बैग थ्यौरी का खण्डन करने वाला ३२० वक्ताओं में से शायद मात्र मैं ही अकेला था। इंग्लैण्ड के भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर डॉ० जितेन्द्र साहा एवं त्रिवेन्द्रम विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय के डीन प्रो० रामचन्द्रन जी नैयर को व्यक्तिगत मिलकर विज्ञान की खामियां निकालने वाला भी मैं ही था। अपने पत्र विषय से हटकर वहां अद्वैतवाद, अंग्रेजी भाषा व आधुनिक विज्ञान के अन्ध प्रवाह का मात्र एक मिनट में खण्डन करने का साहस भी हमने ही किया था जबकि मेरे साथ गये आचार्य वेदव्रत जी जिन्होंने अभी पिछले दिनों कुरुक्षेत्र के पास सोम याग का आयोजन किया था, ने मुझे ऐसा करने से रोका भी था। आप यह सब जानकारी यदि चाहें तो उनसे तथा महात्मा गोपाल स्वामी जी तथा नोएडा के डॉ० मुमुक्षु जी आर्य से ले सकते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काम कर चुके कुछ वैज्ञानिकों को उन्हें उनकी कमियां दृढ़ता से दिखलाने का कार्य भी किया। विश्व प्रसिद्ध भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र ट्राम्बे, मुम्बई के भौतिक विज्ञानियों से सप्ताह सप्ताह भर इस विषय पर पर्याप्त संवाद किया। इसी योग्यता पर सूरत विश्वविद्यालय का भौतिक विज्ञान विभाग हमें वैदिक फिजिक्स पर पुस्तक लिखने का आग्रह व निवेदन कर रहा है। प्रो० वाइस चांसलर से लेकर बच्चे तक पीछे पड़े हैं। हमने ७–८ वर्ष धैर्य रखने को कहा है और इसी कारण 'वेद विज्ञान शोध प्रक्रिया' नामक महत्वपूर्ण लेख लिखने को बाध्य हुआ। इसमें हमारी प्रक्रिया व वेद की प्रामाणिकता सिद्ध करने की कसौटी भी दी गयी है। पाठक चाहें तो पढ़ सकते हैं। संकल्प वाली पुस्तक भी मंगाकर पढ़ सकते हैं। विज्ञान प्रेमी 'सृष्टि का मूल उपादान कारण' जो हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है, जिसकी प्रस्तावना लिखने वाले एक विश्वस्तरीय एस्ट्रोफिजिक्स हैं, भी पढ सकते हैं। यह निवेदन कर दूं कि जिस खोज से इन्हें (भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई के थ्यौरिटिकल एस्ट्रोफिजिक्स सैक्शन के हैड मान्यवर डॉ० आभास कुमार मित्रा साहब) विश्वख्याति अगस्त २००४ में मिली, उस खोज को मैं उनसे लगभग २ माह पूर्व अपने लेख में अपने ढंग के चिन्तन से लिख चुका था, इसी बात से हममे निकटता विशेष है परन्तु आर्य जगत के उच्चस्तरीय विद्वानों, नेताओं व श्रेष्ठियों को इसमें कोई रूचि नहीं। शायद वे डॉ० मित्रा जी से उच्च स्तरीय है। हमारे आर्य विद्वान, श्रेष्ठी वा प्रोफेसर शायद पद्मभूषण प्रो० अजीतराम जी वर्मा (भौतिक वैज्ञानिक) से भी अपने को बड़ा मानते हैं, जिन्हें हमने जोधपुर में एक रक्षा वैज्ञानिक सम्मेलन में उनके व्यंग के उत्तर में कहा था, 'प्रो० साहब ! मैं आपसे प्रश्न करने नहीं बल्कि उत्तर देने आया हूं, कि बिग बैंग क्यों गलत है और सर्व प्रथम क्या था ?' यद्यपि आज मुझे स्वयं अपनी पुस्तक में कई अस्पष्टतायें व न्यूनताएं नजर आती हैं परन्तु इसमें विश्वभर के विज्ञान को चैलेंज अवश्य है। इन न्यूनताओं को दूर करने का अभी मेरे पास समय भी नहीं है।

अपने प्यारे पाठकों को अवगत करा दूं कि जिस बिग बैंग थ्यौरी को हमारे अनेक वेद शोधकर्ता शीर्ष विद्वान् वेद में खोजते हैं तथा विश्व में जिसकी पर्याप्त मान्यता है; उस पर हमने ही प्रबल प्रहार किया है। सम्भवतः २५ सितम्बर २००६ में दो अमरीकी भौतिक वैज्ञानिकों को ब्रह्माण्ड में अत्यन्त ठण्डा विकिरण खोजने पर नोबेल पुरस्कार मिला जिसका आश्रय लेकर मीडिया ने जोर शोर से उस विकिरण को बिग बैंग से जोड़ कर देखा और पर्याप्त प्रचार भी किया। यद्यपि इसी विकिरण को पहिले भी १९६५ में खोजा जा चुका है और उसको बिग बैंग से जोड़कर देखा जाता रहा है परन्तु हमारी बुद्धि ने कभी भी इस गठजोड़ को स्वीकार नहीं किया। मैं हमने अपने व्याख्यान में कहा था कि नोबल पुरस्कार से घबराने की जरूरत नहीं है तब एक विद्वान ने मुझ पर व्यंग किया था परन्तु हमने न केवल आर्यों को बल्कि सूरत विश्वविद्यालय में भौतिक विभाग तथा शायद भारत के सबसे बड़े उर्वरक संयन्त्र कृभको, सूरत के वैज्ञानिकों में भी यही बात दृढ़ता से कही, जिस पर किसी ने कोई आपत्ति तो व्यक्त नहीं की बल्कि वहां के प्रो० वाइस चांसलर महोदय ने यह अवश्य कहा कि 'आपने हमारी सारी धारणाओं को हिला दिया है, और हम आपके संकल्प पूर्ण होने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेंगे, और सर्वप्रथम अपने विश्वविद्यालय में आमंत्रित करना चाहेंगे।' जनवरी २००७ में हमने भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र मुम्बई के वैज्ञानिकों से पूछा कि 'मुझे समझाएं कि इस ठण्डे रेडियेशन से बिग की पुष्टि कैसे होती है ?' तब वे वैज्ञानिक मेरी बातों से ही सहमत हुए। इसलिए मैं आर्य विद्वानों व नेताओं से अनुरोध कर रहा हूं कि आप विज्ञान की चकाचौंध से घबराएं नहीं। मुझे विश्वास है कि विश्व का हर निष्पक्ष तथा अत्युच्चस्तरीय वैज्ञानिक हमारा मित्र ही बनेगा। निष्पक्ष शब्द इस कारण लिखा कि विकसित देशों के वैज्ञानिक प्रायः ईसाई हैं और भारतीय प्रायः नास्तिक ! ईश्वर को मानना तो सरल है परन्तु वेद को मानना बहुत कठिन होगा। कहीं वैज्ञानिकों में भी परस्पर द्वेषादि मैंने देखा व सुना है तब मुझ साधु को कितना पचायेंगे, यह देखने की बात है। कहीं छल, कूटनीति आदि का शिकार भी मुझे बनाने का प्रयास भी हो सकता है, वहां (विश्वस्तर तक) पहुंचने की योजना, नीति भी मैं जानता नहीं। पुनरपि मुझे उन पर कुछ अधिक विश्वास है। हां, आप सब शीर्षस्थ मेरे सहयोगी बन पायें, यह उससे भी कठिन मुझे दिखाई पड़ता है, ऐसा क्यों हो रहा है, यह पर्याप्त विचार के पश्चात् भी मेरे समझ में नहीं आता। यदि कोई कारण हो तो कृपया अवगत कराने का कष्ट करें। मुझे शोक है कि ये कुछेक वेद भक्त भी मेरे पीछे पड़े हैं और वेद विरोधी तो पड़ेंगे ही। मुझे दुःख है कि जो विद्वान मित्र मेरे सिद्धान्त विषयक लेखों को सदैव प्रबल समर्थक व स्नेही रहे। पाठक भी सदैव भक्त, अनुरक्त रहे। अग्निवेश के विषय में सदैव मेरे निकटतम रहे। मैंने जब जब भी अग्निवेश के विरुद्ध कुछ लिखा तब कई विद्वानों ने मेरी पीठ थपथपायी परन्तु मेरे संकल्प व वेद विज्ञान पर चलने में कोई सहयोग इन प्रशंसकों ने नहीं किया। कुछेक तो घूम घूम कर निन्दा भी करते हैं। महदाश्चर्य ! यह क्या हुआ ? मैं उन सभी मान्य विद्वानों से पूछ रहा हूं कि क्या मैंने कभी कोई सिद्धान्त विरोधी लेख लिखा ? क्या विरुद्ध आचरण ही किसी ने कभी करते देखा वा सुना है ? यदि हां तो मुझे अवश्य अवगत कराने का अनुग्रह करें ? यदि मैंने कभी किसी का अहित किया तो क्या, सोचा भी हो, तो भी बतायें खुला बतायें, मैं छुपाना कुछ भी नहीं चाहता। शोक है कि जो पत्रिकाएं मेरे लेख प्रकाशित करने को आतुर रहती थीं, उनमें से कुछ के लिए तो मैं मानों अब संसार में रहा ही नहीं। मैंने जिस समय यह कार्य प्रारम्भ किया था उस समय ....

सोचता था संगी साथी, हैं बहुत संसार में।

सोचता था मित्र ही हैं, जितने परिचित आर्य हैं।

आज जब परखा तो पाया, हर कोई अपना नहीं .....

आज अनेक विद्वान मित्र, संस्थाओं के संचालक व सम्पन्न आर्यों से जो सैद्धान्तिकरुपेण मेरे मित्र भी हैं, से फोन पर व साक्षात् अपने कार्य की चर्चा करता हूं तो सभी मेरे दुःख पर आंसू बहाते प्रतीत होते हैं और आर्यसमाज को ही कोसते हैं परन्तु वे क्या बतायेंगे कि क्या वे भी उसी मां आर्य समाज के पुत्र नहीं है ? वे समर्थ होते हुए भी कुछ सहयोग व्यक्तिगत रूपेण भी नहीं कर सकते, तब समाज को दोष देने का उद्देश्य क्या है ? प्रतीत होता है कि योग सूत्रों में वर्णित मैत्री, मुदिता का भाव अब आर्यों में नहीं रहा। आर्यसमाज का नवम नियम भी सुनने, सुनाने हेतु ही बचा है। सब अपना अपना देखते हैं। उधर, जैसलमेर (राज०) जिले के श्री भादरिया जी के पौराणिक संत महाराज श्री हरवंशसिंह जी निर्मल ने मुझे नेशनल हाइवे पर एक सौ बीघे भूमि सभी सुविधाओं सहित देने का प्रस्ताव करके बुलाया था परन्तु मैंने लिखा था। 'महाराज जी ! आपका बहुत बहुत आभार परन्तु चाहे चन्द्रमा अपनी शीतलता का परित्याग कर दे, सूर्य अपना तेज छोड़ दे और पृथ्वी अपनी गुरुता छोड़ दे परन्तु मैं आर्यसमाज के सिद्धान्त नहीं त्याग सकता........मैं प्राण त्यागना तो स्वीकार करता हूं परन्तु सिद्धान्त नहीं ..... !' मेरे विरुद्ध प्रचार करने वाले वा तटस्थ रहने वाले मित्रो! जरा अपने दिल पर हाथ रख कर देखो, कि इतने बड़े प्रलोभनों को इस प्रकार ठुकराने वाले का हृदय कैसा होगा ? जबकि भादरिया जी सन्त का ऐसा कोई आग्रह भी नहीं था। मैंने केवल भविष्य की आशंकावश ऐसा लिखा था और आर्यसमाज को ही अपना आश्रय बनाये रखना चाहता था। परन्तु शोक ! मेरे सिद्धान्तवादी कहाने वालों ने मेरे विषय में आज तक कुछ नहीं सोचा।

(क्रमशः)

आर्यसमाज के कार्यक्रमों की सूचना प्रकाशनार्थ भेजने के सम्बन्ध में

समस्त आर्यसमाजों और प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि आयोजित कार्यक्रमों की सूचना यदि न्यूनतम २०–२५ दिन पूर्व सभा कार्यालय में प्राप्त हो सके तभी उसका प्रकाशन लाभकारी होता है परन्तु कार्यक्रम होने के पश्चात कार्यक्रम सम्पन्नता की सूचना सदैव लाभकारी होती है।

कार्यक्रम सम्पन्नता की सूचना भेजते समय यह अवश्य ध्यान रखे कि विद्वान वक्ताओं के प्रवचनों आदि में से विशेष सिद्धान्तों पर अथवा प्रेरणात्मक कथनों को संक्षिप्त करके भेजें।

इसी प्रकार विद्वान लेखक विशेष उत्सवों, दिवसों आदि से सम्बन्धित लेख भी न्यूनतम १५ दिन पूर्व अवश्य भेजें। अधिकाधिक सामयिक विषयों पर वैदिक दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रियाएं भी भेजें। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ पत्र व्यवहार अथवा "सार्वदेशिक साप्ताहिक" के सम्बन्ध में लेख, सूचनाएं तथा अन्य पत्र निम्न पते पर भेजें –

सार्वदेशिक सभा, 1488, पटौदी हाउस (नजदीक आर्य अनाथालय)
दरियागंज, नई दिल्ली-2, फोन : 43580554
E-mail : sarvadeshiksabha@yahoo.co.in
– प्रो० स्वतन्त्र कुमार, प्रबन्ध सम्पादक एवं सभा मन्त्री, मो० 09719004451

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० (IP)01/7116/2...
Licence No. U(C) 93/2...
Licensed to Post Without Pre-pa...
R.N. No. 626/57 सार्वदेशिक साप्ताहिक 23-12-07 से 29-12-07 तक अग्रिम भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं०-U(C) 93/2006-08 in NDPS on 20/21-...

आर्यसमाज औरैय्या का वेद प्रचार सम्पन्न

आर्यसमाज औरैय्या (उ०प्र०) का वेद प्रचार सम्पन्न विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ८ दिवसीय वेदप्रचार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली से पधारे आर्य जगत के युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र जी ने वेद कथा के माध्यम से अपने सम्बोधन द्वारा सभी नगरवासियों को वेद उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि वेदों के माध्यम से भगवान ने मनुष्यमात्र के लिए पवित्र उपदेश दिए हैं। ऋषियों के हृदय में भगवान ने वेद ज्ञान का प्रकाश किया और उनकी अनन्त कृपा से सारे संसार को कुछ पवित्र ऋचाएं मिली। वेदों में ही समस्त मानव जाति को विश्व बन्धुत्व विश्वशान्ति और मानव की सुरक्षा एवं अभिवृद्धि का उपदेश एवं संदेश देकर हर पल हर क्षण कृत कृत्य किया है। ताकि तुम जान सको कि तुम्हारा जन्म दुनिया में क्यों हुआ। तुम्हारा क्या कर्तव्य है? तुम कौन हो? तुम्हें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। संसार क्या है, तुम्हारी राह क्या है, जीवन के आदर्श के लिए वेद मन्त्र को सामने रखें। स्वामी वेद प्रिय जी ने अपने प्रवचन के माध्यम से बताया कि ध र्म, अर्थ, काम, मोक्ष क्या है? यह हमारे जीवन का मुख्य लक्ष्य है। युवा संगीतकार शंकरमित्र जी ने अपने भजनों के द्वारा समां बांध दिया। आरती देवी जी ने अपने भजनों के द्वारा सभी का मन मोह लिया।

आर्यसमाज दसूहा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज दसूहा का वार्षिकोत्सव दिनांक १६ नवम्बर से १८ नवम्बर २००७ तक बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया गया जिसमें आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान पं० महेन्द्रपाल जी आर्य व मुजफ्फरनगर यू०पी० से पधारे भजनोपदेशक पं० सतीश सुमन जी व पं० सुभाष राही ने भाग लिया। उत्सव का आरम्भ १६ नवम्बर को प्रातः यज्ञ हुआ यज्ञ के उपरान्त एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। शोभायात्रा का दृश्य बहुत ही सुहावना था। उसके बाद शाम की शभा शुरू हुई जिसमें पं० महेन्द्रपाल जी आर्य ने अपने विचार लोगों के सामने रखे और लोगों को आत्मविभोर किया।

श्री सत्यानन्द शास्त्री साहित्य

श्री सत्यानन्द शास्त्री जी के द्वारा लिखित निम्न पुस्तकों का प्रकाशन श्री हरीश अरोड़ा ने सम्पन्न करके आर्य जगत पर विशेष कृपा की है :- १. **आर्याभिविनय** - (अंग्रेजी तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में उपलब्ध - मूल्य ६५/- एक प्रति), २. **स्वामी वेदानन्द तीर्थ के आत्मानुभव** - (हिन्दी - मूल्य १२५/- एक प्रति), ३ **सम्ध्यालोक** - (मूल्य १०५/- एक प्रति), ४. **Vegetarianism and the Vedas,** (English) प्रेस में, ५. **What is Aum ?** (English) प्रेस मे, ६. **क्या प्राचीन आर्य लोग मांसाहारी थे ?** (हिन्दी) प्रेस में।

उपरोक्त पुस्तकों पर ५० प्रतिशत की छूट का प्रावधान रखा गया है।

सम्पर्क सूत्र - ***श्री हरीश अरोड़ा***
GH - 1/160, पश्चिम विहार, नई दिल्ली - 63,
फोन : 9312881276, e-mail : rphouse05@yahoo.co.in

चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

केकडी मूलचन्द राजोरिया वैदिक अनुसंधान संस्थान के... तत्वावधान में वेदमुनि जी के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद पारायण यज्ञ ... हुआ।

संस्थान के कोषाध्यक्ष व आर्यसमाज के मन्त्री अशोक ... बताया कि यह यज्ञ २६ अक्टूबर कार्तिक बदी एकम से शुरू ... २४ कार्तिक पूर्णिमा को सम्पन्न हुआ। जिसमें ऋग्वेद के ... यजुर्वेद के १९७५ सामवेद के १८७५ व अथर्ववेद के ५९८७ म... आहूतियां दी गईं।

समारोह के मुख्य वक्ता पर्यावरण विद रामस्वरूप जी ... जोकि आर्यसमाजी विचारधारा के चिंतक व गुरुकुलीय शिक्षा ... के पक्षधर हैं। श्री आर्य ने बताया कि आज पर्यावरण को त... से दूषित किया जा रहा है। इसे शुद्ध करने के लिए ह... परिपाटी पुनः शुरू करनी होगी। समाज के उत्थान के लिए ... बताया कि सर्वजातीय स्नेह ही सम्प्रदाय सदभाव हो, पा... व्यवहार हो, महिला अस्मिता रक्षा हो, शांतिकारी युक्त हो, मतदाता हो, अखण्डताकारी सर्वदल हो तभी देश का ... विकास हो सकता है।

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष वेदमुनि जी ने बताया कि ... तभी सुखी रह सकता है जब वह वेदों के अनुसार आचरण ... नित्यप्रति हवन करे व आसन प्राणायाम करे तो हमारे देश ... से रामराज्य स्थापित हो सकता है। कार्यक्रम में अनेक गणमान... ने भाग लिया।

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक : विमल आर्य (मो० 9312912139) द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, 148... पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 (फोन : 43580554) से मुदित, सार्वदेशिक आ... प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के लिए प्रकाशित। ई-मेल : sarvadeshiksabha@yahoo.co...